राजस्थानी कहावतें

[बंगाल हिन्दी मण्डल द्वारा पुरस्कृत]

सम्पादक
डा० कन्हैयालाल सहल
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
बिरला आर्ट्स कालेज पिलानी

प्रकाशक
बंगाल हिन्दी मण्डल
८, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता—१

वितरक
भारती भण्डार
लीडर प्रेस इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
सं० २०१७ वि०
मूल्य ५/००

मुद्रक
सीताराम गुप्ते
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

समर्पण

विद्या-विहार, पिलानी
के
कुलपति
लेफ्टिनेंट कमाण्डर श्रद्धेय श्री शुकदेवजी पांडे
को
उनके संरक्षण और प्रोत्साहन में प्रस्फुटित
अपनी साहित्य-साधना
का
यह अभिनव पुष्प
श्रद्धापूर्वक समर्पित

कन्हैयालाल सहल

आमुख

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हम चाहे किसी भी भाषा की कहावतों का अध्ययन करें उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भली भाँति समझे बिना अध्ययन में समग्रता नहीं आ सकती। राजस्थानी भाषा के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। इस भाषा की कहावतों का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करने के लिए केवल राजस्थानी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि रखने से ही काम नहीं चलेगा क्योंकि राजस्थानी भाषा में अनेक कहावतें ऐसी हैं जिनकी जड़ें रामायण-महाभारत काल के सुदूर अतीत तक गहरी चली गई हैं। अतः राजस्थानी भाषा की कहावतों के सम्पूर्ण परीक्षण के लिये हमें प्राचीन भारतीय वाङ्मय को भी लक्ष्य में रखना होगा। विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का लिखित साहित्य धार्मिक संस्कार तथा रीति-रिवाज ही भारतवर्ष की मौलिक सांस्कृतिक एकता के परिचायक नहीं हैं कहावतों द्वारा भी इस देश की अखंड सांस्कृतिक एकता पर प्रकाश पड़ता है।

बेकन की इस प्रसिद्ध उक्ति से सभी परिचित हैं कि किसी राष्ट्र की प्रतिभा विदग्धता तथा उसकी अन्तरात्मा का दर्शन उसकी कहावतों द्वारा ही होता है।* इस उक्ति से हम बहुतांश में सहमत हैं किन्तु ऐसी कहावतें भी अनेक हैं जो राष्ट्रीय परिधि का अतिक्रमण कर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में संचरण करने लगती हैं देश-विदेश का भेद जहाँ तिरोहित हो जाता है और जहाँ सम्पूर्ण वसुधा ही एक कुटुम्ब का रूप धारण कर लेती है। फिर कहावतों का परस्पर आदान-प्रदान भी होता है। जिस प्रकार दो संस्कृतियों में सम्पर्क स्थापित होने के परिणामस्वरूप पारस्परिक आदान-प्रदान नितान्त स्वाभाविक है उसी प्रकार जो लोग व्यापारादि के हेतु प्रवास में जाते हैं उनके साथ उनकी लोकोक्तियाँ भी यात्रा करती

---

*The genius, wit and spirit of a nation are discovered through its proverbs.—Bacon.

रहती है। अनेक अवसरों पर तो यह निर्णय करना भी बड़ा कठिन हो जाता है कि अमुक लोकोक्ति कौन से देश में उत्पन्न हुई क्योंकि एक समान लोकोक्तियाँ अनेक राष्ट्रों के लोकोक्ति-साहित्य में प्राय: मिल जाती हैं। अपभ्रंश की कहावतों के प्रसंग में पुष्पदन्त महापुराण की निम्नलिखित लोकोक्ति का उल्लेख मैंने किया है —

को गणइ पिसुणु अविहिहियलेउ ।
भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ ॥ १–८–७

"भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ" (चन्द्रमा की तरफ कुत्ते भौंकते हैं तो भौंकने दो) को पढ़ कर The moon does not heed the barking of dogs* " का स्मरण हुए बिना नहीं रहता। इस कहावत को देशी कहा जाय या विदेशी ?

हम नहीं कह सकते कि इस प्रकार से विभिन्न राष्ट्रों की लोकोक्तियों में पारस्परिक साम्य का एक मात्र कारण आदान-प्रदान ही है अनुभव की समानता के कारण भी ऐसा होना सम्भव है। जिस प्रकार कभी-कभी नदी के मूल रूप का पता लगाना मुश्किल होता है उसी प्रकार लोकोक्तियों के मूल रूपों को ढूंढ निकालना भी दुष्कर हो जाता है।

किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण अध्ययन के लिए हम उसके वंश देश-काल आदि सभी से परिचित होना चाहते हैं। इसी प्रकार कहावतों के सम्बन्ध में भी समझिये। राजस्थानी कहावतों की एक व्यक्ति के रूप में कल्पना की जाय तो इन कहावतों का निम्नलिखित त्रिविध रूप दृष्टिगोचर होता है।

१—बहुत सी कहावतें राजस्थान की नागरिक हैं।

२—अनेक कहावतें अपनी व्यापकता में सम्पूर्ण भारतीय परिवार की सदस्य हैं।

३—अनेक कहावतें सार्वभौम हैं।

ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक है कि राजस्थानी कहावतों को उनकी सम्पूर्णता में देखने के लिए न केवल राजस्थान और भारतवर्ष के ही कहावती साहित्य का सिंहावलोकन किया जाय बल्कि विदेशी साहित्य पर भी एक सरसरी दृष्टि डाली जाय। तभी इन कहावतों के उक्त त्रिविध रूप का कुछ परिचय मिल सकता। इसीलिए विषय प्रवेश के रूप में भारतीय और विदेशी कहावतों

* The Oxford Dictionary of English proverbs compiled by William George Smith p. 451 1033 Edition.

का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया गया है। भारतीय साहित्य की कहावतों को मैंने संस्कृत पालि प्राकृत और अपभ्रंश की कहावतों में विभक्त किया है। संस्कृत भाषा की कहावतों के प्रसंग में वैदिक वाङ्मय इतिहास-पुराण स्मृति-ग्रन्थ, नीति-साहित्य तथा संस्कृत काव्य एवं नाटकों की लोकोक्तियों से उदाहरण लिये गये हैं।

भारतीय साहित्य तो एक विशाल समुद्र के समान है। हजारों वर्षों के साहित्य की कहावतों का विस्तृत विवेचन न तो मेरा ध्येय ही है और न यह सहज संभव ही है। कहावतों के इस ऐतिहासिक विवेचन के आधार पर मैं केवल यह दिखलाना चाहता हूँ कि अनेक बार कहावतों के स्रोत में पहुँचने पर प्रादेशिक शृंखलाएँ टूटने लगती हैं और हम उस स्वस्थ वातावरण में पहुँचकर साँस लेने लगते हैं जहाँ भारतीय संस्कृति अपने असीम वैभव के साथ प्रकट हुई है। इससे यह भी पता चलता है कि जिस कहावत को हम नवीन समझते हैं वही कहावत न जाने कितनी प्राचीन निकले जिसे हम अपने प्रदेश की समझते हैं वही न जाने किसी अन्य प्रदेश की निकल आये प्रदेश की ही नहीं कभी-कभी दूसरे राष्ट्र की ही निकल आये।†

---

† They, therefore, form a basis for those who are labouring to bridge over the gulf between Eastern and western thought.—Preface to Eastern Proverbs and Emblems (Rev J Long p 6).

संस्कृत वाङ्मय और कहावतें—एक विहंगम दृष्टि

१—वेदों की कहावतें

लोकोक्तियाँ कितनी प्राचीन हैं इसके सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। भारतवर्ष के प्राचीनतम लिखित साहित्य ऋग्वेद में लोकोक्तियों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। यथा -

क.—न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।
स्त्रियों की मित्रता कोई मित्रता नहीं।

ख.—अग्निनाग्निः समिध्यते।
आग से आग भड़कती है।

ग.—न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।१
बिना कष्ट उठाये देवता भी सहायता नहीं करते।

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के शब्दों में 'ऋग्वेद से शुरू करके अब तक के भारतीय साहित्य में प्रवाद और कहावतों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में कितने ही पूरे मंत्र अथवा पाद या अर्धपाद को अर्थात् लोकोक्ति या कहावत कहा जा सकता है।२ इसी प्रकार 'बाङ्ला प्रवाद' के विद्वान् लेखक श्री सुशीलकुमार दे की भी मान्यता है कि 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' ऋग्वेद संवाद सूक्त १०।९५।१५ जैसे प्रवाद-वाक्य न केवल ऋग्वेद में बल्कि ब्राह्मण-ग्रंथों और बौद्ध त्रिपिटक में भी विरल नहीं हैं।३

---

१ मिलाइये—(God helps those who help themselves.
(२) हिम्मते मरदां, मददे खुदा।
बादशाह की बेटी फकीर से निकाह।
(२) २ देखिये भूमिका राजस्थानी कहावतें।
३ द्रष्टव्य बाङ्ला प्रवाद भूमिका। प्रथम संस्करण पृष्ठ १

वैदिक कहावतों का अभी कोई विधिवत अध्ययन और पर्यालोचन नहीं हुआ है। हाँ द्या द्विवेद नामक एक विद्वान् ने अवश्य 'नीति मंजरी' शीर्षक ग्रन्थ की रचना की थी जिसमें आठ अध्याय और २०० श्लोक हैं। श्लोक के पूर्वार्द्ध में कोई सूक्ति अथवा कहावत है तथा उत्तरार्द्ध में स्पष्टीकरण के लिए किसी कथा की ओर संकेत है जिसका या तो ऋग्वेद में वर्णन हुआ है अथवा जो वहाँ प्रसंगतः प्राप्त है। यहाँ कुछ श्लोक नीतिमंजरी से उदाहरणार्थ उद्धृत किये जा रहे हैं —

बहुप्रजस्य पुत्रस्य सुखार्थोऽपि हठा विपत् ॥
दीर्घतमिदं मनुष्कम्या ममस्याचकृचोत न ॥ ऋ० १, ४ ९.
विभज्य भुञ्जत संतो भक्ष्यं प्राप्य सहाग्निना ।
चतुरश्चमसान्कृत्वा तं सोममृभवः पपुः ॥ ऋ० १ २०, ६.
शुभाशुभं कृतं कर्म भुञ्जते दैवता अपि ।
सविता हेमहस्तोऽभूत्प्रनष्टोऽन्य पूषको द्विजः ॥ ऋ० १ ३५, ९.
प्रमोदेऽपि विर्याचितं कल्याणानि करोति यत् ।
मेधातिथिं मदायाचरिन्द्रो मेषोऽभवत्ततः ॥ ऋ० १, ५१, १
तत्त्वविदपि संसारे मूढो भवति लोभतः ।
तत्त्वज्ञा सरमायाचितगमनं यथा पहे ॥ ऋ० १, ६२, ३
अन्य सुहृज्जनो यस्मात् शमुद्र इव ह्यौरसः ।
अश्विभ्यां तारितो भुज्युस्त्रितः कूपे निपातितः ॥ ऋ० १ १०५,१७.
यातुधानस्यास्यदे चांधुर्णीत कर्णांस्य तायुषम् ।
अश्विनावश्वमासन्नं भद्रकु पेदवे स्थितम् ॥ ऋ० १, ११६, ६.
कुलक्रमागतो धर्मो न त्याज्यः प्रभुभिः सह ।
कण्वोऽश्विभ्यां निराम्यो हि कुलक कुमुक्तास सुतुक ॥ ऋ० १, ११७, ८
न दयाहोत्यतीतानामाश्रयं क्रूरकर्मणाम् ।
दैत्या रसातलमगा कृते प्रातिपक्षेभमंहसी ॥ ऋ० १, ११६, ११, २४
देवा रक्षन्ति तं नित्यं यस्य स्याद् विमलं मनः ।
ररक्षेन्द्रोऽभृतामप श्रोणदुर्मीतियुर्वशान् ॥ ऋ० १, ५४, ६.

द्या द्विवेद ने स्वयं ही नीति मंजरी के श्लोकों की रचना की और उन पर टीका लिखी। टीका में सायणभाष्य की पद्धति का अनुसरण किया गया है इसलिए

'नीति मंजरी' का रचयिता सायण से पूर्ववर्ती नहीं हो सकता।४

२—ब्राह्मण-ग्रंथों की कहावतें

वेदों की भाँति ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी कहावतें और सूक्तियाँ इतस्ततः बिखरी पड़ी हैं। उदाहरणार्थ—

क. अमुर्भ हुत्वा मेधति।
ख. ह्रस्वो वै भूत्वा पर्वतो वर्धति।५
ग. सत्यं वा धर्मः।
घ. यद् वै न्यूनं तत् पूर्णम् यत् पूर्णम् तत् न्यूनम्।
ङ. अनुष्ठा एवं वेदस्तिष्ठमीति।

ब्राह्मण-ग्रन्थों में तो 'सुभाषित' शब्द का भी प्रत्यक्ष प्रयोग हुआ है। यथा "एषा वाक्यमाना यथा यातिके उर्वीयमाना सुभाषितवत्यभिहिता सर्वतो मीयते वक्ष्यते। यथाहुता स्युरिश्चकेन यायावहर्वा न्युपयोजनम्। एवं वाति वै बहवो जना ऋः पुरोधयान्मुहूर्तातिवेम्निहोत्रम्॥ ऐ० ब्रा० २५.५।

ऐतरेय ब्राह्मण में ही हरिश्चन्द्र की कथा के प्रसंग में निम्नलिखित सुभाषित उपलब्ध होते हैं—

क. नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम।
ख. आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य चराति चरतो भगः॥

उक्त ब्राह्मण-ग्रन्थ में प्रयुक्त 'सुभाषित' शब्द लोकोक्ति का ही रूप जान पड़ता है।

"आस्मा देखी परसराम कबे न झूठी होय" राजस्थानी भाषा की एक प्रसिद्ध कहावत है जिसकी समानान्तर उक्ति "चक्षुर्वै सत्यम्" तैत्तिरीय ब्राह्मण (१ १४) में भी प्राप्त होती है। इसी प्रकार अन्य ब्राह्मण-ग्रन्थों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

---

४ Indian Antiquary April 1870. vol. ४ The Nitimanjari of Dya Dviveda by Dr F Kielhorn, Deccan College Poona.

५ मिलाइये—"राखी मता बरणेत।"

१—उपनिषदों की कहावतें

क ब्राह्मवर्ग की कहावतें

उपनिषदों में अधिक ज्ञानकांड का विवेचन होने के कारण उनको वेदों का मस्तक कहा गया है। दार्शनिक ग्रन्थों में लोकोक्तियों का प्रायः अभाव पाया जाता है। इसका कारण यह है कि लोकोक्तियाँ मुख्यतः जनसामान्य के धरातल की उक्तियाँ होती हैं जब कि दार्शनिकता तत्त्वस्पर्शी चिन्तन की अपेक्षा रखती है। इसलिए दार्शनिक ग्रन्थों की अनेक उक्तियाँ लोकोक्तियाँ न रहकर प्राज्ञोक्तियों का रूप धारण कर लेती हैं। यहाँ पर उपनिषदों में कुछ प्राज्ञोक्तियों के उदाहरण दिये जा रहे हैं—

१ आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति। बृ० उ० २।४।५
२ आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो. बृ० २।४।५, ४।५।६
३ आचारः प्रथमो धर्मः । मनु सं० ७।१
४ अध्यात्मविद्या विद्यानाम् । भ० गीता १०।३२
५ कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया तु प्रमुच्यते । १ सं० सो० २।९८
६ उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् । महो० ६।७१
७. उर्वी पृथ्वी बहुला विपुला । महा भा० १०।१४६*
८. यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि । तैत्ति० १।११।२
९. यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति । छान्दो० ७।२३।१
१० विद्ययाऽमृतमश्नुते । ईशा० ११ ।

संस्कृत के विद्वानों में इस प्रकार की उक्तियों का उसी प्रकार प्रचलन है जिस प्रकार लोकोक्तियों का सामान्य लोगों में। इस प्रकार की उक्तियाँ यदि कहावत कहला सकती हैं तो इन्हें एक विशिष्टवर्ग (ब्राह्मवर्ग) की कहावतें कहा जा सकता है।

ख लौकिक न्याय

किन्तु उपनिषदों में यत्र-तत्र दृष्टान्तों के रूप में लौकिक न्यायों का प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ—

१ कोशभ्रमरन्यायेन मुग्धो भवति । मा० प० ५।५२
२ कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशभृतकन्यायेन परिव्राड् । मा० प० ५।१५ ।

---

* १ कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी । (भवभूति)

मुंडकोपनिषद् १।२।८, मैत्रा ७।९ और कठोपनिषद् २।५ में 'अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः' इस कहावती उपमा का प्रयोग हुआ है। कबीर की निम्नलिखित साखी में आते-आते इस उपमा ने एक कहावती उक्ति का रूप धारण कर लिया—

जा का गुरु भी अंधला, चेला खरा निरन्ध।
अन्धे अन्धा ठेलिया दोनूं कूप पड़न्त॥

आनन्दघनकृत अजितनाथ स्तवन में भी इस न्याय का प्रयोग हुआ है—

"पुरुष परम्पर अनुभव जोवते अन्धो अन्ध पुलाय।
वस्तु विचारे जो आगम करि, चरण धरण नहीं ठाय॥

ख—कहावती उपमाएँ

उपनिषदों में कुछ इस प्रकार की उपमाएँ हैं जिन्हें एक प्रकार से कहावती उपमा कहा जा सकता है। इस प्रकार की उपमाओं में स्वतन्त्र रूप से कहावत बन सकने का सामर्थ्य विद्यमान रहता है। जैसे

"अधीत्य चतुरो वेदान्सर्वशास्त्राण्यनेकशः।
ब्रह्मतत्त्वं न जानाति दर्वी पाकरसं यथा॥"

"दर्वीपाकरसं यथा" के स्थान पर यदि कहा जाय कि "कुरछी के जाने भोजन को स्वाद?" तो यह निश्चित रूप से कहावती वाक्यप्रकार की ही एक महत्त्व पूर्ण उक्ति का रूप धारण कर लेगी।

"चिदानन्द पद-संग्रह" में यह कहावती उपमा लोकोक्ति के रूप में ही प्रयुक्त हुई है।

"रस भोजन में रहत दवी नित।
नहिं लख रस पहिचान॥"

ग—आभाणक

"काल करे सो आज कर" एक कहावती वाक्य है। उपनिषत्कार की भी एक ऐसी ही उक्ति उपलब्ध होती है "अद्य कृत्य मद्य कः।" अथर्व १।१९ "हस्तस्थं पिण्डमुत्सृज्य लिहेत्कूर्परमात्मनः।" जा० द० ४।५८ को पढ़कर इसके समकक्ष अनेक लोकोक्तियों का स्मरण हो आता है। "लौकिक न्यायांजलि" में "पिण्डमुत्सृज्य करं लेढि" न्याय इसी प्रसंग में प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है मधुर पिंड को छोड़कर हाथ चाटता है। रघुनाथवर्मन् के 'लौकिक न्यायरत्नाकर' में उक्त न्याय का 'पिण्डं हित्वा करं लेढि' यह रूपान्तर प्राप्त होता है। पंचपादिका

पृष्ठ ४९ में इस न्याय को "आभाणक" शब्द द्वारा अभिहित किया गया है। "सोऽयमाभाणको लोके पिण्डमुत्सृज्य करं लेढीति।" "क्षीरं विहायारोचकग्रस्तः सौवीररुचिमनुभवति"[७] जैसी उक्तियाँ इसके समानान्तर रखी जा सकती हैं।

ङ—कहावती वेशभूषा

इसी प्रकार निम्नलिखित उक्तियों को विचारार्थ लीजिये—

१—आत्मतीर्थं समुत्सृज्य बहिस्तीर्थानि यो व्रजेत्।
करस्थं स महारत्नं त्यक्त्वा काचं विमार्गति॥ शा० द० ४।५०

इस पद्य के उत्तरार्द्ध को यदि 'हाथ दो रतन छोड़ कर काच ढूँढे' में बदल दिया जाय तो कौन इसे कहावत नहीं कहेगा?

२—पिपीलिकायाः पक्षायां मृत्युरस्य प्रवर्तते। यो० वा० १।११४

३—प्रीतिः प्रीत्या भवति। कल्प० ९५ [८]

४—मृतस्य मरणं कुतः। यो० वा० १।६५

५—मृता मोहमयी माता, जातो बोधमयः सुतः।
सूतकद्वयसम्प्राप्तौ कथं सन्ध्यामुपास्महे॥ मैत्रे० २।११

६—यथा पक्षिगणो रात्रौ तरुमाश्रित्य तिष्ठति।
विश्रम्य च पुनर्याति तद्भूतसमागमः॥ मह० सं० १।२२ [९]

७—रिपुणा हन्यते रिपुः। महो० ५।१११

८—आयुरभ्यासकारणम्। महो० ३।१० [१०]

जिस प्रकार कहावतों में कभी-कभी असम्भव घटनाएँ रखी जाती हैं उसी प्रकार उपनिषदों में भी इस प्रकार का वाक्यविन्यास देखा जाता है। उदाहरणार्थ—

१—काको वा हंसवद्गच्छेत् मशकवत् गिरिवरम्। ते० बि० ६।९२ [११]

२—मद्रुकमारस्य स्तोतुर्वै बहुमर्त्येऽप्यपत्।
निर्मितः मामपूर्वेण स्वरवेष्ठितं यत्॥ ते० बि० ६।९०

च—निष्कर्ष

ऊपर जिन उपनिषदों से उदाहरण दिये गए हैं वे प्रायः परवर्ती उपनिषद्

---

७ लौकिकन्यायाञ्जलिः, द्वितीयो भागः। Colonol G. A. jacob, P 47

८ cf. Love begets love.

९ "चिड़िया रैन बसेरा।"

१० "जब तक जीना, तब तक सीना।"

११ "कागा हंस-चाल चलि भूले अपनी चाल"।

हैं पूर्ववर्ती नहीं। पूर्ववर्ती उपनिषदों में यदि लोकोक्तियों का बाहुल्य न हो तो आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि जैसा ऊपर कहा गया है लोकोक्ति घटना को लेकर चलती है जब कि दार्शनिक ग्रन्थ चिन्तन-मनन पर आश्रित रहते हैं। उपनिषद् जैसे ग्रन्थों में से यदि सूक्तियाँ अथवा प्राज्ञोक्तियाँ एकत्र की जायें तो अनायास एकत्र की जा सकती हैं किन्तु उपनिषदों में प्रयुक्त लोकोक्तियों के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा सकती तथापि समझाने के लिए न्याय दृष्टान्त उदाहरण आदि का वहाँ प्रयोग करना पड़ता है वहाँ ऐसी उक्तियाँ व्यवहार में लानी पड़ती हैं जो लोकसामान्य हों। कबीर जैसे दार्शनिक ने भी लोक के सामान्य अनुभवों के सहारे दार्शनिक सिद्धान्तों को बहुत सीधे ढंग से समझा दिया था।

फिर भी इतना निःसन्देह कहा जा सकता है कि उपनिषद्-काल में भी कहावतों जैसी वस्तु प्रचलित अवश्य थी चाहे धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों में कहावतों का बाहुल्य न मिलता हो।

इतिहास और पुराणों की कहावतें

इस शीर्षक के अन्तर्गत रामायण महाभारत योगवासिष्ठ तथा पुराणों की कहावतों पर विचार किया गया है। रामायण और महाभारत तो हमारे यहाँ इतिहास-ग्रन्थ माने ही जाते हैं योगवासिष्ठ को भी लोग वाल्मीकि रामायण का उत्तर ग्रन्थ मानते हैं और उसे वासिष्ठ रामायण भी कहते हैं। यही कारण है कि इस ग्रन्थ की कहावतों को भी मैंने रामायण महाभारत की कहावतों के साथ ही रखना उचित समझा है।

१—रामायण की कहावतें

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो नेत्र हैं। वेदों के बाद आदि कवि की रामायण का सर्वाधिक महत्त्व है। मानवजीवन के विविध प्रसंगों तथा तत्कालीन समाज का अच्छा चित्रण इस महाकाव्य में हुआ है। रामायण सूक्तियों का भंडार तो है ही इसमें स्थान-स्थान पर अनेक लौकिक प्रवादों का भी उल्लेख हुआ है। यथा

> न पित्र्यमनुवर्तन्ते मातृकं द्विपदा इति।
> ख्यातो लोकप्रवादोऽयं भरतेनान्यथा कृतः॥ २।१२।१४

अर्थात् मनुष्य पिता के स्वभाव का अनुकरण न कर माता के स्वभाव का अनुसरण करता है इस लोकप्रवाद को भरत ने असत्य सिद्ध कर दिया क्योंकि

भरत कैकेयी के पीछे नहीं गये। इस सम्बन्ध में राजस्थानी की निम्नलिखित कहावत उल्लेखनीय है

"मा पर पूत पिता पर घोड़ो घणो नहीं तो थोड़म-थोड़ो।"

अर्थात् पुत्र माता का अनुसरण करता है घोड़ा पिता का। यदि बहुत नहीं तो थोड़ी बहुत अनुरूपता तो देखी ही जाती है।

यह कहावत राजस्थान में ही नहीं यत्किंचित् रूपान्तर के साथ भारतवर्ष के बहुत से अन्य प्रदेशों में भी प्रचलित है। इस कहावत का मूल वाल्मीकि रामायण के उक्त लोकप्रवाद में मिल जाता है।

इसी प्रकार एक दूसरी राजस्थानी कहावत है "मा जैसी डीकरी, घड़ा जैसी ठीकरी" अर्थात् लड़की माँ के अनुरूप होती है और घड़े के खंडित टुकड़े घड़े के अनुरूप। एक ऐसी ही कहावत वाल्मीकि रामायण में भी मिलती है—

सत्यश्चाद्य प्रवादोऽयं लौकिकः प्रतिभाति मे ।
पितॄन्समनुजायन्ते नरा मातरमंगना ॥ २।३५।२८

सुमन्त्र की कैकेयी के प्रति उक्ति है कि यह लौकिक प्रवाद मुझे सत्य जान पड़ता है कि पुरुष पिता का अनुसरण करते हैं और स्त्रियाँ अपनी माता का। यह तुम्हारे आचरण से ही प्रकट है। न बाप को है पड़ओ कुमारिका इसी प्रकार की उक्ति प्रियप्रवासकार की भी है। एक मराठी लोकोक्ति में भी कहा गया है—

"बाप तशी माती व काती तशी पोती।"

किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती इस तरह की कोई लोकोक्ति रामायण-काल में प्रचलित रही होगी तभी तो आदि कवि ने कहा है—

सत्यं बतेदं प्रवदन्ति लोके नाकालमृत्युर्भवतीति सन्तः ॥ ५।२८।३
यद्वै ह्यकाले मरणं न विद्यते ॥ ५।२०।५१ ।

इसी प्रकार हनुमान ने आत्महत्या न करने का निश्चय करते हुए कहा था—

"जीवन्भद्राणि पश्यति।"

राजस्थानी भाषा के सुकवि समयसुन्दर ने भी अपने "सीताराम चौपाई" नामक ग्रन्थ में लिखा है—

"जीवतो जीव कल्याण देखइ।"

यह पंक्ति "जीवन्भद्राणि पश्यति" का ही अनुवाद जान पड़ती है।

वाल्मीकि रामायण में जहाँ प्रवाद आदि शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है वहाँ

भी अनेक ऐसी उक्तियाँ हैं जिन्हें निश्चयात्मक रूप से "लोकोक्ति' की संज्ञा दी जा सकती है। उदाहरण के लिए "अग्निरेव महीं पातालमिवाभाति न संशयः" ५।४२।१ को लीजिये। यह रामचरित मानस की "जस काछे तस ही को नाचा" इस उक्ति के समानान्तर रखी जा सकती है। इसी प्रकार की अन्य कहावतें नीचे उद्धृत की जा रही है—

१—आम्रं छित्वा कुठारेण निम्बं परिचरेत् तु कः।
यश्चैनं पयसा सिञ्चेन्नैवास्य मधुरो भवेत् ॥ २।३५।१६।[१२]

अर्थात् आम के पेड़ को कुठार से काटकर नीम की परिचर्या कौन करे? नीम को दूध से सींचने पर भी वह मीठा नहीं होता।

इस प्रसंग में राजस्थानी की निम्नलिखित उक्ति उल्लेखनीय है—

"नीम न मीठो होय, सींचो गुड़ भर घीव सें।
जिनका पड़्या सुभाव क जासी जीव सें॥"

इसी प्रकार रामायण की एक दूसरी उक्ति में कहा गया है "न हि निम्बात् स्रवेत् क्षौद्रं लोके निगदितं वचः।"

"गर्जन्ति न वृथा शूरा निर्जला इव तोयदाः॥ ६।६५।३" रामायण की इस उक्ति को पढ़कर "गरजै जिको बरसै कोनी" का अनायास स्मरण हो जाता है।

"To err is human." यह अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत है जिसका मूल रूप रामायण में सुरक्षित है। 'न कश्चिन्नापराध्यति ॥ ४।३६।११ का भाव उक्त अंग्रेजी लोकोक्ति से ठीक मिलता-जुलता है।

'यथा हि कुरुते राजा प्रजास्तमनुवर्तते' ॥ ७।४३।१९ और 'यथा राजा तथा प्रजा' दोनों में एक ही बात कही गई है। 'गतोदके सेतुबन्धो न कल्याणि विधीयते' २।९।५४। यः परः पर एव सः ६।८७।१५। नाभिरम्यो प्रवर्तते ५।५५।२८, दुःखमाप्ते अवैमीति: ५।११।१९। स्वभावो दुरतिक्रमः ६।३६।११, अविश्वस्तु परस्त्विताम् ५।२५।१०, मरणान्तानि वैराणि ६।१११।२६ बुद्धिर्हि परिभूयते ३।२१।११ प्राप्नुयात् चिर कालेन गच्छता हृपयपच्छति ३।५।४।

---

१२ कठिनाम्रवनं छित्वा पलाशांश्च निषिञ्चति।
पुष्पं दृष्ट्वा फले गृध्नुः स शोचति फलागमे ॥ २।६३।८।
सींचे पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय

संग्रामेषु तु वक्तव्यम् १।४०।१८, पतनान्ताः समुच्छ्रयाः ७।५२।११, अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ३।३७।२, अनिर्वेदः श्रियो मूलम् ५।१२।१० आदि अनेक लोकोक्तियाँ रामायण से संकलित की जा सकती हैं।

रामायण में भी लोकप्रवाद के रूप में जिन उक्तियों का उल्लेख हुआ है उनकी प्राचीनता के सम्बन्ध में हम निश्चित रूप से कुछ कह नहीं सकते। 'गतोदके सेतुबंध' तथा 'यथा राजा तथा प्रजा' आदि अनेक उक्तियाँ ऐसी हैं जो रामायण तथा महाभारत दोनों में समान रूप से उपलब्ध हैं।

बहुत सी कहावतें ऐसी हैं जो भारतवर्ष की प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं में मिलती हैं। उनके सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि एक भाषा ने किसी दूसरी भाषा से कहावतें ग्रहण की हैं। तथ्य यह है कि इस प्रकार की लोकोक्तियाँ देश की सर्वसामान्य सम्पदा के रूप में महाकाव्यों के भी युग से पहले प्रचलित रही हैं और देशवासियों के आचार-व्यवहार को प्रभावित करती रही हैं।

२—महाभारत की कहावतें

जिस प्रकार भगवान् समुद्र और पर्वतराज हिमालय रत्ननिधि के रूप में प्रसिद्ध हैं कुछ वैसी ही महिमा महाभारत की भी है। एक ओर अठारह पुराण सब धर्मशास्त्र तथा वेद-वेदांग और दूसरी ओर अकेला यह महान् ग्रन्थ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से सम्बन्ध रखने वाला जो ज्ञान इसमें है वही अन्यत्र है जो इसमें नहीं वह और कहीं भी नहीं।[११] यह भारतीय संस्कृति का एक महान् विश्वकोश है। सब प्रकार के कथाप्रसंगों को लेकर विराट् जीवन का सर्वांगीण चित्र इस महाग्रन्थ में उपस्थित किया गया है। महाभारत में स्थान-स्थान पर प्रयुक्त सभी सूक्तियों और लोकोक्तियों का विवेचन करना दुःसाहस मात्र होगा इसलिए यहाँ पर उनका दिग्दर्शन मात्र कराया जा रहा है। इस ग्रन्थरत्न में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण लीजिये—

---

११ यथा समुद्रो भगवान् यथा हि हिमवान् गिरिः।
ख्यातावुभौ रत्ननिधी तथा भारतमुच्यते ॥ १८।५।५५ ।
अष्टादश पुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः।
वेदाः सांगास्तथैकत्र भारतं चैकतः स्थितम् ॥ १८।५।४६ ।
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥ १।६२।५३ ॥

१—सेनाग्र्यो यशो प्राप्ता, न तु योधाः कथंचन ॥ ५।१६८।२८ ।

लड़ते योद्धा हैं किन्तु यश सेनापति को मिलता है। ठीक इसी आशय को व्यक्त करने वाली राजस्थानी कहावत है "मरै सिपाही अर नाम होय सिरदार रो" अर्थात् मरते सिपाही हैं और नाम होता है सरदार का।

२—यथा राजन् हस्तिपदे पदानि संलीयन्ते सर्वसत्त्वोद्भवानि ॥ १२।६३।२५

"हाथी के खोज में सैंका खोज समावै" राजस्थान की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है और राजस्थान की ही क्यों मराठी आदि प्रादेशिक भाषाओं में भी 'सर्वांचे पायमें हत्तीच्या पायखोत' जैसी कहावतें सुनाई पड़ती हैं। इन सब का मूल महाभारत के उक्त महत्वपूर्ण वाक्य में ढूंढ़ा जा सकता है।

३—सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम् ॥ १०।३।४ ।

प्रत्येक मनुष्य अपने आपको दूसरे की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान् समझता है इससे मिलती-जुलती दो राजस्थानी कहावतें लीजिये—

क. अक्कल दुनिया में थोड़ी है; एक म्हारे में आधी दुनिया में।

ख. परायो धन अर आप में अक्कल ज्यादा दीसै।

४—तत्रैवासनमन्विच्छेद्यत्र नाभिप्लवेत् परः ५।३।११ ।

इसी अर्थ को प्रकट करने वाली राजस्थानी भाषा की एक समानान्तर लोकोक्ति में कहा गया है 'बैठे जोय, उठावै न कोय।' अर्थात् सभा में जहाँ बैठना हो वहाँ पहले से ही अपना स्थान देखकर बैठना चाहिए ताकि फिर वहाँ से कोई उठा न सके।

५—पिबन्त्येवोदकं गावो मण्डूकेषु रुवत्स्वपि ॥ १२।१४१।८२ ।

मेंढकों के टर्र-टर्र करते रहने पर भी गायें तो पानी पीती ही हैं। राजस्थानी भाषा में शब्दसाम्य की दृष्टि से तो ऐसी कोई कहावत मेरे पढ़ने-सुनने में नहीं आयी किन्तु भावसाम्य जहाँ तक संभव है निम्नलिखित कहावत इस प्रसंग में अवश्य उल्लेखनीय है—

"अयां ही रोटी पोसी र अयां ही पापड़ा बीणसी।"

तात्पर्य यह है कि सीखनेवाले यों ही सीखते रहेंगे मौज उड़ाने वाले तो मौज ही उड़ायेंगे।

६—"कांटा नै छेदै कांटो ई" एक प्रसिद्ध राजस्थानी लोकोक्ति है जिसका अर्थ यह है कि कांटे का छेदन तो कांटे ही करते हैं। महाभारत में इसी का प्रतिरूप निम्नलिखित रूप में उपलब्ध है—

प्रक्षालनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम् ॥ ३।२।४९ ।

६—प्रदीप्ते भवने यद्वत् कूपस्य खननं तथा ३।७९।२१ । यह तो एक ऐसी उक्ति है जो भारतवर्ष की प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं में मिलती है।

योगवाशिष्ठ की कहावतें

योगवाशिष्ठ वेदान्तशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है जो वशिष्ठजी द्वारा रचित कहा जाता है। उसमें वशिष्ठजी ने रामचंद्र को वेदांत का उपदेश दिया है। ६ प्रकरणों और ३२ हजार श्लोकों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है। स्थान-स्थान पर कहावतों के प्रयोग की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है यद्यपि सूक्तियों की संख्या कहावतों से कहीं अधिक है। योगवाशिष्ठ की कुछ कहावतें लीजिये—

१ तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः ।
  क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति ॥ ६ उ० १९३।७९ ।
२ अन्यस्मै रोचते निम्बस्त्वन्यस्मै मधु रोचते ॥ ६ उ० ६७।२८ ।
३ उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतेव भूः ॥ ६ उ० १९।९ ।
४ न हि पीतामृतास्वाद्यं स्वदते स्म च कांजिकम् ॥ ६ उ० ७५।४० ।
५ वहन्ते वारणा यत्र तत्रोर्णायुषु का कथा ॥ ६ उ० । ६८।१७ ।[14]
६ कर्तविकार्यसाधन हयनो बहु मन्यते ॥ ३।७०।७७ ।
७. यावत्तिलं तथा तैलम् ॥ ३।१०४।३२ ।[15]
८. न शीतमपि भासीत तम स्पार्शकर कला ॥ ३।१९७।९२ ।
९ गलितमपि पुनर्वृन्ते केन पुनरयुतं फलम् ॥ ६ उ० १२५।१२ । १६

अर्थात् यह हमारे पिता का कुआँ है ऐसा कहते हुए कापुरुष लोग खारा जल पीते हैं। किसी को नीम अच्छा लगता है तो किसी को मधु। जिसके पैर

---

१४ मिलाइये—हिन्दी—बड़े बड़े बह गए, गदहा पूछे कितना पानी।
The elephant and the horse are drowned and the ass asks if there is much water (Punjabi Proverb.)

१५ तेल तो तिलों से ही निकले।

१६ बिरछ ते जो पात छूटे, बहुरि न लागे डार।

में जूते हैं उसे समस्त पृथ्वी ही चमड़े से ढकी हुई-सी जान पड़ती है। जिसने अमृत पी लिया है उसे खट्टी कांजी अच्छी नहीं लगती। जहाँ बड़े-बड़े हाथी डूब जाते हैं, वहाँ भेड़ों की क्या गिनती? कृपण को यदि फूटी कौड़ी भी मिल जाती है तो भी वह उसे बहुत करके मानता है। जब तक तिल हैं, तभी तक तेल है। जहाँ बीज ही नहीं वहाँ अंकुर कैसा? जो कर्म वासना से अलग हो चुका उसे यत्न करके भी फिर वहाँ कौन लगा सकता है?

"सतां साप्तपदं मैत्रम्" १ उ० २१६।४ अतीव क्रूर मन्युमः' १ उ० १६२।२०

आदि अनेक ऐसी उक्तियाँ भी योगवासिष्ठ में मिलती हैं जो समान रूप से रामायण, महाभारत तथा पुराणों में प्रयुक्त हुई हैं। योगवासिष्ठ यद्यपि वेदांत का ग्रंथ है किन्तु इसमें भी लौकिक व्यवहार का उल्लंघन न करने का उपदेश दिया गया है। "लोकस्थितिरलङ्घ्या हि महतामपि मानद।" ५।६५।१० संस्कृत की एक अन्य लोकोक्ति में भी यही बात विरक्तिपूर्वक कही गई है

"यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयम् नाचरणीयम्।"

४—पुराणों की कहावतें

भारतवर्ष की व्यावहारिक और धार्मिक जीवनपद्धति को प्रभावित करने में पुराणों का बहुत कुछ हाथ रहा है। पुराणों का नीतिसाहित्य बहुत व्यापक और विशाल है। जीवन के सभी अंग-उपांगों से संबंध रखनेवाली सूक्तियाँ उनमें उपलब्ध हैं। बहुत सी सूक्तियाँ तो ऐसी हैं जिन्हें हम मानवता के नैतिक कोष (कानूनसंग्रह) के नाम से अभिहित कर सकते हैं। इस देश में प्राचीनकाल से ही सुभाषितों और सूक्तियों का बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता रहा है। विष्णु पुराण से पता चलता है कि प्रह्लाद को पहले पहल सुभाषितों की ही शिक्षा दी गई थी।

सुभाषितों के साथ-साथ ऐसी उक्तियों का भी पुराणों में अभाव नहीं है जो कहावतों की भाँति प्रचलित हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित उक्तियों को लीजिये—

१ सतां साप्तपदं मैत्रम् ॥ ३९ ॥ स्कंद प्रभासखंड।

अर्थात् सात कदम साथ चलने से सज्जनों में मित्रता हो जाती है।

२ सरलास्तत्र छिद्यन्ते कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः ।१७

अर्थात् जो पेड़ सीधे होते हैं वे काट दिए जाते हैं, जो टेढ़े-मेढ़े होते हैं वे खड़े रहते हैं ।

३ दैवं हि दुरतिक्रमम् । पद्म० सृष्टि खंड. अ० २२। ७।

४ आपत्काले मूर्खा मूर्खं मरणं नैव लभ्यते ।
स्कंद, ब्रह्मखंड सेतुमाहात्म्य अ० ५। ११७ ।

५ यथा कृतं तथा भुंक्ते । पद्म० भूमिखंड अ० ८१।४४ ।

६ यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ।
तथा शुभाशुभं कर्म कर्तारमनुगच्छति ॥ पद्म० भूमिखंड अ० ८१।४७।

७ प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो देवोऽपि तं वारयितुं न शक्तः ।
अतः न शोचामि न विस्मयो मे, ललाटलेखा न पुनः प्रयाति ॥ [18]

भाग्य और कर्मसंबंधी उक्तियों की प्रचुरता समूचे भारतीय साहित्य में देखने को मिलती है ।

८ ज्येष्ठः पितृसमो भ्राता ।[19]

अर्थात् बड़ा भाई पिता के समान होता है ।

९ उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतेव भूः । स्कंद, प्रभासखंड अ० २९५।१२।

अर्थात् जिसने पैर में जूता पहन रखा है उसकी दृष्टि में समस्त पृथ्वी चमड़े से ढकी हुई-सी है ।

१० सर्वस्य विद्यते प्रान्तो न तृष्णाया कदाचन । स्कंद, नागरखंड अ० १८७।४०

अर्थात् सबका अंत होता है लेकिन इच्छा का कोई अंत नहीं होता ।

ऊपर जो दस उक्तियाँ दी गई हैं वे या तो भाग्योक्तियों के अंतर्गत हैं या लोकोक्तियों के ।

पुराणों में कुछ उक्तियाँ ऐसी भी हैं जिनकी समानार्थ लोकोक्तियाँ राजस्थानी भाषा में आज भी मिलती हैं । उदाहरण के लिए बाहरे बगाहरे लज्जा न मारे राजस्थान में कहावत की भाँति प्रचलित है । वास्तव में यह किसी संस्कृत सूक्ति का ही लोकोच्चरित रूप है । इस आशय की संस्कृत सूक्तियाँ पुराणों में मिलती हैं जिनमें से दो यहाँ उद्धृत की जा रही हैं

---

१८ Puranic words of wisdom.
(Collected and Edited by A. P Karmarkar p. 37)

१९. वही, पृष्ठ ४१

१ स्त्रीसंगमे तथा पीते द्यूते व्याख्यानसंभवे
व्यवहारे तथाहारे स्वर्गानौ च समागमे
मार्गे व्यये तथा नित्यं त्यक्तलज्जस्तु वै भवेत् । लिंगपुराण, पूर्व भाग अ० १५।१६०।६१।

२ आहार व्यवहारे च त्यक्तलज्ज सदा भवेत् ।[२०]

पुरुषाभावात्संतोषेन नारी चैव पतिव्रता"[२१] अर्थात् पुरुषों के न मिलने पर नारी पतिव्रता कहलाती है । इसी प्रकार एक राजस्थानी लोकोक्ति में कहा गया है "अणमिले का सै व्रती है" अर्थात् विषयभोग न मिलने पर ब्रह्मचर्य का पालन स्वयं हो जाता है ।

भागवत ११ स्कन्ध अ २१ के एक श्लोक में कहा गया है "न तथा तप्यते विद्धः पुमान्बाणैः सुमर्मगैः, यथा तुदन्ति मर्मस्था ह्यसतां परुषेषवः ।"

निम्नलिखित राजस्थानी सूक्ति और कहावत में भी यही बात प्रकारांतर से कही गई है

१ "लोह तणी तलवार न वाये जीभ तणी तरवार जिसी"
अर्थात् लोहे की बनी तलवार का प्रभाव भी उतना तीक्ष्ण नहीं होता, जितना जीभ की तलवार का होता है ।

२ 'घोड़े की लात, आदमी की बात' में भी इसी भाव की अभिव्यक्ति हुई है ।

भागवत की एक अन्य कहावत में कहा गया है—

जिह्वां क्वचित् संदशति स्वदद्भिः तद्वेदनायां कतमाय कुप्येत् ॥
११।२३।५१

यदि कोई दाँतों से जिह्वा को काटे तो किस पर कोप किया जाय ? दाँतों पर कोप करने में दूसरी पीड़ा आ खड़ी होगी ।

इस प्रसंग में राजस्थान में प्रचलित दांत और जीभ का निम्नलिखित कहावती वार्तालाप पठनीय है—

"दांत और जीभ आपस में बोल्या । जीभ कह्यो—भाई मेहरबानी राखज्यो चाब मत न्हाकज्यो । दांत बोल्या—थू भिचली रीज्ये, तुड़ा मत न्हाकज्ये ।"

अर्थात् दांत और जीभ ने आपस में बातचीत की । जीभ ने कहा भाई, कृपा

बनाये रखना कहीं बना न डालना। बीच में उत्तर दिया—तुम चंचलता न दिखलाना कभी ऐसा न हो कि हमें गुड़ना डाल।

पुराणों से कुछ महावतों के उदाहरण और दिये जा रहे हैं—

१ "महाजनो येन गतः स पन्था।" पृष्ठ ५०
२ काकोऽपि जीवति चिरं च बलिं च भुंक्ते। पृ० ५२
३ स्वस्मै चिते भावया संभवन्ति। पृष्ठ ५४।
४ कण्टकेनैव कंटकम्। पृष्ठ ५६।
५. शनैः कार्याणि कुर्वीत। स्कंद नागरखंड अ० २६, १८।८।
६ नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयात्। पद्म, पातालखंड अ० ११०।१८।
७ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। शिव० धर्मसंहिता खंड ४ अ० २१९।५२।
८ न वै सुरा विरुध्यन्ते धर्मसम्यक्षेव जीवनम्। भागवत १०, अ० ५०।२०।
• ९. न हि पुत्रमपि पात्रे योजयेत् वै कदाचन। पृष्ठ ६६।
१० पद्मकर्णी भिद्यते मंत्रः। पृष्ठ ६५।
११ दुर्बलाबलस्थिता रज्जुस्तया नागोऽपि बध्यते। पृष्ठ ६५।
१२ अनायके न वस्तव्यं। पृष्ठ ६७।
१३ बालस्य वर्तितं वर्षं। पृष्ठ ६६।
१४ स्वमानता समुन्नता। पृष्ठ ६६।
१५ मरणान्तं हि जीवितम्। पृष्ठ ६६।
१६ स्थानस्थितानि पूज्यन्ते पूज्यन्ते च परस्थिताः।
स्थानभ्रष्टा न पूज्यन्ते केशा दन्ता नखा नराः। पृष्ठ ६७।
१७. सर्वोऽपि जीवितं वेत्ति भू न एव न बहुदः। पृष्ठ २२।
१८. स रावणः कालवशादिनष्टः। पृष्ठ १७।[२०]
१९. वसिष्ठहस्तगमनापि जानकी दुःखभाजनम्। पृष्ठ १७।
२० न पितुः कर्मणा पुत्रः पिता वा पुत्रकर्मणा।
स्वयं कृतेन गच्छन्ति स्वयं बद्धाः स्वकर्मणा। पृष्ठ १७।

राजस्थान में भी एक ऐसी ही महावत है ' करणी भोगे आपकी के बेटो है बाप।"

महावतों में जैसे वस्तुपरिणमन की प्रवृत्ति देखी जाती है वैसी अनेक पौराणिक सूक्तियों में भी मिलती है। उदाहरण के लिए एक सूक्ति यहां दी जा रही है—

२२ "इक लखपूत सवालख नाती, ता रावण घर दिया न बाती।"

धर्मैर्विना धर्मार्था धर्मः सर्वतमाचरेत् ।
धर्मं कामं च धर्मं च पश्यैतानि धर्मः धर्मः ॥ पृष्ठ ६२ ।[23]

स्मृतियों की कहावतें

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है स्मृतियाँ पहले स्मृति में ही स्थित रही होंगी बाद में इन्होंने लिखित रूप धारण कर लिया होगा। स्मृतियाँ कुल कितनी हैं, नहीं कह सकते किसी किसी ने तो उनकी संख्या १५२ तक मानी है। किन्तु याज्ञवल्क्यस्मृति के आचाराध्याय में मनु, अत्रि विष्णु, हारीत याज्ञवल्क्य आदि १८ प्रसिद्ध स्मृतिकारों के नामों का उल्लेख हुआ है। स्मृतियों में आचारव्यवहार का वर्णन होने के कारण स्थान-स्थान पर सूक्तियों का मिलना अत्यन्त स्वाभाविक है। कुछ स्मृतियों से उदाहरण लीजिये—

१ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता । मनुस्मृति ३।५६ ।

२ मनः पूतं समाचरेत् । मनु० ६।४६ ।

३ बालादपि सुभाषितम् । मनु० २।२३९ ।

४ स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि । मनु० २।२३८ ।

मनुस्मृति के श्लोक न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः ।
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ॥ २।१५६ ॥

का पूर्वार्द्ध "न तेन थेरो सो होति येनस्स पलितं सिरो" धम्मपद २६० में भी प्राप्त होता है। महाभारत में भी किंचित् रूपान्तर के साथ यही श्लोक मिलता है। इससे स्पष्ट है कि दीर्घकाल तक यह उक्ति भारतवर्ष में बहुप्रचलित रही होगी।

सोमदेव के "नीतिवाक्यामृतम्" में अनेक स्मृतिकारों की कहावतों का उल्लेख हुआ है। यथा

१ मुक्तास्वादनतः शक्तिर्यदि पात्रस्य जायते ।
आरोग्यमन्नदाना नाम तद्भक्षयति को विषम् ॥ हारीत ।

---

२३ टिप्पणी— पृष्ठ संख्या "Puranic words of wisdom.' से दी गई है।

२४ मिलाइये—"पित्तं यदि शर्करया शाम्यति तत्र किं पटोलेन ।"
(वल्लभदेव)

२ मनुः सर्वं न लभते न कश्चित्र परात्परम् ।
यथा न सरसो मूलः मूलं छिद्यते सेवकैः ॥ बृहस्पति ।[२५]

३ अन्यदर्थमयेवैतत् कालकालीममेव च ।
सम्पूर्णमंमतः सिद्धिः कर्मस्विपि जायते ॥ बृहस्पति ।

४ स्वामिनामिभिकर्मो भृत्यः परस्माद्वि कातरः ।
स्वापि सिंहायते सदृशमिदं स्वामिनमाश्रितः ॥ रैभ्य ।[२६]

भारत की प्रादेशिक भाषाओं में प्रचलित अनेक लोकोक्तियों के मूल रूप का पता लगाने तथा यह जानने के लिए कि हमारे देश का लोकोक्तिसाहित्य कितना संपन्न एवं समृद्ध है स्मृतिग्रंथो का अध्ययन नितांत आवश्यक है।

नीति वाङ्मय और लोकोक्तियाँ

मनुष्यों का नैतिक आचरण किस प्रकार शुद्ध हो और वे अपने वैयक्तिक आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक उत्कर्ष के लिए किस प्रकार व्यवहार करें, इन सबका निर्देश करने वाला साहित्य 'नीति वाङ्मय' के नाम से प्रसिद्ध है। भारत का नीतिवाङ्मय अन्य देशों की तुलना में अत्यन्त समृद्ध है यदि ऐसा कहा जाय तो इसमें कोई अत्युक्ति न होगी। यह वाङ्मय जहाँ एक ओर स्वतंत्र रूप से लिखे हुए नीतिग्रंथों के रूप में उपलब्ध है वहाँ दूसरी ओर रामायण महाभारत तथा पुराणादि ग्रंथों में स्थान-स्थान पर प्रयुक्त नीतिवचनों और सूक्तियों के रूप में प्राप्त है। रामायण तथा महाभारत में विशेषतः महाभारत में राजधर्म गृहस्थधर्म स्त्रीधर्म राजनीति व्यावहारिक कौशल तथा पारिवारिक धर्म आदि का सुन्दर विवेचन आदर्श व्यक्तियों को सामने रखकर किया गया है। महाभारत के शांतिपर्व, उद्योगपर्व और वनपर्व इस दृष्टि से विशेष पठनीय हैं।

स्वतंत्र रूप से लिखे हुए नीतिग्रंथ भी दो प्रकार के हैं—एक तो वे जो सूत्ररूप में अथवा फुटकर पद्यों के रूप में लिखे गये हैं और दूसरे वे जिनमें पशु पक्षियों को लेकर कथाएँ कही गई हैं और उन्हीं के माध्यम से नीति की शिक्षा भी दी गई है। दूसरे प्रकार के ग्रंथ कथारचनाएं हैं जिनमें बीच-बीच में नैतिक सूक्तियाँ और कहावतें मणिराशियों की भाँति बिखरी पड़ी हैं।

---

२५ मिलाइये—धीरा पहुंची बालमा, धीरा आतुर होय ।
धीरी बन में लाकड़ी काट न सकै कोय ॥

२६ मिलाइये—"अपनी गली में कुत्ता शेर।"

प्रथम प्रकार के ग्रंथों में चाणक्यसूत्र, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामंदक का नीतिसार, सोमदेव का नीतिवाक्यामृत, बार्हस्पत्यनीति, शुक्रनीति, चाणक्यनीति तथा भर्तृहरि के शतकत्रय आदि विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। आगे चलकर सुभाषितों के अनेक उपयोगी संकलन निकले। सन् १२६३ में प्रसिद्ध विद्वान् शार्ङ्गधर द्वारा "शार्ङ्गधरपद्धति" नामक विशाल संकलन प्रस्तुत किया गया जिसमें ४६८९ पद्यों का अपूर्व संग्रह हुआ है। आधुनिक युग के ग्रंथों में काशीनाथ पांडुरंग द्वारा संकलित 'सुभाषितरत्नभांडागार' नामक बृहद् संग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इतना ही नहीं गत शताब्दी में सुविख्यात संस्कृतपंडित डा० बार्थलिंक ने समस्त संस्कृत साहित्य से कोई ८००० उत्कृष्ट पद्यों को चुनकर अपने सुंदर पद्यानुवाद के साथ तीन खंडों में "Indische Spruche" नामक विशाल ग्रंथ के रूप में प्रकाशित कराया। दूसरे प्रकार के नीतिग्रंथों में पंचतंत्र और हितोपदेश का नाम लिया जा सकता है।

उक्त दोनों प्रकार के नीतिग्रंथ सुभाषितों के तो भांडार हैं ही किंतु लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से भी इनका कम महत्त्व नहीं है। इन सब ग्रंथों में प्रयुक्त लोकोक्तियों की मीमांसा यहाँ संभव नहीं है। इसलिए प्रथम प्रकार के नीति-ग्रंथों के प्रतिनिधिस्वरूप यहाँ चाणक्य सूत्र, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, चाणक्य-नीति और सुभाषितरत्न भांडागार से कुछ लोकोक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं।

चाणक्यसूत्र—

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में 'चाणक्य का रचा हुआ चाणक्य सूत्र नामक एक प्राचीन ग्रंथ आज भी उपलब्ध है जिसे कौटिल्य के व्यावहारिक नीतिज्ञान का मथा हुआ मक्खन ही कहना चाहिए। इसके ५०१ सूत्रों में अनेक सूत्र लोकोक्ति-शैली के हैं। जैसे—

१ बिना तपाए हुए लोहे से लोहा नहीं जुड़ता। नातप्तलोहं लोहेन संधत्ते।

२ सिंह भूखा होने पर भी घास नहीं खाता। न क्षुधार्तोऽपि सिंहस्तृणं चरति।

३ कसाई के हाथ में दूध का भी मान नहीं होता। शौण्डहस्तगतं पयोऽप्यवमन्येत।

४ उधार के हजार से नकद की कौड़ी भली। वरं सहस्रादपि काकिनी श्रेयसी।[१९]

---

१९. नौ नकद न तेरह उधार।

इसी कहावत का चाणक्य सूत्र में एक रूपांतर यह है—

श्वो मयूराद्य कपोतो वरः । ४।५९ । कल के मोर से आज का कबूतर अच्छा है ।[28]

कौटिल्य का अर्थशास्त्र—

जो लोग यह समझते हैं कि प्राचीन भारतीयों ने धर्म और मोक्ष को छोड़कर अन्य पुरुषार्थों की ओर ध्यान नहीं दिया वे इस देश के प्राचीन साहित्य से परिचित नहीं जान पड़ते। चाणक्य का अर्थशास्त्र कामंदक का नीतिसार तथा सोमदेवसूरि का नीतिवाक्यामृत आदि अनेक ग्रंथ हैं जिनमें अन्य पुरुषार्थों का भी तलस्पर्शी विवेचन हुआ है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस ग्रंथ में मनु, भारद्वाज उशना शुक्र बृहस्पति विशालाक्ष पिशुन पराशर वातव्याधि कौणपदंत और बाहुदंतीपुत्र नामक प्राचीन आचार्यों के राजनीति संबंधी मतों का जगह-जगह उल्लेख आता है। आचार्य चाणक्य प्रारंभ में ही कहते हैं कि पृथ्वी के लाभ और पालन के लिए पूर्वाचार्यों ने जितने अर्थशास्त्र प्रस्थापित किये हैं प्रायः उन सबका संग्रह करके यह अर्थशास्त्र लिखा गया है।

कौटिल्य का यह ग्रंथ सूत्रशैली में प्रायः गद्य में लिखा गया है। एक उदाहरण लीजिये—

'अप्रणीतो हि मात्स्यन्यायमुद्भावयति बलीयानबलं ग्रसते दण्डधराभावे।'[29]

चाणक्यनीति

१ नराणां नापितो धूर्तः, पक्षिणां चैव वायसः।
चतुष्पदां शृगालस्तु, स्त्रीणां धूर्ता च मालिनी ॥ ५।२१ ।

२ आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् । ७।२ ।

३ छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम् । १०।१३ ।

४ आमूलसिक्तं पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।

५ अति रूपेण वै सीता अति गर्वेण रावणः ।

---

२८. भूमिका मेवाड़ की कहावतें पृष्ठ २–१

२९ मिलाइये—अप्रणीतो हि दण्डो मात्स्यन्यायमुद्भावयति । बलीयानबलं ग्रसते ।

इति मात्स्यन्यायः । नीतिवाक्यामृत सोमदेव सूरि ।

यदि यत्नात् कश्चिदंशो ह्यपति सर्वत्र सर्वथा ॥ ३।१२ ।

५. असाहयो मणिमौसुत । ४।१० ।

६. यत्ने किं दरिद्रता । १६।१७ ।

सुभाषितरत्नभाण्डागार—

१—अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः किं करोति गतायुषि । २—अर्धो घटो घोषमुपैति नूनं । ३—किं मलिनोऽपि कस्तूर्या जातु नो याति सौरभम् । ४—को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः । ५—कूपे कण्ठे गतं पयः । ६—दंतानां राजपथे । ७—काकः पतितो काकः । ८—आपाता रमणी ग्रहः । ९—दर्दुरा यत्र वक्तारस्तत्र मौनं हि शोभनम् । १०—गुणवीतोऽपि किं याति वायसः कलकंठताम् । ११—दूरतः पर्वता रम्याः । १२—न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे । १३—न हि तामसिद्धं मयवं ज्ञानदाम्भस्तृणोयमया । १४—निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् । १५—नक्रो हि नमति शिरसा लोष्ठः पतति मूर्धनि (कथासरित्सागर) । १६—गतोदके किं खलु सेतुबन्धः । १७—अविरामश्रमकर्मः श्रेयत् । १८—मुखस्य शोभनम् । १९—स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा । २०—स्वल्पको मूढ़नाताय । २१—सर्वनाशाय मातुलः । २२—प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते । २३—वक्रीभवति केवलमीश्वरश्चक्र ।

दूसरे प्रकार के नीति-ग्रंथों में शीर्षस्थानीय है पंचतंत्र । यह ग्रंथ संस्कृत के नीतिसाहित्य का शृंगार है । विष्णुशर्मा ने इसकी रचना उस समय की थी जब उनकी अवस्था ८० वर्ष की थी और नीतिशास्त्र का परिपक्व अनुभव उन्हें प्राप्त हो चुका था । उन्होंने स्वयं कहा है 'मैंने इस शास्त्र की रचना का प्रयत्न अत्यंत बुद्धिपूर्वक किया है जिससे औरों का हित हो । जिस समय उन्होंने यह ग्रंथ लिखा उनका मन सब प्रकार के इंद्रियभोगों से निवृत्त हो चुका था । इस प्रकार के इस विशुद्धबुद्धि निर्मलचित्त ब्राह्मण ने मनु बृहस्पति शुक्र पराशर, व्यास चाणक्य आदि आचार्यों के राजशास्त्र और अर्थशास्त्रों को मथकर लोकहित के लिए पंचतंत्र रूपी यह नवनीत तैयार किया ।[1]

इसमें पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों के काल्पनिक कथानक का लेकर सामान्य व्यवहार तथा नीतितत्त्वों का उपदेश दिया गया है । पंचतंत्र का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है इससे इस ग्रंथ की महत्ता एवं लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है । इस ग्रंथ की कुछ प्रसिद्ध कहावतें लीजिये—

---

१० पंचतंत्र आमुख डा० वासुदेव शरण अग्रवाल पृष्ठ १

१ षट्कर्णो भिद्यते मंत्रः । १।११२ ।
२ छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति । २।१८८ ।
३ बुभुक्षितः किं न करोति पापम् । ४।१६ ।
४ दुष्टे दुष्टं समाचरेत् । ५।७० ।
५ मौनं सर्वार्थसाधनम् । ४।५१ ।

"एक हाथ से ताली नहीं बजती" इस लोकोक्ति का मूल "न चैकेन न हस्तेन तालिका संप्रपद्यते" पंच० २।११८ में मिल जाता है। राजस्थानी लोकोक्ति 'पुरखो वणो के माड मोडे' के साथ पंचतंत्र की निम्नलिखित कहावत को मिलाकर पढ़िये।

"उत्पतितोऽपि चपलो भाण्डं भंक्तुं न शक्नोति" पंच० १।१४८ ।

४—संस्कृत के काव्य और कहावतें

संस्कृत सुभाषितों के जो अनेक संग्रह प्रकाशित हुए उनमें कूटपद स्वभावादि वर्णन काव्यमय चमत्कार आदि सबका समावेश हुआ है किन्तु हमें केवल उन सुभाषितों से तात्पर्य है जिनसे आधुनिक लोकोक्तियों के किन्हीं मूल रूपों का पता चलता है अथवा आकारप्रकार की दृष्टि से जिनकी गणना प्राग्लोकोक्तियों अथवा लोकोक्तियों में की जा सकती है। इस संबंध में सर्वप्रथम कालिदास के ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। कवि-कुल-गुरु की निम्नलिखित उक्तियाँ पठित समाज में कहावतों की भाँति प्रचलित हैं—

१—स्नेहः पापशंकी। २—प्रभावनिष्ठानि पुष्टः फलानि। ३—रत्नं समागच्छतु कांचनेन। ४—विषमप्यमृतं क्वचिद् भवेत्। मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्। ५—तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। ७—आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया। ८—शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्। ९—मनोरथानामगतिर्न विद्यते। १०—याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। ११—नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमि क्रमेण।

लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक का विशेष महत्त्व है। इस नाटक में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण लीजिये—

१—सुदं मे णिउणिए सुणादि बहुसो मदो किल इत्थि आजणस्स विसेस मण्डणं त्ति। अवि सच्चो एसो लोअवादो। तृतीय अंक।

निपुणिका—मैं बहुत सुना करती हूँ कि मदिरा पीने से स्त्रियाँ बहुत सुन्दर लगती हैं। यह लोकवाद (कहावत) सच है क्या?

२—कौशिकीए—जीवि वच्छ लोअप्पवादो आसामि सुहं दुक्खं वा हिअअं अत्तमत्तणा कहेदि त्ति । पंचम अंक ।

व्याख्या—यह लोकप्रवाद है कि अपना मन आगे आने वाले सुख या दुःख सभी बता देता है ।

इस नाटक में जहाँ लोकवाद अथवा लोकप्रवाद शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ वहाँ भी स्थान-स्थान पर कहावतों की अवतारणा की गई है । उदाहरणार्थ—

१—पञ्जरब्भट्ठो विहङ्गओविअ विडालिआए आलोए पडिदो । चतुर्थ अंक ।
पिंजड़े से छूटा हुआ कबूतर बिल्ली के सामने आ पड़ा ।

२—दद्दुरा वाहरन्ति त्ति किं देवो पुहवीए वरिसिदुं विरमदि । चतुर्थ अंक ।
पृथ्वी पर पानी बरसाने के लिए देव मेंढकों की टर्र-टर्र की बाट थोड़े ही जोहते हैं ।

कालिदास के अनन्तर बाण के हर्षचरित में से कुछ सूक्तियों के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें कुछ प्राज्ञोक्तियाँ हैं और कुछ लोकोक्तियाँ—

१—अतिकुतूहलवाहिनी कामिनीयता नदी । २—उपयोगं तु प्रीतिर्न विचारयति । ३—औरसवर्तनं हि शीलं लोकस्य । ४—गृहपतेरनुमन्तव्या एव लोकश्रुतयः । ५—को हि नाम सहते विपक्षवत्तामाम् । ६—अश्वा न विकल्पयन्ति वाचम् । ७—अन्तरसहाया हि सत्पात्राः । ८—पुनानमो निमित्तेन स्वप्नमारभन्ते लोके । मित्रो हि दोषान्धकारस्य कामला विकारः । १०—स्त्रियो हि विषमाः सुखाम् ।

सुभाषितों की दृष्टि से महाकवि भारवि का काव्य अत्यन्त प्रसिद्ध है । " हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः " " प्रकाशते सुभाषितं वाङ्मयम् ", ' सहसा विदधीत न क्रियाम् ' आदि सुभाषित को लेकर तो अनेक कहानियाँ भी प्रायः सुनी जाती हैं ।

हर्ष के नैषधचरित में भी " आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः " जैसे सुभाषितों का अभाव नहीं है ।

सोमदेव के 'यशस्तिलक' में जिसकी रचना सन् ९५९ में हुई थी कहावतों का प्रचुर प्रयोग मिलता है । यथा

१—कुर्वन् न यः नीयमाने मुर्खो पुंसः पुत्रस्तस्य दुर्लभकानि ।
२—अज्ञानमार्गावलम्बी प्रमादानुरोधादात्मनाधि कार्यं ॥
पुंसः प्रमादी विफलः समस्तो मतीवकं च कल हेतुकस्य ।
३—समत्वपाहिन तु वर्तितव्यं महाजनो येन गतः स पन्थाः ।

४—नैवं हि दूरेऽपि गिरीशयामागमात्मागतलोकैस्तमयमेव ।

५—सर्वदा हे पुत्र न चकुदत्तानि ।

६—इतस्तटमितो व्याघ्रः कथमस्तु मानिनो गतिः ।

७—को नाम शीतार्तजनमम्बुराशेरपायनार्थं समर्थं नयेत ।

८—राजपरिगृहीतं तृणमपि काञ्चनीभवति ।

९—शठं प्रति शाठ्यमाचरेत ।

१०—अन्धवर्तकीयम् ।

११—को नाम शीतमारीसूतके कल्पमनु पुनीतः ।

१२—अस्ति च लोपासि बहुनिम्नानि इति विदुर्वा प्रवादः ।

पालि भाषा की कहावतें—

प्राचीन साहित्य में लोकोक्तियों के अध्ययन की दृष्टि से बौद्ध साहित्य का विशेष महत्व है । तत्कालीन समाज का जैसा चित्र इस साहित्य में उपलब्ध होता है वैसा संभवत संस्कृत-साहित्य में भी नहीं । अभिजातवर्ग की भाषा होने के कारण संस्कृतज्ञों का ध्यान पाण्डित्य प्रदर्शन तथा अभिव्यक्ति अभिव्यंजित की ओर विशेष रहा और संस्कृत राज्याश्रय में ही पलती रही । किन्तु बौद्ध वाङ्मय के संबन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता । बुद्ध ने स्वयं अपने उपदेश तत्कालीन लोकभाषा में दिये । उपदेश के लिए प्राचीन गाथाओं का प्रयोग बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषता है । इस धर्म के अनेक ग्रन्थों में गाथाएँ अन्तर्मुक्त मिलेंगी। बौद्ध वाङ्मय के ९ अंगों में किये हुए वर्गीकरण में गाथा एक स्वतन्त्र वर्ग ही माना जा सकता है । 'संयुक्त निकाय' में पहला वर्ग जो 'सागत्थवग्ग' कहलाता- है एक प्रकार का गाथा वर्ग ही है । इसी प्रकार जातक कथाओं में से भी अधि- कांश का मूल गाथाएँ ही हैं । गाथा-निर्देश के आधार पर ही उप नाम पूरा किया गया है । बौद्ध वाङ्मय में सुभाषितों और लोकोक्तियों की दृष्टि से धम्मपद, उदान जातक इतिवृत्तक आदि विशेषतः उल्लेखनीय हैं । यहाँ धम्मपद और जातकों से कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं ।—

१ न सो धम्मं विजानाति दब्बी सूपरसं यथा । धम्मपद ६४

'दब्बी सूप रसं यथा' यह उपमा कितनी प्राचीन है और कितना सार्वजनिक प्रयोग इसका हुआ है यह कहने की आवश्यकता नहीं ।

२ परिजिण्णमिदं रूपं रोगनिड्डं पभङ्गुरं ।

भिज्जति पूतिसन्देहो मरणन्तं हि जीवितं ॥ धम्म० १४८*

---

* "सदा न फूल में तीसरा सदा न सावन होय ।"

संस्कृत छाया

वेश्यानां हस्तमध्यगतानां बहूनां वस्तूनां तथा च ।
स्थानानां स्थानभ्रष्टानां सखि न आदरं करोति ॥

अर्थात् कहावत में निर्दिष्ट स्थानभ्रष्ट वस्तुओं का कोई आदर नहीं करता।

८. विहवेहि गुणा न घेप्पन्ति । (गाथा ९८९, पृ० १४०)
विभवेन गुणा न गृह्यन्ते । (संस्कृत छाया)

धन से गुण ग्रहण नहीं होता ।

९. जात्यन्धस्स दीवो हत्थगओ निष्फलो च्चेय । गाथा ९११
जात्यन्धस्य दीपो हस्तगतो निष्फल एव । (संस्कृत छाया)

अर्थात् जो जन्मान्ध है उसके हाथ में दीपक देना निष्फल ही है ।

१० विहिणा जं चिय लिहियं भालयलट्ठीए तेण देवेण ।
पच्छा सो वि पसत्तो अण्णह करिउं न हु समत्थो ॥
(गाथा १२९, पृ० २६)

संस्कृत छाया

विधिना यदेव लिखितं भालपट्टे तेन देवेन ।
पश्चात्सोऽपि प्रसक्तोऽन्यथा कर्तुं न खलु समर्थः ॥

११ वल्लहविओयदुक्खं मरणेण विणा न वीसरइ । (गाथा २४१, पृ०५०)
वल्लभवियोग दुःखं मरणेन विना न विस्मर्यते ॥

प्रेमी-जन का दुःख मृत्यु पर्यन्त बना रहता है ।

१२ लक्खिज्जइ अंगणं चिय घरस्स अब्भन्तरे लच्छी ।
(गाथा २४१, पृ० ५०)

संस्कृत छाया

लक्ष्यतेऽङ्गणमेव गृहस्याभ्यन्तरे लक्ष्मीः ।

आँगन से ही घर के अन्दर की लक्ष्मी का पता चल जाता है ।

२ गाथा सप्तशती

गाथा सप्तशती में भी स्थान-स्थान पर लोकोक्तियाँ बिखरी पड़ी हैं ।

उदाहरणार्थ—

१ छेप्पाहिन्तो कणो जाओ ।१।४०
तापूलेभ्यः कणो जातः ।

इसे टीकाकार ने 'लौकिक आभाणक' के नाम से अभिहित किया है।

२ पक्काइं वि निम्बफलाइं नवर काएहिं खज्जन्ति । १।४८
पक्वान्यपि निम्बफलानि केवलं काकैः खाद्यन्ते

नीम के फल यदि पके हुए हों तो भी उन्हें केवल कौए खाते हैं।

३ सो अत्थो जो हत्थे तं मित्तं जं निरन्तरं वसणे ।
तं रूवं जत्थ गुणा तं विण्णाणं जहिं धम्मो । १।५१

धन वही है जो हस्तगत है मित्र वही है जो निरन्तर विपत्ति में साथ देता है रूप वही है जहाँ गुण है और विज्ञान वही है जहाँ धर्म है।

४ अत्थमणम्मि वि रइणो किरणा उड्ढं चिय फुरन्ति । १।८४
अस्तमनेऽपि रवेः किरणा ऊर्ध्वमेव स्फुरन्ति । (संस्कृत छाया)

अस्त होते हुए सूर्य की किरणें भी ऊपर की ओर ही जाती हैं।

५. को जुण्णमज्जारं कंजिएण वेयारिउं तरइ । १।८६
को जीर्णमार्जारं काञ्जिकेन प्रतारयितुं शक्नोति ? (संस्कृत छाया)

बूढ़े बिलाव को दूध-दही आदि के स्थान में कांजी से कौन धोखा दे सकता है?

६ राहुमुहम्मि वि ससिणो किरणा अमयं चिय मुअन्ति । ७।१९
राहुमुखेऽपि शशिनः किरणाः पीयूषमेव मुञ्चन्ति ।

चन्द्रमा की किरणें राहु के मुख में भी अमृत ही बरसाती हैं।

७ सोयरी विणावि कज्जेण गामणियडे चरे चरइ । ५।१२
सूकरी विनाऽपि कार्येण ग्रामनिकटे चरति ।

सूकरी बिना काम ही गाँव के पास जा चरती है।

८. वंकस्स उज्जुअस्स य संबन्धो किं चिरं होइ । ५।२४
ऋजुकस्य वक्रस्य च संबन्ध किं चिरं भवति ?

टेढ़े-सीधे का संबन्ध भी क्या चिरस्थायी हो सकता है?

९. न रसेण विणा गुळो होइ । ५।५४
न रसेन विना गुडो भवति ।

ईख के रस के बिना गुड़ नहीं हो सकता।

अपभ्रंश की कहावतें

१ पुष्पदन्त

कर्म-सिद्धान्त से सम्बन्ध रखने वाली कहावतें प्रायः भारत की सभी भाषाओं में मिलती हैं। अपभ्रंश में भी ऐसी कहावतों का प्राचुर्य है। को तं पुसइ णिडालइ लिहियउ (पुष्पदन्त महापुराण संधि २४ कडवक ८ पंक्ति ८ वीं) अर्थात् ललाट में लिखे हुए को कौन मिटा सकता है? 'भुंजिज्जइ फलु भुंजइ सव्वु लोउ' (जसहरचरिउ संधि) अर्थात् सब लोग अपने किये का फल भोगते हैं[1]। इस प्रकार की अनेक कहावतें अपभ्रंश से उद्धृत की जा सकती हैं। कुछ कहावतें ऐसी हैं जो न जाने कितने युगों से इस देश में चली आ रही हैं। उदाहरण के लिये पुष्पदन्त के महापुराण की ही एक कहावत लीजिए — उज्जड परदेसु परायवालु परवसु जीविउ परविन्नु णासु। इसी आशय की बहुत सी उक्तियां महाभारतादि ग्रन्थों में मिलती हैं। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है करयल कणय वलय पवि लोयणि हो कि पियाहि दप्पणम् (Vol II. L. II 8) अर्थात् कर स्थित स्वर्ण-कंकण को देखने के लिए क्या दर्पण हाथ में लिया जाता है? अथवा 'करे कंकणु कि आरिसे जोइए? (सुद० च० ७२) विमुयरविहि पय कोइ परिरक्खइ' के समानान्तर लोकोक्तियां भारत की प्रायः सभी भाषाओं में मिलती हैं।

'गरुडस्सपुं कि डसियइ सप्पें?' अर्थात् गरुड को क्या साँप डस सकता है? यह पुष्पदन्त की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है जिसका प्रयोग आगे चल कर अपने भी रामयशो रसायन रास में श्री केसराज मुनि ने भी किया है—

> "रावण आगे भामनियां सुं, आरति काइवि आणो;
> दूरि भुजंगे गरुड न बीहे ओ ओखाणो जाणो"
>
> (पृष्ठ ११ छंद १५)

---

१ मिलाइये—हौउन हौड विराय (प्रबंधचिन्तामणि)

(श्री रामयशोरसायन रास)

अर्थात् रावण स्त्रियों से कहता है कि इस प्रकार आकुल-व्याकुल क्यों हो रही हो ? पीछे से आक्रमणकारी आ रहे हैं तो उनका मुझे क्या डर ? यह कहावत तो प्रसिद्ध ही है कि गरुड़ बहुत से साँपों से कभी नहीं डरता ।१

इस महापुरुष की निम्नलिखित कहावतें भी उल्लेखनीय हैं—

(१) "को गणइ पिसुणु भसियउ मयलंछणु कुक्कुर भसमाणु सारमेउ" दुर्जनों की निन्दा की परवाह नहीं करनी चाहिए। चन्द्रमा की ओर कुत्ते व्यर्थ ही भौंका करते हैं। इस कहावत के सम्बन्ध में सबसे बड़ी कुतूहल की बात यह है कि शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समानता रखने वाली एक ऐसी ही कहावत अंग्रेजी में भी उपलब्ध होती है "The moon does not heed the barking of dogs" राजस्थानी आदि प्रादेशिक भाषाओं में यह कहावत हाथी के पीछे बहुत से कुत्ते यों ही भौंका करते हैं इस रूप में प्रचलित है ।२

(२) कुडवेण जलहु को कलमिहाणु अर्थात् कुडव (एक छोटा माप) से क्या समुद्र मापा जा सकता है ? (३) णत्थि सहावहु ओसहु अर्थात् स्वभाव की कोई औषधि नहीं है३ । (४) सूयसुत्तें बज्झइ, मसउण हत्थि णिबज्झइ अर्थात् मक्खी के जाल में मक्खी ही फँसती है हाथी नहीं। तात्पर्य यह है कि मूर्ख ही धोखा खाता है बुद्धिमान् नहीं। (५) अण्णु कि णाहहु मत्थइ सिंगइ' ? और क्या प्रेमी के माथे पर सींग होते हैं ? राजस्थान में यही कहावत दूसरे रूप में प्रचलित है "मूरख के माथे सींग कोनी होय" अर्थात् मूर्ख के सींग नहीं होते वैसे वह पशु ही है ।

२ धनपाल

धनपाल का भविसयत्तकहा अपभ्रंश का एक दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें स्थान-स्थान पर अनेक कहावतें बिखरी पड़ी हैं। उदाहरण के लिए निम्न लिखित कहावतों को लीजिये—

१ 'कि घिउ होइ विरोलिए पाणिए' अर्थात् पानी के बिलोने से कहीं घी पैदा हो सकता है ? (भवि २ कडवक ७ पंक्ति ८)

१ मिलाइये — मोर घणेरै में को डरैगी

२ मिलाइये — हाथियाँ को बैल घणो ही भैंसका भुस्या करै है'

(राजस्थानी कहावत)

३ मिलाइये—स्वभावास औषध नाहीं । (मराठी)

४

२ अइमारि सव्वहो गुण णासइ (संधि ३ कडवक १२, पंक्ति ५) अर्थात् अति सब गुणों का नाश कर देती है।

३ 'होइ सव्वु परिवाडिए पुण्णइं' (संधि ३ कडवक १४ पंक्ति ११) अर्थात् पुण्य-परम्परा से ही सब कुछ होता है। भर्तृहरि ने भी अपने शृंगार शतक में यही कहा है—"पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा पुण्यैर्विना नहि भवन्ति समीहितार्थाः।"

४ 'परहो सरीरि पाउ जो भावइ तं तासइ वलेविं संतावइ' अर्थात् दूसरे पर जो बुरा सोचता है वह उसी पर पड़ता है और उसे ताप पहुँचाता है। (संधि ६ कडवक १० पंक्ति ३) 'खाड़ खने जो और को ताको कूप तयार' इसी से मिलती जुलती कहावत है।

५ "जहा जेण वत्तं तहा तेण पत्तं इमं सुव्वए सिठ्ठलोएण वुत्तं।
सुपायन्नवा कोद्दवा जत्त माली कहं सो नरो पावए तत्थ साली॥"

(संधि १२ कडवक ३ पंक्ति २४-२५)

अर्थात् जैसा तुम बोओगे वैसा ही पाओगे। कोदव बोकर तुम्हें धान कैसे मिल सकता है? 'बोवै पेड़ बबूल को आम कहाँ से होय?'

६ 'तं लाहउ जं जाणि जीविज्जइ' अर्थात् जीने को लाभ ही समझना चाहिए। इस उक्ति को पढ़कर महाकवि कालिदास की निम्नलिखित पंक्ति का स्मरण हुए बिना नहीं रहता—"क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ। (रघुवंश viii) अर्थात् यदि कोई प्राणी एक क्षण भी जीता है तो उसे लाभवान् ही समझना चाहिए।

भविस्सयत्त कहा का लेखक हेमचन्द्र से दो शताब्दी पहले अर्थात् १० वीं शताब्दी में हुआ था यद्यपि उनकी निश्चित तिथि का पता नहीं है।

२ मुनि रामसिंह

१० वीं शताब्दी के राजस्थानवासी मुनि रामसिंह की रचनाओं में भी कुछ कहावतें मिलती हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यांश को लीजिये—

"सप्पि मुक्की कंचुलिय जं विसु तं ण मुएइ।"

अर्थात् सर्प केंचुली छोड़ देता है पर विष नहीं छोड़ता।

---

१ मिलाइये—'बहुएं सलिल-विरोलियइं कर चोप्पडउ ण होइ' (पर० प्रकाश २ ७४)
अर्थात् बार-बार पानी मथने से हाथ चिकने-चुपड़े नहीं होते।

४ हेमचन्द्र

आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत दोहों में भी स्थान-स्थान पर कहावतें बिखरी पड़ी हैं। उदाहरणार्थ कुछ कहावतें यहाँ दी जा रही हैं—

"महु हिअउं तइं ताए तुहुं सवि अन्नें विनडिज्जइ।
पिअ काइं करउं हउं काइं तुहुं मच्छें मच्छु गिलिज्जइ॥"

अर्थात् मेरा हृदय तुम्हारे द्वारा, तुम उसके द्वारा और वह भी अन्य के द्वारा विडम्बित की जाती है। प्रिय ! क्या मैं करूँ और क्या तुम करो ? मछली मछली के द्वारा खाई जाती है। यह मत्स्य-न्याय कितना प्राचीन है, कहा नहीं जा सकता।

'वेसु वहवण वि मुण्डियउं जसु खल्लिहडउ सीसु' अर्थात् जिसका सिर गंजा है उसे तो विधाता ने ही मूड़ दिया।

'जइ विवरी री बुद्धडी होइ विणासहो कालि' अर्थात् विनाश-काल में बुद्धि विपरीत हो जाती है। यह लोकोक्ति तो आज भी अपने तत्सम रूप ('विनाशकाले विपरीत बुद्धि') में प्रायः सर्वत्र सुनी जाती है।

'सुइणन्तरि पिए पाणिएण पिअ पिआस कि छिज्जइ।' अर्थात् हे प्रिय ! स्वप्न में पिये पानी से क्या प्यास बुझ सकती है ?

५ अब्दुल रहमान

कवि अब्दुल रहमान कृत 'सन्देश रासक' में भी निम्नलिखित लोकोक्ति का प्रयोग हुआ है—

मह हिय हियउ पहु पत्तु पिउ हुई उवम इहु लहु जयम।
तिसनिय गइय उवाअणि विज्ज हराविय धिय सवण ॥१९१॥

1 (सन्देश रासक—तृतीय प्रक्रम)

छन्द के परार्ध का तात्पर्य है 'बकरी माँगने के लिए गई थी अपने कान भी दे आई।' चौबेजी गये छब्बे होने को दूबे होकर आये आदि इसी प्रकार की लोकोक्तियाँ हैं।

श्लोक के पूर्वार्द्ध में इस कहावत के लिए 'उवम' अर्थात् उपमा शब्द का प्रयोग हुआ है। अरबी भाषा में Mathal शब्द कहावत के लिए प्रयुक्त है जिसका

अर्थ ही है उपमा दृष्टान्त अथवा सादृश्य। इस भाषा में अन्य भाषाओं की अपेक्षा कहावती उपमाओं का बाहुल्य भी है।[1]

प्रो० हरिवंश कोछड़ ने अपने ग्रन्थ 'अपभ्रंश–साहित्य' में अनेक अपभ्रंश की लोकोक्तियों का उल्लेख किया है जिनमें से कतिपय महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

१ कच्चें पल्लट्टइ को रयणु पित्तलइ हेमु विक्कइ कवणु
(जंबूसामि चरिउ २.१८)

अर्थात् काँच से रत्न को कौन बदलेगा ? पीतल से सोने को कौन बेचेगा ?

२ एक्कें हत्थें ताल कि वज्जइ
कि मरेवि पंचमु गाइज्जइ। (सुदंसण चरिउ ८.३)

अर्थात् एक हाथ से ताली कैसे बजाई जा सकती है ? क्या मरने पर भी पंचम गाया जाता है ?

३ वर सुवण्ण कलसहो उवरि, ढंकणु कि खप्पर किज्जइ (सुदं० ८.१६)

क्या सुवर्ण-कलश के ऊपर खप्पर का ढकना दिया जाता है ?

४ घरि पलित्तंमि खणि सक्कइ को कूवए। (भावना संधि-प्रकरण ५७)

अर्थात् घर के प्रदीप्त होने पर कौन कुआँ खोद सकता है ?

५ कज्जइ सरइ बुहारी बद्धी सोहइ गेहु करेइ समिद्धी।
जइ पुण वि सुई सुय किज्जइ ता कि कज्ज सीए छुहिज्जई ?
(काल स्वरूप कुलक ॥१७॥)

अर्थात् बँधी बुहारी से कार्य सिद्ध होता है खुली से नहीं। उसे जुदा-जुदा करने पर क्या काम निकल सकता है ? बँधी बुहारी से ही घर की शोभा है। घर में एकता के महत्व को प्रतिपादित करने वाली यह राजस्थानी लोकोक्ति इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है—

"बँधी भारी लाख की, खुल्ली कौड़ी ख्वार॥"[2]
बँधी बुहारी लाख की

---

१ Introduction to the Proverbs of Arabia by Prof. H. A. R. Gibb M. A. (Racial Proverbs p xxxvii)

२ इसका रूप यों भी मिलता है—
बँधी बुहारी लाख।
खुल्ली चाड़ी खाख॥

विदेशी कहावतों का इतिहास

क. बाइबिल की कहावतें

पौरस्त्य देशों में जिस प्रकार अत्यन्त प्राचीन काल से कहावतें उपलब्ध होती हैं, उसी प्रकार पाश्चात्य देशों में भी। ईसाइयों के प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ बाइबिल में कहावतों के इकत्तीस प्रकरण हैं किन्तु बाइबिल की कहावतें ही सबसे प्राचीन नहीं हैं क्योंकि विद्वानों के मतानुसार बाइबिल की कुछ कहावतों का मूल मिस्र के प्रसिद्ध बादशाह अमेनोफिस आदि के सुभाषित-संग्रहों में मिल जाता है। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में 'बाइबिल के Proverbs नामक प्रकरण का जो महत्त्व पहले कभी प्रकट नहीं हुआ था वह अब तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात हो रहा है।'[1]

ख. प्राचीन कहावतें

ईसा के पूर्व की कहावतों का प्रयोग हमें मिलता है। सेंट पाल १ कोरिंथियन १५ ३३ में 'दुर्जन की संगति से सज्जन बिगड़ जाता है' इस लोकोक्ति का प्रयोग किया है किन्तु एक ग्रीक नाट्यकार मिनेंडर (४०० ई० पू०) ने अपने एक नाटकीय पात्र के मुख से इसी लोकोक्ति का प्रयोग करवाया है और कौन जाने यह लोकोक्ति मिनेंडर से भी पहले प्रयोग में आती रही होगी। हमारे यहाँ भी 'असंत संसर्गेण सत्स्वपि मतिविभ्रम' का प्रयोग मिलता है।[2]

पेनसिलवेनिया-विश्वविद्यालय में असीरिया की भाषा, इतिहास आदि के प्रोफेसर डा० एस्० एन्० क्रेमर ने मिट्टी के दो बड़े पट्टों का पता लगाया है जिन पर, कहा जाता है कि दुनिया की सबसे पुरानी लिखित कहावतें और सूक्तियाँ अंकित हैं। इस्तम्बूल-म्यूजियम के सैकड़ों साहित्यिक महत्त्व के पट्टों में उक्त

---

१ भूमिका 'मेवाड़ की कहावतें' भाग १ पृष्ठ २।

२ महाराष्ट्र वाक्सम्प्रदाय-कोश दूसरा विभाग यशवंत रामकृष्ण दाते और चिन्तामणि गणेश कर्वे प्रस्तावना पृष्ठ १८

दो पट्टे भी प्राप्त हुए थे। सुमेरियन कहावतों का यह संग्रह आज से ३५०० वर्ष पहले हुआ था। डा० क्रेमर की गणना के अनुसार बाइबिल की कहावतों से १००० वर्ष से भी पूर्व ये कहावतें संगृहीत हो चुकी थीं। इन कहावतों के रूपान्तर आज भी प्रचलित हैं। कहावतों में से एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है

'जीने की अपेक्षा निर्धन का मरना अच्छा, यदि उसे रोटी मिलती है तो नमक नहीं मिलता, यदि नमक मिलता है तो रोटी नहीं मिलती। यदि उसे घर मिलता है तो पशु रखने की जगह नहीं मिलती, यदि पशु रखने की जगह मिलती है तो घर नहीं मिलता।[1]

चणा जठे दांत ना अर दांत जठे चणा ना (राजस्थानी)

अर्थात् जहां चने हैं वहां दांत नहीं और जहां दांत हैं वहां चने नहीं।

अर्थात् सब प्रकार की सुविधाएँ एक साथ नहीं मिलतीं जहां धन है वहां विद्या नहीं जहां विद्या है वहां धन नहीं।

मिस्रवासियों में से Kegumne Imhotep और Patahotep ने अपने ज्ञान और अनुभव को कहावतों के रूप में व्यक्त किया था। उक्त तीनों पदाधिकारियों का समय ईसा से २५० वर्ष पूर्व माना जाता है। इससे पता चलता है कि मिस्र में कहावतों की परम्परा कितनी प्राचीन है। कनफ्यूशियस से भी बहुत पहले चीन के लोगों ने साहित्यिक कहावतों की सृष्टि की थी और चीन देश के इस ऋषि ने शिक्षा देने के उद्देश्य से कहावतों का एक सुन्दर साधन के रूप में प्रयोग किया था।

Solon, Phocylides और Theognis जैसे ग्रीस के महाकवियों के प्रादुर्भाव से पहले ही वहां की कहावतों ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था। उनसे पूर्ववर्ती नीतिकारों और परवर्ती ज्ञान प्रसिद्ध व्यक्तियों ने विगत पीढ़ियों के लोक-संचित ज्ञान को साहित्यिक रूप देने का प्रयत्न किया था।

सैकड़ों वर्ष पहले ग्रीस में *Know Thyself* नामक सूक्ति प्रचलित थी जिसका समानान्तर रूप 'आत्मानं विद्धि' के रूप में हमारे यहाँ मिल जाता है। स्पार्टा के लोग अपने अल्पभाषित्व के लिए प्रख्यात थे व्यर्थ के वाग्विस्तार को अनावश्यक समझते थे। उनके यहां अल्पभाषी के लिए Laconic शब्द

---

१ The Hindustan Time Weekly Sunday, March 9 1052 P 13

रूढ़ हो गया था। तत्त्वपूर्ण अल्पार्थक छोटे-से चटकदार वाक्य के लिए Laconic Speech का प्रयोग होता था।

राजस्थानी भाषा में एक कहावत प्रचलित है 'धर्म री गाय रा दांत कोई देखणा' अर्थात् धर्म की गाय के दाँतों का क्या देखना ? इसकी समानान्तर अँगरेजी कहावत है—Look not a gift horse in the mouth. यह कहावत यद्यपि नवीन-सी मालूम पड़ती है और ऐसा लगता है कि इंगलैंड में ही इसका उद्भव हुआ है किन्तु खोज करने पर पता चलता है कि यह कहावत अत्यन्त प्राचीन है। यह ईसा की चौथी शती पूर्व से भी पुरानी है और हो सकता है कि उससे भी पहले की हो क्योंकि इस शती के अन्त में होने वाले सेंट जेरोम ने इस लोकोक्ति का प्रयोग किया है। इसी प्रकार Liars should have good memories. इस लोकोक्ति का प्रयोग भी सेंट जेरोम की कृतियों में हुआ है। उसके भी पूर्ववर्ती एक लैटिन-ग्रन्थ में यह लोकोक्ति उपलब्ध होती है[1]—यात्रा में अच्छी संगति गाड़ी के समान है[2]। इस लोकोक्ति का प्रयोग भी एक प्राचीन लैटिन ग्रन्थमें मिलता है। (Quintilian Inst I 4)।

साहित्यिक लेखक और कहावतें

अँगरेज कवि चासर, फ्रेंच ग्रन्थकार मातेन्य आदि ने अपनी कृतियों में लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। जगत्प्रसिद्ध नाट्यकार शेक्सपियर ने तो अपनी रचनाओं में ही कहावतों का प्रयोग नहीं किया उसने तो अपने अनेक नाटकों के शीर्षक ही कहावतों के रूप में रखे। जैसे All's well that ends well, Much Ado about nothing आदि।

रानी एलिजाबेथ बादशाह जेम्स तथा चार्ल्स के समय में अमीर-उमराव प्रसिद्ध व्यक्ति तथा प्रख्यात लेखक अपनी बातचीत तथा पत्र-व्यवहार में अपनी बनाई हुई तथा पूर्व प्रचलित कहावतों का प्रचुर प्रयोग करते थे। रानी एलिजाबेथ को स्वयं कहावतें गढ़ने का शौक था। अपनी बुद्धिमत्ता तथा प्रगल्भता के लिए उसका नाम लोकविश्रुत है। प्रसिद्ध है कि एक बार सर वाल्टर रैले ने रानी के महल की खिड़की के ऊपर निम्नांकित पंक्ति लिखी थी

---

1 Oblitus veteris proverbii mendaces memores esse oportere

2. Good company on a journey is worth a couch.

Feign would I rise, but that I fear to fall

रानी ने जब उक्त पंक्ति को पढ़ा तो निम्नलिखित पंक्ति द्वारा इसकी पूर्ति कर दी

If thy heart fail thee, do not rise at all

पाश्चात्य कहावतों के इतिहास में रानी एलिजाबेथ के युग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। Drayton ने कहावत में एक चतुर्दशपदी (Sonnet) लिखी और पार्लियामेंट के एक सदस्य Thomas Jones ने तो एक बिल पर बहस के सिलसिले में अपनी पूरी वक्तृता ही कहावतों के रूप में दी।[1]

स्पेन के साहित्य में सर्वेंटिस और उसके प्रसिद्ध उपन्यास 'डान क्विक्जोट' को ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त है। इस उपन्यास के पाठक जानते हैं कि सैंकोपैंजा के मुख से किस प्रकार कहावतों पर कहावतें निकलती चलती हैं। इस ग्रन्थकार ने तो भाषान्तर के साथ Sancho Panza s Proverbs नाम से उनका एक स्वतंत्र संग्रह भी प्रकाशित करवाया है।

लैटिन कवि प्लाटस फ्रांस के दो प्रसिद्ध लेखक राबेले व मान्टेन तथा फुलर ने (जो कालरिज के मतानुसार वाग्वैदग्ध्य में अनुपम समझा जाता है) कहावतों का जितना प्रचुर प्रयोग किया है उससे पता चलता है कि साहित्यिक लेखकों ने भी कहावतों को कितना अपनाया है। इंग्लैंड के कहावती साहित्य से जिनको पूर्ण परिचय नहीं वह Hudibras का रसास्वादन नहीं कर सकता क्योंकि उसमें जितने प्रसंग आते हैं वे कहावतों के बिना ज्ञान के समझ में नहीं आ सकते।[2]

सर वाल्टर स्काट ने भी स्थान-स्थान पर अपने उपन्यासों में लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। Tales of my Landlord नामक कथा-संग्रह में उसने कहावतों का अत्यधिक प्रयोग किया है। इसी प्रकार अपने Talisman नामक उपन्यास में फकीर का वेश धारण किये हुए सालादिन के मुख से पात्र की विशिष्टता के अनुरूप अनेक कहावतें कहलवाई गई हैं।

घ कहावतों के नाट्य प्रयोग

फ्रांस के राजा लुई १४वें की राज-सभा में भी कहावतों का बड़ा आदर होता

---

1 Introduction P XIV (The Oxford Dictionary of English proverbs compiled by W G Smith)

2 Lessons in Proverbs by R C Trench P 3-4

था। यहीं कहावतों के आधार पर हास्य-नाटक प्रहसन नृत्य-नाटय आदि की रचना हुआ करती थी। लोक-कथाओं की भाँति इन नाटकों मे भी कहावतों का समावेश हुआ करता था। सन् १६५४ ई० में एक कहावतवर्धी नृत्य-नाटय की सृष्टि की गई थी। इसमें ज्यो-ज्यों एक कहावत बोली जाती थी त्यों-त्यों उसीके अनुरूप एक एक नया प्रवेश दृष्टिगोचर होता था। उदाहरण के लिए एक फ्रेंच कहावत लीजिए—He threatens who is afraid इस कहावत के अनुरूप दृश्य उपस्थित करने के लिए वीरम्मन्य कुछ लोग तथा दो-चार शान्त प्रकृति के गम्भीर नागरिक रंगमंच पर उपस्थित हो नृत्य-नाटय प्रस्तुत करते थे। अन्त में शान्त प्रकृति के नागरिकों द्वारा तथाकथित वीर भयभीत किये जाते थे।[1]

ह्रास

किन्तु, आगे चलकर कहावतों का महत्त्व घटने लगा। इसका एक कारण तो यह था कि जब बिना सम की सूझ सर्वसामान्य कहावतों का प्रयोग प्रचुरता से होने लगा तो स्वभावत ही उनके विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। इस प्रकार की कहावतों के Cross Answers तैयार होने लगे। उदाहरणार्थ दो कहावतें लीजिए

1 More the merrier

2. Pride of the rich makes the labours of the poor

इनके निम्नलिखित Cross Answers दिये गये हैं

I Not so ! one hand is enough in a purse

2. Not so the labours of the poor make the pride of the rich

सन् १६११ ई० में इस प्रकार के Cross Answers का एक संग्रह भी पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।[2]

१७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ तथा १८ वीं शताब्दी में कहावतें इतनी उपेक्षणीय समझी जाने लगीं कि लार्ड चेस्टरफील्ड को कहना पड़ा कि शिष्टजनोचित व्यक्ति

१ चमत्कारिक्यानुं तत्त्वदर्शन फिरोजशाह रुस्तमजी मेहता पृ० १६५ १६६।

२ डाक्टर सत्येन्द्र ने अपने 'ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन' पृष्ठ५४१ ५४२ में Cross Answers से मिलते-जुलते लोकोक्तियों के एक प्रकार 'यहगडू' का उल्लेख किया है। 'गहगडु' में सुख की भावना को 'गर्व यहगडू' द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। इसमें दो व्यक्तियों की उक्तियाँ रहती हैं। एक व्यक्ति सुझाव रखता है कि ऐसा हो तो 'यहगडू गर्व' अर्थात् आनन्द आवे दूसरा उन सुझावों

कहावतों और ग्राम्य सूक्तियों का कभी आश्रय नहीं लेता किन्तु डिजरेली ने इसका प्रतिवाद उपस्थित करते हुए कहा कि लार्ड चेस्टरफील्ड को यदि कहावतों के इतिहास का ज्ञान होता तो वे ऐसी बात नहीं कहते । [1]

कहावतों के इतिहास से तो यह सुस्पष्ट है कि कहावतें ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव की रश्मियाँ विकीर्ण करनेवाली ऐसी बहुमूल्य मणियाँ हैं जिनका प्रकाश आज भी मन्द नहीं पड़ा है और जो अपने अन्तर्निहित सत्य के बल पर अनन्त काल तक जगमगाती रहेंगी । जब तो जब से मानव-विज्ञान और लोक-वार्ता-शास्त्र का विशेष अध्ययन होने लगा है तब से लोकोक्तियों के वैज्ञानिक अध्ययन का भी महत्त्व बढ़ा है ।

को अस्वीकार करता जाता है जब तक कि उसकी रुचि का सुझाव न आ जाय ।

एक सुझाव मानो यह रखा गया

> जिनके मनोहर भ्यो मना, गुर जनिये को हुद्द ।
> तपूँ रसोई जैसी मुसाफिर वीं भावे गहमहड़ ॥
> नहीं गहमहड़ नहीं महमहड़ ।

इसमें भोजन का उल्लेख है फिर बाल का सुझाव तब भवन का पर मुसाफिर 'नहीं महमहड़' ही कहता रहा ।

अन्त में उसने कहा

> सेत फूल हरियाई डंडी और मिरचों के ठटड़ ।
> हम थोर्टे तुम सिरो मुसाफिर, पी मावै गहगहड़ ॥
> मर्त्र गहगहड़ भर्त्र गहमहड़ ।

1 *Vide* Curiosities of Literature (The Philosophy of Proverbs by Disraeli)

कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन

लार्ड बेकन की इस प्रसिद्ध उक्ति से सभी परिचित हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता और आत्मा के दर्शन उसकी कहावतों में होते हैं। इतना ही नहीं तत्सम्बन्धी इतिहास, रीति-रिवाज, धारणाएँ, विश्वास, जीवन-पद्धति आदि का ज्ञान भी हमें उस देश-विशेष की कहावतों द्वारा हो जाता है। ग्रीस की कहावतों के अध्ययन से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि उस देश का कितना अधिक सम्पन्न दंतकथा, इतिहास और काव्य था है। देवी-देवताओं की पौराणिक गाथाओं के असंख्य प्रसंग इन कहावतों में भरे पड़े हैं तथा उनके प्राचीन इतिहास की अनेक घटनाओं के निर्देश उनकी लोकोक्तियों में सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। इतना ही नहीं, उनकी कहावतें होमर के काव्यों के बहुविध प्रसंगों से भी भरपूर हैं, जिससे स्पष्ट है कि उन लोकोक्तियों के प्रयोक्ताओं का होमर के काव्य से परिचय था क्योंकि बिना उन प्रसंगों की जानकारी के उन कहावतों का मर्म नहीं समझा जा सकता।

रोम की कहावतें ग्रीस की कहावतों की अपेक्षा संख्या में अत्यधिक कम हैं। प्रतिभा और बुद्धि की दृष्टि से रोम के लोगों की ग्रीस के निवासियों से तुलना नहीं की जा सकती। रोम की कहावतों में ऐसी बहुत कम हैं जिनमें पौराणिक किंवा दन्तकथात्मक प्रसंगों का उल्लेख हो। यह भी सत्य है कि रोम के देवताओं की संख्या ग्रीस के देवताओं की अपेक्षा बहुत कम थी। रोम की कहावतों में ऐसी भी बहुत कम हैं जिनमें काव्यगत सौन्दर्य अथवा असामान्य भाव-सुकुमारता के दर्शन होते हों। किन्तु, फिर भी रोम की कहावतों की अपनी स्वतन्त्र विशेषताएँ हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

रोम की बहुत सी कहावतों में नैतिक भावनाओं का प्राबल्य दृष्टिगोचर होता है। रोमनिवासियों की व्यापार-बुद्धि, व्यावहारिकता, मितव्ययिता तथा कठोरता का अच्छा दिग्दर्शन रोम की कहावतों में मिल जाता है। रोम की कृषि-सम्बन्धी

कहावतें इस बात की परिचायक हैं कि वहाँ के निवासी कृषि विषयक कार्यों में कितनी सजीव और प्रबल अभिरुचि रखते थे।[1]

इटली में राजनीतिक कहावतों की संख्या अत्यधिक है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह देश शताब्दियों तक अंशतः या पूर्णतः राजनीतिक दासत्व का शिकार रहा जिसके कारण इस प्रकार की कहावतों में शासन के विरुद्ध आलोचना प्रायः सुनाई पड़ती है। इन लोकोक्तियों में बहुधा पशुओं के रूपकों का प्रयोग हुआ है जिसका मुख्य कारण यह है कि इटली-निवासियों की पशुओं के प्रति बड़ी सहानुभूति है और उनकी पर्यवेक्षण शक्ति भी बड़ी सूक्ष्म है।[2]

"इटली की कहावतें वहाँ के निवासियों की गम्भीर एवं गूढ़ राजनीतिक वृत्ति के रंग में रंगी हुई हैं और उनका ज्ञान उनकी स्वार्थपरता में केन्द्रित हो गया जान पड़ता है। इटली के किसी भी कहावत-संग्रह को उठाकर देखिए तो पता चलेगा *कि प्रत्येक दस कहावतों में से एक कहावत स्वार्थपरक है अथवा संकुचित मनो-*वृत्ति की परिचायक है ऐसा लगता है मानो गुरुवृद्धि के सांसारिक जनों के लिए एक सांसारिक पुस्तक हो।"[3]

ट्रेंच के मतानुसार इटली की कहावतें सन्देह के वातावरण से भरपूर हैं समस्त संसार को वे सन्देह की दृष्टि से देखने की शिक्षा देती हैं उन्हें सारे जगत् में शत्रु ही शत्रु दिखलाई पड़ते हैं। धूर्तता का उनमें चमत्कार मिलता है जीवन के जंजाल को काटने के लिए धूर्तता ही उनकी दृष्टि में सच्चे पथ प्रदर्शक का काम *दे सकती है। मेकियावेली की आत्मा ही मानो इन कहावतों में मुखरित हो उठी* हो। इतना ही नहीं बहुत-सी कहावतों में प्रतिशोध की भावना को अत्यन्त प्रशस्त ठहराया गया है। उदाहरण के लिए इटली की दो कहावतें लीजिए, जिनमें कहा गया है—

(१) प्रतिशोध ईश्वर के लिए खाद्य है (२) प्रतिशोध के लिए समय और स्थान की ताक में रहना चाहिए, क्योंकि जल्दी में भली-भाँति प्रतिशोध नहीं लिया जा सकता।

---

1 Lessons in Proverbs by Trench (p 40-50)

2. Racial Proverbs (Introduction to the Proverbs of Italy—Emilo Bodrero).

3 Curiosities of Literature London 1838 p 391

किन्तु, इसका अर्थ यह न समझा जाय कि इटली की सभी कहावतें इसी प्रकार की हैं। वहाँ अच्छी कहावतें भी मिलती हैं। उदाहरणार्थ—For an honest man half his wit is enough the whole is too little for a knave [1]

ट्रेंच ने कहावतों की दृष्टि से स्पेन की भाषा को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है। इस भाषा की कहावतें गुण तथा संख्या दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध हैं। चान त्रिमार्ट ने स्पेन की कहावतों का एक हस्तलिखित संग्रह तैयार किया था जिसमें कहावतों की संख्या २५ से ३० हजार तक पहुँच गई थी। पहले यह संग्रह रिचार्ड हृदवर के पुस्तकालय में था (कट० ९ १६९७)। कहावतों का यह संग्रह बड़ी तत्परता और तन्मयता से तैयार किया गया था। इसके संकलयिता के अनुचरों में से जो कोई भी कहावत लाकर उसे देता उसे वह पारिश्रमिक के रूप में अवश्य कुछ दिया करता था और जिस श्रेणी के व्यक्ति से उसे यह कहावत प्राप्त होती उसका भी पूरा ब्यौरा वह अपने संग्रह में दर्ज कर लेता था।

क्या युवक और क्या वृद्ध स्पेन के सभी लोग अपनी दैनिक बातचीत में कहावतों का प्रचुर प्रयोग करते हैं। उनकी दृष्टि में कहावतें जीवन की समस्याओं पर मार्मिक और अविकृत रूप से प्रकाश भी डालती हैं। स्पेन की कहावतों में अभिव्यक्ति की अत्यन्त सुन्दर पद्धति देखी जाती है जिसके परिणाम-स्वरूप स्पेन के साहित्य में भी उनका भरपूर समावेश हुआ है।

स्पेन की कहावतों में सामान्यतः एक प्रकार की गम्भीरता विचारशीलता कुछ विनोद और एक प्रकार की वक्रोक्ति के दर्शन होते हैं। स्त्री-दाक्षिण्य स्वाभिमान स्वातंत्र्य आदि वृत्तियों का दिग्दर्शन भी उनसे हो जाता है। स्पेन की एक कहावत में कहा गया है कि स्त्रियों के हाथ चोट नहीं पहुँचाते—White hands cannot hurt। इसमें स्त्रियों के प्रति कितने सम्मान का भाव प्रदर्शित किया गया है! शेक्सपियर की तरह स्पेन के नाटककार Calderon ने भी अपने नाटकों के कुछ शीर्षक लोकोक्तियों के रूप में रखे हैं।

स्पेन की कुछ कहावतों में अपने पड़ोसी पुर्तगाल के लोगों के प्रति हीन-भाव दिखलाई पड़ता है। एक कहावत में कहा गया है कि स्पेन-निवासी में जितने गुण हैं, उन्हें निकाल दिया जाय तो एक पुर्तगाली बच रहेगा।[2]

1 Trench (p 54–55 & 57).

2 Abstract from a Spaniard all his good quali

रूस की कहावतों में वहाँ के निवासियों के व्यक्तित्व की आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति हुई है। कहा जाता है कि रूस में १० हजार से भी ज्यादा कहावतें हैं। इस विशाल देश ने शताब्दियों से कहावतों के निर्माण में योग दिया है। प्रायः हर एक कहावत एक दूसरे से भिन्न है और मूलतः रूसी है। कहावतों के इस प्राचुर्य और मौलिकता का कारण रूसवासियों का कहावतों के प्रति सहज प्रेम है।

रूस की कहावतों की एक विशेषता ध्यान देने योग्य है। दुनिया के अन्य देशों में प्रेस, पुस्तकों, लोक-पत्रिकाओं आदि ने कहावतों को उनके पुरातन महत्त्वपूर्ण आसन से अपदस्थ कर दिया है, किन्तु रूस के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। आज भी रूसवासियों का अपनी कहावतों के प्रति प्रेम अक्षुण्ण है। केवल वे कहावतें जिनका सम्बन्ध जारशाही से अथवा देवी-देवताओं से है, अब प्रचलित नहीं रह गई हैं। अधिकांश कहावतें आज भी लोगों की जिह्वा पर नृत्य कर रही हैं और सम्भवतः आगे आनेवाली शताब्दियों में भी करती रहेंगी। रूस के लोग कहावतों के इतने प्रेमी क्यों हैं, इसका प्रमुख कारण यह है कि कहावतों को वे अपनी राष्ट्रीय सम्पत्ति समझते हैं। गत शताब्दियों में दर्शन और उपदेश-सम्बन्धी प्रायः सभी कुछ रूस में विदेशों से लाया गया, लेकिन लोक-विज्ञान का सम्बन्ध पूर्णतः अपने देश के साथ ही रहा। इसमें भी गीतों का सम्बन्ध स्त्रियों से तथा परियों की कथाओं का सम्बन्ध बच्चों से रहा, लेकिन जहाँ तक कहावतों की बात है, कहावतें और केवल कहावतें ही समूचे देश की निधि हैं।

रूस की कहावतों का दृष्टिकोण अत्यन्त स्वस्थ है—रुग्णता उनमें नहीं है, छींटाकशी उनमें नहीं पाई जाती। आकार-प्रकार में वे संक्षिप्त हैं और सहज ही ग्राह्य हैं। कहावतों के अतिरिक्त और कोई साधन ऐसा नहीं है जिसमें रूस के सामान्य स्त्री-पुरुष का चित्रण इतनी खूबी के साथ हुआ हो।[1]

अरबी भाषा अपनी लोकोक्तियों के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। अरब के लोगों में समागम अथवा पारस्परिक चर्चा में उत्तमोत्तम कहावतों के प्रयोग की एक

---

ties, and there remains a Portugese (Trench p 53)

1 Introduction to the Proverbs of Russia by Andrew Ivanovich Guershoon LL. B (p xcv xcvi— xcvii)

परिपाटी-सी पाई जाती है। किन्तु आजकल के युवकों में लोकोक्तियों का प्रचार घट रहा है।

अरब की सबसे प्राचीन लोकोक्तियों में रेगिस्तानी जीवन की सामाजिक दशा की अभिव्यक्ति हुई है। किन्तु पुरानी सभी कहावतें इसी प्रकार की नहीं हैं। ऐसी भी कहावतें हैं जो सामान्यतः दुनिया के सभी देशों में पाई जाती हैं किन्तु इस्लाम के उदय के साथ अरब के लोकोक्ति-साहित्य में नूतन विचारों की एक लहर-सी दौड़ गई। मुहम्मद की बहुत-सी शिक्षाएँ अरब में प्रचलित प्राचीन सूक्तियों के विरुद्ध पड़ती थीं। इसलिए मुहम्मद की उन बहुतेरी उक्तियों द्वारा जिन्होंने लोकोक्तियों का रूप धारण कर लिया, अरब में एक नवीन नीति पद्धति का आविर्भाव हुआ। मुहम्मद के अनुयायियों ने भी इस प्रकार की कहावतों की संख्या बढ़ाई।

अरब के लोगों ने जब दूसरे देशों में अपनी विजय-पताका फहराई और जब वे मिस्र, सीरिया, मेसोपोटामिया और फारस की जनता के सम्पर्क में आए तो यह स्वाभाविक था कि अरब के लोकोक्ति-साहित्य पर उन देशों के लोकोक्ति-साहित्य की प्रतिक्रिया होती। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अरब की सभी पुरानी कहावतें विलुप्त हो गईं और नई कहावतों ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया। किसी अंश में तो यह अवश्य हुआ, किन्तु अरब-निवासियों की रूढ़िप्रियता के कारण उनकी कहावतों में परस्पर-विरोधी तत्वों का समन्वय ही हुआ, समून्मूलन नहीं। आज भी हजारों पुरानी कहावतें अरब में प्रचलित हैं।

अरब की कहावतों में परस्पर-विरोधी तत्व इतने हैं कि उनको अरब-निवासियों के मानस का प्रतिबिम्ब नहीं कहा जा सकता। सामान्यतः यह आशा की जा सकती है कि इन लोकोक्तियों में से अधिकांश भाग्यवाद से संबद्ध होंगी, किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। व्यक्तिगत स्वाधीनता और दायित्व पर बल देने वाली कहावतों की संख्या उनसे कहीं अधिक है जिनमें भाग्यवाद का समर्थन हुआ है। खेती से सम्बन्ध रखनेवाली कहावतों की संख्या बहुत कम है। हाँ, सीरिया और मिस्र के कृषकों में अवश्य कृषि-विषयक कहावतें प्रचलित हैं। अरब में ऐसी कहावतों की प्रमुखता है जिनमें व्यापारिक शब्दावली का आलंकारिक प्रयोग हुआ है। आतिथ्य की महिमा बहुत-सी कहावतों में सुरक्षित रह सकी है। शब्द-लाघव और अभिव्यक्ति की समीचीनता अरब की कहावतों में मिलती है किन्तु मानि

सभ्यता का अपेक्षाकृत अभाव है । सच्चा हास्य सम्भवतः मिस्र की कहावतों में ही मिलता है ।[1]

फ़ारसी भाषा बोलनेवाले बातचीत में बड़े चतुर होते हैं और वहाँ भी सम्भव है वे सूक्तियों का प्रयोग करते चले आये हैं । इस भाषा में भी लोकोक्तियों का स्वभावतः ही महत्त्वपूर्ण स्थान है लेकिन फ़ारस की बहुत-सी प्रचलित कहावतें अरबी लोकोक्तियों के अनुवादमात्र हैं । फ़ारसी में शेखसादी की बहुत-सी उक्तियाँ कहावतों की भाँति व्यवहृत होती हैं ।

अरबों के पड़ोसी जो यहूदी लोग हैं उनकी भाषा में भी सुन्दर लोकोक्तियाँ हैं । अन्य भाषाओं में भी इन यहूदियों के सम्बन्ध में बहुत-सी कहावतें निर्मित हैं । इन लोगों में स्त्रियों के प्रति जो तुच्छ भावना है वह इनकी कहावतों में भी भली-भाँति प्रतिबिम्बित है ।

टर्की की कहावतें सामान्यतः बहुत छोटी होती हैं क्योंकि टर्की भाषा में सम्बन्ध-सूचक सर्वनाम है ही नहीं । कुछ आधुनिक कहावतों को छोड़ कर टर्की की प्रायः सभी कहावतें प्राचीन हैं—बहुत-सी कहावतों का सम्बन्ध उस युग से है जब टर्की के लोग मध्य एशिया में खानाबदोश और कृषक-जीवन व्यतीत करते थे । इन कहावतों में जानवरों के रूपकगत प्रयोग बहुत हैं । टर्की की कहावतों में जटिल-से जटिल विचारधारा को भी सरलतम पद्धति द्वारा व्यक्त करने की क्षमता है । टर्की के लोगों में बातचीत करते समय प्रायः एक-आध कहावत का प्रयोग अवश्य होता है । इन कहावतों को पढ़कर ईसामसीह की उक्तियों का स्मरण हो आता है जिनमें गड़ेरियों मेमनों और भूस-भीषा से उपमाएँ गृहीत हुई हैं ।

फ़्रांस की भाषा में जो विशेष गुण हैं वे ही इस देश की कहावतों में भी मिलते हैं । सौन्दर्य टीपटाप तीक्ष्णता और सफ़ाई जो इन लोकोक्तियों में मिलती हैं वे अन्यत्र दुर्लभ हैं । फ़्रांस की कहावतों में जीवन के सार्वदेशिक पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाली उक्तियाँ ही विशेषतः उपलब्ध होती हैं ।

किन्तु जर्मनी की लोकोक्तियों के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता । वहाँ की कहावतों में राष्ट्रीय चारित्र्य की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है । जर्मनी में अनेक कहावतें ऐसी हैं जिनमें उत्कृष्ट लोकोक्तियों के सभी गुण मिलते हैं ।

---

1 Introduction to the Proverbs of Arabia, by H. A. R. Gib

इस देश के ग्रन्थों में जो एक प्रकार की पूर्णता की अनुभूति पाई जाती है उसका अच्छा निदर्शन यहाँ की कहावतों में भी मिल जाता है।[1]

आकार-प्रकार की दृष्टि से चीनी भाषा कहावतों के निर्माण के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। चीन के पुराने दार्शनिक कन्फ्यूशियस और Lao Tzu की बहुत-सी उक्तियाँ भी कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। चीन की कहावतों में अतिशयोक्ति की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक मिलती है जिससे इन कहावतों के आकर्षण में वृद्धि हुई है। इनमें अनुप्रास की अपेक्षा तुक की प्रधानता देखी जाती है जो चीनी जैसी एकाक्षर भाषाओं के लिए स्वाभाविक है।

जब बुद्ध और कन्फ्यूशियस के धर्म का प्रचार जापान में हुआ तो इनके उपदेशों के सार का अशिक्षित जनता में कहावतों के रूप में प्रचार हुआ। किन्तु जापान की अधिकांश कहावतों का निर्माण यहाँ की सामान्य जनता द्वारा हुआ है।

आयरलैंड की कहावतों में विदग्धता और हास्य की अपेक्षा गाम्भीर्य अधिक है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि इस देश को लगातार सात शताब्दियों तक युद्ध में लगे रहना पड़ा है। आयरलैंड की बहुत-सी कहावतें छन्द में हैं। जिस प्रकार पोप टेनीसन और दूसरे अँगरेज कवियों की अनेक उक्तियाँ कहावतें बन गई हैं, उसी प्रकार, सम्भव है इस भाषा की अनेक कहावती पंक्तियाँ उन प्राचीन कवि गायकों की पंक्तियाँ हों जिनका अस्तित्व आज नहीं रह गया है। इसके अतिरिक्त आयरलैंड की सैकड़ों कहावतों में आन्तरिक तुक-साम्य के दर्शन होते हैं। केवल वार्तालाप के आकर्षण के लिए इन कहावतों की उपयोगिता उतनी नहीं है जितनी उस जीवन-दर्शन के कारण जो इनके द्वारा अभिव्यक्त होता है।

वेल्स की कहावतों में भी अनुप्रास और आन्तरिक तुक का प्राचुर्य दृष्टिगत होता है। इनमें तीन वस्तुओं का एक साथ उल्लेख अनेक बार देखा जाता है। यहाँ की कहावतों का नैतिक स्तर ऊँचा है। हास्य की भी अच्छी अभिव्यक्ति इनमें हुई है। धार्मिक कहावतों का भी यहाँ अभाव नहीं है।[2]

ब्रिटिश द्वीप-समूह में स्काटलैंड अपनी कहावतों के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। सामान्यतः अँगरेजी भाषा की प्रायः सभी कहावतें किसी शब्द अथवा उच्चारण मात्र के भेद से स्काटलैंड में प्रचलित हैं।

किन्तु स्काटलैंड में ऐसी बहुत-सी कहावतें हैं जिनका प्रचार केवल स्काटलैंड

---

१ महाराष्ट्र-वाक्-सम्प्रदाय-कोश विभाग २

२ Racial Proverbs.

में ही है। अन्य देशों में संख्या की दृष्टि से अधिक कहावतें मिल जायेंगी, ऐसी कहावतें भी मिल जायेंगी जिनमें चातुर्य, तीक्ष्णता अथवा कुशाग्रता के दर्शन होंगे किन्तु वाग्मोचित और अकृत्रिम कहावतों के लिए स्काटलैंड की कहावतें अपना सानी नहीं रखतीं। स्काटलैंड की कहावतों का एक दोष यह है कि उनका क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। उनमें वहाँ के लोगों के रीति-रिवाज, उनकी कल्पना, उनकी आकांक्षा, उनके सुख-दुख और उनकी मनोवृत्ति की अच्छी झाँकी देखने को मिलती है, किन्तु ऐसी कहावतों का अभाव है जिन्हें सार्वधिक अथवा सार्वदेशिक कहा जा सके।

स्विट्ज़रलैंड में जो कहावतें प्रचलित हैं, उनमें से अधिकांश ऐसी हैं जिनका जर्मनी में भी प्रचार है। स्वीडन की कहावतों में पुरातत्त्ववेत्ता, सभ्यता के इतिहास-लेखक, सामाजिक राजनीतिज्ञ तथा कला-मर्मज्ञ के लिए प्रचुर सामग्री प्राप्त हो सकती है।

पोलैंड-निवासी का कहावतों के प्रति उतना ही आकर्षण रहता है जितना शिशु का बाल-कविताओं (Nursery rhymes) के प्रति।

मलाया में वार्तालाप में कहावतों का माधुर्य देखने को मिलता है। वहाँ के परिवार में यदि कोई अजनबी आ जाय और उसे वहाँ की कहावतों का ज्ञान न हो तो वह वार्तालाप के मर्म को नहीं समझ सकेगा। E S Hose ने यथार्थ ही कहा है—

So deeply embedded are proverbs in Malayan thought and speech that it is only by a careful study of local sayings and their judicious use in conversation that a foreigner can hope to break down the barriers of reserve and win the confidence and friendship of this lovable and warm-hearted people

राजस्थानी कहावतें

संसार के सभी देशों और सभी जातियों में कहावतों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। सांसारिक व्यवहार-पटुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निदर्शन कहावतों में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कहावतें मानव-स्वभाव और व्यवहार-कौशल के सिक्के के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में पूर्वजों से प्राप्त होती हैं। जिस देश के लोक-जीवन में प्रफुल्लता, उत्साह और व्यवहार-पटुता की धारा निरन्तर गतिशील रहती है उस देश में कहावतों का प्राचुर्य स्वभावतः देखने में आता है। पथ-प्रदर्शन की दृष्टि से भी कहावतों की उपादेयता सहज ही समझ में आ जाती है। क्या घर और क्या बाहर—वस्तुतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उद्बोधन के रूप में चिरकाल से कहावतें उपयोगी सिद्ध होती रही हैं। समाज में मनुष्य किस तरह व्यवहार करे जिससे लोक-जीवन के साथ-साथ उसका व्यक्तिगत जीवन भी सुखमय हो सके इसका निर्देश प्रचलित कहावतों में साधारणतः मिल जाता है। सामान्यतः मनुष्य कुछ खोकर सीखता है किन्तु वही शिक्षा यदि उसे कहावतों के रूप में सुलभ हो जाय तो वह बहुत से कंटकाकीर्ण पथों से अपनी रक्षा कर सकता है। इस सम्बन्ध में ध्यान देने की बात यह भी है कि लाक्षणिक व्यंजना लिए हुए कहावत के रूप में प्रयुक्त कोई मुहावरेदार वाक्य कभी-कभी हमारे मानस-पट पर इस प्रकार अंकित हो जाता है कि उसकी छाप मिटाये नहीं मिटती। बहुधा ऐसा भी देखने में आता है कि अनेक प्रकार की युक्तियों से अनेक प्रकार के तर्क-वितर्कों से जिस सन्देह का समाधान नहीं होने पाता वह सन्देह बात की बात में एक समयोचित लोकोक्ति द्वारा दूर हो जाता है हमारी समस्त शंकाओं का समाधान हो जाता है और तुरन्त ही उस सारगर्भित उक्ति के तथ्य पर हम विश्वास करने लगते हैं। जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब कहावतों की इस आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर मैं मन-ही-मन चकित रह गया हूँ। यह भंडार सचमुच ही समृद्ध है और उसके दोहने वाले वस्तुतः भाग्यशाली हैं जिनमें सामाजिक ज्ञान और अनुभव के रूप

में कहावतों का अटूट भाण्डार सुरक्षित है। राजस्थानी भाषा भी इस दृष्टि से काफी सम्पन्न कही जा सकती है।

साहित्य की दृष्टि से भी कहावतों का कम महत्व नहीं। कहावतें भाषा का शृंगार हैं उनके प्रयोग से भाषा में सजीवता और स्फूर्ति का संचार हो जाता है। इसीलिए कुछ आलंकारिकों ने तो लोकोक्ति नामक एक स्वतन्त्र अलंकार ही मान लिया है। विशेषतः उपन्यास और कहानियों में तो कहावतों का प्रयोग एक प्रकार से अनिवार्य हो उठता है। स्वर्गीय प्रेमचन्द जी की रचनाओं में जो कहावतों की बहार दिखलायी पड़ती है उससे उनके द्वारा रचाया हुआ साहित्य परम अत्यन्त हृदयग्राही और सजीव जान पड़ता है। लोकोक्तियों के यथास्थान प्रयोग से उन्होंने भाषा में जादू भर दिया है।

योरप आदि देशों में तो शिक्षा-पद्धति में भी कहावतों का बड़ा उपयोग किया जाता है। रचनाशास्त्र का अध्यापक विचार-विश्लेषण की आदत डालने और उसे प्रोत्साहित करने के लिए अपने छात्रों के सामने एक कहावत रख देता है जिसको लेकर वे या तो किसी कथानक की उद्भावना करते हैं अथवा लोकोक्ति के तथ्य को चरितार्थ करने वाली किसी घटना का आविष्कार करते हैं। कभी कभी किसी कहावत को वाद-विवाद का रूप भी दे दिया जाता है जिसमें पक्ष और विपक्ष में अपने-अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर छात्रों को मिल जाता है। इससे हम इस निष्कर्ष पर भी पहुँचते हैं कि कहावतों का सत्य सार्वदेशिक और सार्वकालिक नहीं होता। बहुत-सी कहावतों में स्थान और काल से आबद्ध सीमित जीवन की ही अभिव्यक्ति हो पाती है जिसमें देश काल तथा भौगोलिक स्थिति की भिन्नता से सत्य का रूप भी बदल जाता है। एक परिस्थिति विशेष में जो सत्य है वही परिस्थिति की भिन्नता से असत्य बन जाना आरम्भ कर देता है। बहुत-सी कहावतें ऐसी हैं जिनमें विभिन्न जातियों के विभिन्न चित्र मिलते हैं। अधिकांश कहावतों में देश अथवा जाति-विशेष के संचित अनुभवों की निधि सुरक्षित रहती है। किसी विद्वान् ने कहावतों को मानव जाति के संचित कानून-संग्रह का नाम दिया है किन्तु इस प्रकार की परिभाषा तो कतिपय सार्वदेशिक और सार्वकालिक कहावतों के लिए भले ही लागू पड़े अधिकांश में भी यह अव्याप्ति दोष से दूषित हो नहीं जायगी।

कहावत की वैज्ञानिक परिभाषा देना कोई सरल काम नहीं है। अपने कथन की पुष्टि में किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात का किसी की आड़ में कहने के अभिप्राय से अथवा किसी को उपालम्भ देने व किसी

पर व्यंग्य कथन के लिए अपने में स्वतन्त्र अर्थ रखने वाली जिस सारगर्भित लोक-प्रचलित संक्षिप्त उक्ति का लोग प्रयोग करते हैं, उसे सामान्यतः कहावत का नाम दिया जा सकता है। कहावत का यह लक्षण बहुत व्यापक होते हुए भी सर्वथा निर्दोष होने का दावा नहीं करता क्योंकि राजस्थानी भाषा में ही कहावत कहने की इतनी शैलियाँ प्रचलित हैं कि उन सबका समावेश इस परिभाषा की परिधि में नहीं किया जा सकता, फिर भी सारगर्भत्व, संक्षिप्तता, चुटीलापन, उक्ति-वैचित्र्य, चटपटापन, तुक-साम्य आदि कहावत-सम्बन्धी सामान्य विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं।

कहावतें सामान्यतः ऐसी मिलती हैं जिनके निर्माता का पता नहीं चलता किन्तु कभी-कभी बहुत से कवियों की सूक्तियाँ कहावत का रूप धारण कर लेती हैं, प्रयोक्ताओं को इस बात का ज्ञान भी नहीं रहता कि वे किस कवि विशेष की उक्ति का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरणार्थ 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' संस्कृत की एक सुप्रसिद्ध कहावत है जिसका प्रयोग संस्कृत से अनभिज्ञ पाठक भी करते रहते हैं। उनको क्या पता कि इन्दुमती स्वयंवर का वर्णन करते हुए पुराकाल के मनीषी कवि की लेखनी से निम्नलिखित श्लोक निकल पड़ा था जिसकी चतुर्थ पंक्ति ने आज कहावत का रूप धारण कर लिया है—

अथांगराजादवतार्य चक्षुर्याहीति जन्यामवदत्कुमारी ।
नासौ न काम्यो न च वेद सम्यग्द्रष्टुं न सा भिन्नरुचिर्हि लोकः ॥

संस्कृत साहित्य में अर्थान्तरन्यास के रूप में प्रयुक्त बहुत-सी पंक्तियाँ आज कहावतों के रूप में परिवर्तित हो गई हैं किन्तु जो कहावतें किसी कवि-विशेष की सूक्तियाँ न होकर श्रुतिपरम्परा द्वारा लोगों के मानस-पट पर अंकित हैं, उनका काल-निर्धारण नहीं किया जा सकता। इस प्रकार की कहावतें तो भावी पीढ़ी को धरोहर के रूप में प्राप्त होती रहती हैं और लिखित रूप धारण न करने पर भी न जाने कितनी शताब्दियों से उनका प्रयोग होता रहता है।

किन्तु कहावतों का काल निर्धारण न होने पर भी उनका महत्त्व कम नहीं हो जाता क्योंकि इनके द्वारा देश-विशेष अथवा जाति-विशेष की विचार-धाराओं, रीति-रिवाज, व्यवहार, शिष्टता, नैतिक आदर्श तथा सामाजिक संगठन पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जिसके द्वारा अतीत के गर्भ में छिपे हुए बहुत-से खंडहर चमक उठते हैं। समाज-शास्त्र का विद्वान यदि अनुसंधान करे तो वह उनकी सहायता से तत्कालीन सामाजिक जीवन के नमूनों का एक रेखा-चित्र उपस्थित कर सकता है।

कहावतों के निर्माण में तुक-साम्य का बड़ा हाथ रहता है। तुकान्त रचना आसानी से याद हो जाती है और स्मृति में चिरस्थायित्व प्राप्त कर लेती है। भूल जाने पर भी अपेक्षाकृत सरलता से वह स्मृति-पथ में लाई जा सकती है। सामान्य जनता को शुष्क गद्यात्मक वाक्य की अपेक्षा तुकान्त रचना में स्वभावतः अधिक आकर्षण मिलता है। यही कारण है कि तुकान्त-लोकोक्तियाँ अधिक लोक-प्रिय हो जाती हैं। किन्तु तुकान्त-लोकोक्तियों में तुक की ओर पहले ध्यान दिया जाता है अर्थ की ओर बाद में। इस प्रकार कई लोकोक्तियों में तुक का चमत्कार जितना मिलता है उतना सत्य का नहीं। सत्य को लक्ष्य में रख कर तुक पर नहीं पहुँचा जाता जितना तुक को लक्ष्य में रख कर बाद में सत्य का निर्धारण किया जाता है। उदाहरणार्थ कुछ राजस्थानी कहावतें लीजिए—

१ आंख फड़ूकै बांई। कै वीर मिलै कै सांई।
२ आंख फड़ूकै दाहणी। लात घमूका सहणी।

अर्थात् यदि स्त्री की बाईं आँख फड़के तो या तो भाई मिले या पति मिले। यदि दाहिनी आँख फड़के तो उसे लात घमूका सहना पड़े। साधारणतः स्त्री की बाईं आँख फड़कना शुभ और दाहिनी आँख फड़कना अशुभ समझा जाता है किन्तु इस लोकोक्ति में शुभाशुभ परिणाम का जो स्वरूप उपस्थित किया गया है वह सब तुक देव की कृपा है।

कुछ कहावतें ऐसी हैं जिनमें तुक के साथ-साथ सत्य भी बड़े सुन्दर रूप में प्रकट हुआ है—

१ भूख कै लगावण कोनी, नींद कै बिछावण कोनी।

अर्थात् जहाँ भूख है वहाँ कोरी-मोरी रोटी ही अमृत है—वहाँ साग-सब्जी कहाँ? और जिन आँखों में नींद है, वहाँ बिस्तर कैसे? जिन आँखियन में नींद भरी री मचिया और बिछौना क्या रे! इस उक्ति को सुनते ही जैसे हम इस कहावत की सोलह आने सचाई के कायल हो जाते हैं। इसे ही काव्य में प्रत्यभिज्ञा का आनन्द (Pleasure of recognition) कहा गया है।

२ जावो लाख रहो साख। अर्थात् लाखों रुपये चाहे चले जायें किन्तु मान न जाने पावे।

३ सैंती रोवै बार बार, मोंहगी रोवै एक बार। इस कहावत में भी बड़ी सुन्दर व्यावहारिक बात कही गई है।

विस्तार-भय से अधिक उदाहरण नहीं दिये जा सकते।

साधारणतः कहावतें लंबी नहीं होतीं किन्तु कभी-कभी प्रश्नोत्तर के रूप

में भी कुछ उक्तियाँ इस प्रकार प्रचलित हो जाती हैं कि हम उन्हें कहावतों के अतिरिक्त दूसरा नाम दे नहीं सकते। राजस्थानी भाषा में प्रश्नोत्तर के रूप में प्रचलित कहावतों का भी अभाव नहीं है। उदाहरणार्थ—

१ ठाकरां, घोड़ो ठका तीन देसी। ठाकर यार तो पहल ही ठक आसो
बोप तो एकली देसी।

अर्थात् किसी ने कहा—ठाकुर साहब जिस घोड़ी पर आप सवार हो रहे हैं वह तीन बार उछाल मारेगी। उत्तर मिला कि ठाकर तो पहली उछाल में ही जमीन पर गिर पड़ेगा तो उछाल तो घोड़ी अकेली देगी। इस प्रश्नोत्तर में जैसे हास्य और व्यंग का फव्वारा छूट रहा हो।

२ ठाकरां, मांगो किसा क ? के बैल को मार जाणिय।

अर्थात् ठाकुर साहब, मगज में आप कैसे हैं ? उत्तर मिला—पीठा करने वाले की मार जैसी हो।

३ चौधरी, बैठ्यो है ? के तूं गुड़ा दे।

अर्थात् किसी ने पूछा—चौधरी ! बैठे हुए हो उत्तर मिला—यदि तुम नहीं सुहाता तो उठा दे।

उक्त कहावतों में चाहे सारगर्भत्व और गरिमा का गुण न हो किन्तु इनमें वाग्वैदग्ध्य का चमत्कार तो है ही जो चित्त को चमत्कृत और प्रफुल्लित कर देता है।

कुछ कहावतें ऐसी हैं जो पूरे पद्य के रूप में प्रचलित हैं। एक मियांजी से खाना खाने के लिए कहा तो तुरन्त बिसमिल्ला कह तैयार हो गए किन्तु जब मौका पड़ने पर उन्हीं मियां जी से छान चढ़ान के लिए कहा गया तब कहने लगे—हम तो बुड्ढे हैं किसी जवान को बुलाओ—

खाओ मीयां खाना खाओ, बिसमिल्ला कह हाथ घुमाओ।
आओ मीयां छान उठाओ, हम बुड्ढा कोई ज्वान बुलाओ।

इसी से मिलती-जुलती एक और कहावत सुनी जाती है (जो यद्यपि पद्य के रूप में नहीं है)

यां हाथ लकड़ी ल्याओ तो के म काफर का काम।
यां हाथ फांकड़ी खाओ तो के बिसमिल्ला।

जब इस प्रकार के दो मनुष्य परस्पर मिल जावें जहाँ लेन-देन के लिए केवल रामनाम हो वहाँ निम्नलिखित पद्यात्मक कहावत का प्रयोग बहुधा किया जाता है—

ऐसा को तैसा मिल्या बामन को नाई।
इन दीनी आसरी वो आरसी दिखाई॥

अर्थात् वैद्य का वसा मिल गया जब ब्राह्मण और नाई की भेंट हुई। ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया और नाई ने दर्पण दिखा दिया।

जो केवल ऊपरी सजधज दिखलाता है जिसे सामने तक का शऊर न हो, उसके लिए निम्नलिखित लोकोक्ति बहुधा सुनने में आती है—

कँवर जो महलां सूं उतरया, चोवस को मसखो।
खखारयां बोलै नहीं बोलै तो ढबको॥

अनेक प्रकार की लोकोक्तियाँ राजस्थान में प्रचलित हैं। बहुत-सी ऐसी भी कहावतें हैं जिनकी उत्पत्ति का सम्बन्ध किसी घटना-विशेष से है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित दो कहावतों को लीजिये—

१ नौ पेठा तेरा जकवाल चोकड़ी ले गी कोतवाल।

एक व्यापारी के पास ९ कूष्माण्ड थे। वह उन्हें बेचने के लिए एक नगर में प्रविष्ट हुआ तो वहाँ के अधिकारियों ने कर के रूप में उससे नवों कूष्माण्ड ले लिये फिर भी कर वसूल करने वाले चार और बाकी रह गये। कोतवाल ने तो उसकी चोटी ही छीन ली। बेचारा देखता-का-देखता ही रह गया। जहाँ का शासन-प्रबंध अन्यायपूर्ण हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है किन्तु जब तक उक्त अन्तर्गत कथा को न समझ लिया जाय तब तक इस कहावत का मर्म समझ में नहीं आता।

२ घोड़ी कठै बांधू ? बठु नीम कै।

एक बारहठजी किसी बड़े सरदार के यहाँ ठहरे हुए थे। संयोगवश उन्हीं सरदार के पास एक दूसरे समीपवर्ती ठिकाने के ठाकुर साहब का भी आगमन हुआ। अपना बड़प्पन दिखाने के लिए समागत ठाकुर साहब ने बारहठजी से बड़ी नम्रता के साथ कहा कि कभी इस सेवक की झोंपड़ी को भी पवित्र कीजिये। थोड़ी देर अपने काम की बातें करके ठाकुर साहब वापस चले गये। उन्हें यह स्वप्न में भी ध्यान न था कि बारहठजी सचमुच ही आ धमकेंगे। दस-बीस दिनों की भर्द देकर बारहठजी अपनी घोड़ी पर सवार होकर ठाकुर साहब के दरवाजे पर जा पहुँचे। बारहठजी का घोड़ी के साथ देखते ही ठाकुर साहब के होश फाख्ता हो गये। बारहठजी घोड़ी से उतर पड़े और प्रणाम पाम कर ठाकुर साहब से जय माताजी की की। ठाकुर साहब स्तब्ध रह गये। बारहठजी ने कहा "ठाकरां! इस घोड़ी को कहाँ बांधू?" ठाकुर साहब ने लाचार अपनी जीभ निकाल दी और बोले "इसके बांध दीजिये! यह उस समय चुप रहती तो आज यह नौबत क्यों आती?"

कहावतों में कभी-कभी बड़े सुन्दर अर्थान्तरों का प्रयोग मिल जाता है।

'बादल की सी बीजली, होली की सी झल, राजस्थानी की एक प्रसिद्ध कहावत है जिसमें किसी नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह बादल में की बिजली की तरह अथवा दीप्ति में होली की ज्वाला के समान है। पूर्वार्द्ध की उपमा में नायिका का चापल्य आकर्षण लुकाछिपी चकाचौंध करने की शक्ति एक साथ ही व्यंजित हो रही है। संयोग की बात है कि स्वर्गीय प्रसाद जी ने भी कामायनी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कुछ इसी तरह की बात कही है—

'खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ-वन बीच गुलाबी रंग।"

एक रूपक का भी मार्मिक प्रयोग देखिये। चालनी को पीलो र पूतमुई की छाती। अर्थात् उस स्त्री का हृदय जिसका पुत्र काल-कवलित हो गया हो चलनी का पेंदा ही समझिये। जैसे चलनी के पेंदे म सैकड़ों छिद्र होते हैं, उसी प्रकार पुत्र-शोक से विह्वला माता के हृदय में भी असंख्य छेद हो जाते हैं। वह कभी पुत्र की किसी वस्तु को देखती है स्मरण करती है अथवा दूसरों से सुनती है तो उसका हृदय सहसा विदीर्ण होकर चलनी हो जाता है। आरोप का औचित्य यहाँ देखते ही बनता है।

आक्षेप अलंकार के लोकोक्तिगत दो उदाहरण और देखिये—

१ राजा के बेटे कोरड़ी मारलो, म्हे क्यूं कहां ?

अर्थात् राजा क लड़के ने चाबुक मारदी मैं क्यों कहूँ ?

२ गूगो बड़ो क राम ? के बड़ो तो है सो हो है पण सांपां का देवता नै कुण रुसावै ?

अर्थात् गूगा बड़ा या राम ? उत्तर दिया कि बड़ा जो है सो ही है (अर्थात् राम ही बड़ा है) किन्तु यह स्पष्टतः कह कर सर्पों के देवता गूगा को रुष्ट कौन करे ?

उक्त दोनों लोकोक्तियों में कही हुई बात का बड़े सुन्दर व्यंग्यात्मक ढंग म निषेध कर दिया गया है। बात कह भी दी गई है और प्रतिषेध भी कर दिया गया है।

कुछ कहावतें ऐसी भी मिल जाती हैं जिनमें आपाततः विरोध दिखलाई पड़ता है। 'भाई बरोबर बैरी नहीं र भाई बरोबर प्यारो नहीं' इस लोकोक्ति में एक ही साँस में दो विरोधी बातें कह दी गई हैं। 'कपूत जायो भलो न जायो।' अर्थात् कपूत किसी प्रकार अच्छा नहीं किंतु एक अन्य कहावत में कहा गया है —

खोटो पीसो खोटो बेटो औखीवार को काम। -

अर्थात् खोटा पैसा और कुपुत्र कभी-न-कभी विपत्ति काल में काम देते हैं

है। कहावतों में इस प्रकार के विरोधाभास को देख कर चौंकने की आवश्यकता नहीं क्योंकि हमारा जीवन ही अनेक प्रकार के विरोधाभासों से परिपूर्ण है। कहावतें वस्तुतः संपूर्ण सत्य नहीं हैं वे सत्य के लिए संकेतमात्र उपस्थित करती हैं वे परम सत्य न होकर पथ-निर्देश मात्र का काम करती हैं। जिस प्रकार दर्पण-विशेष की भिन्नता के कारण प्रतिबिम्बों में भी भिन्नता आ जाती है उसी प्रकार देश काल और परिस्थितियों की भिन्नता के कारण न जाने जीवन-दर्पण में हमें कितने विभिन्न रंग दिखलाई पड़ते हैं। सत्य वास्तव में बहुमुखी देव है जिसके मुखों की इयत्ता का अनुमान तक नहीं किया जा सकता इतना ही नहीं उसका एक मुख आकार प्रकार में दूसरे मुख से बहुत कुछ भिन्न दिखलाई पड़ता है। परम सत्य क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर देते-देते तो बड़े-बड़े दार्शनिकों की बुद्धि भी हैरान हो गई है। स्टीवेन्सन ने तो यहाँ तक कह दिया है कि निरपेक्ष सत्य जैसी कोई वस्तु नहीं हमारे सब सत्य अर्द्ध सत्य-मात्र हैं।[1] इसीलिए कहावतों का सत्य भी यदि सार्वदेशिक और सार्वकालिक न हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। मार्ग प्रदर्शन के लिए कहावतें श्रेष्ठ साधन का काम देती हैं किन्तु कोई उन्हें परम सत्य का पर्याय समझने की भूल न करे। न्यायशास्त्र की शब्दावलि का प्रयोग करें तो हम कह सकते हैं कि वे निरपवाद और निरपेक्ष सत्य का निरूपण नहीं उनका सत्य सापेक्ष और सापवाद है।[2] कहावतों में अभिव्यक्त सत्य एक दृष्टिकोण मात्र है। भिन्न स्थान से लिये हुए चित्र में जैसे भिन्नता आ जाती है वैसे ही इस संसार को देखने में भी दृष्टिकोण की भिन्नता सर्वत्र मिलेगी और यह एक दृष्टि से वांछनीय भी है। गणित के २ + २ = ४ की तरह जीवन का यथार्थ मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों आदि की भिन्नता से हमारे जीवन के अनुभवों के मूल्य भी बदलते रहते हैं।

परिस्थितियों की भिन्नता से जब जीवन के मूल्य बदलते रहते हैं तो कभी-कभी कहावतों से हानि होने की संभावना भी बनी रहती है। सामान्य लोक-जीवन में कहावतों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीण जनता के लिए तो कहावतें वेद और शास्त्रों का काम देती हैं। शिक्षित व्यक्ति जिस प्रकार अपनी

---

1 There is nothing like absolute truth in this world all our truths are half truths—Stevenson.

2 Proverbs are moral universals, not logical universals.

बात को प्रमाणित करने के लिए वेद-शास्त्रों का हवाला देता है उसी प्रकार ग्रामीण व्यक्ति कहावतों के अटूट भंडार का आश्रय लेता है। अन्ध विश्वासों से संबन्ध रखने वाली बहुत-सी कहावतें भी ग्रामीण जनता में बहुधा सुनाई पड़ती हैं जिनसे चिपटे रहना ग्रामीण जनता के स्वभाव में शामिल हो जाता है। कहावतों में ऐसी अद्भुत शक्ति पाई जाती है कि वे प्रयासकर्ताओं की ओर से अपने प्रति आस्था और विश्वास के भाव उत्पन्न करा सकती हैं किन्तु जिस आस्था के मूल में अन्धविश्वास काम कर रहा हो वह अनर्थ की ही जड़ सिद्ध हो सकती है। समय-परिवर्तन के साथ-साथ जहाँ परम्परागत रूढ़ियों और रीति-रिवाजों में भी परिवर्तन होना चाहिए, वहाँ कहावतें कभी-कभी बाधक सिद्ध होती हैं। हमारे देश में स्वर्णिम अतीत के स्वप्न देखने की प्रथा-सी चल पड़ी है वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल अपने जीवन को साँचे में ढाल कर उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करना हमें नहीं आता। अतीत से प्रेरणा प्राप्त करना बुरा नहीं किन्तु इसका ध्यान रहना चाहिए कि अतीत हमारी उन्नति के मार्ग में रोड़े न अटकाने पावे। कहावतों की आधार-शिला पर हमारी परम्परागत रूढ़ियां के स्तूप चिरकाल तक प्रतिष्ठित रहते हैं। इस दृष्टि से कुछ कहावतों में वह गतिशीलता नहीं मिलती जो पल-पल परिवर्तित और विकसित होते हुए जीवन का अनिवार्य अंग है कभी-कभी तो वे पुरातनपन्थी मनोवृत्ति का प्रतिनिधित्व करने लगती हैं जिसमें आधुनिक जीवन का स्पन्दन नहीं मिलता—इसलिए वो निश्चेष्टता एवं निर्जीवता अथवा जड़ता की प्रतीक-मात्र रह कर लोक-जीवन के समुचित विकास में बाधा पहुँचाने लगती हैं। विचार-स्वातन्त्र्य की भावना को भी इस प्रकार की कहावतें पनपने नहीं देती क्योंकि अधिकतर कहावतें आदेशात्मक हैं। वे व्यक्ति के कर्तव्य पर तो जोर देती हैं किन्तु व्यक्ति को समाज से भी कुछ विशेषाधिकार प्राप्त होने चाहिए—इस संबन्ध में कोई उल्लेख वहाँ नहीं मिलता। वे एक प्रकार से नुसखा दस देती हैं ऐसा नुसखा जो बाबा आदम के जमाने में बना था। जीवन के प्रति नये दृष्टिकोण को वे ग्रहण नहीं करने देतीं—प्रतिभा को जीवन के नव नये मार्गों की ओर उन्मुख नहीं करतीं। वातावरण की एकरसता जड़ता का ही दूसरा नाम है। निष्क्रिय भाव से वातावरण को अपना लेना सजीवता का लक्षण नहीं है। हमारे गाँवों की सभ्यता में पुस्तकों का स्थान नहीं के बराबर है। कला-कौशल कृषि गो-पालन घोड़ी गायों ऊँटों आदि की बिक्री और खरीद के सम्बन्ध में ग्रामीण जनता कहावतों पर ही निर्भर रही है। श्रुति-परम्परा ने कहावतों की समृद्धि में बड़ा भाग लिया है। कहावतों की अधिकता गाँवों में

ही देखी जाती है। ग्राम-जीवन में परिवर्तन बहुत कम होता है, सभ्यता का आलोक भी वहाँ धीरे-धीरे पहुँचता है किन्तु नागरिक जीवन में नूतन-से-नूतन विचारों का परस्पर आदान प्रदान होता रहता है। नागरिक जीवन में बुद्धि की काट-छाँट और कतरब्योंत बहुत चलती है इसलिए वहाँ विश्लेषण की प्रधानता से कहावतें भी उतनी नहीं सुनाई पड़तीं। दार्शनिक चर्चाओं में भी वहाँ विश्लेषण की प्रमुखता रहती है, बाल की खाल निकाली जाती है, कहावतों का प्रयोग सामान्यतः देखने में नहीं आता।

आज के इस बुद्धिवादी युग को देखते हुए कहावतों का भविष्य भी बहुत उज्ज्वल नहीं दिखाई देता। इस यांत्रिक युग में तो कृषि आदि के सम्बन्ध में भी इस प्रकार के आश्चर्यजनक परिवर्तन किये जा रहे हैं जिनकी सहायता से खेती वर्षा पर उतनी निर्भर ही न रह जायगी। वर्षा और खेती संबन्धी उन बहुत-सी कहावतों का मूल्य भी संभवतः इस युग में न रह जायगा। इसलिए इस बात की नितांत आवश्यकता जान पड़ती है कि बढ़ती हुई सभ्यता के इस युग में भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त कहावतों का संग्रह किया जाय क्योंकि सभ्यता और लोक-साहित्य में परस्पर विरोध देखा जाता है। सभ्यता की वृद्धि के साथ साथ लोक-साहित्य जो अनुभूति पर आश्रित रहता है क्षीण होने लगता है।

राजस्थानी कहावतों के अध्ययन करने से भी इस प्रान्त की सभ्यता और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। कहावतों के रूप में प्रचलित निम्नलिखित वाद-प्रतिवाद को देखिए—

मरद तो मूछाळा चंगो, नैण चंगी गोरियाँ।
सुरहल तो सींगाळ चंगी, पौड़ चंगी घोड़ियाँ।

अर्थात् मर्द तो मूँछों वाला ही श्रेष्ठ है, स्त्री बाँके नैनवाली, गाय सींगों वाली तथा घोड़ी अच्छे सुमों वाली श्रेष्ठ होती है। इस उक्ति को सुनकर राजस्थानी संस्कृति का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाला तुरन्त इसका संशोधन के रूप में प्रतिवाद उपस्थित करता है—

मरद तो जबान चंगो, पूत चंगी गोरियाँ।
सुरहल तो दूधार चंगी, तेज चंगी घोड़ियाँ।

मर्द तो वही है जो जबान का धनी हो, नारी वही है जो वीर प्रसविनी हो, गाय वही है जो दूध देने वाली हो और घोड़ी वही है जो तेज चलने वाली हो। इस उक्ति में प्रतिज्ञा-पालन और वीर-जननी का कैसा उच्च आदर्श अभिव्यक्त

हुआ है। राजस्थानी शौर्य के सम्बन्ध में कही हुई टाड की यह प्रसिद्ध उक्ति इसी-लिए तो कहावत के रूप में प्राय उद्धृत की जाती है। 'इला न देणी आपणी' लोरी देती हुई माता की यह वाणी राजस्थान के घर-घर म प्रसिद्ध है और सोये हुए राजस्थानी जीवन म आज भी प्राण फूंक देने म कितनी सक्षम सिद्ध हो सकती है।

कहावतों में स्त्री-जाति क प्रति भाव शकुन-सम्बन्धी बहुत-से विश्वास कृषि और वर्षा-संबंधी अनेक सिद्धांत खेती के सम्बन्ध म कहावतों की अधिकता ऊँट-भैंस आदि के पर्याय शब्दों का आधिक्य कन्या-जन्म क संबंध में मनोवृत्ति जातिगत विशेषताएँ आदि अनेक बात ऐसी है जिनसे राजस्थानी संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है। संस्कृति के सम्भावशेष इन लोकोक्तियों म छिपे पड़े हैं जिनके अनुसंधान-अन्वेषण और तुलनात्मक अध्ययन द्वारा राजस्थानी संस्कृति के बहुत से तथ्यों का जहां ज्ञान होता है वहां भारतीय संस्कृति की अखण्डता पर भी हमारी दृष्टि गये बिना नहीं रहती। भारतीय संस्कृति की अखण्डता पर आज कल के इतिहासकार चाहे भले सन्देह किया करें सच्चा इतिहास तो लोक-साहित्य में सुरक्षित रहता है जिसके द्वारा तिथियों का ज्ञान चाहे न हो पर तथ्यों का ज्ञान अवश्य हो जाता है। इस दृष्टिकोण को लेकर कहावतों का अध्ययन और संग्रह नितांत वांछनीय है। यूरोपीय भाषाओं में इस प्रकार के प्रयत्न हुए हैं भारतीय भाषाओं में भी इस प्रकार के प्रयत्नों की आवश्यकता है।

कहावतों के प्रस्तुत संकलन की अधिकांश कहावतें मैंने सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी पं० झाबरमल्लजी शर्मा के रजिस्टर से ली हैं। पंडितजी के वात्सल्यभाजन होने का गौरव मुझे सदा से प्राप्त रहा है। इसलिए उन्हें धन्यवाद न देकर उनसे तो मैं आशीर्वाद की ही आकांक्षा रखता हूँ। कहावतों के अर्थ-निरूपण म मुझे पं० रामपाल-जी शर्मा से विशेष सहायता प्राप्त हुई है। लोक-साहित्य के मर्मज्ञ पं० मोतीलालजी मिश्र बड़ी ढोली मुशायरों से भी मैंने पूरा लाभ उठाया है। उक्त दोनों सज्जनों का मैं उपकृत आभारी हूँ। इस प्रसंग में श्री भागीरथमलजी कानोड़िया के नाम का उल्लेख विशेषत आवश्यक है। उन्होंने इन कहावतों की पांडुलिपि बड़े ध्यान स पढ़ी और मुझे अनेक पत्र लिखे जिनके द्वारा उन्होंने कहावतों के बहुत से रूपान्तर और संशोधन प्रस्तुत किये और अनेक स्थानों पर विलक्षण अर्थों की ओर भी मेरा ध्यान आकृष्ट किया। इसके लिए मात्र धन्यवाद देकर उनसे उऋण नहीं हुआ जा सकता। प्रसिद्ध भूदान-सेवी श्री गोकुल भाई भट्ट से मुझे सिरोही की कहावतों का संग्रह प्राप्त हुआ जो परिशिष्ट में दिया गया है। इसके समावेश की अनुमति

(

ही देखी जाती है । ग्राम जीवन
मालोक भी वहां धीरे-धीरे पहुँच
विचारों का परस्पर आदान-प्रदा
काट-छांट और कतरब्योंत बहुत
से कहावतें भी उतनी नहीं सुन
की प्रमुखता रहती है आ
सामान्यत देखने में नहीं

आज के इस सुविधा
उज्ज्वल नहीं दिखाई दे
भी इस प्रकार के आ
लेती वर्षा पर उसकी
बहुत-सी कहावतों
इस बात की मि
युग में भारतीय
और लोक-मा
मान लोक

राम
संस्कृति
बाद-र्मा

राजस्थानी कहावतें

अ

१ अंधापुंध की साहबी, घटाटोप को राज।
यहाँ शासक अन्धाधुन्ध शासन करते हैं वहाँ अन्धकार का ही साम्राज्य छाया रहता है।

२ अंबर कै थेगली कोनी लागै।
...ने आकाश को सिया नहीं जा सकता।
...कल उधारी कोनी मिलै।
...कल उधार नहीं मिलतो।
...म अक्कल न आवै एक करोड़ रुपिये किम्मतिया।
...क्कल कोई कै बाप की कोनी।
...द्धि किसी की बपौती नहीं।
...क्कल बड़ी कै भैंस।
...कल बड़ी या भैंस ? अर्थात् पशु-बल से बुद्धि-बल ही श्रेष्ठ है।
...टप्प० हिन्दी कोष के सम्पादक श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा के मतानुसार ...उक्त कहावत का शुद्ध रूप है "अक्कल बड़ी कि वहम ?" बात को समझना ...अच्छा है झूठी वहम्‌ार करना अच्छा नहीं। वे "अक्कल बड़ी कि भैंस" को ...कहावत का विकृत रूप मानते हैं।
(दे० हिन्दी लोकोक्ति कोष पृ० ५) "गुजराती कहेवत संग्रह" में "अक्कल ...डी के भैंस ? यह रूप मिलता है।
...क्कल बिना ऊँट उभाणा फिरै।
...बुद्धि न होने से ऊँट नंगे पाँव फिरते हैं अर्थात् मूर्ख बुद्धि न होने के कारण साधनों का प्रयोग नहीं कर पाते।
...अक्कल सैं खुदा पिछाण्यो।
...अक्ल से खुदा को पहिचाना।
...अम्मु की बुद्धि से समझो।
...मि० अक्कल में अम्मा पोहोंचीये। (गुजराती)

देकर उन्होंने मुझे बहुत अनुगृहीत किया है। सुप्रसिद्ध शोधक विद्वान् श्री अगर चंद जी नाहटा मुझे कहावतों संबन्धी कार्य के लिए निरन्तर प्रेरित करते रहे हैं और बड़ी उदारता से अपने ग्रन्थ सुलभ करते रहते रहे हैं। इसके लिए मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूँ।

अंत में मैं श्री लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनकी प्रेरणा से मैंने कहावतों के संग्रह, सम्पादन और अध्ययन का कार्य प्रारम्भ किया। उनके संरक्षण और प्रोत्साहन को मैं अपने जीवन का वरदान मानता हूँ। आज तो कहावतों का अनुशीलन मेरे प्राणों का स्पन्दन बन गया है।

मेरे आत्मज चि० श्यामबिहारी ने कहावतों के वर्गीकरण करने और पांडु लिपि को टंकित करने में मेरा हाथ बंटाया है जिसका स्नेहपूर्वक स्मरण मुझे हर्षित करता है।

इस ग्रन्थ के प्रस्तुत करने में जिन-जिन विद्वानों, मित्रों, शिष्यों आदि से सहायता मिली है उनका व्यक्तिशः उल्लेख संभव नहीं इसलिए उन सब के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम पुनीत कर्तव्य समझता हूँ। बंगाल हिन्दी मण्डल ने भी सुंदर रूप में ग्रन्थ को प्रकाशित करवा कर मुझे सब तरह से उपकृत किया है।

पिलानी
२६ जनवरी, १९५१

—कन्हैयालाल सहल

राजस्थानी कहावतें

अ

१ अंधाधुंध की साहबी घटाटोप को राज।
जहाँ शासक अन्धाधुन्ध शासन करते हैं, वहाँ अन्धकार का ही साम्राज्य छाया रहता है।

२ अंबर कै थेगली कोनी लागै।
फटे आकाश को सिया नहीं जा सकता।

अक्कल उधारी कोनी मिलै।
अक्ल उधार नहीं मिलती।
मि० अक्कल न आवै एक करोड़ रुपिये किमतिया।

अक्कल कोई कै बाप की कोनी।
बुद्धि किसी की बपौती नहीं।

३ अक्कल बड़ी के भैंस।
अक्ल बड़ी या भैंस? अर्थात् पशु-बल से बुद्धि-बल ही श्रेष्ठ है।
टिप्प हिन्दी कोष के सम्पादक श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा के मतानुसार उक्त कहावत का प्रकृत रूप है "अक्ल बड़ा कि वहम?" बात को समझना अच्छा है झूठी बकवास करना अच्छा नहीं। वे "अक्ल बड़ी कि भैंस" को कहावत का विकृत रूप मानते हैं।
(द हिन्दी लोकोक्ति कोष पृ ५) "गुजराती कहेवत संग्रह" में 'अक्कल बड़ी के भैंस?" यह रूप मिलता है।

अक्कल बिना ऊँट उभाणा फिरै।
बुद्धि न होने से ऊँट नंगे पाँव फिरते हैं अर्थात् मूर्ख बुद्धि न होने के कारण साधनों का प्रयोग नहीं कर पाते।

अक्कल सैं खुदा पिछाण्यो।
अक्ल से खुदा को पहिचाना।
वस्तु को बुद्धि से समझा।
मि अक्कल थी अल्ला पीछाणीये। (गुजराती)

८ अखा रोहण बायरी, राखी सरवण न होय।
पो ही मूल न होय तो मही डूलंती जोय।
अक्षयतृतीया पर रोहिणी नक्षत्र न हो रक्षा-बन्धन पर श्रवण नक्षत्र न हो और पौष की पूर्णिमा पर मूल नक्षत्र न हो तो संसार में विपत्ति आवे।

९ अगस्त ऊग्या मेह पूगा।
अगस्त्य तारा उदय होने पर वर्षा का अन्त समझना चाहिये।
मि० उदित अगस्त्य पंथ-जल सोखा (रामचरितमानस)

१० अग्गमबुद्धी बाणियो पिच्छमबुद्धी जाट।
तुरंतबुद्धी तुरकड़ो बामण सम्पटपाट।
बनिया दूरदर्शी होता है जाट को बुद्धि बाद में आती है। मुसलमान तुरन्त ताड़ लेता है बुद्धि के नाम ब्राह्मण सफाचट होता है।
रूपा० अगमबुद्धी बाणियो पिच्छमबुद्धी जाट।
तुरंतबुद्धी तुरकड़ो मुफ्तो मारे बाम्म॥

११ आगे आगे बाह्मणा नदी आया बरतम्बे।
सब कामों में ब्राह्मण आगे रहता है किन्तु कहीं नदी-नाला आया तो वह पीछे हो जाता है अर्थात् ब्राह्मण खतरे से दूर रहता है।

१२ अजमेर को पावलियो ने बेराबाई त्यार है।
विवाहादि के अवसर पर 'न्यौते' में जो अजमेरी एक रुपया देता है उसके लिए सरकारी रुपया तैयार है।
टि० अजमेरी एक रुपये की कीमत कलदार से आधी समझी जाती है।

१३ अटक्यो बोरो उधार दे।
जिस बोहरे की कर्जदार में रकम अटक गयी है वह उस वसूल करने के लिए कर्जदार को और उधार देने की नीति अख्तियार करता है।

१४ अठे किसा काचर लाग्य है?
अर्थात् यहाँ दाल नहीं गलेगी।
क० अं मैं के काचरिया के है? ईं मैं के काचरिया लागे है? ईं मैं के काचरिया लागे है?

१५ अठे गुड़ गीलो कोनी अथवा इतो गुड़ गीलो कोनी।
यह कहावत उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो बहुत नरम या बहुत सीधा नहीं होता। तात्पर्य यह है कि यह आदमी ऐसा सीधा नहीं है कि कोई उसे ठग ले अथवा ऐसा नरम नहीं है कि कोई जो कहे वैसा ही करले।

१० मीठे गुड़ का ताड़-नाड़ कर चींटियाँ ले जा सकती हैं किन्तु कड़ी-सी भेली हो तो चींटियाँ उठाकर नहीं ले जा सकतीं ।

११ अछे जाय जकी छठे ही जाय ।

अच्छे मनुष्यों की चाह जैसे इस लोक में होती है वैसे ही परलोक में भी । इसीलिए परमात्मा के घर जब उनकी आवश्यकता होती है तब अल्पायु में ही बुला लिए जाते हैं । तात्पर्य यह कि सत्पुरुष दीर्घजीवी नहीं होते ।

मि० Those whom gods love die young

अठे ही रेवड़ को रिवाड़ो, अठे ही भेड्या की घुरी ।

यहीं ही भेड़ों के रहने का स्थान है और यहीं ही भेड़िये की मौत है ।

१ अणचूकी चार मारी

मौके पर तनिक भी असावधानी करने से नुकसान हो जाता है ।

१९ अणदोखी ने दोख दीने गति न मोख ।

जो निरपराध पर दोष लगावे उस मति या मौत कभी न मिले ।

मि० तुलसी जे कीरति चहैं पर की कीरति खोय ।

तिनके मुँह मसि लागिहै मिटिहै न मरिहै जाय ॥

अणमांग्या मोती मिलै, मांगी मिलै न भीख ।

बिना मांगे मोती भी मिल जाते हैं और मांगने पर भीख भी नहीं मिलती ।

अणमिले का से जती है ।

भोग न मिलने पर ब्रह्मचर्य का पालन स्वयं हो जाता है ।

२ अणसमझ को कुछ नहीं समझदार की मौत ।*

नासमझ अपनी जिम्मेवारी को महसूस नहीं करता ।

अणपढ़ी चिन्ता चुगै चिन्ता चुगै सरीर ।

अणपढ़ी चिन्ता कुछ नहीं है और चिन्ता शरीर को जलाती है ।

अणहोणी होणी नहीं होणी होय सो होय ।

जो होना है वह हो कर रहेगा ।

मि० होणी तो होकर रहै र मई अणहोणी नहिं होय ।

१५ अणियूं लागे अणियू चूके अणियू तोडै ताण ।

मन के बल पर ही ताण-तूट और राग-द्वेष सूझते हैं ।

✓

२१ अब तो बीरा तनै केनो जिकोई मर्म केमी ।

---

* मि० समझा चातक चतर नर, मिन प्रति रहत उदास ।

पर पूरू मूरख नरी मरा सुखी निपिदास ॥

इस कहावत के पीछे निम्नलिखित कथा कही जाती है—

एक बुढ़िया ने घुड़सवार से अपनी पोटली ले चलने के लिए कहा। घुड़सवार ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि घोड़े के सवार और बुढ़िया माई का क्या साथ? सवार ने कुछ आगे चल कर सोचा कि अच्छा होता यदि बुढ़िया की पोटली मैं ले लेता। उसमें जो कुछ है उसे तो स्वायत्त कर सकता। वह लौट पड़ा और बुढ़िया से कहने लगा "ला माई! पोटली दे दे तुझे कष्ट होता होगा मैं घोड़े की पीठ पर लेता चलूँगा।' बुढ़िया के दिल में भी यह सद्बुद्धि जागृत हो गई थी कि चलो अच्छा हुआ जो मैंने अपनी पोटली घुड़सवार को न दी कहीं वह लेकर चम्पत हो जाता तो फिर क्या था! मुझे अपनी पोटली से हाथ धोना पड़ता। किसी अनजान का विश्वास ही क्या?

बुढ़िया ने उत्तर दिया "अब तो जीरा तमै कैगो जिको ई मनै कैगो। अर्थात् हे भाई! अब तो जो तुम्हें कह गया वही मुझे भी कह गया!

कहा जाता है कि बुढ़िया धीरे-धीरे चल कर घुड़सवार के (जो रास्ते में आराम करता हुआ चला) पहले पहुँच गई।

२७ अबे तबे का एक रुपैया अठे कठे का बारा आना
इकड़म तिकड़म आठहि आना थूं थां आना च्यार।

अबे तबे वालों की कीमत एक रुपया है 'अठे कठे' का बारह आना इकड़म तिकड़म (मराठी) की कीमत आठ आने से ज्यादा नहीं पर "थू थां" बोलने वाले गुजराती की कीमत केवल चार आने ही है।

२८ अभागियो टाबर त्युंहार में रूसै।

अभागा बच्चा त्यौहार के दिन रूठता है।

त्यौहार के दिन मिष्टान्न आदि बनते हैं जिनसे वह वंचित रह जाता है। मन्दभागी सुअवसर से लाभ नहीं उठा पाता है।

२९ अमरो तो म मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो
चोदर तो मैं लुलती देखी, आठ बुहारै कूड़ो
आगे ई पाटो भलो नाम भलो लैंदूरो।

नाम रख लेने से ही नाम के अनुरूप गुण नहीं आ पाते। नाम तो कहने भर को होता है।

टि० इस पद्य के साथ जिस कथा का सम्बन्ध है उसके अनुसार एक जाट की स्त्री थी जिसके पति का लघुतासूचक नाम था लैंदूरा। वह आभा-

भाला और गरीब था। फटे वस्त्र पहने रहता था। आदमी को उसकी सहेलियाँ कहा करतीं "दुनिया में आकर तुमने क्या सुख देखा? इस संसार में अमरा (अमरसिंह) सूरा (सूरसिंह) तथा चौधरी और बहुत-से अधिकारी हैं, उनकी स्त्री बनती तो कितना सुख पाती?" एक दिन बाट की स्त्री अपना घर छोड़ कर निकल गई। एक गाँव में किसी शव को देखने पर उसे मालूम हुआ कि "अमरा" मर गया। आगे चली ही एक आदमी दौड़ता हुआ दिखाई दिया। उसके पीछे दो लाठीधारी युवक लगे थे। मालूम हुआ कि दौड़ने वाले का नाम 'सूरा' (सूरवीर) है। और आगे चलने पर एक दुखी मनुष्य दिखलाई पड़ा। पता चला कि उसके भाइयों ने उससे 'चोधर' (चौधरी का अधिकार) छीन लिया है। कुछ दूर और आगे चली तो देखा कि एक सौभाग्यवती युवती झाड़ू बुहार रही थी जिसका नाम था लाछां (लक्ष्मी)। वह उसी समय घर लौट चली। सहेलियों द्वारा कारण पूछने पर उसने ऊपर के पद्य कहे थे जिनका भावार्थ यह है कि अमरा (अमरसिंह) को तो मैंने मरते देखा सूरा (सूरसिंह) को भगते देखा चौधरी के अधिकार को छिनते हुए देखा और लाछां (लक्ष्मी) को झाड़ू बुहारते हुए देखा। नाम में क्या रखा है? "ठेठूरा" नाम ही सबसे अच्छा है।

मि० १ अमरा तो म्हे मरता देख्या भागता देख्या सूरा।
गोरी तो चाकर चूर्यो अमम मरण ठेठूरा।
अमर नाम तो मरता देख्या भागता देख्या सूरा।
लाछ्यू बुहार्यो टाट बरावे छिछमी मारे झाड़ू।
भागे में चाला भला नाम भला ठेठूरा।।

१ अम्बर रो तारो हाथ स कोनी टूटै।
आकाश का तारा हाथ से नहीं टूटता।

६ अम्बर पीलो, मेह सीलो।
वर्षा ऋतु में आसमान पीला हो तो वर्षा बन्द पड़ जाती है।

७ अम्मां ही रोटी पोया करसी'र अम्मां ही पावणा जीमबो करसी।
यहाँ तो स्त्रियाँ यों ही हल्ला करती रहेंगी और अतिथि यों ही भोजन करते रहेंगे।
सीखने वाले सीखते रहेंगे मौज करने वाले मौज ही करेंगे।

३३ जरजम जसा ही फरजम ।

जैसा पिता है वैसा ही पुत्र है ।

३४ अरडावतां ऊँट लदै ।

ऊँटों की चीख पुकार के बावजूद भी उन्हें लाद दिया जाता है ।

किसी की चीख पुकार पर भी ध्यान न देना ।

३५ अस्सा अस्सा और सस्सा

शिष्टाचार के अतिरिक्त कुछ लेना न देना ।

३६ असलेखा बूठो, वैदां घरे वधावणा ।

यदि असलेखा नक्षत्र में वर्षा हो तो डाक्टर हकीमों के घर बधाई बंटे अर्थात् रोग खूब फैलते हैं ।

३७ असवार तो को नी पण ठाडां करली ।

किस्सा यों है कि एक औरत को कुछ डाकू जबरदस्ती उठा कर ऊँट पर लिये जा रहे थे । ऊँट तेजी से दौड़ा जा रहा था । रास्ते में उस औरत का एक परिचित मिल गया । उसने पूछा "अरी तू ऐसी सवार कब से हो गयी जो ऊँट को इतने जोरों से भगा रही है ? तब उसने उत्तर में ऊपर की कहावत कही थी जिसका अर्थ यह है कि मैं सवार तो नहीं थी जबरदस्तों ने मुझे सवार बना दिया !

३८ असाई म्हे असाई म्हारा सगा

वां कै टोपी न म्हारै अंगा ।

हम भी ऐसे ही और हमारे सम्बन्धी भी ऐसे ही उनके टोपी नहीं हमारे कुरता नहीं !

३९ असी रातां का असा ही तड़का ।

ऐसी रातों के ऐसे ही प्रातःकाल होते हैं ।

क०(१) जसी रातां का जसा ही तड़का (२)इसी गांवां का इसा ही गांव ।

४० असो अणचाम्यू भोळो कोनी जको भूखी गायां नै चराय ।

अनचाहिया ऐसा मूर्ख नहीं है जो भूखा ही गाय चराने जाय ।

४१ अस्सी बरस पूरा हुआ तो भी मन फेरां में रह्या ।

अस्सी वर्ष पूरे हो गये तो भी मन भाँवर में लगा रहा ।

वृद्ध होने पर भी वासना बनी रही ।

४२ आहारे व्योहारे लज्जा न कारे ।

भोजन और व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

आ

४३ आंख कान को च्यार आंगल को फरक है।
सुनी और देखी में बहुत अन्तर होता है।
सत्य और झूठ में बहुत अन्तर है।

४४ आंख गई संसार गयो कान गया हंकार गयो।
आंख से ही संसार है और कान से ही अहंकार है।
बधिर को न सुनने के कारण अहंकार पैदा नहीं होता।

४५ आंख फरूकै दाहणी, लात घमूका सहणी।
स्त्री की दाहिनी आंख फड़कने पर कोई संकट सहना पड़ता है।

४६ आंख फरूकै डाई, कै बीर मिलै कै साँई।
यदि स्त्री की बाईं आंख फड़के तो या तो भाई मिले या पति मिले।

४७ आंख फुड़ाई मूंड मुंडायो घर को छोड़्यो द्वार।
बोम्बू बोई रे बूबना आवेस न बुहार।
एक बाबाजी ने किसी से रुपये उधार ले लिये। रुपये न लौटाने की नीयत से उन्होंने अपना वेष बदल लिया एक आंख फुड़वा ली मूंड मुंडा लिया घर का द्वार भी दूसरी तरफ कर लिया किन्तु फिर भी उनको अपने कार्य में सफलता नहीं मिली। इस पर किसी ने ऊपर का दोहा कहा था। जो दोनों दीन से चला जाय उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

४८ आंख मीच्यां अंधेरो होय।
आंख मूंदने पर अंधेरा हो जाता है अर्थात् दुनिया के दुखों की ओर से तटस्थ हो जाना।
मि० १ आंख फूटी 'र पीर मिटी।
२ आप मरयां जुग परलै।

आंख्यां देखी परसराम कदे न झूठी होय।
प्रत्यक्ष देखी हुई बात कभी झूठी नहीं होती।

आंख्यां में गीड पड़े नांव मिरगानैणी।
आंखें तो मैल-गल से लिप्त हैं और नाम है मृगनयनी।

आंख्यां सूं आंधो, नांव नैणसुख।
आंख का अन्धा नाम नयनसुख। हिन्दी की यह कहावत राजस्थान में भी बहुत प्रचलित है।

३३ अरजन जसा ही फरजन ।
जैसा पिता है वैसा ही पुत्र है ।

३४ अरडावतां ऊँट लदै ।
ऊँटों की दीन पुकार के बावजूद भी उन्हें लाद दिया जाता है ।
किसी की दीन पुकार पर भी ध्यान न देना ।

३५ अस्का मस्का और सस्का
शिष्टाचार के अतिरिक्त कुछ लेना न देना ।

३६ असलेखा बूठां वैदां घरे बधावणा ।
यदि अश्लेषा नक्षत्र में वर्षा हो तो डाक्टर हकीमों के घर बधाई बँटे अर्थात् रोग खूब फैलते हैं ।

३७ असवार तो को थी ना पण असवार करदी ।
किस्सा यों है कि एक औरत को कुछ डाकू जबरदस्ती उठा कर ऊँट पर लिये जा रहे थे । ऊँट तेजी से दौड़ा जा रहा था । रास्ते में उस औरत का एक परिचित मिल गया । उसने पूछा "अरी तू ऐसी सवार कब से हो गयी जो ऊँट को इतने जोर से भगा रही है ?" तब उसने उत्तर में ऊपर की कहावत कही थी जिसका अर्थ यह है कि मैं सवार तो नहीं थी जबरदस्ती ने मुझे सवार बना दिया ।

३८ असांई म्हे असांई म्हारा सगा
वां के ढोरी न म्हारै लगा ।
हम भी ऐसे ही और हमारे सम्बन्धी भी ऐसे ही उनके ताली नहीं हमारे कुन्दा नहीं ।

३९ असी रानी का असा ही लड़का ।
ऐसी रानों के ऐसे ही राजकुमार होते हैं ।
तु० (१) जसी रानी का जसा ही लड़का (२) इसी घोड़ी का इसा ही नाच ।

४० असो भगवान्यूं भोलो कोनी जको भूखो गायां में जाय ।
भगवान भी ऐसा मूर्ख नहीं है जो भूखा ही गाय चराने जाय ।

४१ अस्सी बरस पूरा हुया तो भी मन फेरां में रह्या ।
अस्सी वर्ष पूरे हो गये तो भी मन भाँवर में लगा रहा ।
वृद्ध होने पर भी वासना नहीं गयी ।

४२ आहारे ब्योहारे लज्जा न कारे ।
भोजन और व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

आ

४३ आंख कान को च्यार आंगल को फरक है।
सुनी और देखी में बहुत अन्तर होता है।
सत्य और झूठ में बहुत अन्तर है।

४४ आंख गई संसार गयो कान गया हुंकार गयो।
आंख से ही संसार है और कान से ही अहंकार है।
बधिर को न सुनने के कारण अहंकार पैदा नहीं होता।

४५ आंख फरूकै डावणी, लात धमूका सहणी।
स्त्री की दाहिनी आंख फड़कने पर कोई संकट सहना पड़ता है।

४६ आंख फरूकै बाईं के वीर मिलै कै सांई।
यदि स्त्री की बाईं आंख फड़के तो या तो भाई मिले या पति मिले।

४७ आंख फुड़ाई मूंड मुंडायो घर को कर्यो द्वार।
बोम्बू बोई रे बूमणा आवेस न बुहार।
एक बाबाजी ने किसी से रुपये उधार ले लिये। रुपये न लौटाने की नीयत से उन्होंने अपना वेष बदल लिया, एक आंख फुड़वा ली, मूंड मुंडा लिया, घर का द्वार भी दूसरी तरफ कर लिया किन्तु फिर भी उनको अपने कार्य में सफलता नहीं मिली। इस पर किसी ने ऊपर का दोहा कहा था। जो दोनों दीन से चला जाय उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

४८ आंख मीच्यां अंधेरो होय।
आंख मूंदने पर अंधेरा हो जाता है अर्थात् दुनिया के झगड़ों की ओर से तटस्थ हो जाना।
मि० १ आंख फूटी 'र पीर मिटी।
२ आप मरयां जग परलै।

आंख्यां देखी परसराम कदे न झूठी होय।
प्रत्यक्ष देखी हुई बात कभी झूठी नहीं होती।

आंख्यां में गीड पड़े नांव मिरगानैणी।
आंखें तो मैल-गाद से लिप्त हैं और नाम है मृगनयनी।

आंख्यां सै आंधी, नांव नैणसुख।
आंख का अन्धा नाम नयनसुख। हिन्दी की यह कहावत राजस्थान में भी बहुत प्रचलित है।

२ आंगल्यां सूं नूं परै कोनी हुवै।
अंगुलियों से नाखून अलग नहीं होते भाई-भाई अलग मालूम पड़ते हों तो
क्या ? मौका पड़ने पर वे एक हो जाते हैं। आत्मीय अपने हैं मनमुटाव चाहे
जितना भी हो।

३ आंट में आयोड़ो को टूटै।
अवसर का फायदा उठाने से ही स्वार्थसिद्धि होती है।
टूटने के अनुकूल अवसर उपस्थित होने पर लोहा टूटता है।

४ आंटै आई मरै बिलाई।
पकड़ने के अनुकूल अवसर उपस्थित होने पर ही बिल्ली मरती है।

५ आं तिलां में तेल कोनी।
इन तिलों में तेल नहीं अर्थात् यहां कोई सार नहीं।

६ आंधा आगै ढोल बाजै आ डमरूमी क्यां की ?
अन्धे के आगे ढोल बज रहा है फिर भी वह पूछता है कि यह डमरूमी कैसी
बज रही है ? ढोल की आवाज सुन कर भी वह उसे डमरूमी की ही आवाज
समझता है। उसके चर्मचक्षु नहीं तो क्या प्रज्ञाचक्षु भी नहीं ? अर्थात् जान
बूझ कर अनजान बनना।

७ आंधा आगै रोवै अपणा दीदा खोवै।
जो अन्धे के आगे रोता है वह अपनी आंखों को खोता है क्योंकि रोते हुए
को अन्धा देख तो सकता नहीं।
ज्ञान-शून्य के आगे रोना व्यर्थ है।

८ आंधा की मक्की बहरा को झटको।
राम छुड़ावै तो छूटै नहीं सिर ही पटको।
अन्धे के हाथों की पकड़ और बहरे का झटका परमात्मा छुड़ावे तो भले
ही छूटे अन्यथा नहीं चाहे सिर ही क्यों न दे मारो। बहरे को चिल्लाने
पर भी नहीं सुनता इसलिए वह क्यों कर छोड़ने लगा ?

९ आंधा की माखी राम उड़ावै।
अन्धे की मक्खी भगवान् उड़ाते हैं अर्थात् निर्बल का परमात्मा सहायक है।

० आंधा नै तो लाठी चाये।
अंधे को तो सहारा चाहिए।

१ आंधा पीसै कुत्ता खाय।
जहां अन्धे पीसते हैं वहां कुत्ते खाते हैं अर्थात् यहां प्रबन्ध का अभाव है कोई

देख-रेख करने वाला नहीं है ।

आंधा में काणो राव ।

अन्धों में काना राजा ।

आंधा सुसरा से क्यांकी लाज ?

अन्धे श्वसुर से कैसी लज्जा ?

५४ आंधी आई ही कोनी सूंसाट पैली ही मायगी ।

आंधी (तूफान) अभी यहां तक पहुँची भी नहीं सनसनाहट पहले से ही होने लग गई ।

किसी काम के होने से पहले ही ढिंढोरा पीटना ।

मि मरी तो आव ई कालो 'र मून वो होगो ।

आंधी भैंस बक में बर

अंधी भैंस को इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि वह ज्वार चर रही है या बरू ।

जहां किसी के द्वारा अज्ञानवश नुकसान पहुँचाया जा रहा हो वहां इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

आंधी मा पूत को मायो नीठ बळ ।

अन्धी मां पुत्र का मुंह नहीं देख पाती ।

७ आंधे के आंधे किवाड़ ई पापड़ ।*

अन्धे के लिए तो किवाड़ ही पापड़ होते हैं ।

आंधो के आगे सावण की बार ।

अन्धा सावन की बहार को क्या जाने ?

आंधो बांटै सीरणी घरकां नै ही दे ।

अन्धा मिठाई बांटता है और अपने घरवालों को ही दे देता है ।

वह स्वार्थ सिद्ध करता है अन्धेपन की ओट में । दूसरे उस पर पक्षपात का आरोप नहीं लगा सकते ।

० आई रुत जाती क्यूं करो पछेती ।

खेती की ऋतु आ गई है अब खेती करने में देर क्यों करते हो ?

६१ आई ही छाय नै घर की धिराणी बण बैठी ।

छाछ लेने आई थी घर की मालकिन बन बैठी !

*यह कहना शायद अधिक उपयुक्त होगा " आन्धे के आंधे किवाड़ ही पा... क्योंकि अन्धा आदमी किवाड़ को पापड़ नहीं समझ सकता ।

७२ आए लाडी आरो पावणो कह पूछ ई आरै में हुआई है।

जब किसी से कोई काम करने के लिए कहा जाय और वह उसके लिए पहले ही से तैयार बैठा हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

७३ आक को कीड़ो आक में, ढाक को कीड़ो ढाक में।

आक का कीड़ा आक में प्रसन्न रहता है और ढाक का कीड़ा ढाक में अर्थात् अमीर को अपने गगनचुम्बी महल में जो आनन्द मिलता है वही गरीब को अपनी झोंपड़ी में मिलता है।

अपने-अपने व्यवसाय में सबको आनन्द आता है।

७४ आक में ईख फोग में जीरो।

आक में ईख और फोग में जीरा पैदा हो गया।

जब बुरे कुल में किसी सज्जन का जन्म हो तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।

७५ आक सींचै पण पीपल कोनी सींचै।

आक को सींचता है पीपल को नहीं।

कुपात्रों को देता है सुपात्रों को नहीं।

७६ आकास में बिजळी चिमकै पछेड़ो झाल बावै।

आकाश में बिजली चमकती है पछड़ा पकड़ी झाड़ता है।

खतरा नहीं हो और कमजोर दिल का आदमी घबरा जाय।

७७ आकास में थूकै जका आपरै ई मूं पर पड़ै।

आकाश में थूकने वाले का थूक उसी पर पड़ता है।

सज्जन को कलंकित करने की इच्छा करने वाले स्वयं ही कलंकित होते हैं।

तु० कोई सूरज पर थूकै तो आपरै ई मूंडै पर पड़ै।

७८ आखिर रामजी कै घर न्याव है।

आखिर भगवान् के घर तो न्याय होता ही है।

तु० रामजी कै घर देर होवै सही है, अंधेर कोनी।

७९ आगली साल नै ई पाणी कोनी।

अगली पानी वर्तमान काल के लिए ही पानी नहीं अर्थात् वह आवे और ठीक कर ही क्या सकता है अपनी वर्तमान स्थिति को ही संभाल ले तो बहुत है।

८० आगलै सूं पाछलो भलो।

भविष्य से भूत काल अच्छा रहता है क्योंकि भविष्य तो अनिश्चित है।

भूतकाल में जो प्राप्त हो गया वह हो ही गया।

८१ आगै आग न पीछै पाणी ।
न आगे आग है न पीछे पानी अर्थात् वह सर्वथा अनाथ है ।

८२ आगै धाय न पीछै धीटणो ।
जीते हुए रखने को न कोई घर है मृत्यु के बाद कोई अग्नि-संस्कार करने वाला नहीं है अर्थात् वह सब तरह से अनाथ है ।
मि० गांव में घर न रोही में खेत ।

८३ आगै आंटे पाछ दे पहला लम्मा कागद ली ले ।
जब किसी को रुपया उधार देना हो तो पहले उसके नाम लिख कर फिर रकम देनी चाहिए जिससे हिसाब में गड़बड़ न हो ।

८४ आगो थारो, पीछो म्हारो ।
आपके आगे हमारी पीठ चाहे जो कीजिए ।
मि० थारी मोगरी म्हारो मूंड ।

८५ आ छाछ तो ढोलबा जोगी ही थी ।
यह छाछ तो बिखेर देने योग्य ही थी ।
निरुपयोगी वस्तु के नाश पर खेद न होना ।

८६ आज मरां काल मरां, मरता मरता फिरां
ले प्यालो रलमलो बना बगड़ा हुआ फिरां ।
यह किसी पोस्ती की उक्ति है जो बिना पोस्त पिये निर्जीव-सा रहता है और जो पोस्त का प्याला मिलते ही मस्त होकर अपने को वर-सदृश मानता है ।
पा० आज मरां काल मरां मरता मरता ई फिरां
पोल् कसूंबो जद पियां तो बगड़ा होया फिरां ॥
राजपूतों में अमल पीकर नशा करने की रिवाज थी ।
अतिथि-सत्कार तथा विवाहादि अवसरों पर अमल पिला कर नशा कराया करते थे ।

८७ आज मरयो दिन दूसरो ।
जो गया सो गया ।
(मि०) (१) आज मरयो तड़के दूसरो दिन (२) आज मर्‌यो काल बारा दिन

८८ आज मरै जके ने काल कद आवै ।
जो आज भूखा है वह कल तक प्रतीक्षा कैसे करे ?

८९ आज हमां अर काल थमां ।
आज जो हम पर बीत रही है वह कल तुम पर भी बीत सकती है ।

• आप ही मौडियो मूंड मुंडाया आप ही ओला पड़्या।
बाबाजी ने आप ही मूंड मुंडाया आप ही ओले पड़े।

१ आटो कांटो घी घड़ो कुत्तो केसो नार।
जातां भलो न बाहुड्यो स्याली बरख सुनार।
आटा कांटा घी का घड़ा बिल्ली स्त्री भेड़िया बरख और सुनार, ये न जाते अच्छे न आते। यात्रा में सर्वथा निषिद्ध हैं।
क० कांटो छांटो घी घड़ो कुत्तो केसो नार।

२ आठ पूरबिया नौ चूल्हा।
पूर्व के रहने वाले आठ ब्राह्मणों के बीच नौ चूल्हे होते हैं अर्थात् वे स्वपाकी होते हैं।

.३ आडा आवे मा का जाया।
सहोदर भाई ही संकट के समय सहायक होते हैं।

.४ आडू खै तो खाय मरै ले उठा मरै।
मूर्ख आदमी या तो अधिक खा लेता है या अधिक बोझ उठा लेता है जो उसके लिए घातक सिद्ध होता है।
मि० बामण खा मर भाट उठा मरै

.५ आडू आरम्भ हाट न ताखड़ी न बाट
मूर्ख दुकान करने चला और तराजू और बाट है ही नहीं।
मूर्ख का काम अव्यवस्थित होता है।

.६ आठे दिन से आख्योड़ो ही चोखो।
सामान्य दिन की अपेक्षा छोटा-मोटा त्यौहार ही अच्छा।
क० आठ दिन सैं आख्योड़ो क्योंई स्याळ मा।

.७ आप गांव को बींद र गांव को छोरो।
गाँव का तो छोकरा कहलाता है और जहाँ विवाह के लिए जाए वहाँ वर कहलाता है।

.८ आत्मा सो परमात्मा।
जो आत्मा है, वही परमात्मा है।

.९ आथणवाई की मेह अर पावणूं आयो रहै।
सांयकाल की घटा बरसे बिना नहीं जाती और शाम का आया हुआ मेहमान भोजन के बिना नहीं जाता।

• आदम्यां की माया बिरखां की छाया।

मनुष्यों की माया और वृक्षों की छाया अच्छी होती है। जहाँ मनुष्य अधिक होते हैं वह जगह अच्छी लगती है जैसे अधिक पत्ते वाला वृक्ष छाया देने के कारण।

१ आदरा बाजै बाय झूंपड़ी झोला खाय।
आर्द्रा नक्षत्र में हवा चले तो झोंपड़ी झूलने लगे अर्थात् अकाल में घर छोड़ना पड़े।

२ आदरा भर खाबड़ा पुनरबसु भर तलाव।
न बरस्यो पुख तो बरसै ही जग्या पुख।
आर्द्रा में वर्षा हो तो गड्ढे पानी से भर जायेंगे। पुनर्वसु में बरसे तो तालाब भर जाय और पुष्य नक्षत्र में न बरसे तो फिर मुश्किल से बरसेगा।

३ आब पाणी न्याव होय।
बेईमानी का फल मिल ही जाता है। इस पर निम्नलिखित कथा कही जाती है—एक बुढ़िया थी जो दूध में आधा पानी मिला कर बेचा करती थी। एक दिन एक बन्दर आया और बुढ़िया की रुपयों की थैली उठाकर ले गया। नदी के किनारे बैठ कर वह एक रुपया तो जल में डाल देता एक रुपया बुढ़िया की तरफ फेंक देता। इस प्रकार बुढ़िया के पास जितने रुपये थैली में थे उससे आधे रुपये ही उसे मिले शेष आधे जल में बह गये। आधा पानी दूध में मिलाने का फल उसे मिल गया।

४ आपाक सोव आपाक जावै जद बातां का रस जीरांई लावै।
बात" कहने वाले वार्ता आरम्भ के पहले उसकी भूमिका में उक्त कहावती वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

५ आधा में देई देवता आधा में खेतरपाल।
आधे में सब देवी देवता और आधे में अकेला क्षेत्रपाल।
जहाँ पर कोई आधा भाग तो केवल अपने लिए रखले और शेष आधा अन्य सबके लिए छोड़ दे वहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है।

६ आधी छोड़ एक न जावै आखी जासी मुंह से जावै।
जो आधी को छोड़ कर पूरी रोटी को लेने का प्रयत्न करता है उसकी वह आधी भी मुंह से चली जाती है।

७ आवै जेठ अमावस्या रवि आथिमतो जोय।
बीज की चमको ऊगती तो साख भरेला लोय।
उत्तर होय तो अति भलो दखण होय दुकाल।

रवि आथवे ससि आथमें तो आथो एक सुमाल।

जेठ की अमावस्या को जहाँ सूर्य अस्त होता है उस जगह को याद रखो। यदि जेठ सुदि द्वितीया को चन्द्रमा उस स्थान से उत्तर में है तो जमाना अच्छा होगा। यदि दक्षिण में है तो अकाल पड़ेगा और उसी खास स्थान पर है तो जमाना हलका होगा।

८ आधै माह कांधै कामळ बाह।

आधे माघ मास से कम्बल को रखलो। आधा माघ मास बीतने पर सन्ध्या के समय ही सर्दी रह जाती है।

९ आधी बाल्यो ऊंखली आधी घाल्यो छाज।
सांगर साटै धण गई, मधरी मधरो गाज।

एक बार जब अकाल पड़ा तो किसी किसान को विवश होकर सांगर के लिए ही (बहुत कम मूल्य में ही) अपनी स्त्री को बेच देना पड़ा। आधा अन्न तो ऊंखली में रख लिया आधा छाज में। इतना ही अन्न मिला। अब जब बादल गरजता है तो किसान उससे धीरे धीरे गरजने के लिए कह रहा है ताकि वह व्यथित न हो। अब चाहे वर्षा होती रहे उसकी स्त्री तो गई।

० आधो बस्ती में आधो बारणै।

आधा बस्ती में आधा बाहर अर्थात् इसके रहस्य का कुछ पता नहीं चलता।

१ आ नई काया सोनै की बार बार नहीं होणै की।
यह कंचन-सी काया बार-बार नहीं मिलेगी।
मनुष्य-देह दुर्लभ है।

२ आप आपकी मूंछां कै सै ताव दे है।
सब अपनी-अपनी मूछों के ताव देते हैं।
सब अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

३ आप आपकी रोट्यां नीचै सै आंच देवै।
सब अपनी-अपनी रोटियों के नीचे आंच देते हैं।
सब अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

४ आप आपकै दाणै पाणी सैं मस्त है।
अपने-अपने दाने-पानी में सब मस्त हैं।

५ आप आपको जी सै नै प्यारो।
अपनी जान सबको प्यारी है।

६ आप कमाया कामड़ा दई न दीजै दोस।

अपने किये हुए कर्मों के लिए दैव को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।

२१७ आपका पाड्या की सै भुलावै।

अपना पेट सभी पालते हैं।

२१८ आपकी एक फूटी को दुख कोनी पड़ोसी की दोनों फूटी चावे।

उक्त कहावत पर निम्नलिखित कहानी कही जाती है जो बहुत प्रसिद्ध है —

एक आदमी ने देवी से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि उसे जिस चीज की इच्छा हो वह उसे अनायास तुरन्त मिल जाय। देवी ने वरदान देते समय यह शर्त रख दी थी कि उसे जो प्राप्त होगा उससे दुगना उसके पड़ौसी को भी प्राप्त हो जायगा। ज्यों-ज्यों वह आदमी अपने आराम की चीजें मांगने लगा उसे वे मिलती गयी किन्तु उसके पड़ौसी को भी वे ही चीजें दूनी मात्रा में मिलने लगी। यह देखकर वह वरदान प्राप्त करने वाला ईर्ष्या से जल उठा। आखिर जब उससे सहा नहीं गया तब उसने मांग की कि मेरी एक आंख फूट जाय। उसकी एक आंख फूट गयी और पड़ौसी की दोनों। फिर उसने मांग की कि मेरे घर के सामने एक कूआं हो जाय। इच्छाप्रकट करते ही उसके घर के सामने एक तथा पड़ौसी के घर के सामने दो कूएं हो गए। बेचारा पड़ौसी अंधा तो पहले हो ही गया था अब घर के दरवाजे पर दो कूएं बन गये। एक दिन घर से बाहर निकलते समय वह कूएं में गिर कर मर गया। तब कहीं वरदान प्राप्त करने वाले के जी-में-जी आया।

२१९ आपकी पोल में है मस्त।

अपने-अपने घरबार मस्त है।

२२० आपकै जिसकी साख हूं कोनी जेठ की रहयां को दुख है।

अपनी वस्तुएं जाएं। होने का कोई दुख नहीं है, ईर्ष्यावश जेठ के पास उन्हीं वस्तुओं के उसके पास रहने का दुख है। किसी ईर्ष्यालु देवरानी के सम्बन्ध में उक्ति है।

२२१ आपकी गली में कुत्तो नार।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।

२२२ आप की गरज गधा नै बाप बणावै।

अपनी गरज के लिए गधे को बाप बनाता है।

अपनी गरज के लिए छोटे-से-छोटे व्यक्ति की भी गरज करनी पड़ती है।

मि० आपकी गरज रामचन्द्रजी गधै नै बाप कह्यो।

२३ आपकी छाय नै कोई खाटी कोनी बतावै।
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं बतलाता।
अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता।

२४ आपकी छोड़ पराई तक्कै आवै औसर के धक्कै।
जो अपनी छोड़ पराई की ओर दृष्टि रखता है उसे समय का आघात सहना पड़ता है।
क आपकी छोड़ पराई तक्कै सो सब काम गैब के धक्कै।
जो अपनी छोड़ पराई तकता है उसका सब बरबाद हो जाता है।

२५ आपकी जांघ उघाड़्यां आप ही लाजां मरै।
अपनी जंघा को नग्न करने से खुद को ही लज्जित होना पड़ता है। अपने घर की बुराई प्रकट करने से खुद को ही शर्मिन्दा होना पड़ता है।

२६ आपकी पराई और पराई आपकी।
उसके यहां अपनी-पराई का कोई भेद-भाव नहीं है।

२७ आपकी मा नै डाकण कुण बतावै?
अपनी माँ को कोई डाकिन नहीं कहता।
अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता।

२८ आपकै लागै हीये में दूसरे कै लागै भीत में।
अपने पर चोट पड़ती है तब तो हृदय में लगती है दूसरे पर लगती है तो मानो दीवार में लगती है।
दूसरे के प्रति कोई सहानुभूति न [illegible] न का प्रयोग करते हैं।

२९ आपको कोढ़ सांभर सामर ओ [illegible]
अपने कोढ़ को भोगो। [illegible]
अपने किए हुए का फल भोगने के सि[illegible] है चारा नहीं।

३० आपको टको टको, दूसरै को टको टकूलड़ो।
अपनी वस्तु को बड़ी समझे और दूसरे की वस्तु को नगण्य।

३१ आपको बिगाड़ यां बिना दूसरां को कोनी सुधरै।
अपना बिगाड़े बिना दूसरे का सुधार नहीं हो सकता।
परोपकार करने के लिए स्वार्थ को छोड़ना पड़ता है।

३२ आपको तो आपको और बिराणू लोग।
अपना अपना ही है और पराया पराया ही है।

१३३ आपको हाथ जगन्नाथ।
अपने हाथ से जो भोजनादि परसा जाता है वह चाहे जैसे खाओ अर्थात् कोई रोकने वाला नहीं। घर की व्यवस्था में पूर्ण आजादी है।

१३४ आप गुरुजी कातरा मारै चेलां नै परमोद सिखावै।
स्वयं गुरुजी तो कातरे मारते हैं और शिष्यों को उपदेश देते हैं।
रू० आप गुरुजी बैंगण खावै, चेलां नै परमोद सिखावै।

१३५ आप डूबन्तो पांडियो ले डूब्यो जजमान।
स्वयं डूबता हुआ ब्राह्मण यजमान को भी ले डूबा।

१३६ आपनै उपजै कोनी, दूसरां की मानै कोनी।
खुद को कोई बात नहीं सूझती दूसरों की मानता नहीं।

१३७ आप भलो तो जग भलो।
जो स्वयं भला है उसके लिए संसार भला है।

१३८ आप मर्‌यां जुग परलै।
अपनी मृत्यु हुई तो मानो संसार में प्रलय हो गया।

१३९ आप मर्‌यां बिना सुरग कठै?
अपने मरे बिना स्वर्ग कहां?
अपने हाथ से काम करने पर ही काम पूरा बनता है।

१४० आप में अकल घणी दीसै दूजै कनै धन घणूं दीसै।
अपने में अक्ल अधिक दिखलाई पड़ती है, दूसरे के पास धन अधिक दिखाई देता है।

१४१ आखर जैर उधार है।
जैसी जिसकी साख हो उसी के अनुसार उधार मिलता है।

१४२ आ बळद मनै मार।
हे बैल! आओ, मुझे मारो।
जानबूझ कर विपत्ति मोल लिया।

१४३ आब रै मोल नहीं वेस्या रै धणी नहीं।
आत्मसम्मान के मोल नहीं होते और वेश्या के पति नहीं होता।
मि० मूरख कै धणी ना बायरा कै धणी ना।

१४४ आभा की सी बीजळी होळी की सी झळ।
किसी नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह बादल में की बिजली के समान तथा दीप्ति में होली की ज्वाला के समान है।

१२३ आपकी छाय में कोई खाटी कोनी बतावै।
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं बतलाता।
अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता।

१२४ आपकी छोड़ पराई तक्कै आवै ओसर कै धक्कै।
जो अपनी छोड़ पराई की ओर दृष्टि रखता है उसे समय का आघात सहना पड़ता है।
रू० आपकी छोड़ पराई तक्कै तो सब जाय पैन कै धक्कै।
जो अपनी छोड़ पराई तकता है उसका सब बरबाद हो जाता है।

१२५ आपकी जांघ उघाड़्यां आप ही लाजां मरै।
अपनी जंघा को नग्न करने से खुद को ही लज्जित होना पड़ता है। अपने घर की बुराई प्रकट करने से खुद को ही शर्मिन्दा होना पड़ता है।

१२६ आपकी पराई और पराई आपकी।
उसके यहाँ अपनी-पराई का कोई भेद भाव नहीं है।

१२७ आपकी मा नै डाकण कुण बतावै?
अपनी माँ को कोई डाकिन नहीं कहता।
अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता।

१२८ आपकै लागै हीक में दूसरै कै लागै भीत में।
अपने पर चोट पड़ती है तब तो हृदय में लगती है दूसरे पर लगती है तो मानो दीवार में लगती है।
दूसरे के प्रति कोई सहानुभूति न होने ... सब म... न का प्रयोग करते हैं।

१२९ आपको कीयो आगै आगर ... पयो को हुक...
अपने कोड़ को भोगो। ...नो के मध्य...
अपने किए हुए का फल भोगने के सिवा भरति ... है चारा नहीं।

१३० आपको टको टको, दूसरै को टको टकूलड़ी।
अपनी वस्तु का सही समझे और दूसरे की वस्तु को नगण्य।

१३१ आपको बिगाड़ यां बिना दूसरां को कोनी सुधरै।
अपना बिगाड़े बिना दूसरे का सुधार नहीं हो सकता।
परोपकार करने के लिए स्वार्थ को छोड़ना पड़ता है।

१३२ आपको तो आपको और बिराणू लोग।
अपना अपना ही है और पराया पराया ही है।

११३ आपको हाथ जगन्नाथ।
अपने हाथ से तो भोजनादि मनमाना खाया जाता है, वह चाहे जैसे खाओ अर्थात् कोई रोकने वाला नहीं। घर की व्यवस्था में पूर्ण आजादी है।

११४ आप गुरुजी कातरा मारें चेलां नै परमोद सिखावें।
स्वयं गुरुजी तो कातर मारते हैं और शिष्यों को उपदेश देते हैं।
पा० आप गुरुजी बैंगण खावें चेलां नै परमोद सिखावें।

११५ आप डूबन्तो पांडियो ले डूब्यो जजमान।
स्वयं डूबता हुआ ब्राह्मण यजमान को भी ले डूबा।

११६ आपने सूझै कोनी, दूसरां की मानै कोनी।
खुद को कोई बात नहीं सूझती दूसरा की मानता नहीं।

११७ आप भलो तो जग भलो।
जो स्वयं भला है उसके लिए संसार भला है।

११८ आप मर्‌यां जुग परलै।
अपनी मृत्यु हुई तो मानो संसार में प्रलय हो गया।

११९ आप मर्‌यां बिना सुरग कठै?
अपने मरे बिना स्वर्ग कहां?
अपने हाथ से काम करने पर ही काम पूरा पड़ता है।

१२० आप में अवगुण घणा दीसै दूसरै कनै धन घणूं दीसै।
अपने में अवगुण अधिक दिखलाई पड़ते हैं दूसरे के पास धन अधिक दिखाई देता है।

१२१ आबरू लैर उधार है।
जैसी जिसकी साख हो उसी के अनुसार उधार मिलता है।

१२२ आ बलद मनै मार।
हे बैल! आओ मुझे मारो।
जानबूझ कर विपत्ति मोल लेना।

१२३ आम कै बीज नहीं बेस्या कै धणी नहीं।
आमफल के बीज नहीं होते और वेश्या के पति नहीं रहता।
मि० मूसल के धणी ना, बामण के धणी ना।

१२४ आभा की सी बीजली, होली की सी झल।
किसी नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह बादल में की बिजली के समान तथा शक्ति में होली की ज्वाला के समान है।

मि खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग।
(कामायनी)

१४५ आभा राता मेह माता आभा पीला मे सीला।
यदि आकाश में ललाई दिखाई पड़े तो खूब वर्षा हो यदि आसमान पीला दिखाई दे तो वर्षा की कमी हो।

१४६ आम खाणा क पेड़ गिणना ?
आम खाने या पेड़ गिनने ?
मनुष्य को अपने काम से मतलब रखना चाहिए।

१४७ आम नींबू बाणियो कंठ भींच्यां बाणियो।
आम नींबू और बनिया इनको दबाने से ही रस मिलता है।

१४८ आम फल नीचो नवै अरंड अकासां जाय।
जब आम फलता है तो नीचे की ओर झुकता है और एरंड आकाश में जा लगता है।
सज्जन जब बढ़ता है तो नम्र होता है और दुर्जन इतराता है।

१४९ आवा की कमाई जम जावा की कमाई कोनी।
मनुष्य लाभ को तो अर्जित कर लेता है पर हानि को नहीं।

१५० आयी गूगा नौमी बकरी दूधां नाटी।
भाद्र कृष्णा नवमी के बाद गाय बकरियाँ दूध देना बन्द कर देती हैं।

१५१ आयो चैत निवायो कूकड़ै मैल गंवायो।
गरम चैत मास आया तो कुक्कड़ ने भी स्नान करके अपनी मैल धोई।

१५२ आयो रात गयो परभात।
रात को आया और प्रातःकाल चला गया।
जब कोई तुरत-फुरत चला जाय तो इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१५३ आरिखड़ा सुण जोस कर समस बताऊँ तोय।
भादूड़ो जुग रेलसी छठ अनुराधा होय।
हे किसान ! वर्षा के सब योगों को देख-भाल कर मैं तुम्हें एक ही योग बतला देता हूँ। यदि भाद्रपद महीने की षष्ठी के दिन अनुराधा नक्षत्र हो तो अच्छा जमाना होता है।

१५४ आ रे मेरा सम्पटपाट। मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट।
हे मेरे सम्पटपाट ! आओ मैं तुझे चाटूँ और तू मुझे चाट।
दो निकम्मे व्यक्तियों का समागम निरर्थक होता है।

२५५ आरे राड़्या राड़ करां डाला बैठ्या के करां।
हे झगड़ा मोल लेने वाले आओ झगड़ा करें खाली बैठे क्या करें ?

२५६ आक के भाव को के बेरो।
जो जिस काम को करता ही नहीं, उसे उसका क्या पता ?

२५७ आछ पई तो खेलूं खाऊं, दूख पई घर जाऊं।
अच्छा होगा तो यहाँ रहूँगा खेलूँ-खाऊँगा मौज करूँगा अकाल पड़ा तो अपने घर चला जाऊँगा। दूसरे की विपत्ति में हिस्सा न बँटाने वाले और केवल सुख में सीरी होने वाले व्यक्ति की मनोवृत्ति का चित्रण है।

२५८ आखर बांचे न आपसे सूजा बांचे न कोई के बाप से।
वह इस तरह के अक्षर लिखता है जो वह स्वयं नहीं पढ़ सकता। लिखने के बाद बड़े-से-बड़ा वाचक भी उन्हें नहीं पढ़ सकता।

२५९ आ रे पड़ोसण झूंपड़ी नित उठ करती राड़।
आधो बगड़ बुहारती, सारो बगड़ बुहार।
हे पड़ोसिन! अपनी झोंपड़ी रखो। अब तक काम में मैं तुम्हारा हाथ बँटाती थी तुम्हें आधा आँगन ही बुहारना पड़ता था। मैं जब यहाँ थी तब प्रतिदिन मुझसे कलह करती थी। अब मेरी अनुपस्थिति में सारा आँगन बुहार।
मि० राड़ सूं बाड़ भली।

२६० आवो मीयां खाणा खावो, बिसमिल्ला कर हाथ धुवावो।
आवो मीयां छान उठावो, हम बूढ़ा कोई ज्वान बुलावो।।
एक मियाँजी से जब खाना खाने के लिए कहा गया तो वे तुरन्त बिसमिल्ला कह कर तैयार हो गये किन्तु उन्हीं मियाँजी से जब छप्पर उठाने के लिए कहा गया तो बोले—हम तो बूढ़े हैं किसी जवान को बुलाओ।
मि० काम करण को आलसी भोजन को हुसियार।

२६१ आसमानी भायवानी।
आश्विन में वर्षा भाग्यवानों के यहाँ होती है।

२६२ आसाढी पुर असटमी चन्द लैवरा जाय।
च्यार मास चूतो रहै जिऊं भांडै र राब।
आषाढ़ कृष्णा अष्टमी को चन्द्रोदय के समय यदि बादल हों तो फूटी हांडी की तरह चारों महीने पानी टपकता रहेगा।

२६३ आसाढे पुर अष्टमी चन्द उगन्तो जोय।

कालो दै तो करबरो, धोलो दै तो सुगाल।
जे चंदो निरमल हुवै तो पड़ै अचिन्त्यो काल।
आषाढ़ कृष्णा अष्टमी को उदय होते हुए चन्द्रमा की तरफ देखो। यदि वह काले बादलों में है तो जमाना ऐसा-वैसा ही होगा। यदि सफेद बादलों में है तो जमाना अच्छा होगा। यदि बादल नहीं है तो जरूर अकाल पड़ेगा।

१६४ आसाढ़े सुद नवमी नै बादल ना बीज,
हल फाड़ो ईंधन करो बैठा चाबो बीज।
आषाढ़ शुक्ला नवमी को यदि बादल और बिजली न हों तो हल को तोड़ कर जला दो और बैठे-बैठे बीज चबाते रहो क्योंकि वर्षा नहीं होगी।

१६५ आसाढ़ै सुद नौमी घन बादल घन बीज।
कोठा खेर खंखेर दो राखो बलद नै बीज।
आषाढ़ शुक्ला नवमी को यदि बादल घने हों और खूब बिजली चमकती हो तो कोठी खाली कर दो अर्थात् सब अनाज बेच डालो। बोने के लिए सिर्फ बीज और बैल रखो अर्थात् जमाना अच्छा रहेगा इसलिए अनाज को एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं।

१६६ आसो व्यावण छठ, कातर मरसी चट।
आश्विन कृष्णा षष्ठी के बाद कातरे प्रायः नष्ट हो जाते हैं।
क० आसो बीजा छठ कातरो मरसी चट।

१६७ आ सुन्दर मन्दर चढो तो बिन रह्यो न जाय।
माता देती आसका बै दिन पूग्या आय॥
हे यष्टिके! आओ मन्दिर चढ़ें। तुम्हारे बिना अब रहा नहीं जाता। माता बुड्ढा-डोकरा होने की आशिष दिया करती थी आज वे दिन आ पहुँचे हैं।

१६८ आसू निसर मेह।
आश्विन के समाप्त होने के पहले-पहले तक ही वर्षा की आशा रहती है।

१६९ आसोजां रा तड़का तावड़ा, जोगी होग्या जाट।
आश्विन की कड़ी धूप में खेतों में काम करते हुए जाट भी जोगी हो गये। आश्विन में खेती कटती है तो दिन भर खेत में काम करना पड़ता है।

१७० आसोज्यां में पिछवा चाली भर भर नाडा भराई।
यदि आश्विन में पश्चिम की हवा चले तो मूसलाधार वर्षा हो।

२७१ आसोजाँ रा मेहड़ा दोय बात बिनास।
बोरटियाँ बोर नहीं बिणयाँ नहीं कपास।
आश्विन में यदि वर्षा न हो तो दो प्रकार से विनाश हो। झाड़ियों में बेर न लगे और कपास में रुई न हो।

इ

२७२ इकलंक के दोलंक कै। (इक लग 'क' अर दो लग 'कै')
अकेला एक रहता है दो होने पर कई हो जाते हैं।
एक की संख्या १ ही रहती है किन्तु दो एक साथ मिलने पर ११ हो जाते हैं।
मि० इक मत मै, दो मत कै।

२७३ इजगर पूछै बिजपरा कहा करत हो मित्र।
पड़्या रहां हाँ धूल में हरी करत है चित्त॥
बाजीगर अजगर से पूछता है कि हे मित्र! क्या करते हो? अजगर उत्तर देता है कि धूल में पड़े रहते हैं भगवान् चिन्ता करते हैं।
मि० अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम
दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।

२७४ इज्जत की लहुमत ही और हुवै है।
इज्जत का मजा ही कुछ दूसरा होता है।

२७५ इज्जत भरम की अर कमाई करम की।
किसी के पास धन न भी हो किन्तु लोग सोचते रहें कि धन है तो भ्रम के कारण इज्जत बनी रहती है। कमाई भाग्य से होती है।

२७६ इन्दर की मा भी तिसाई ही रही।
इन्द्र की मा भी प्यासी ही रही।

२७७ इमै पड़ै तो कुओ, उमै पड़ै तो खाई।
इधर पड़े तो कुआ उधर पड़े तो खाई।
मि० भई गति साँप छछूंदर केरी (तुलसी)

२७८ इब ताणी तो बेटी बाप कै ही है।
अभी तो बेटी बाप के यहाँ ही है अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।

२७९ इब पछताया के बणै जद चिड़िया चुग गई खेत।
अब पछताने से क्या हो जब चिड़ियों ने खेत चुग लिया।

१८० इमरत तो रत्ती ही चोखो, झैर मण भी के काम को।
अमृत तो रत्ती मात्र भी अच्छा विष मन भर भी किस काम का ?

१८१ इसी जाट इस्या ही पाधा
इसी रांड इस्या ही जाया।
ऐसी जाट के ऐसे ही भाये होते हैं ऐसी दुष्टाओं के ऐसे ही कुपुत्र उत्पन्न होते हैं।

१८२ इसे परवातां का इसा ही गीत।
ऐसे विवाहों के ऐसे ही गीत होते हैं।

१८३ इसो ई तेरो खावूं खावूं इसो ई तेरो काम करावूं।
तुम्हारा खाना-खाना और काम करवाना दोनों ही निकृष्ट हैं।

१८४ इसो ई हरि गुण गास्यो इसो ई संख बजास्यो।
यहाँ हरि-गुण गाना और शंख बजाना एकसार है।
यहाँ विवेक का सर्वथा अभाव है।

१८५ इस्सी जान का इसा ही हीरा, इसी भैण का इसा ही बीरा।
ऐसी जान का ऐसा ही हीरा और ऐसी बहिन का ऐसा ही भाई।

ई

१८६ ई की मा तो ई नै ही जायो।
इसकी माता ने तो इसे ही पैदा किया है अर्थात् यह अद्वितीय है।

१८७ ईसरो सो परमेसरो।
'हरिरस' नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता ईसरदास जी के सम्बन्ध में प्रशंसोक्ति है।

१८८ ईसाणी बीसाणी।
ईशानकोण में यदि बिजली चमके तो खेती अच्छी होगी।

उ

१८९ उघाड़ै बारणै धाड़ नहीं उजाड़ गांव में राड़ नहीं।
जिस मकान का दरवाजा खुला रहता है, वहाँ डाका नहीं पड़ता और उजाड़ गाँव में झगड़ा नहीं होता।

१९० उजाड़्या उजड़ ना जड़ै।

— जब समुद्र अपनी मर्यादा छोड़ देता है तो किसी से रोका नहीं रुकता। या अपनी मर्यादा छोड़ देता है उसे कोई नहीं रोक सकता।

१९१ उठे का मुरदा उठे ई बळसी अठे का अठे।
वहाँ के मुर्दे वहाँ जलेंगे और यहाँ के यहाँ। एक स्थान की वस्तु किसी अन्य स्थान में काम नहीं दे सकती।

१९२ उसी गांव में पीहर उसी में सासरो
आथमणी दिस खेत करो म्हनै आसरो
नाडी खेत नजीक उठे हळ छोडणा
एता दे करतार फेर नह बोलणा।
खाती की बेटी परमात्मा से प्रार्थना करती है कि हे करतार! एक ही गांव में मेरा पीहर और ससुराल दोनों हों, पश्चिम दिशा में खेत हो ताकि सुबह घर से रोटी लेकर खेत में जाऊँ तब धूप मेरी पीठ की ओर हो और शाम को घर लौटूँ तब भी धूप मेरी पीठ पर हो। मेरी आंखों चुंधा न करें। खेत के पास ही तलैया हो जहाँ पर हल और बैल खोल दिये जायें और बैलों को पानी पिलाने के लिए दूर न ले जाना पड़े। यदि तू मुझे इतना-सा दे दे तो फिर मैं कुछ नहीं बोलूँगी अर्थात् इतने से मेरी इच्छाओं की तृप्ति हो जायगी।
"एता दे करतार फेर नह बोलणा" राजस्थान में लोगों के मुख से कहावत की भाँति ही सुनी जाती है इसीलिए इस लोकोक्ति-संग्रह में इस प्रकार की कतिपय उक्तियों का भी समावेश कर लिया गया है।

१९३ उतर भैंसा मेरी बारी।
एक के बाद दूसरे की बारी आती है।
रू० उतर पीसा मेरी बारी।

१९४ उतारदी लोई के करैगो कोई।
जब मान-मर्यादा छोड़ दी तो अब किसी की क्या परवाह?
रू० उतारदी लोई क्यांई करसी सगा-लोई।

१९५ उतर चाकर म मियाँ तू चाकर।
जब तक मैं कर्जदार था तभी तक चाकर था। अब मैं ऋण से उऋण हो गया तो मैं अपने को मियाँ तथा तुम्हें चाकर समझता हूँ।
उऋण होने में जो आत्म-संतोष है उसके सम्बन्ध में सर्वोक्ति है।

१९६ उतरचा पाणी को कोई भी लोटो कोना।

ऊपर चढ़ते हुए हलके पलड़े का कोई साथी नहीं अर्थात् सभी भारी पलड़े का साथ देते हैं।

गरीब का कोई साथी नहीं सभी समर्थ का साथ देते हैं।

१९७ उल्टी मत गोपाल की, गई सियालू मांय
काबल में मेवा नरया, कैर बिरछ कै मांय।
भगवान् की भी उल्टी रीति है जिसने काबुल में मेवे और व्रज में करील के पेड़ उत्पन्न किये।

१९८ उल्टो चोर कोतवाल नै डंडै।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

१९९ उल्टो दिन पूछ कर कोनी आवै।
जब बुरा दिन आता है तो वह किसी को पूछ कर नहीं आता।
अकस्मात् ही दुर्दिन आ जाता है।

२०० उल्टी पाणी चीलां चढ़ै।
जहाँ अनहोनी होती हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

ऊ

२०१ ऊखली में सिर दे जिको धमकां सूँ के डरै।
जिसको कठिन-से-कठिन काम करना है विघ्नों से उसे डरने की आवश्यकता नहीं।
मि कहत कबीर सुनो भाई साधो सीस दिया तब रोना क्या रे?

२०२ ऊँघै ही कर बिछायो लाधो।
ऊँघ रही थी और बिछौना तैयार मिल गया अर्थात् मनचाहा हो गया।

२०३ ऊँचै गढ़ का ऊँचा कांगरा।
ऊँचे किलों के ऊँचे ही शिखर होते हैं। बड़े आदमियों की बड़ी ही बातें होती हैं।

२०४ ऊँचै चढ़ कर देखो, घर घर यो ही लेखो।
विचारपूर्वक देखने से सब घरों की आंतरिक स्थिति अपने जैसी ही खराब है।

२०५ ऊँचै चढ़ चढ़ डोली डाकै नहीं भरत ने चावै।
रावी बैठी यूं कहै, जम्पी थकेगी आपै॥
जो ऊँचे चढ़ चढ़ कर दीवार डाक जाती है अपने स्वामी को कुछ गिनती नहीं रावण चेतन कहता है ऐसी स्त्री जब ऐसा करते-करते थक जायगी

तो अपने-आप भाग जायगी। किसी के समझाने-बुझाने का कोई असर उस पर नहीं होगा।

२०६ ऊंचो नाग चढ़ै तर ओड़ै, दिस पिच्छमाँ बादळा दौड़ै।
सारस चढ़ असमान सजोड़ै, तो नदियाँ डाहाळा तोड़ै।
यदि साँप पेड़ की चोटी पर चढ़े, मेघ पश्चिम दिशा को दौड़ें, सारसों के जोड़े आसमान में चढ़ें तो नदी का पानी किनारे को तोड़ कर बहेगा।

२०७ ऊंट के मूं में जीरे सैं के हुवै ?
ऊंट के मुंह में जीरे से क्या हो ?

२०८ ऊंट को धार धरती को न आकास को।
जब किसी की त्रिशंकु की तरह गति हो रही हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

२०९ ऊंट को रोग रैबारी जाणै।
ऊंट का रोग ऊंट का व्यापारी ही जानता है।

२१० ऊंट को ब्याघ तो टोपली उतार लिये।
एक चरवाहे का लड़का किसी के पास गया और कहने लगा "मैं आपके ऊंट चरा लाया करूंगा। मुझे दूसरे की अपेक्षा आप चराई के कुछ कम पैसे दे दिया करें।" ऊंट के मालिक ने पूछा कि ऊंट को खाय तो? चरवाहे ने बड़े सरल स्वाभाविक ढंग से उत्तर दिया "ऊंट को खाय तो मेरी टोपी उतार लेना।" चरवाहे की दृष्टि में उसकी टोपी से अधिक कीमती कोई दूसरी चीज नहीं हो सकती थी।

२११ ऊंट चढ्या नै कुत्तो खाय।
ऊंट चढ़े हुए को कुत्ते ने काट खाया। जब कोई अनहोनी बात हो जाय तो इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।
रक्षा के लिए अत्यन्त सावधान रहने पर भी जब किसी पर विपत्ति आ ही जाय तब इसका प्रयोग किया जा सकता है।

२१२ ऊंटां नै सुहाळ्यां सै के होय।
ऊंट का काम छोटी-छोटी पपड़ियों से कैसे चले ?
जिसकी आवश्यकताएँ बहुत हों, उसकी अल्प से पूर्ति नहीं हो सकती।
मि० ऊंट के मुंह में जीरो।

२१३ ऊंदरी को जायो बिल ही खोदै।

चुहिया की सन्तान बिल ही खोदती है।
जातिगत स्वभाव नहीं छूटता "स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते।

२१४ ऊंडे बात न घोड़ा है को नावड़े ना।
उस बात को अब घोड़े भी नहीं पहुँच सकते।
जो बीत गया वह बीत गया।

२१५ ऊंधा पैंडे चाले बाता जाय।
जो उल्टे रास्ते चलता है वह धोखे में पड़ कर हानि उठाता है।
मि० अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति।

२१६ ऊजड़ खेड़ा फिर बसै निरधनियां धन होय।
जोबन गयो न बावड़ै मरतां री ले जोय॥*
(पत्नी की प्रवासी पति के प्रति उक्ति)—उजाड़ गाँव फिर बस जाते हैं निर्धनों के पास फिर धन हो जाता है किन्तु हे प्रियतम! यौवन गया हुआ वापिस नहीं आता उसे यों ही मत गँवाइये।

२१७ ऊत वन्दे की चिट्ठी आई बांचै बीने राम दुहाई।
कुपुत्र का पत्र आया है राम की शपथ है यदि उसे कोई पढ़े।

२१८ ऊत गयो दखणा उठे का ल्यायो लखण।
मूर्ख दक्षिण गया तो वहाँ के लक्षण ले आया।
मूर्ख अवगुण ही ग्रहण करता है।

२१९ ऊत गांव में आरंड ही रूंख।
छोटे ग्राम में एरण्ड ही पेड़ समझा जाता है।
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।*

२२० ऊत गांव में कुम्हार ही महतो।
निकृष्ट अथवा छोटे ग्राम में कुम्हार ही मन्त्री होता है।

२२१ ऊतां रे के सींग होय है।
मूर्खों के सींग नहीं होते वैसे वे पशु ही हैं।

२२२ ऊतावली का किसा बायरा?
घर को छोड़ कर भग जाने वालों को खोज नहीं मिला करते।
ऊ० उतावली की और बायरा ई सही।

२२३ ऊपर तो म्हारयो पण नीचे के पाहरयो।

---

* ह० जोबन गयो न बावड़ै जिवसी (जण्सी) जारो जोय।

ऊपर तो चित्र-विचित्र रंग का साफा पहन रखता है पर नीचे की भी कुछ खबर है ?

४ ऊपर वाया घर में नागा।
ऊपर से सजधज अन्दर कुछ नहीं।

२५ ऊपर राम बड़ो बसे है।
भगवान् ऊपर से सबके कामों को देखता है।

२२६ ऊँची सूनै सूत्यो जाय बैरी दालद कदे न जाय।
जो बड़ा-बड़ा सुख-विमर्जन करता है सोया हुआ जाता है उसका दारिद्रय कभी नहीं जाता।

२२७ ऊमस कर घुत माइ गमावे ईंडा कीड़ी बाहर लावे।
नीर बिना चिड़ियो रज न्हावे तो मेह बरसे घर मांहू न मावै।
यदि गर्मी से घी पिघल जाय चीटियाँ अपने अण्डे बाहर लावें और बिना जल चिड़िया रज में नहाय तो इतनी वर्षा होगी जो पृथ्वी पर नहीं समायेगी।

ए

२२८ एक आँख को के मीचे के खोलै।
जिसके एक आँख हो वह उसे क्या तो खोले और क्या बन्द करे ? यदि खोले तब भी एकाक्षी यदि बन्द कर लेता तो फिर अन्धा ही है। किसी के इकलौता पुत्र हो तो वह क्या यत्न करे ? यदि वह चल बसे तो चारों ओर अन्धकार छा जाय।

२२९ एक आवरणो होय तब क्याव पछे तो करतो रावी।
कार्तिक में यदि एक बार मेह बरस जाय तो किसान प्रसन्न हो जाय।

२३० एक ई थाल का गुमड़ा है।
तू भी व एक की तरह दोनों कटु स्वभाव के हैं।
मि० एक ही थैले का पत्थका है।

२३१ एक करोट की रोटो बल उठै।
रोटी यदि एक ही बार रखी रहे तो जलने लगती है।
इसी प्रकार मनुष्य भी यदि एक ही स्थान पर पड़ा रहे तो वह निष्क्रिय हो जाता है। जीवन में नवीनता की आवश्यकता है।

२३२ एक कांजी को टोपो दूध की भरी माकरी न बिगाड़ दे।
एक कांजी की बूंद बर्तन के सब दूध को बिगाड़ देती है।

क० एक कायर सो मन दूध बिगाड़ै।
एक कायर से सौ मन दूध भी फट जाता है।
दुर्जन सारे समाज को बदनाम कर देता है।
मि० एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

२१३ एक काणूं एक खोड़ो राम मिलायो जोड़ो।
एक काना और एक पंगु दोनों का जोड़ा भगवान् ने मिला दिया।

२१४ एक घर तो डाकण ही टालै है।
एक घर तो डाकिन भी छोड़ देती है।
बुरे से बुरे व्यक्ति को भी कहीं न कहीं लिहाज़ रखना पड़ता है।

२१५ एक घर में बहुमतां र जड़ामूल सै जाय।
एक घर में जहाँ विभिन्न मत हों वह घर समूल नष्ट हो जाता है।

२१६ एक चणै री दो दाळ।
एक ही चने की दाल दो होती है।
जब तक संयुक्त परिवार में रहते हैं तब तक तो सब एक हैं किन्तु भाई-भाई अलग होते ही दो हो जाते हैं।

२१७ एक जणै की हलाई जोर हालै।
नेता अथवा सूत्रधार एक होता है।

२१८ एक जाड़ चाखै, एक जाड़ तरसै।
वस्तु इतनी मधुर है कि एक जबड़ा जब उसका आस्वादन करता है तो दूसरा स्वाद के लिए तरसता है।

२१९ एक टको मेरी गांठी, मगर खाऊँ क मांठी।
मेरी गाँठ में एक टका है उससे मगर खाऊं या मांठी ?
मि० थोड़ी पूंजी से क्या-क्या खरीदें ? मांठी = मैदा का बना हुआ एक प्रकार का सस्ता पकवान।

२२० एक दिन पावणूं दूजै दिन अणखावणो तीजै दिन बाप को मुंघावणूं।
अतिथि तो एक दिन का ही होता है दूसरे दिन वह अनादरणीय हो जाता है और तीसरे दिन तो उसको गाली देने की इच्छा होने लगती है।
मि० एक दिन पहुना दोसर दिन ठेहुना तीसर दिन केहुना।

२२१ एक नन्नो सौ दुख हरै।
एक नहीं कह देने से सौ दुख दूर हो जाते हैं।

२२२ एक बहिमें सैं धाड़ी कोन्या जाणै।

क पहिये से गाड़ी नहीं चलती ।
गृहस्थ रूपी रथ के स्त्री-पुरुष दो पहिये हैं जिनके मेल से ही यह रथ सुचारु
रूप से चलता है ।
एक पग उठावे अर दूसरे की आस कोनी ।
मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है, वह एक कदम उठा कर चलता है किन्तु
दूसरे कदम का क्या भरोसा ? ईश्वरेच्छा बलीयसी ।
मि० सांस आयो 'र नहीं आयो ।
४ एक पती बिन पाव रती ।
पति के बिना स्त्रीपाव रतीके तुल्य होजाती है उसका कोई मूल्य नहीं रहता।
४५ एक पीसा की पैदा नहीं, 'र घड़ी की फुरसत नहीं ।
फुरसत न होते हुए भी एक पैसे की आमदनी नहीं है ।
(निष्फल श्रम के अर्थ में प्रयुक्त)
२४६ एक पेंड चाली कोन्या 'र बाबा ! तिसाई ।*
एक कदम चली नहीं और कहने लगी "बाबा ! प्यास लगी है !"
बड़े काम को प्रारम्भ करते ही विश्राम की इच्छा करने लगना ।
२४७ एक बांदरी के रूस्यां के अयोध्या खाली हो ज्यासी ।
एक बंदरिया यदि रूठ जायगी तो क्या अयोध्या खाली हो जायगी ?
२४८ एक बार धोपी, दो बार जोगी तीन बार रोगी ।
भोगी एक बार शौच जाता है जोगी दो बार और रोगी तीन बार ।
(४९ एक भेड़ कुएँ में पड़ै तो लै सा पड़ै ।
एक भेड़ कुएं में गिरती है तो सभी साथ गिर पड़ती हैं ।
(अन्धानुकरण के अर्थ में प्रयुक्त)
२५० एक म्यान में दो तलवार कोनी खटावै ।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं ।
एक स्थान में दो बराबर की शक्तिवाले पुरुषों का निर्वाह नहीं हो सकता ।
२५१ एक रती बिन पाव रती को ।
प्रतिष्ठा के बिना कोई किसी काम का नहीं ।
२५२ एक रोटी अर दो भूक ।
बराबर-बराबर बाँट लेने के अर्थ में प्रयुक्त कहावत है ।

---

*क० काम तो चाली ई कोनी 'र काका तिसाई

२५३ एक लकड़ी सूनी बार के हुयो ।
एक भेड़ के अभाव में क्या कमी आ गई ?

२५४ एकली लकड़ी ना बलै 'र नाय उजालो होय ।
अकेली लकड़ी न जलती है और न उजाला होता है ।

२५५ एक सें दो भला ।
एक से दो अच्छे ।

२५६ एक तो एक अर दो सो दो ।
अकेला अकेला ही होता है और दो दो ही ।

२५७ एक हल हत्या दो हल काज तीन हल खेती च्यार हल राज ।
किसानों की माली हालत उनके हलों से आंकी जाती है। करीब चार-पांच बीघ जमीन की खेती एक हल की खेती कहलाती है। एक हल की खेती में तो हैरान ही होना पड़ता है, दो हल की खेती काम चलाऊ मानी जाती है, तीन हल की खेती खेती नाम को सार्थक करती है, चार हल की खेती हो तब तो कहना ही क्या, वह तो राज्य-सुख भोगने के समान है ।

२५८ एक हाथ में खोसो, एक हाथ में गयो है ।
भलाई-बुराई दोनों मनुष्य के साथ है ।

२५९ एक हाथ खीर में एक हाथ कठुला में ।
गृहस्थ को बुरे और अच्छे दिन एक साथ भी भोगने पड़ जाते हैं ।

२६० एक हाथ से ताली कोनी बाजै ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।
लड़ाई अकेले से नहीं होती ।
दो बुरे मिलने से ही बुराई होती है ।

ऐ

२६१ ऐं बाई नै घर घणा ।
इस लड़की के लिए वर की कमी नहीं अर्थात् यह सुन्दरी और गुणवती है ।
योग्य पुरुष के लिए उपयुक्त स्थान की कमी नहीं ।
योग्य पुरुष का सर्वत्र ही आदर होता है ।

२६२ ऐ घर घोड़ी आपणा वा ही बीकानेर ।
घास पनेरो खावस्यां, बांधूं धूं ना सेर ॥ ——
हे घोड़ी ! यह अपना घर है यह बीकानेर का जहाँ से मैं तुम्हें लाया और

जहाँ खाना खाने को मिलता था वहाँ की तो वहाँ कोई कमी नहीं किन्तु खाना एक बेर भी नहीं छूँगा ।

घर की आन्तरिक स्थिति बाहरी दिखावे के सदा अनुरूप नहीं होती ।

२६३ ऐरण की चोरी करी करयो सूई को दान ।
ऊपर चढ़ कर देखण लाग्यो कद आवै बीमाण ।

निहाई जैसी बड़ी वस्तु की तो चोरी की और सूई जैसी छोटी वस्तु का दान दिया । फिर भी छत पर चढ़ कर देखने लगा कि मुझे लेने के लिए विमान कब आयेगा ।

दान का दम्भ भरने वालों पर व्यंग्योक्ति ।

२६४ ऐ बिधमाता अंक राई घटै न रतिया ।
विधाता के लिखे हुए अंक राई मात्र भी नहीं घटने पाते ।

२६५ ऐसा को तैसा मिल्या बामण को नाई ।
वो दीन्ही आसका, वो आरसी दिखाई ।

जैसे को तैसा मिल गया जब ब्राह्मण और नाई की भेंट हुई । ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया और नाई ने दर्पण दिखला दिया ।

जहाँ लेन-देन की कुछ न हो वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

ओ

२६६ ओई पूत पटेलां में ओई गोबर भारा में ।
पटेल का काम करने में भी यही पुत्र है गोबर भारने के काम में भी यही है अर्थात् छोटे-बड़े सभी प्रकार के कामों में यही एक है ।

रू० ओई पूत पटेलां में ओई छाणा चुगणा में ।

२६७ ओ क्यां को टाबर ? बाप बराबर ।
नाम का तो बच्चा है किन्तु बाप बराबर है ।

रू० बाजै टाबर, बाप बराबर ।

२६८ ओपड़ मेंडो क्यांतू मोटो लाभो गिणै न टोटो ।
यह लड़का मोटा क्यों है ? इसलिए कि लाभ-हानि की चिन्ता नहीं करता ।

२६९ ओछा की प्रीत कटारी को मरबो ।
ओछे मनुष्य की प्रीति और कटारी से मरना दोनों समान हैं ।

मि० न मूर्ख जनसंपर्को सुरेन्द्रभवनेष्वपि ।

२७० ओछी गोडी नेसनड़ बहु पलाणा बग्ग ।
यो ओछी को करणहो आपण होय अलग्ग ॥

ककहरे का फूटा अक्षर भी नहीं जानता और नाम है विद्याधर ।

२८९ कटे तो राऊ का, सीखे तो नाऊ का ।
नाई के लड़के का तो अभ्यास होता है और उस्तरे से कट जाता है दूसरा ही। अपना अनुभव बढ़ाने में दूसरे की हानि की परवाह न करने पर उक्त कहावत का प्रयोग होता है ।

२९० कठे राजा भोज कठे गांगलो तेली ।
कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगा तेली !

२९१ कठे राम राम कठे टयां टयां ।
दो वस्तुओं में विषमता दिखलाने के लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२९२ कड़वी बेल की कड़वी तुमड़ी अड़सठ तीरथ न्हाई ।
गंगा न्हाई गोमती न्हाई मिटी नहीं कड़वाई ॥
कोई अपनी वंशानुगत विशेषता अथवा अपने स्वभाव को छोड़ नहीं सकता ।

२९३ कण कण भीतर रामजी ज्यूं चकमक में आग ।
जिस प्रकार चकमक में आग है उसी प्रकार कण-कण में भगवान का निवास है ।

२९४ कद नटणी बांस चढै कद भोजन पावै ।
कब तो नटिनी बांस चढ़ेगी और कब भोजन पायेगी !
श्रमजीवी को अपना काम करने पर ही भोजन प्राप्त होता है । गरीबी के कारण उसके पास भोज्यपदार्थों का संग्रह नहीं रहता ।

२९५ कद राजा आवै कद बात करूं ।
कब राजा आवे और कब बात करूं ?
टि० प्रतीक्षोत्सुका नायिका की उक्ति हो सकती है ।

२९६ कदे गधी घूण पर, कदे घूण गधा पर ।
जब भिन्न-भिन्न प्रकार के दो मनुष्य आपस में एक दूसरे की सहायता करें तब इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है । समय पर एक को दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ती है ।
टि० यहाँ घूण के दो अर्थ हैं—एक तो घुण की घूण और दूसरी घूण वह जो अनाजादि से भरी जाकर गधे पर लादी जाती है ।

२९७ कदे घी घणा कदे मुट्ठी चणा ।
कभी घी से तर भोजन मिलता है तो कभी मुट्ठी भर चनों पर ही संतोष

करना पड़ता है।

मि० क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः (भर्तृहरि)

२९८ कदे नाव गाडी पर, कदे गाडी नाव पर।

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर।

नाव जो सूखे में बनाई जाती है उसे गाड़ी पर लाद कर दरयाव में ले जाते हैं, और गाड़ा जब दरयाव के पार उतारा जाता है तब नाव पर चढ़ाते।

मि० कदे गधो गूण पर, कदे गूण गधा पर।

२९९ कनफड़ा जोग्यूं दीन बिगाड़्या।

निकृष्ट साधु दोनों दीन से गये।

मि० न घर का न योग ही सध पाया।

३०० कन्या फूले, तुल फले वृश्चिक स्यावै काल।

कन्या राशि (आश्विन) में फूल उत्पन्न हो तुला राशि (कार्तिक) में फल लगे तो वृश्चिक (मार्गशीर्ष में) फसल काटो।

३०१ कपड़ा फाट गरीबी आई जूती टूटी चाल गमाई।

कपड़े फट गये और गरीबी आ गई। ज्योंही जूते टूटे चाल का मजा जाता रहा।

३०२ कपूत जायो भलो न आयो।

कपूत सभी तरह बुरा है चाहे वह औरस हो चाहे गोद आया हो।

३०३ कवित सोवै भाट में, खाती सोवै खाट में।

कवित्त भाट को शोभा देते हैं खाती खाट की शोभा देती है।

३०४ कबूतर नै कूवो ही दीखै।

कबूतर को कूआ ही दिखलाई पड़ता है।

गरीब अपनी रक्षार्थ शरणदाता के पास जाता है।

३०५ कम खालेणा पण कम कस्यो नहीं रहणा।

कम खा लेना अच्छा है किन्तु आत्मसम्मान खोकर रहना अच्छा नहीं।

३०६ कमजोर की लुगाई सबकी भौजाई।

कमजोर की पत्नी को सब ही भाभी कहते हैं।

मि० गरीब की जोरू सबकी भाभी।

३०७ कमजोर को हिमायती हार।

कमजोर का पक्ष लेने वाला हारता है।

३०८ कमजोर गुस्सा ज्यादा पैई मार खाणै का त्यारा।

कमजोर को गुस्सा नहीं करना चाहिए, नहीं तो पिटने का भय रहता है। कमजोर में गुस्सा ज्यादा होता है और शक्ति न होने से पिटता है।

१०९ कमाई जैसा खमाई।

अधिक आय होने पर ही अधिक व्यय बर्दाश्त किया जा सकता है अन्यथा नहीं। जैसी कमाई वैसी ही खमाई। कमाई कम तो खमाई भी कम और कमाई ज्यादा तो खमाई भी ज्यादा।

११० कमाऊ आवै डरतो निखट्टू आवै लड़तो।

कमाऊ डरता हुआ आता है और निकम्मा लड़ता हुआ।

कमाऊ को गृह-प्रतिष्ठा का ख्याल बना रहता है।

१११ कमावै धोती हाळा खा ज्याय टोपी हाळा।

हिन्दू कमाते हैं और अंग्रेज खा जाते हैं।

स्वयं की कमाई स्वयं के काम न आवे।

११२ कमावै थोड़ो खरचै घणूं, जैको मूरख जाणो गिणूं।

जो थोड़ा कमाता है और अधिक खर्च करता है उसे अव्वल दर्जे का मूर्ख समझना चाहिए।

११३ कमेड़ी बाज नै कोनी जीतै।

पंडुकी बाज को नहीं जीत सकती।

निर्बल सबल को नहीं जीत सकता।

११४ कसड़ी बांधै पागड़ी मुरड़ सिवावै नाक।

कसड़ी पैरें मोचड़ी अवसरव्या ही दुःख।†

जो कस कर पगड़ी बांधता है नाकुओं का मुरड़ कर कटवाता है और तंग जूते पहनता है उसको ऐसा करने से जो कष्ट होता है उसके लिए वह उत्तरदायी है विधाता नहीं।

११५ करणी जिसी भरणी।

जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

११६ करणी पार उतरणी।

अपनी करणी से ही मनुष्य पार उतरता है।

११७ करणी जोवै आपकी के बेटो के बाप।

---

†पा० कसड़ी बांधै पागड़ी मुरड़ सिवावै नूं।

कसड़ी पैर मोचड़ी जिन सिरज्या सब दी॥

क्या पिता और क्या पुत्र सभी अपनी-अपनी करनी का फल भोगते हैं।

३१८ करम्या सो भोगम्या, खोदम्या सो पड़म्या।
अपनी करनी का फल भोगना पड़ता है। जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदता है वह स्वयं उसमें गिरता है।

३१९ करम कमेड़ी को सो, मन राजा को सो।
भाग्य तो पंडुकी जैसा और मन राजा जैसा।
भाग्यहीन उदारवृत्ति वाला होकर भी क्या करे?

३२० करमहीन खेती करे के काल पड़ै के बलद मरै।
कर्महीन जब खेती करता है तब या तो अकाल पड़ता है या बैल मर जाते हैं। भाग्यहीन के लिए परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाया करती हैं।

३२१ करमफूटया नै भागफूटया ही मिलै।
कर्महीन को भाग्यहीन ही मिलता है।

३२२ करम में थोड़ी लिखी चाल कुण ल्याय?
जब भाग्य में थोड़ी लिखी है तो उसे खोंच कर कौन ले जा सकता है?
मि० यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्। (पंचतंत्र)

३२३ करम में लिख्या कंकर तो के करै शिवशंकर?
भाग्य में यदि कंकड़ लिखे हों तो शिवशंकर क्या करें?

३२४ कर से महली मालपुआ, बोहरो लेसी हुआ हुआ।
हे महली! मालपुआ बनाओ बोहरे का तो जैसे-जैसे अपने पास रुपये होते जायेंगे त्यों-त्यों देते रहेंगे। बिना अपने पास कुछ हुए, वह भी कहाँ से क्या लेगा?

३२५ कर रे बेटा फाटको घर को रहसी न घाट को।
कर रे बेटा फाटको, सवायो घी दूध को बाटको॥
सट्टा करने से या तो इतनी हानि होती है कि करने वाला न घर का रहता है न घाट का या इतना लाभ होता है कि वह मालामाल हो जाता है।

३२६ कर लै सो काम भजलै सो राम।
काम करने में और ईश्वर के भजन में आलस्य नहीं करना चाहिए।

३२७ कर्क मरा को के भाव? के चोट काण्ये।

किसी ने दूकानदार से पूछा कर्क मेवा का क्या भाव है ? तब उसने कहा–चोट खाइए अर्थात् यदि चोट ज्यादा है तो तुम्हें मूल्य भी विवश होकर अधिक देना होगा।

३२८ कर्म की सगळ बातें है।

सब जगह भाग्य का ही चमत्कार हो रहा है।

३२९ करैगो टहल तो पावैगो महल।

सेवा करोगे तो महल पाओगे।

३३० करैगो सेवा तो पावैगो मेवा।

सेवा करोगे तो मेवा पाओगे।

३३१ कल सूं कल बणै है।

मशीन से मशीन बनाई जाती है।

मि० कंटकेनेव कंटकम्।

३३२ कलह कलासै पैंडै को पाणी जावै।

गृह-कलह के कारण 'परींडे' का पानी भी नष्ट हो जाता है क्योंकि घर में फूट पड़ने के कारण कुएं से पानी लावे कौन ?

३३३ कसम मरे को मोलो कोनी सुपन् साचो होणूं चाये।

पति की मृत्यु का स्वप्न आने पर भी स्वप्न की सचाई के आनन्द के आगे पति की मृत्यु का कोई खेद नहीं।

झूठी जिद के सामने अपनी बड़ी से बड़ी हानि की भी परवाह न करना।

३३४ कसाई कै बांधै न बकरी चोखी ही का ब्यास।

कसाई के बांधे को बकरी चोखे ही जा सकती है ?

३३५ कलो हाक मारयां कूवो खुदै है।

केवल हाक मारने से कुआँ क्योंकर खुद सकता है ?

केवल चिल्लाने से काम नहीं होता काम तो करने से ही होता है।

३३६ काई गोविन्दो कैवै 'र काई पूंगी कैवै।

देखना है क्या तो गायकी कहता है और क्या पूंगी कहती है, अर्थात् देखना है क्या होने वाला है।

३३७ कांट कटीली झाडकी लागै मीठा बोर।

कंटीली झाड़ी के बेर मीठे लगते हैं क्योंकि वे हाथों के क्षत-विक्षत हुए बिना सुलभ नहीं होते।

यदि कोई स्वभाव से कड़वा और हृदय का मीठा हो तो उसकी रूक्षता भी

अप्रिय नहीं होती।
मि० जबान का मुँह फट व्यवहार का मीठा।

१३८ कांटे सूं कांटो नीसरै।
कांटे से कांटा निकलता है।
मि० कण्टकेनैव कंटकम्।

१३९ कांदा खाया कमधजां घी खायो गोलांह।
चूरू चाली ठाकरां बाजंतै ढोलांह॥
राठौड़ों को प्याज खाने को मिला और गोलों ने घी के माल उड़ाये। हे ठाकुर साहब! इसी का फल है कि आपका यह किला ढोल बजते हुए हाथ से निकल रहा है।

१४० कांदे वाळा छीलका है ज्यांरे जितना ई बास आवै।
प्याज वाले छिलके हैं उन्हें जितना उधेड़ा जाय उतनी ही दुर्गन्ध आती है। बुराई की जितनी तह में जायगे उतनी ही अधिक बुराई नजर आवेगी।

१४१ कांविया चोड़ा ई बळै है।
जो सब को कंधे पर ले जाते हैं वे चाहे ही जलते हैं।
दंड दोषी को ही मिलता है निर्दोष को नहीं।

१४२ कांधे पर छोरो गांव में ढिंढोरो।
कंधे पर लड़का है और गांव में ढूंढता है।
मि० कांख में छोरो गांव में हेरो।

१४३ काकड़ी की चोरी 'र मूक्कां की मार।
अपराध के अनुरूप दंड दिया जाता है।

१४४ काका कोजो पायो कह, काका के लारै तो ओ ई गैरा करसी।
हे चचा! मुझे खराब मिला। उत्तर में उसने कहा बच्चे के साथ तो इतनी ही बहुतायत रहेगी।
कर्म के अनुरूप ही फल मिलते हैं।

१४५ काग कुहाड़ो कुटिल नर काटै ही काटै।
सुई सुहागो सत्पुरुष सांठै ही सांठै॥
कौआ कुल्हाड़ा और कुटिल मनुष्य ये काटते ही काटते हैं। सुई सुहागा और सत्पुरुष ये जोड़ते ही जाते हैं।

१४६ काम पड़ायो पींजरा पढ़गो च्यारूं वेद
समझायो समझ्यो नहीं रह्यो ढेढ को ढेढ।

कौवे को पिंजड़े में बन्द रख कर चारों वेद पढ़ा दिये गये किन्तु उसकी बुद्धि में कुछ न बैठा।
मि० स्वभावो दुरतिक्रमः ।

१४७ कागलां के काछड़ा होता तो उड़तां के ना दीखता ।
कौवों के अंडकोष होते तो उड़ते हुओं के अवश्य दिखलाई पड़ते।
गुण यदि मनुष्य में हों तो साफ दिखाई देते हैं।

१४८ कागलां के सराप सूं ऊंट कोनी मरै ।
कौवों के शाप से ऊंट नहीं मरते ।
दुष्टों की दुर्भावना से समर्थों का कुछ नहीं बिगड़ता।

१४९ कागलो हंस हालणी सीखे हो तो आप हालणी भी भूलग्यो ।
कौवा हंस की चाल सीख रहा था अपनी भी भूल गया।

१५० कागा किसका धन हरै, कोयल किसनूं देय ।
जीभड़ल्यां के कारण जग अपणो कर लेय ॥
कौवा किसका धन हरण करता है और कोयल किसको देती है ? केवल जीभ अर्थात् मधुर वाणी के कारण ही कोयल संसार को अपना बना लेती है।

१५१ कागा कुत्ता कुमाणसा तीन्यूं एक निकास ।
ज्यां ज्यां सेरयां नीसरे त्यां त्यां करे विनास ।
कौवे कुत्ते और दुर्जन तीनों एकसार होते हैं ये जिस मार्ग से निकलते हैं, वहीं विनाश करते हैं।

१५२ कागा हंस न गधा जती ।
कौवा हंस नहीं हो सकता गधा यती नहीं हो सकता।

१५३ काच कटोरो नैण जल मोती दूध'र मन ।
इतना फाट्यां ना मिलै लाखां करो जतन । (करो कोड़ जतन)
काँच का कटोरा अश्रुजल मोती दूध और मन के फटने पर लाखों यत्न करने पर भी नहीं मिलते।

१५४ काच की भट्टी मांई मांय बले ।
काँच की भट्ठी अन्दर ही अन्दर जलती है।

१५५ काचो दूध जाटाई जावै तातो दूध जमावै ।
कच्चे दूध में जामन दिया जाय तो वह फट जाता है, गरम दूध में देने से वही जम जाता है।

३५६ काजल सैं मोळ भारी कोनी हुवै ।
आँखां में काजल का क्या बोझ ?

३५७ काजी की मारयोड़ी हलाल हो है।
काजी की मारी हुई हलाल होती है ।
मि० १ समरथ को नहिं दोष गुसाईं
२ वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।

३५८ काटर के हेज घणो ।
दूध न देने वाली गाय अपने बछड़े से अधिक प्रेम दिखलाती है।

३५९ काठ की हांडी दूसरी कोनी चढ़ ।
काठ की हाँडी दूसरी बार नहीं चढ़ती ।
धोखा एक ही बार दिया जा सकता है।

३६० काठ डूबै सीला तिरै ।*
काठ डूब जाता है और पत्थर तैरता है ।
जब न्याय–अन्याय का कोई विचार न किया जाय
तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

३६१ काणती मामी छाय घाल, घालस्यूं रही तू सुप्यार भोत बोल्यो ना ।
हे कानी मौसाई ! जरा छाछ तो देना । मौसाई ने उत्तर दिया "छाछ क्या मैं तुम्हें नहीं दूंगी ! तुम मीठे वचन बोले न !"
मि० काने बनिये गुड़ दे बड़े सुहावन बोल।
जब कोई किसी से याचना भी करे और अप्रिय वचन भी कहे, तब इस प्रकार की लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

३६२ काणती भेड़ को न्यारो ही ग्वारो ।
कानी भेड़ का रहन-सहन ही अलग है ।
विशिष्ट पुरुषों में स्थान न मिलने के कारण निकृष्ट व्यक्ति अपना संगठन अलग कर लेते हैं।
मि० अपनी खिचड़िया के अलगे डरा।

३६३ काणिया पांडया राम राम । वैसी र तेरी श्याम श्याम ।
हे काने पंडित ! तुम्हें नमस्कार करता हूँ । उत्तर मिला—रहने दो यह श्याम श्याम ।
अपने नाम को अप्रिय अभिवादन भी अच्छा नहीं लगता ।

३६४ काणी क न्या न कोरो लाई घोट ।

---

* तु० निम डूबै लाकड़ा तिरै।

काम करने वाला अच्छा लगता है नहीं काम करने वाला सुन्दर और प्रिय भी अच्छा नहीं लगता ।

१८३ काम नै काम सिखावै ।
अभ्यास से ही मनुष्य कर्मकुशल होता है ।

१८४ काम पड़यो जद सेठजी छमेडै चढ़ग्या ।
काम के समय सेठजी छत पर चढ़ गये अर्थात् अलग हो गये ।

१८५ काम सरयो दुख बीसरयो, कुणबो आरावास ।
स्वार्थ सिद्ध होने पर लोग सबको भूल जाते हैं पहले सम्मिलित होने पर भी अलग-अलग हो जाते हैं ।

१८६ कामी के लाज नहीं लोभी के जात नहीं ।
कामी अपने पराये का विचार नहीं करता लोभी जाति नहीं देखता ।

१८७ काल कुसम्मे ना मरे, बामण बकरी ऊंट ।
बो मांगे बा फिर चरे, बो सूखा चाबे ठूंठ ।
अकाल अथवा कुसमय में ब्राह्मण बकरी और ऊंट नहीं मरते । ब्राह्मण मांग कर काम निकाल लेता है बकरी इधर-उधर चर कर पेट भर लेती है ऊंट सूखे ठूंठ चबा कर ही जीवित रह सकता है ।

१८८ काल जाय पण कलंक नहीं जाय ।
समय बीत जाता है किन्तु कलंक नष्ट नहीं होता ।

१८९ काल बागड़ सूं नीपजै, बुरो बामण सूं होय ।
रेगिस्तान में अकाल पड़ता है ब्राह्मण से बुरा होता है ।
अगर नेता बुरा हो तो बुराई की ओर ले जाता है ।

१९० काल मरी सासू आज आयो आंसू ।
सास कल मरी और आंसू आज निकले ।
हार्दिक शोक न होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

१९१ काजळ कनै बैठ्यां काळ लागै ।
दुर्जन का संग करने से कलंकित होना पड़ता है ।

१९२ काला रे तूं मलमल न्हाय तेरी काळस कदे नहिं जाय ।
काले रंग का व्यक्ति कितना ही मल मल कर क्यों नहीं नहाये उसका वर्ण नहीं बदलता ।

१९३ काली भली न कोडवाळी ।
न काली अच्छी न काले धब्बोंवाली ।

पूर्व रूप में हो या अंत में बुराई तो बुराई ही है।

१९४ काळो हाँडी कनै बैठ्यां काळूस लागै।

काली हाँडी के पास बैठने से कालिख लगती है अर्थात् कुसंगति से बदनामी उठानी पड़ती है।

मि० काजल की कोठरी में कैसोहू सयानो जाय
एक रेख काजल की लागिहै पै लागिहै।

१९५ काळै बाछा को काळो दाग कोई कोनी देखै।

काले बछड़े का काला धब्बा कोई नहीं देखता।

पापी के पाप की ओर लोगों की दृष्टि नहीं जाती।

१९६ काळै कै काळो नहीं जामै तो कोडियाळो तो जरूर ही जामै।

काले साँप के यदि काला साँप नहीं पैदा हो तो भी काले धब्बों वाला अवश्य पैदा होता है।

दुष्ट पिता के यदि वैसी ही दुष्ट सन्तान कदाचित् उत्पन्न न हो तो उससे कुछ कम दुष्ट तो अवश्य ही होगी।

१९७ काळो आखर भैंस बराबर।

उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है अर्थात् वह मूर्ख है।

१९८ किमें गुरु डोलो किमें बाणियूं डीलो।

कुछ गुरु ढीला है कुछ बनिया ढीला है अर्थात् दोनों तरफ कुछ त्रुटि है।

१९९ किस्यां फिरै जाणै बिगड्योड़ै ब्याव में नाई फिरै ज्यूं।

कैसे फिरता है जैसे बिगड़े हुए विवाह में नाई फिरता है।

२०० किरती एक झबूकड़ै, औगण छह मलिया।

कृत्तिका नक्षत्र में बिजली की एक चमक भी पहिले के अपशकुनों को मिटा देती है।

२०१ किरपण कै दालद नहीं, ना सूरां कै सीस।
दातारां कै धन नहीं ना कायर कै रोस॥

कृपण दारिद्र्य की परवाह नहीं करता शूरवीर सिर को हथेली पर लिये रहता है दातार दान देते समय धन को पानी की तरह बहा देता है कायर को कभी क्रोध नहीं आता।

२०२ किसन करी सो लीला म्हे करां लंगवाड़ा।

कृष्ण की लीला तो रासलीला कहलाई, हम भी वैसा ही करें तो लम्पट कहलावें।

४०३ जिसाक बाजा बजै जिसाक रंग लागै ।
जैसे बाजे बजते हैं, वैसे रंग निकलते हैं ।
भविष्य अनिश्चित है ।

४०४ कीड़ी नै कण, हाथी नै मण ।
ईश्वर चींटी को उदर-पूर्ति के लिए जहां कण भर देता है वहां हाथी को मन भर देता है ।
छोटे से छोटे प्राणी से लेकर बड़े से बड़े जीव की आवश्यकताएं ईश्वर पूरी करता है ।
मि० येन शुक्लीकृता हंसा शुकाश्च हरितीकृता ।
मयूराश्चित्रिता येन स ते वृत्तिं विधास्यति ॥

४०५ कीड़ी पर कै कटक ?
चींटी पर कैसी फौज ?

४०६ कीड़ी सींच तीतर खाय पापी को धन परलै जाय ।
जो चींटियों के लिए सूजा दलिया डालता है और स्वयं तीतर को मार कर खाता है, उस पापी का धन नष्ट हो जाता है ।
अथवा कृपण चींटी की तरह संचय करता है उसके धन को दूसरा खा जाता है ।

४०७ कुए की मांटी कुए में लाग ज्याय है ।
कुएं की मिट्टी कुएं में लग जाती है अर्थात् जितनी आय है, वह कुटुम्ब के पालन-पोषण में खत्म हो जाती है ।
मि० बाई का फूल बाई के ही लाग ज्याय ।

४०८ कूख लख्या सो मन में राख
रहस्योद्घाटन नहीं करना चाहिए ।

४०९ कूण सी बाड़ी को बथवो है ।
अर्थात् वह क्या कर सकता है ?
मि० कणसा कद की मूली है ?

४१० कुत्ता कै पाड़ोस सें कदी पैरो लाग्यो ।
कुत्तों के पड़ोसी होने से पहरा थोड़े ही लग जायगा ?
अनायास रक्षा का साधन मिले तो उसी पर निर्भर रहने से काम नहीं चलता ।

४११ [illegible]

हे कुत्ते ! तुम्हारे स्वामी का ही लिहाज है तुम्हारा नहीं । समर्थ आदमी का अनुचर अहंभाव दिखावे तो भी समझदार आदमी उसके स्वामी के पीछे उसको क्षम्य समझते हैं ।

४१२ कुत्ती क्यूं धुणै है ? के टुकड़ै खातर ।
कुत्ती क्यों मौंकती है ? रोटी के टुकड़ों के लिए ।
ओछे आदमी की जरूरत भी उसके अनुरूप ही होती है ।

४१३ कुत्तै की पूंछ बारा बरस दबी रही पण जद निकली जद टेढी की टेढी ।
कुत्ते की पूंछ बारह वर्षों तक दबी रही किन्तु जब निकली तभी टेढी अर्थात् कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता ।

४१४ कुमाणस आयो भलो न जायो ।
बुरा मनुष्य न घर में जन्मा हुआ और न पाहुने रूप न ही आया हुआ अच्छा होता है ।

४१५ कुम्हार की मनी, घर घर फिरी ।
कुम्हार की मनी घर घर फिरती है ।
मजदूर को नित अर्थ स्वामी की तलाश रहती है ।

४१६ कुम्हार कुम्हारी नै तो कोसी कोनै, गधैड़ै का कान मरोड़ै ।
कुम्हार का कुम्हारी पर तो वश चलता नहीं इसलिए वह गधे के कान ऐंठता है ।
मनुष्य का सबल पर वश नहीं चलता इसलिए वह निर्बल पर कोप प्रकट करता है ।

४१७ कुम्हार नै कह, गधै पर चढ़ जद तो को चढ़ै ना पाछै आप चढ़ै ।
कुम्हार से जब गधे पर चढ़ने के लिए कहा जाता है तब तो नहीं चढ़ता पीछे अपने आप चढ़ता है ।
जो पहले कहने से काम नहीं करता वह फिर धक्का मार कर अपने आप करता है ।

४१८ कुक बिना लाज ना थूं बिना साज ना ।
कमीन पुरुष ही लज्जाहीन होता है और थूं के बिना शुभकामना नहीं होना ।

४१९ कूंभार रै घर में फूटी हांडी ।
जो सारे गांव को घड़े और हांडी बनाकर देता है उसके घर में फूटी हांडी क्यों ? ईश्वर की या भी लिखाई ही रही । इसी तरह की यह उपरोक्त कहावत भी है ।

४०३ जितना बाजा बजै, जितना रंग लागे।
जैसे बाजे बजते हैं, वैसे रंग खिलते हैं।
भविष्य अनिश्चित है।

४०४ कीड़ी नै कण, हाथी नै मण।
ईश्वर चींटी को उदर-पूर्ति के लिए जहाँ कण भर देता है वहाँ हाथी को मन भर देता है।
छोटे से छोटे प्राणी से लेकर बड़े से बड़े जीव की आवश्यकताएँ ईश्वर पूरी करता है।
मि० येन धवलीकृता हंसा शुकाश्च हरितीकृता।
मयूराश्चित्रिता येन स ते वृत्ति विधास्यति॥

४०५ कीड़ी पर के कटक?
चींटी पर कैसी फौज?

४०६ कीड़ी सींच तीतर खाय पापी को धन परलै जाय।
जो चींटियों के लिए सूखा दलिया डालता है और स्वयं तीतर को मार कर खाता है उस पापी का धन नष्ट हो जाता है।
अथवा कृपण चींटी की तरह संचय करता है उसके धन को दूसरा खा जाता है।

४०७ कुए की माटी कुए में लाग ज्याय है।
कुएं की मिट्टी कुएं में लग जाती है अर्थात् जितनी आय है वह कुटुम्ब के पालन-पोषण में व्यय हो जाती है।
मि० बाई का पूत बाई कै ही लाग ज्याय।

०८ कुछ अक्ल तो मन में राख
रहस्योद्घाटन नहीं करना चाहिए।

०९ कण सी बाड़ी को बथवो है।
अर्थात् वह क्या कर सकता है?
मि० कुणसा खेत की मूली है?

१० कुत्तां कै पाड़ोसै सैं कणो पैरो लाग्यो।
कुत्तों के पड़ोसी होने से पहरा थोड़े ही लग जायगा?
अनायास रक्षा का साधन मिले तो उसी पर निर्भर रहने से काम नहीं चलता।

४११ कुत्ता तेरी काण कै तेरै धणी की।

हे कुत्ते ! तुम्हारे स्वामी का ही लिहाज है तुम्हारा नहीं । समर्थ आदमी का अनुचर अहंभाव दिखावे तो भी समझदार आदमी उसके स्वामी के पीछे उसको क्षम्य समझते हैं ।

४१२ कुत्ती क्यूं भुसै है कै टुकड़ खातर ।

कुत्ती क्यों भौंकती है ? रोटी के टुकड़ों के लिए ।

ओछे आदमी की जरूरत भी उसके अनुरूप ही होती है ।

४१३ कुत्ते की पूंछ बारा बरस दबी रही पण जद निकळी जद टेढ़ी की टेढ़ी ।

कुत्ते की पूंछ बारह वर्षों तक दबी रही किन्तु जब निकली तभी टेढ़ी अर्थात् कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता ।

४१४ कुमाणस आयो भलो न जायो ।

बुरा मनुष्य न घर में जन्मा हुआ और न पाहुने रूप में ही आया हुआ अच्छा होता है ।

४१५ कुम्हार की गधी घर घर खड़ी ।

कुम्हार की गधी घर घर रुकती है ।

मजदूर को नित नये स्वामी की तलाश रहती है ।

४१६ कुम्हार कुम्हारी नै तो कोनी जीतै गधेड़ै का कान मरोड़ै ।

कुम्हार का कुम्हारी पर तो वश चलता नहीं इसलिए वह गधे के कान ऐंठता है ।

मनुष्य का सबल पर वश नहीं चलता इसलिए वह निबल पर क्रोध हलका करता है ।

४१७ कुम्हार नै कह्यो गधै पर चढ़ जद तो कोनी चढ़ै ना पाछै आप चढ़ै ।

कुम्हार से जब गधे पर चढ़ने के लिए कहा जाता है तब तो नहीं चढ़ता पीछे अपने आप चढ़ता है ।

जो पहले कहने से काम नहीं करता वह फिर झख मार कर अपने आप करता है ।

४१८ कुल बिना लाज ना जूं बिना खाज ना ।

कुलीन पुरुष ही लज्जाशील होता है और जूं के बिना खुजलाना नहीं होता ।

४१९ कूंभार रै घर में फूटी हांडी ।

जो सारे गांव को घड़े और हांडी बनाकर देता है उसके घर में फूटी हांडी क्यों ? इंदर की मा भी तिसाई ही रई । इसी तरह की यह उपरोक्त कहावत भी है ।

४२० कूआ सैं कूओ कोनी मिलै, आदमी सें आदमी मिल ज्याय ।
कुएं से कुआं नहीं मिलता आदमी से आदमी मिल जाता है ।
आदमी का आदमी से कभी न कभी काम पड़ता ही है ।

४२१ कूण किसी कै आवै, दानूं पाणी ल्यावै ।
कौन किसके आता है अन्नोदक ही सबको लाता है ।

४२२ कूवियै न कूवै जाणियै न पूवै ।
कुओं का खनन मन नहीं करना चाहिए और पुआ नहीं बेलना चाहिए ।

४२३ कूदो पेड़ खजूर सूं राम करै सो होय ।
खजूर के पेड़ से कूद गया अब जो भगवान् करे सो हो ।
अब तो किश्ती दरिया में छोड़ दी है जो होना होगा हो जायगा । अच्छे काम में जोखम उठा कर भी भगवान के भरोसे मनुष्य उसमें प्रवृत्त हो जाता है ।

४२४ कूटा करसा खाय गेहूँ जीमै बाणिया ।
किसान बाटियां बनाकर खाते हैं और महाजन गेहूँ खाकर मौज करते हैं अर्थात् यद्यपि किसान परिश्रम करके गेहूँ पैदा करते हैं किन्तु अपना कर्ज चुकाने के लिए वे गेहूँ बोहरों को दे देते हैं ।

४२५ कूवै में पड़ कर सूको कोई भी नीसरै ना ।
कुएँ में पड़ कर सूखा कोई भी नहीं निकलता ।
कार्य के अनुरूप फल मिलता है ।

४२६ कूवो खोदै जिकै खाड त्यार है ।
जो कुआं खोदता है उसके लिए खड्डा तैयार है ।
मि० खाड़ खणै जो और को ताको कूप तयार ।

४२७ के कुत्ती कै पाणई गाडी चालै है ?
क्या कुतिया के भरोसे शकट चलता है ?*

४२८ के चीतरा के भींतड़ा ।
मनुष्य या तो काव्य-रचना से यशस्वी होता है या भवन-निर्माण से ।

४२९ के गूजर को सायको कै बकरी कै भेड़ ।
गूजर का ढोर क्या ? या तो बकरी या भेड़ ।

---

* मि० गुजराती कहावत—
हुं करुं हुं करुं एज अज्ञानता शकट नो भार जेम श्वान ताणे ।

४१० के जाणै मेंढ़ सुपारी साद।
मेंढ़ सुपारी के स्वाद को क्या जाने ?
मि० बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

४११ के तो चोड़ो चोड़्यां में कै' र चोरां लियो लेय (के र चोर लेग्या)
या तो चोड़ा चोड़ियों में है या फिर चोर उसे ले ही गये।
तु० के तो भैंसो भैंस्यां में के चोरां लियो लेय।

४१२ के तो फूड़ चालै कोनी र चालै जद भी गांव की सीम फोड़।
या तो फूहड़ चले ही नहीं और यदि चले तो भी गाँवों की सीमा को पार कर जाय।
असन्तुलित चित्त वाले व्यक्ति के कार्य में व्यवस्था नहीं मिलती।

४१३ के नागी धोवै' र के नागी निचोवै।
नग्न स्त्री क्या तो धोए और क्या निचोड़े ?
तु० नागी रांड के धोवै' र के निचोवै ?

४१४ के फूंक सैं पहाड़ उडै है ?
क्या फूंक देने से पहाड़ उड़ सकते हैं अर्थात् नहीं।

४१५ के झाड़ पर सोनूं लूमै है ?
क्या झाड़ पर सोना लूमता है ?
ऐसी कौन सी अधिक सम्पत्ति है ?

४१६ के बेटी जेठ कै सहारै जाई है ?
जेठ के ऊपर ही निर्भर होकर मैंने पुत्री को जन्म नहीं दिया है।
स्वावलम्बन के अर्थ में।
तु० जेठ कै भरोसै बेटी कोनी जाई।

४१७ के बेरो ऊँट कै करोट बैठे ?
क्या पता ऊँट किस करवट बैठे ?
भविष्य की अनिश्चितता पर।

४१८ के मारै बादळ की घाम के मारै बैरी को जाम।
या तो बादल की धूप तकलीफ देती है या शत्रु का लड़का तकलीफ देता है।

४१९ के मारै सीरी को काम के मारै काटड़ की धाम।
या तो साझे के काम में मरण है या दूध न देने वाली गाय दुःखद होती है।

४२० के मीयां मरग्या क रोजा घटग्या।

क्या मियाँ मर गये या क्या रोजा घट गये अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा।

४४१ के रोऊँ ऐ अम्मी ! तूं ओढ़ी ही न लखी।

हे माता ! तुम्हारे मरने पर भी तुम्हारे लिए क्यों कर विलाप करूँ ? क्योंकि तुमने पहनने को वस्त्र तक दहेज में नहीं दिये।

४४२ केळे की सी कामड़ी होळी को सो झाळ।

किसी नायिका के सौंदर्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि वह केले की यष्टिका और होली की ज्वाला के समान है।

४४३ केस रेस पाणी आकास

नहीं चितेरो रेवै आस॥

केश रेख पानी तथा आकाश न बनाया जाता हो तो चितेरा चित्र बनाने की आशा ही देखता रह जाय; जैसे यदि कुछ आना-जाना नहीं हो तो चित्र में यदि केश दिखलाना हो तो चाहर बन जाय यदि पानी दिखलाना हो और पत्थर बन जाय आकाश दिखलाना हो और बन जाय मोटा पर्दा-सा।

४४४ कै सर्व सुहागण कै कत्यूड़ राँड़।

या तो सर्वसौभाग्य के सुखों को भोगूंगी या निपट विधवा बन बैठूंगी।

४४५ कै सहरां कै नहरां।

मनुष्य या तो शहर का आश्रय लेकर ही पल सकता है या उपजाऊ खेत पर निर्भर रह कर ही जीवन बसर कर सकता है।

४४६ कै सोवै बंधी को लाल कै सोवै जी कै माई बाप।

या तो बन्धी का लाल निश्चिन्त होकर सोता है या जिसके माता-पिता न हों ऐसा लड़का सोता है जिस पर किसी का बंधन नहीं।

४४७ कै जागै जींकै घर में साँप कै जागै बेटी को बाप।

या तो चिन्ता के कारण वह जगता है जिसके घर में साँप है या वह जगता है जो बेटी का बाप है। कन्या के पिता को ही चिन्ताएँ घेरे रहती हैं।

४४८ कै पूर्वे रोळा 'र कै पूर्वे चौखा।

या तो मूर्खों के पैदा होने पर घर की सम्पत्ति का नाश होता है या अधिक सन्तान होने से क्योंकि कई भागों में विभाजित होने पर बड़े भारी राज्य की सम्पत्ति भी भिन्न-भिन्न हो जाती है।

४४९ कै तो बंदी पेरै कोनी 'र पेरै तो खोलै कोनी।

पगली या तो पहनती नहीं और यदि पहनती है तो खोलेगी नहीं।

४५० कै तो पैला बलद बाळै कोनी 'र बाळै तो सात गाँवां की सींव फोड़ै।

आलसी बैल या तो चलता ही नहीं अगर चलता है तो सात गाँवों तक को पार कर जाता है ।

४५१ कै तो बावळो गाँव जा कोन्या'र जा तो बावळै कोन्या ।
पगला या तो गाँव जाता नहीं और यदि जाता है तो लौटता नहीं ।

४५२ कै मोडयो बाँधे पागड़ी कै रहै उघाड़ी टाट ।
बाबाजी या तो पगड़ी ही बाँधे या नंगे सिर ही रहें ।

४५३ कैर को ठूंठ टूट ज्यावो मुड़ै कोनी ।
करील की लकड़ी टूट भले ही जाय पर झुक नहीं सकती ।
हानि भले ही हो जाय दुराग्रही अपना हठ नहीं छोड़ता ।

४५४ कै लड़ै लड़ाकड़ो कै लड़ै अणजाण ।
या तो लड़ाकू लड़ाई करता है या अनजान ।
क० कै लड़ै लड़ावती कै लड़ै अणमोल ।

४५५ कै हंसा मोती चुगै कै लंघण कर ज्याय ।
या तो हंस मोती चुगते हैं या लंघन ही कर जाते हैं ।

४५६ कोई को हाथ चालै तो कोई की जीभ चालै ।
किसी का हाथ चलता है तो किसी की जीभ चलती है ।
कोई गाली देता है तो कोई पीट भी देता है ।

४५७ कोई कै बैंगण बायला कोई कै बैंगण पथ्य
कोई कै बादी करै, कोई कै काम पथ्य ।
किसी के लिए बैंगन वायु-विकार उत्पन्न करने वाले होते हैं तो किसी के लिए हितकर भी होते हैं ।

४५८ कोई गावै होळी का, कोई गावै दिवाळी का ।
कोई तो एक बात कह रहा है और दूसरा उसका उत्तर न देकर अपना अलग ही राग अलाप रहा है ।

४५९ कोई भी मा का पेट सूँ सीख कर कोनी आवै ।
कोई भी अपनी माता के पेट से सीख कर नहीं आता ।

४६० कोई मानै न तानै, मैं तो लाडै की भुवा । (कोई मानै ना तानै ना मैं लाडे की भुवा)
कोई माने या न माने मैं तो दूल्हे की भुआ हूँ ।
मि० १ मानिये न तानिये मैं लाडा की भुआ ।
२ मानें न मानें मैं भी मीणा की खाला ।

क्या मियाँ मर गये या क्या रोजा घट गये अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा।

४४१ के रोवूं ऐ जणी ! तूं आंगी ही न लणी।

हे माता ! तुम्हारे मरने पर मैं तुम्हारे लिए क्यों कर विलाप करूँ ? क्योंकि तुमने पहनने के वस्त्र तक पीहर में नहीं दिये।

४४२ केळे की सी कामड़ी, होळी की सी झाळ।

किसी नायिका के सौंदर्य के संबन्ध में कहा गया है कि वह केले की यष्टिका और होली की ज्वाला के समान है।

४४३ केस वेस पाणी आकास

नहीं चितेरो देवै आस॥

केश वेश पानी तथा आकाश न बनाना आता हो तो चितेरा चित्र बनाने की आशा ही देखता रह जाय जैसे यदि कुछ आता-जाता नहीं हो तो चित्र में यदि रेशम दिखलाना हो तो बाहर बन जाय गतिशील पानी दिखलाना हो और पत्थर बन जाय आकाश दिखलाना हो और बन जाय नीला पर्दा-सा।

४४४ के सर्व सुहागण के रुण्डा रांड।

या तो सर्वसौभाग्य के सुखों को भोगूंगी या फिर विधवा बन बैठूंगी।

४४५ के सहरी के बहरी।

मनुष्य या तो शहर का आश्रय लेकर ही पल सकता है या उपजाऊ खेत पर निर्भर रह कर ही जीवन बसर कर सकता है।

४४६ के सोवै बांझी को जायो, के सोवै जी कै माई धन बाप।

या तो बन्ध्या का जाया निश्चिन्त होकर सोता है या जिसके माता-पिता न हों ऐसा लड़का सोता है जिस पर किसी का अंकुश नहीं।

४४७ कै जागै जीं कै घर में सांप कै जागै बेटी को बाप।

या तो चिन्ता के कारण वह जगता है जिसके घर में सांप है या वह जगता है जो बेटी का बाप है। कन्या के पिता को ही चिन्ताएँ घेरे रहती हैं।

४४८ कै मूंढ रोवा 'र कै मूंढ खोवा।

या तो मूर्खों के पैदा होने पर घर की सम्पत्ति का नाश होता है या अधिक सन्तान होने से क्योंकि कई भागों में विभाजित होने पर बड़े भारी धनिक की सम्पत्ति भी छिन्न-भिन्न हो जाती है।

४४९ कै तो पैरी पैर कोनी 'र पैरैं तो खोलै कोनी।

पगड़ी या तो पहनती नहीं और यदि पहनती है तो खोलती नहीं।

४५० कै तो मैल बलद चालै कोनी 'र चालै तो ताल पाणी को पीव फोरै।

१

आलसी बैल या तो चलता ही नहीं अगर चलता है तो सात गाँवों तक को
पार कर जाता है।

४५१ कै तो आवलो गाँव का कोन्या'र आ तो आवतै कोन्या।
पगला या तो गाँव जाता नहीं और यदि जाता है तो लौटता नहीं।

४५२ कै मोडयो बाँधै पागड़ी कै रहै उघाड़ी टाट।
बाबाजी या तो पगड़ी ही बाँधे या नंगे सिर ही रहें।

४५३ कैर को ठूंठ टूट ज्यासी, लुळसी नहीं।
करील की लकड़ी टूट भले ही जाय पर झुक नहीं सकती।
हानि भले ही हो जाय दुराग्रही अपना हठ नहीं छोड़ता।

४५४ कै लड़ै लड़ाकड़ो कै लड़ै अणजाण।
या तो लड़ाकू लड़ाई करता है या अनजान।
तु० के लड़ै लड़ाक्यो, के लड़ै अणसोच।

४५५ कै हंसा मोती चुगै कै लंघन कर ज्यांय।
या तो हंस मोती चुगते हैं या लंघन ही कर जाते हैं।

४५६ कोई को हाथ चालै तो कोई की जीभ चालै।
किसी का हाथ चलता है तो किसी की जीभ चलती है।
कोई गाली देता है तो कोई पीट भी देता है।

४५७ कोई कै बैगण बायला कोई कै बैगण पथ्य
कोई कै बायो करै कोई कै आय अरूप।
किसी के लिए बैगन वायु-विकार उत्पन्न करने वाले होते हैं तो किसी के
लिए हितकर भी होते हैं।

४५८ कोई गावै होळी का कोई गावै दिवाळी का।
कोई तो एक बात कह रहा है और दूसरा उसका उत्तर न देकर अपना अन्य
ही राग अलाप रहा है।

४५९ कोई भी मा का पेट सूं सीख कर कोनी आवै।
कोई भी अपनी माता के पेट से सीख कर नहीं आता।

४६० कोई मानै न तानै, मैं तो लाडै की भुवा। (कोई मानै ना तानै म्हें लाडे
की भुवा)
कोई माने या न माने मैं तो दूल्हे की भुआ हूँ।
मि० १ मानिये न तानिये मैं ब्याह की भुआ।
२ माने न मान मैं भी मेहमान

इस कहावत का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कोई व्यक्ति किसी दूसरे के घर में बिना अधिकार ही मालिक की तरह सलाह देने लगे और जबरदस्ती अपनी बात चलाने का प्रयत्न करे।

४६१ कोई स्याम मस्त कोई ध्यान मस्त,
कोई हाल मस्त कोई माल मस्त।
कोई अपनी सूरत-शक्ल में मस्त है, कोई ध्यान में मस्त है, कोई अपने हाल में मस्त है तो कोई अपने माल में मस्त है।

४६२ कोडी कोडी धन जुड़ै।
कौड़ी-कौड़ी धन जुड़ता है।
मि० १ बूँद बूँद घड़ो भरै। २ कण कण सूँ मण जुड़ै।
३ बूँद बूँद सूँ घट भरै, बूँदहि बूँद रिताय।

४६३ कोडी कोडी करतां भी लाख जावै है।
कौड़ी-कौड़ी करके भी धन की बड़ी राशि खर्च हो जाती है।

४६४ कोडी वाले डोकरी ढेका काढै जोय, कांई थारो खोयगो पूछै राजा भोज।
म्हारै सूं थारै गई ढेका काढूं जोय, थारै सूं भी जावसी मत गरबावै भोज॥
हे बूढ़ी स्त्री! तुम झुक-झुक कर चल रही हो, किसको खोज निकालती हो? तुम्हारा क्या खो गया है? बुढ़िया राजा भोज के इस प्रश्न का उत्तर देती है, मेरी युवावस्था जाती रही, वह आज तुम्हारे पास है, मैं उसी को ढूंढ रही हूँ किन्तु याद रखना, वह तुम्हारे पास भी सदा के लिए न रहेगी। इसलिए हे राजा भोज! गर्व न कर।
मि० अधः पश्यसि किं बाले तव किं पतितं भुवि
रे रे मूढ न जानासि गतं तारुण्यमौक्तिकम्।*

४६५ कोयलां की दलाली में काला हाथ।
कोयलों की दलाली में काले हाथ होते हैं।
तुच्छ कार्य में व्यर्थ के किये गये परिश्रम का अच्छा फल नहीं मिलता।

४६६ कोस चाली कोन्या 'र तिसाई।
अभी कोस भर भी नहीं चली और प्यास लग आई।

---

* मि० गुजराती कहावत—
पीपल पान खिरंता हँसती कूंपलियाँ
मो बीती तुज बीतसे धीरे बापुड़ियाँ।

७ कौन सुनै किन नै कहूँ सुनै तो समझै नाँहि ।
कहबो सुनबो समझबो मन ही को मन माँहि ।
कौन सुने किसको कहूँ जो सुनता है वह समझता नहीं । इसलिए कहना सुनना समझना मन-ही-मन रह जाता है ।

८ क्यूं आंधो न्यूंतै क्यूं दो बुलाय ।
क्या तो अन्धे का निमन्त्रण किया जाय जिससे उसके साथ एक और आवे ?
ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे व्यय का झंझट बढ़े ।

९ क्यूं तो खोडो क्यूं लुहार खोटो ।
क्यूं तो कोयला क्यूं कुहाड़ो मूठो ।
कुछ तो लोहा बुरा कुछ लुहार बुरा कुछ लकड़ी चिकनी और कुछ कुल्हाड़ा कुण्ठित है ।

१० किरतिका करै किरकरो रोहिणी करै सुकाल
जै मत आवै मृगसिरो हड़ हड़ करतो काल ।
श्रावण कृष्णा एकादशी के दिन अगर कृत्तिका नक्षत्र हो तो साधारण अकाल पड़ता है अगर रोहिणी नक्षत्र हो तो अच्छा जमाना होता है । हे मृगशिरा नक्षत्र ! तुम एकादशी के दिन कभी न आना नहीं तो महान् दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

ख

११ खटमल कुत्तो रासभों जम्मो मांछर जूं ।
अकल गई करतार की इसा बणाया क्यूं ।
खटमल कुत्ता रासभ गधा मच्छर और जूं इनको भगवान ने क्या बनाया ? क्या उसकी अकल मारी गई थी !

१२ खर घूघू मूरख नरां सदा सुखी प्रिथिराज ।
गधा उल्लू और मूर्ख मनुष्य सदा सुखी रहते हैं क्योंकि उनको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं सताती ।

१३ खर बाऊं चिड़ दाहणूं ।
गधा बायां और चिड़िया दाहिने शुभ समझे जाते हैं ।

१४ खरी मजूरी चोखा काम ।
अच्छा काम करने वाले पूरी मजदूरी लेवें ।

१५ खाज खाई न मल न्हाई सासरै गई न बू कुहाई ।
किसी से कुछ मिलने पर ही उसकी इच्छा जाती है ससुराल जाने पर ही लड़की बहू कहलाती है ।

७६ खल गुड़ एकै भाव ।*

जहाँ खली और गुड़ एक भाव है।
न्याय-अन्याय का कोई विचार नहीं है।

७७ घोड़ चढ़ी का से सिरी रोग पड्यो का कोई न्हीं।

अच्छे वक्त के सब साथी हैं बुरे वक्त का कोई साथी नहीं।

७८ खाँ साब लकड़ी तोड़ो तो कै ये काफर का काम
खाँ साब खीचड़ी खाओ तो कै बिसमिल्ला।

खाँ साहब से जब लकड़ी तोड़ने के लिए कहा गया तो कहने लगे—यह काफिर का काम है। उन्हीं खाँ साहब से जब खिचड़ी खाने के लिए कहा गया तो बिसमिल्ला कह कर तुरन्त खाने के लिए तैयार हो गये।

७९ खाईये त्यूँहार, चालिए व्यौहार।

त्यौहार को विशेष भोजन करना चाहिए, और सबसे अच्छा व्यवहार रखना चाहिए।

८० खाज पर आंगली सीधी जाय।

खाज पर अंगुलि सीधी जाती है।
अपने छिद्र की ओर सहज दृष्टि जाती है।

८१ खाणू पीणू खेलणू, सोणू सूंठी ताण
आछी दीवी कंथड़ा भामणी के पाण।

हे कन्त! खाना पीना खेलना और निश्चिन्त होकर और निद्रा में शयन करना तुम्हारा यही काम रह गया है भामनी के कारण तुमने सब चौपट कर दिया!

८२ खाणू मा का हाथ को होवो भलाई जैर ई
चालणू गैलै को होवो भलाई फेर ई
बैठणू भाया को होवो भलाई बैर ई
छाया मोकै की होवो भलाई कैर ई
जीमणूं प्रेम को होवो भलाई सेर ई॥

अर्थात् भले ही जहर हो मा के हाथ से जीमना अच्छा, राजमार्ग से चलना अच्छा भले ही इसमें चक्कर पड़ता हो, परस्पर बैर भी हो तब भी भाइयों में बैठना अच्छा, मौके की छाया अच्छी चाहे करील की ही क्यों न हो, प्रेमपूर्वक जीमना अच्छा भले ही जिमाने वाला चाहे ही गरीब है।

*मि० अंधेर नगरी चौपट राजा टकै सेर भाजी टकै सेर खाजा।

मि० (१) रहिमन मोहि न सुहाय अमी पियावत मान बिनु।
जो विष देइ बुलाय मान सहित मरिबो भलो॥
(२) आव नहीं आदर नहीं नहिं नयनन में नेह।
तुलसी तहाँ न जाइये कंचन बरसे मेह॥

४८३ खाणो मन भातो पैरणो जग भातो।
अपने मन को जो भावे वह खाना चाहिए किन्तु वस्त्र वे पहनने चाहिए जो दुनिया को अच्छे लगते हों।
तु० आप सुहातो खाणूं 'र गांव सुहातो पैरणूं।

४८४ खात अर पाणी, के करै सियाणी।
खाद और पानी देना चाहिए, खेती अच्छी होगी इसमें भगवान क्या करेगा ? इसमें चतुराई से क्या होगा ?

४८५ खाणो खीर को 'र बाणो तीर को।
खाना तो खीर का अच्छा और चलाना तीर का अच्छा।

४८६ खाणो सीरा को'र मिलणो बीरा को।
खाना तो हलुए का अच्छा और मिलना भाई का अच्छा।

४८७ खाय धणी को, गीत गावै बीरै का।
हिन्दू स्त्री के लिए कहा गया है   पति की कमाई खाती है और भाई का यश बखानती है।"

४८८ खाय कर सो ज्याणूं मार कर भाग ज्याणूं (खा कर सो ज्याणूं 'र मार कर भाग ज्याणूं)
खाकर सो जाना चाहिए और मार कर भाग जाना चाहिए।

४८९ खावै जैको गावै।
जो भोजन दे उसी के गीत गाना चाहिए।

४९० खारी बेल की खारी तूमड़ी।
कड़वी बेल की कड़वी ही तूंबी होती है।
वंशानुगत स्वभाव नहीं छूटता।
मि० कड़वी बेल की कड़वी तूमड़ी।

४९१ खाल पराई लीकड़ी ज्याणूं भुस में जाय।
दूसरे की खाल में वह इस तरह सूए की मेख चला रहा है मानो वह भुस में जा रही हो।
दूसरे की पीड़ा का तनिक भी ध्यान न करना।

४९२ खाली खखारोई सीख्यो है, दद्दो कोनी सीख्यो।
केवल लेना ही सीखा है देना नहीं सीखा।
मि० दद्दे का डर स दिल्ली में भी हस्तिनापुर बोलै। अर्थात् 'द' अक्षर मुंह से न निकल जाय इसलिए दिल्ली का नाम भी नहीं लेता।

४९३ खावण का सांसा, पावणा का वासा।
घर में तो भोजन ही दुर्लभ है तिस पर भी घर अतिथियों का अड्डा बना रहा है।

४९४ खावै ऊणू, जीवै दूणू।
जो पूरा पेट न भर कर चतुर्थांश खाली रखता है उसकी आयु दुगुनी हो जाती है।

४९५ खिजूर खाय सो झाड़ पर चढ़ै।
जिसे खजूर खाना हो वही उस ऊँचे पेड़ पर चढ़े।
जिसे लाभ की आकांक्षा हो वही खतरा मोल लेता है।

४९६ खिलाया को नांव कोनी होय, रुवाया को नांव हो ज्यावै।
पराये लड़के को यदि खिलाया जाय तो कोई यश नहीं मिलता किन्तु रुलाने में बदनामी है।
मि० रमाड्यूं कोइ न जाणे रोवराव्यूं सौ जाणे। (गुजराती)

४९७ खींचिये न कम्मान छोड़िये न जबान।
कमान खींची कि तीर छूटा और जब तीर छूट गया तो अपने हाथ से गया। उसी तरह जबान छूटी कि पराई हुई। इसलिए जो कुछ करना हो सोच समझ कर करना चाहिए तथा जो कुछ कहना हो सोच-समझ कर ही कहना चाहिए।
मि० १ जबान छूटी र पराई हुई। २ तीर छूट्यो जबान छूटी र छूट्यो।
मि० १ सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतम्। सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥

४९८ खीर खीचड़ी मन्दी आंच।
खीर और खिचड़ी मन्द आंच में ही अच्छी तरह सीझती है।

४९९ खुलै किवाड़ां पोल पड़ै।
जहां निगरानी अथवा किसी प्रकार की देख-रेख नहीं है, वहीं पोल दिखलाई पड़ती है।

५०० खूदणो बाल्यो जूना खात जोवै।

दिवालिया बनिया पुराने बही खातों को देखता है।

५०१ खेत में खोचे गैली मोडा में खोचे चेली।

खेत के बीच होकर अगर रास्ता जाता हो तो वह खेत के लिए हानिकर है, इसी प्रकार साधु की शिष्या उसके लिए हानिकर है।

५०२ खेत बड़ा घर सांकड़ा।

खेत बड़े ही अच्छे होते हैं और घर तंग ही अच्छे होते हैं।

बड़े-बड़े मकानों की रक्षा के लिए अनेक झंझटों का सामना करना पड़ता है, बड़े घर भी बहुत आबाद हों तो वे तंग हो जाते हैं और जनवृद्धि के कारण मांगलिक समझे जाते हैं।

मि० साजन तो सांकड़ा ही भला।

उक्त कहावत के दो अर्थ हो सकते हैं—एक तो यह कि सज्जन तो नजदीक रहें वही अच्छा, दूसरा यह कि 'संकट भीड़' अर्थात् कष्ट उठाकर भी सज्जन के साथ रहने का मौका मिले तो उसका भी लाभ उठाना चाहिए।

५०३ खेत हुवै तो गांव से आथूणो ही हुवै।

खेत हो तो गांव से पश्चिम में होना चाहिए जिससे प्रातःकाल खेत में जाते समय तथा सायंकाल लौटते समय सूर्य पीठ पीछे रहे।

५०४ खेती करै विणज भी ध्यावै, वो ना आडी पूग न आवै।

जो खेती करता है और व्यापार में मन लगाता है उसके लिए न खेती लाभदायक होती है न व्यापार।

५०५ खेती धणियां सेती।

खेती मालिक की निगरानी से ही फलदायिनी होती है।

५०६ खेती बादळ में है।

खेती वर्षा पर निर्भर रहती है।

५०७ खेती सदा सुख देती।

खेती हमेशा सुखदायक होती है।

५०८ खेत कोठा में पाणी कूवै में सूं आवै।

खेत कोठा में पानी कुएँ से ही आता है।

५०९ खेल खिलाड़ियां को घोड़ा असवारां का।

खेल खिलाड़ियों का और घोड़ा सवारों का होता है।

५१० खैरात बटै जठै मंगता आपे ही पूग ज्यावै।

जहाँ खैरात बँटती है वहाँ भिक्षुक अपने आप ही पहुँच जाते हैं।

५११ खोई मण बटोड़ा* में नणद को नांव।
मण खोई "बटोड़े" में और मान लिया गया कि ननद को दी सही।
मि० मण खोवणी चूल्हे पर, नणद ने दी वो सही।

५१२ खो की माटी खो में लागी।
खोह की मिट्टी खोह में ही लगती है।
जितनी आय होती है वह कुटुम्ब के पालन-पोषण में व्यय हो जाती है।
मि० कूप की माटी कूप में लाग ज्याय है।

५१३ खोटा काम ठेठ सूं कीन्या वर बाली नै मांग्या दीन्या।
प्रारम्भ से ही बुरे काम किये मांगने पर बाली का वर दे दिया।
बाली के साथ-साथ घर में रहने से 'खटाखट' होती ही रहती है, फिर उसके पास आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है।

५१४ खोटो पीसो खोटो बेटो औसीवर की मत्त।
खोटा पैसा और खोटा बेटा भी समय पर काम आता है।
रू० (क) खोटो पीसो र कपूत बेटो वखत पड़े आडो आवै।
(ख) खोटो पीसो खोटो बेटो अड़ी-भिड़ी में काम आवै।

५१५ खोटकी खाट खाटला पाया खोड़ली रांड खोड़लाई जाया।
टूटी खाट के टूटे ही पाये होते हैं दुष्टा स्त्री के दुष्ट ही उत्पन्न होते हैं।

५१६ खोपड़ी खोपड़ी की मत न्यारी।
प्रत्येक के दिमाग में अलग-अलग बुद्धि मिलती है।
मि० मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना।

५१७ खोयो ऊंट घड़ा में ढूंढ़।
खोए हुए ऊंट को घड़े में ढूंढ रहा है। तात्पर्य यह है कि यदि किसी मनुष्य की कोई चीज खो जाय उसका नुकसान हो जाय अथवा यदि वह बुरी तरह ठगा जाय तो वह इतना विकल हो जाता है कि उसे संभव-असंभव का ज्ञान नहीं रहता।

५१८ खोली रै तो पूर आप ही पड़ ज्याय।
यदि गिलाफ रहे तो उसमें चिथड़े भरे जा सकते हैं।
बीमार आदमी अगर जीवित रह जाय तो मांस मज्जादि से फिर भी पुष्ट हो सकता है।

---

* कंडों का समूह

ग

५१९ गंगा गयाँ गंगादास जमना गयाँ जमनादास ।
यह कहावत उस सिद्धान्तहीन व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो जैसा मौका देखता है वैसी ही बात कह देता है। गंगा गये तो गंगा को श्रेष्ठ बता कर गंगादास बन गये और यमुना गये तो यमुना को श्रेष्ठ बता कर यमुनादास बन गये।

५२० गंगा तूंबियै में कोनी मावै ।
गंगा मिट्टी के छोटे-से बर्तन में नहीं समा सकती।

५२१ गंगाजी को न्हावणूं बिपरां को ब्योहार,
डूब जाय तो पार है पार जाय तो पार ।
गंगाजी में स्नान करता हुआ यदि कोई डूब भी जाय तो भी गंगा जैसी पवित्र नदी में प्राण त्यागने से उसकी मुक्ति हो जाती है। और यदि गंगा पार हो जाय तब तो ठीक ही है। इसी प्रकार ब्राह्मण-व्यवहार के सम्बन्ध में समझिये। ब्राह्मण को यदि कुछ दिया जाय और वह वापिस न दे सके तो भी पुण्य ही है और यदि वह लौटा दे तो ठीक है ही।

५२२ गंगो नाई को के परवा ?
गधा नाई की क्या परवाह करे ?

५२३ गंगो र कांकरां में लोटै ।
गंगा और फिर भी कंकड़ों में लोटने के लिए लालायित है।
मि० गंगो र कांकरां में कुदाव खाय ।

५२४ गंडक कै भरोसै गाडो कोनी चालै ।
कुत्ते के भरोसे शकट नहीं चलता।
क० कालरी कूत्तो कै साथ ही गाडो चालै है के ?

५२५ गंडकड़ो तो लूहलूह मरगो धणी कै माथै ही कोनी ।
कुत्ता भौंक कर मर गया स्वामी को कुछ परवाह ही नहीं।
मि० कूकड़ो तो बाय बाय मरग्यो धणी कै मांदै ई कोनी ।

५२६ गंडक मारेल को के करै ?
कुत्ता मारियल का क्या करे ?

५२७ गंडक न देख कर गंडक रोवै ।
रात को एक कुत्ते को रोता देखकर सब रोने लगते हैं।

तु० गधा गंगाजी न्हायाँ किसा घोड़ो थोड़ो ई हो ज्यावै ?

५४४ गधेड़ा ई मुलक जीत ले तो घोड़ां नै कुण पूछै ?
गधे ही यदि मुल्क फतेह कर लें तो घोड़ों को कौन पूछे ?

५४५ गधेड़ी चावल ख्यावै तो बा घोड़ी ही ब्याय ।
गधी चावल खाती है तो वह घोड़े ही जनती है ।

५४६ गधेड़ै नै जेठ में धूपी चढ़ै ।
गधा ज्येष्ठ के महीने में मस्त होता है ।

५४७ गधेड़ै को मांस तो खार घाल्यां ही सीझै ।
गधे का मांस तो उसमें खार डालने पर ही सीझता है ।
जीवित अवस्था में जो जड़ है मृत्यु पर उसके मांस तक में स्वभावगत जिद्द बना रहती है ।

५४८ गधेड़ो कुरड़ी पर रंजै ।
गधा घूरे पर ही तृप्त होता है ।
बुरे मनुष्य की तृप्ति बुरे स्थान पर ही होती है ।

५४९ गधै में ग्यान नहीं मूरख कै ध्यान नहीं ।
गधे में ज्ञान नहीं होता मूर्ख के ध्यान नहीं होती ।

५५० गधो घोड़ो एक भाव ।
गधे और घोड़े का एक भाव होना ।
जहाँ अच्छे-बुरे का विचार नहीं होता वहाँ इस कहावत का प्रयोग होता है ।
मि० गुड़ गोबर एक भाव ।

५५१ गधो मिसरी को के करै ?
गधा मिसरी का क्या करे ?

५५२ गम बड़ी चीज है ।*
धैर्य बड़ी वस्तु है ।

५५३ गया कनागत आई देवी बामण जीमै खीर जलेबी ।
कनागत के बाद नवरात्र आये उनमें ब्राह्मण खीर-जलेबी का भोजन करते हैं ।

---

*मि० १ गम खाना चीज बड़ी है कोई देखो ना गम खाय कै ।
२ गम खाना 'र कम खाना (ये दोनों बातें अच्छी हैं)

५५४ गया कनागत टूटी आस, बामण रोवै चूल्है पास।
श्राद्ध बीत जाने पर ब्राह्मण निराश होकर चूल्हे के पास बैठ कर दुखी होते हैं।

५५५ गरजवान की अक्कल जाय, दरदवान की सिकल जाय।
जिसको किसी चीज की गरज होती है उसमें उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रह जाता, जो किसी दर्द से दुखी है उसके चेहरे का रंग जाता रहता है।

५५६ गरजै जिको बरसै कोनी।
जो गरजता है वह बरसता नहीं।

५५७ गरीब की लुगाई जगत की भोजाई।
गरीब की स्त्री संसार की भावज होती है।

५५८ गरीब की हाय बुरी।
गरीब की हाय बुरी होती है।

५५९ गरीब को बेली राम।
गरीब को भगवान् का सहारा होता है।
मि० निबल के बल राम।

५६० गरीबदास की तो हवा-हवा है।
गरीबदास का तो केवल नाम मात्र है, धन तो दूसरों का खर्च होता है।

५६१ गरु की चोट विद्या की पोट।
गुरु के पीटने से बहुत विद्या आती है।
मि० (१) सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः (पातंजल महाभाष्य)
(२) गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढि गढि काढ़ै खोट।
भीतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

५६२ गलै अमल धूल री हुवै गारी, रवि ससि रै होवै कुंडारो।
सुरपत धनक करै दिस सारी (तो) ऐरावत असवारी।
यदि अफीम गलने लगे और धूल में पानी छूटने लगे, सूर्य और चन्द्रमा के चारों तरफ कुण्डल हो और इन्द्रधनुष पूरा दिखाई दे तो इन्द्र ऐरावत हाथी की सवारी पर आवे अर्थात् अत्यधिक वर्षा हो।

५६३ गहण लाग्यो कोन्या मंगता भेळा फिरगा।
ग्रहण अभी लगा ही नहीं भिक्षुक पहले से ही इकट्ठे होने लगे।

५६४ गहणो चांदी को 'र नखरो बांदी को।
(स्पष्ट)

५६५ गांठ को जाय र लोक हंसाई होय।
गांठ का पैसा जाय और दुनिया हँसे।
मि० घर की छीज लोक की हाँसी।

५६६ गांधी बेटा टोटा खाय फोहा चूसा छूटे न जाय।
गंधी का लड़का यदि नुकसान भी उठाता है तो भी उसका फोहा चूसना तो कहीं नहीं जाता अर्थात् घाटा सह कर भी वह अपनी पूंजी का फोहा चूसना तो कर ही लेता है फोहा-चूसना करने को तो वैसे वह घाटा उठाना समझता है।
मि० पश्यातो मार्जिक पथ्यं किमन्यैः कौशलादिभिः
मर्दनेन परमीतं तन्मतेन प्रतीयते। (पंचतंत्र)

५६७ गांव करे तो गैली करे।
जो गांव करता है वही पगली करती है।

५६८ गांव की नेंव लेखा ही कहवे है।
कुछ देख कर ही पूरी वस्तु का अनुमान लगा लिया जाता है।

५६९ गांव को ठाकर छेरड़ी मार दी पण म्हे क्यूं कहां?
गांव के ठाकुर ने बकरिया मार दी पर हम क्यों कहें?

५७० गांव बस्यो सूत्यो जाणे।
गांव में बसा हुआ न जाने कब लौट कर आवे सोया हुआ न जाने कब जगे?

५७१ गांव गांव खेजड़ी अर गांव गांव गूगो।
गांव-गांव में खेजड़ी के वृक्ष हैं और गांव-गांव में गूगा है।

५७२ गांव बले डूम त्यूंहारी मांगे।
गांव तो जल रहा है और डूम त्योहारी मांग रहा है।
अविचारी के लिए यह कहावत प्रयुक्त है जो अवसर को नहीं देखता।

५७३ गांव बसायो बाणियो पार पड़ै जद जाणियो।
बनिये का बसाया हुआ गांव मुश्किल से पार पड़ता है क्योंकि आम तौर पर गांव राजा ही बसाते हैं।

५७४ गांव में घर ना रोही में खेत ना।
गांव में मकान नहीं है और जंगल में खेत नहीं है।

५७५ गांव में पड़ूमी भजायो के करैमी सामी तारो।

जब गाँव में ही महामारी फैली हुई हो तो तारा लगने से क्या हुआ ?
तारे के अस्त होने को तारा लगना कहते हैं ।

५७६ गाँव हुवै जठै ढेडवाड़ो ही हुव ।
जहाँ गाँव होता है वहाँ मेंगवाड़ी होती ही है ।
क० गाँव मैल सारूं ढेडवाड़ो है ।

५७७ गाछ सैल बेल बधै ।
पेड़ के सहारे ही लता बढ़ती है ।
बड़े के सहारे छोटे पलते हैं ।

५७८ गाजर की पूंगी बाजी तो बाजी नहीं तोड़ खाई ।
गाजर की पूंगी बनाई वह बजी तो बजी नहीं तो तोड़ कर फेंक दी ।
उपेक्षित स्वामी धर्म या मित्रता के सम्बन्ध में व्यंगमयी उक्ति ।
क० गाजर की पूंगी बजी जने बजाई नहीं बाजी तो तोड़ खाई ।

५७९ गाज जिको बरसै कोनी ।
जो गरजता है वह बरसता नहीं ।

५८० गाडा को फाचरो र लुगाई को चाचरो कूट्योड़ो ही चोखो ।
गाड़ी के फाचर और स्त्री के सिर का जितना कस जाय उतना ही अच्छा ।

५८१ गाडा टळै हाडा नहीं टळै ।
हाडा राजपूतों की एक शाखा है । बूंदी राज्य देवाजी हाडा ने स्थापित किया था । देवाजी के वंशधरों ने वीरता में अच्छा नाम पैदा किया जिससे उपयुक्त कहावत चली है ।

५८२ गाडा नै देख कर पाडा का पग सूजगा ।
शकट को देखकर महिष के भी पैर सूज गये ।

५८३ गाडा में छाजला को के भार ?
शकट में छाज का क्या भार ?

५८४ गाडिये लुहार को कुण सो गाँव ?
गाड़िये लुहार का कोई गाँव नहीं होता ।

५८५ गाडी उलट्यां पछै विनायक मनायाँ कै होय ?
गाड़ी उलट जाने के पीछे विनायक का मनाने से क्या हो ?
क० गाडी उलट्यां पाछै क्यों का विनायक ?

५८६ गाडी को पहियो 'र आदमी की जीभ तो चालतो ही चोखो ।
गाड़ी का पहिया और आदमी की जीभ तो चलती ही अच्छी ।

५८७ गाडी सै 'र नारी सै बच कर रैणूं ।
गाड़ी से और तुम्हारा नवविवाहिता स्त्री से बच कर रहना चाहिए ।

५८८ मोटै सीखै सो माडो सीखै ।
छोटे बड़ों का ही अनुसरण करते हैं ।

५८९ गादड़ मारी पालकी, मै मडूमयां हालसी ।
गीदड़ ने पालकी मारी अब तो वह बादलों की गरज सुन कर ही हिलेगा ।
इस कहावत की कथा के सम्बन्ध में कहावत संख्या ३९१ देखिये ।

५९० गादड़ै की तावली स बेर थोड़ाई पाकै ।
गीदड़ के उतावली करने से बेर थोड़े ही पक जाते हैं ?

५९१ गादड़ की मार्‌योड़ी सिकार नार थोड़ा ई खाय ।
गीदड़ की मारी हुई शिकार को सिंह थोड़े ही खाते हैं ?
उद्योगी पुरुष दूसरे की आशा नहीं करते ।

५९२ गादड़ै की मोत आवै तो गांव कानी भाजै ।
गीदड़ की शामत आती है तो वह गाँव की तरफ भागता है । जब होनहार अच्छी नहीं होती तब बुद्धि विपरीत हो जाती है ।
मि० विनाशकाले विपरीतबुद्धि ।

५९३ गादड़ै कै मूंडै न्याय ।
इस कहावत के पीछे निम्नलिखित कथा कही जाती है—
एक सिंह पिंजड़े में बन्द था । कोई ब्राह्मण उधर से जा रहा था । सिंह की करुण पुकार सुन कर जब ब्राह्मण ने उसे पिंजड़े से मुक्त कर दिया तो सिंह ने उसे ही खा जाना चाहा । इस पर एक गीदड़ को न्याय के लिए मुकर्रर किया गया । गीदड़ ने अथ से इति तक पूरी कहानी सुनी । सुन कर उसने कहा—"और तो सब ठीक किन्तु यह बात मेरी समझ से बाहर है कि सिंह पिंजड़े में रहा हो यह असम्भव है । जरा करके दिखाओ तो पता चले ।"
सिंह ने कहा "इसमें असम्भव क्या है ? मैं अभी करके दिखलाता हूँ ।
सिंह पिंजड़े के अन्दर गया और जाते ही पिंजड़ा बन्द कर दिया गया ।
ब्राह्मण ने कहा—"मेरा न्याय ?"
गीदड़ ने उत्तर दिया "न्याय हो गया न तुम्हें और क्या चाहिए ? जो उपकार के बदले अपकार करता है उसकी यही सजा है ।

५९४ गाय अर कन्या नै जिसी हांकदे उसी ही चाल पड़ै ।

गाय और लड़की को जिधर चला दिया जाय उधर ही उनको जाना पड़ता है ।

५९५ गाय की भैंस के लागी ?
भैंस का गाय से क्या सम्बन्ध है ?

५९६ गाय ना बाछी नींद आवे आछी ।
जिसके गाय बछिया कुछ नहीं वह निश्चिन्त सोता है ।

५९७ गाय ब्याये ब्याणी की बहू ब्यावे घरियाणे की ।
गाय तो ब्याये की लानी चाहिए और बहू अच्छे घराने की लानी चाहिए ।

५९८ गायां मायां बामणां मार्‍यां ही भला ।
गायों माइयों और ब्राह्मणों से तो बच कर रहना ही अच्छा क्योंकि इन पर प्रहार नहीं किया जा सकता ।

५९९ गायां में कुण गयो गोधो बहू मारदे बिलोवणी मोदो ।
गायों में कौन गया ? उत्तर मिला—गोधो । वह तो दूध निकाल कर पी जायगा । तब तो सब चौपट कर दिया ।
दू० गायां में कुण गया ? के गीगो ।
रोवो क्यूं नी रांडो रोवण पड़्यो सीगो ॥
अगर गोधा ही गायों को चराने गया है तो सारी गायें वापिस आने की नहीं । गीधा बिन सनीप नहीं कुछ गायें जरूर खा जायेंगी । सब रोना रोने का काम है अभी से रो क्यों नहीं लेती ?

६०० गारड़ बिना जैर कोनी उतरै ।
गारुड़ी के बिना साँप का विष नहीं उतरता ।

६०१ गार में पग सिखरां पर बैठणा रे ।
कीचड़ में पैर और शिखरों पर बैठने की लालायित ।

६०२ गाल्यां सू घूमड़ा कोनी होय ।
गालियों से कोई ही फोड़े निकलते हैं ।
दू० गाल्यां सूं के घूमड़ा निकलै है ?

६०३ गावणू अर रोवणू सैंनै आवै है ।
गाना और रोना सबको आता है ।

६०४ गीर्‌ड़ स्याणे तो गर्यों र लाय अमीर ।
यहाँ गाना तो है गरी और गाने है अमीर ।

६०५ गीत में गाल ओगो मा रीत में रोवण जोगो मा ।

यह सब तरह से निकम्मा है न वह गा सकता है न रो सकता है । न तो जिस पर गर्व किया जा सके न जिसकी मृत्यु ही शोचनीय हो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त कहावत ।

१०६ गूजर घटे ही गुजरात ।

(स्पष्ट)

१०७ गुड़ की डळी द दे नहीं बाणिये की बेटी बण ज्याऊंगी । *
लड़की की ओर से माता-पिता को धमकी दी गई है । बनिये की बेटी बन जाने पर फिर गुड़ की किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी ।

१०८ गुड़ कोनी गुलगुला करती ल्याती तेल उधारो
परींडा में पाणी कोनी बळीतो कोनी न्यारो ।
कढ़ायो तो मांग कर ल्याती पण आटा को दुख न्यारो ।
गुड़ नहीं है नहीं तो गुलगुला बनाती । तेल तो किसी से उधार ही मांग लाती । घर के जलागार में पानी नहीं है ईंधन अलग नहीं है । कड़ाह तो मांग कर ही ले आती किन्तु आटे का दुख अलग ही है । कुछ भी नहीं तो गुलगुले बनायेगी क्या खाक !
साधनहीन व्यक्ति की कामना ।

१०९ गुड़ खाय गुलियाणी को पछ करै ।
गुलगुलों से परहेज रखने वाले के सम्बन्ध में यह उक्ति कही जाती है ।

११ गुड़ मोळो हो तो माखी कदेस की चाट ज्याती ।
गुड़ फीका होता तो मक्खियाँ कभी की चाट जातीं ।
यहाँ पोल नहीं है ।

१११ गुड़ै गुमाई, फौज पसरै जावै ।
पर्वतीय स्थान में सेना भले चली जाती है किन्तु उसे ठहराने या विश्राम के लिए किसी समतल भूमि में निवास करना ही पड़ता है ।
(घर के किसी निकम्मे और कमजोर व्यक्ति पर ही उचित-अनुचित सब प्रकार के दोषों का मढ़ दिया जाता ।)

११२ गुड़ चाहे जितनो ही मीठो ।

---

* गुड़ दे दे नहीं तो छोरी हो ज्याऊंगा ।
लड़के ने धमकी दी कि या तो गुड़ दे नहीं तो लड़के से लड़की हो जाऊँगा ।

जितना अधिक गुड़ डाला जायगा उतना ही मीठा होगा ।
जितना अधिक पैसा देकर काम करवाया जायगा उतना ही अच्छा काम होगा ।

११३ गड़ डलियां घी आंगलियां ।
डली-डली करके जब लोग गुड़ खाने लगते हैं तो गुड़ समाप्त हो जाता है और परखने के लिए जब सभी अंगुलियों में घी लगाने लगते हैं तो वह घी भी चुक जाता है ।

११४ गुड़ तो अंधेरे में ही मीठो ।
गुड़ तो अंधेरे में भी मीठा होता है ।

११५ गुड़ देतां मरै, बीनै झेर क्यूं देणू ?
जो गुड़ देने से मर जाय उसे विष क्यों देना चाहिए ?
मीठे बोलने से काम चले वहां कटु क्या बोला जाय ?

११६ गुड़ बिना किसो चोथ ?
बिना गुड़ के चौथ का व्रत कैसा ?
विशेष कार्य के लिए विशेष व्यक्ति आवश्यक होता है ।

११७ गुण गरू पूजा ।
गुणों के अनुसार प्रतिष्ठा होती है ।

११८ गुरु-गुरु विद्या सिर सिर बुद्धि ।
गुरु-गुरु के पास विद्या होती है और दिमाग-दिमाग में भिन्न-भिन्न बुद्धि मिलती है ।

•११९ गुरु लोभी लालची, दोनूं खेलै दाव ।
दोनूं अबेक डूबसी बैठ पथर की नाव ।।
लालची गुरु और चेला दोनों दांव खेलते हैं पत्थर की नाव पर चढ़ कर निश्चय ही दोनों क्रमशः ही डूब जायेंगे ।

१२० गुरु स चेला आगला ।
गुरु से चेले बढ़ गये ।
मि० गुरु तो गुड़ ही रह्या चेला शक्कर होगा ।

१२१ गुलगुला भावै पण तेल कठेसूं आवै ।
गुलगुले अच्छे लगते हैं किन्तु तेल कहां से आये ?

१२२ गधाड़ को बाप्यो कौ मैं बाप्यो कै ।
जिस वस्तु के कर्ता का पता न हो वह किसके सिर लगाई जाय ? जैसे जिस

बालक के पिता का नाम न मालूम हो वह किसको पिता कहे ?

मि० वेस्या केरा पूत ज्यूं कहै कौन सूं बाप। (कबीर)

१२३ गूंगा तेरी सैन में समझै कुल में दोय।
के गूंगा की मावड़ी के गूंगा की जोय॥

गूंगे के इशारे को केवल दो ही समझ पाते हैं या तो गूंगे की मां या गूंगे की स्त्री।

क० गूंगा तेरी सैन में समझै नांई कोय।
कै समझै तेरी मावड़ी कै समझै तेरी जोय॥

१२४ गूंगी 'र गीता गावै।

गूंगी और फिर भी गीता गाने की अभिलाषा करे!

१२५ गूगो बड़ो क राम के बड़ो तो हूं सो हूं ही पण सांपां सूं कुण बैर करे।*

गूगा बड़ा या राम? उत्तर दिया कि बड़ा तो जो है वही है अर्थात् राम बड़ा है किन्तु यह कह कर कि राम बड़ा है, सांपों से कौन बैर बांधे? गूगा सांपों का देवता समझा जाता है। उसके नाखुश होने पर सांप काटने का भय बना रहता है।

मतलब किसी बात को स्पष्टतः प्रकट न करना।

१२६ गूजर किसका पाळती कित्ता मित्र कलाल?

गूजर किसका आसामी है और कलाल किसका मित्र है?

१२७ गूजर सूं ऊजड़ भली।

गूजर से तो उजाड़ ही भला।

१२८ गेरली लोई तो के करैलो कोई?

जब मर्यादा छोड़ दी तो कोई क्या कर लेगा?

१२९ गैब को धन गैब में जाय।

बुराई का पैसा बुराई में खर्च होता है।

क० ऐब को धन ऐब में जाय।

---

* रू० गूगो बड़ा'क राम? कै बड़ा तो रांम है जिको है पण
सांपां सूं बैर क्यूं बंधावै?

अर्थात् कुम्हार ने कुम्हार से पूछा कि गूगा बड़ा या राम? कुम्हार ने उत्तर दिया कि क्यों सच्ची बात कहलवा कर सांपों से बैर करवाते हो!

गूगा कुम्हारों का इष्टदेव होता है।

६३० पैलो रांड का पैला पूत ।
पगली औरत के पगले पुत्र पैदा होते हैं ।

६३१ पैली सारी पैली ।
पगली सबसे पहले ।
अयोग्य आदमी का हर काम में टांग अड़ाना ।
तु० पैली से ही पैली ।

६३२ पैलो भलो न कोस को बेटी भली न एक ।
मांगत भलो न बाप को, साहेब राखे टेक ॥
पैदल रास्ता एक कोस का भी अच्छा नहीं लड़की एक भी अच्छी नहीं
बाप से मांगना भी अच्छा नहीं भगवान् ही टेक रखें ।

६३३ पोकुल से मथरा न्यारी ।
(स्पष्ट है)
मि० तीन लोक से मथुरा न्यारी ।

६३४ पेट को छोरो, रामजू मोरो ।
पेट लिये हुए बच्चे का रखना बड़ा मुश्किल है ।

६३५ पाडी बा में पेट का पेट बा को आस करै ।
पेट के बच्चों का नाश करके गर्भस्थ की आशा करती है ।
(प्रत्यक्ष को छोड़ कर अप्रत्यक्ष की ओर उन्मुख होना) ।

६३६ पोकर को घड़ो काठ की तरवार ।
पोकर के घड़े और काठ की तलवार से कुछ काम सिद्ध नहीं होता ।
इन वस्तुओं की ऐसी कथा प्रसिद्ध है ।

६३७ पोकर में तो पोपला ही पाई ।
पोकर में तो " पोपले " (बीज-विहीन) ही उत्पन्न होते हैं ।
बुरे वंश में कुलीन सन्तान पैदा नहीं होती ।

६३८ पीरो में गुण होती तो छोरो जाते हा का मिलेगी ।
यदि प्रेयसी में गुण होते तो प्रियतम अपने आप आ मिलता ।

६३९ पोला जिसका पुत्र करें ओमप्रकाश आप ,
माता जिस की पालकी, सौना जिस का बाप ।
इन मनुष्यों से किसी का भला नहीं होता ये तो स्वयं अवगुणों के भाव होते हैं ।

६४० पोले के सिर कोपी ।

वर्णसंकर दास पिटने से ही ठीक होता है ।

६४१ गोले को गुर जूत ।

गोले को जूता से पीटा जाय तभी वह वश में आता है ।

६४२ गोलो र मूंज पराय बल आंवसे ।

दास अपने स्वामी के बल पर अकड़ता है मूंज भी पानी का बल पाकर ऐंठ जाती है ।

६४३ गोह चाली गूगा नै सांडो बोल्यो—मेरी भी जात है ।

गोह गूगा की जात देने के लिए चली तो सांडे ने कहा कि मुझे भी जात देनी है ।

जब किसी बड़े आदमी के साथ यात्री काम का बहाना बना कर कोई छोटा आदमी पिछलगे के रूप में साथ हो लेता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

६४४ ग्यारस को कसरो बारस मैं ।

एकादशी को जो उपवास करना पड़ा द्वादशी को खूब भोजन कर उसकी कमी पूरी कर डाली ।

६४५ ग्रहण को दान गंगा को असनान ।

ग्रहण का दान और गंगा का स्नान प्रशस्त है ।

६४६ ग्रह बिन घात नहीं भेद बिन चोरी नहीं ।

घातक ग्रह के बिना मृत्यु नहीं होती और भेद के बिना चोरी नहीं होती ।

घ

६४७ घटतोला मिठ बोला ।

जो कम तोलता है वह मीठा बोलता है ।

६४८ घड़ी को ठिकाणूं कोनी अर नाम अमरचन्द ।

एक घड़ी जीवित रहने का भरोसा नहीं और नाम है अमरचन्द !

६४९ घड़ै कुम्हार, भरै संसार ।

घड़े बनाता तो है कुम्हार और उनमें पानी भरते हैं और ही कोय ।

६५० घड़ पैल ठीकरा मा पैल छोकरी ।

घड़े के अनुरूप ही उसके खंडित टुकड़े होते हैं मां के अनुरूप ही लड़की देखी जाती है ।

६५१ घड़ै सुनार, पैरै नार ।

आभूषण सुनार गढ़ता है और उन्हें पहनती है स्त्री ।

६५२ घड़ै ही गड़ग्यो हाथी भेर ।
घड़ुआ घड़ रही थी भैर हो गई ।
काम का आरम्भ तो छोटे रूप में ही हुआ था किन्तु अन्त में जाकर उसने विस्तृत रूप धारण कर लिया ।

६५३ घड़ो फूट कर गिरधमू ही हाथ आवे ।
अच्छी वस्तु के नष्ट होने पर उसके अभाव की पूर्ति में उससे निम्नश्रेणी की वस्तु ही मिलती है ।
पहली स्त्री के देहान्त होने पर आठी से विवाह करने पर यदि वह पूर्व-स्त्री से गुणों में नीचे दर्जे की होती है तो यह कहावत कही जाती है ।

६५४ घण जायाँ घण ओलमा घण जायाँ घण हाण ।
अधिक बच्चों के होने से अधिक उपालम्भ मिलते हैं और गालियाँ सुननी पड़ती हैं ।

६५५ घण जायाँ घण नास ।
सन्तान की अधिकता कुटुम्ब की एकता का नाश करती है ।

६५६ घण बैरी सूरमो हारै ।
यदि विपक्ष में शत्रुओं की संख्या बहुत अधिक हो तो शूरवीर भी हार जाता है ।

६५७ घण बूठां कण हाण ।
अधिक वर्षा अन्न का नाश करती है ।

६५८ घणा मीठा में कीड़ा पड़ै ।
अधिक मीठे में कीड़े पड़ते हैं ।
अति प्रेम में अन्त में कभी-कभी कटुता बढ़ती देखी गई है ।

६५९ घणा हेत टूटण का बड़ा नैण फूटण का ।
अधिक प्रेम अन्त में टूट जाता है ।
मि० अति विस्तारविस्तीर्ण न भवतश्चिरात्यम् ।

६६० घणी तोल-मोल आछी कोन्या ।
अधिक तोल-मोल करना अच्छा नहीं ।

६६१ घणी खाई घणा पेट फाड़ै ।
अधिक खाना अधिक पेट फाड़ता है ।

६६२ घणी सराही खीचड़ी दाँतां कै चिपै ।
किसी की अधिक प्रशंसा करने से उसमें गर्व हो जाता है ।

६६३ घणी सूधी छिपकली चुण-चुण जिनावर खाय ।
ऊपर से सीधा-सादा दिखलाई पड़ने वाला ही कभी-कभी बड़ा घातक सिद्ध होता है ।

६६४ घणूं खाय ज्यूं घणूं मरे ।
जो अधिक खाता है वह अधिक कष्ट उठाता है ।

६६५ घणूं कस मथ्यां पूंछी पड़ै ।
अधिक बल देने से गाँठी पड़ जाती है ।
खींचातानी से वैमनस्य बढ़ जाता है ।

६६६ घणूं सियाणो कागलो गोबर में चोंच ।
अधिक सयाना कौवा गोबर में ही चोंच देता है ।

६६७ घर आयो पावणो रोवतड़ो हँस ।
किसी स्त्री को दूसरी स्त्री के प्रति उक्ति है यदि अतिथि घर आ जाय और तुम रोती हुई भी हो तो भी उस अतिथि का सम्मान-रक्षा के लिए तुम्हें हँस कर प्रसन्नता प्रकट करनी चाहिए ।
अतिथि-सत्कार में अपना दुख दिखा कर अतिथि को दुखी नहीं करना चाहिए ।

६६८ घरकां नै मारणूं चोरां नै पारणूं ।
घरवालों को मारने वाला और चोरों को सहायता करने वाला ।

६६९ घर का टाबर काणा भी सोवणा ।
अपने काने बच्चे भी अच्छे लगते हैं ।

६७० घर का टाबर और खाय देवता भला मानै ।
जब किसी देवता की मनौत उतारी जाती है तो खीर आदि बनाई जाती है । उससे एक पंथ दो काज सिद्ध होते हैं । एक ओर देवता प्रसन्न होता है तो दूसरी ओर बच्चों को मिष्ठान्न खाने को मिलता है ।

६७१ घर का पूत कुँवारा डोलै पाड़ोसी का नौ नौ फेरा ।
घर के पुत्र कुँवारे फिरते हैं और पड़ोसियों के यहाँ नौ-नौ भाँवर होते हैं ।

६७२ घर का आधी ई भली ।
घर की आधी रोटी ही अच्छी ।
विदेश की कमाई से घर की आधी कमाई ही अच्छी ।

६७३ घर की खांड किरकिरी लागै गुड़ चोरी को मीठो ।
घर की चीनी किरकिरी लगती है और चोरी का गुड़ मीठा लगता है ।

क० घर की खांड किरकिरी लागै हाटयां को गुड़ मीठो ।
यह कहावत उस दुश्चरित्र व्यक्ति के लिए कही जाती है जो अपने घर की सुन्दर विवाहिता पत्नी को छोड़ कर बाजारू औरतों को पसन्द करता है ।

१७४ घर की खाय सदा सुख पाय ।
जो घर का खाता है वह सदा सुखी रहता है ।

१७५ घर की डाकण घर का नै ही खाय ।
घर की डाकिन घरवालों को ही खाती है ।

१७६ घर की छीज लोक की हांसी ।
घर की क्षति होती है और लोक में हँसी होती है ।
क० घर की हाण लोक की हांसी ।

१७७ घर को जोगी जोगड़ो आन गांव को सिद्ध ।
अपने गांव में किसी की कदर नहीं होती ।
मि० अति परिचयादवज्ञा ।
ए० घर का जोगी जोगना, बाहर का जोगी सिद्ध ।

१७८ घर को देव'र घर को पुजारो ।
घर का देव और घर का ही पुजारी ।

१७९ घर गायां रो झोल बछां का केरड़ा बैठी रो बोलाव'र लड़ा बोरड़ा ।
वालो'वै सो सिद्ध सिद्ध रा बोलणा एता दे करतार कर म बोलणा ॥
आदमी चाहता है कि उसके घर में गायों का समूह हो तथा अपढ़ा हो गायों से पैदा हुए बछड़े तैयार होकर बैल हो जावें । बस्ती की बहुतायत हो खेत गांव के समीप हो । सबसे उसकी बोलचाल बनी रहे । यदि परमात्मा उसे इतना ही दे तो उसे अन्य किसी वस्तु की जरूरत नहीं ।

१८० घर गैल पावणूं या पावणा गैल घर ।
घर की जैसी हैसियत हो उसी के अनुरूप आतिथ्य-सत्कार किया जा सकता है मेहमान की हैसियत के अनुसार नहीं ।

१८१ घर-घर माटी का चूल्हा ।
घर-घर सभी की सामान्य आर्थिक स्थिति है ।

१८२ घर जाए का किस गिणू न दांत ।
घर में उत्पन्न हुए के किस गिनूं या दांत ?
जब ढोरों की खरीद-फरोख्त होती थी तो उनकी उम्र का पता दांतों से

लगाया जाता था। ऊँट दो दांत का, चार दांत का, नेसावर है आदि पदावली काम में लाई जाती थी। एक बार किसी बंजारा ने अपने ऊँट की उम्र कम बतलाई। खरीदार ने दांत देखकर कहा कि उम्र इतनी नहीं इतनी है। तब बेचने वाले ने कहा कि यह ऊँट मेरे यहां ही पैदा हुआ था इसलिए मुझे उसकी जन्मतिथि तक याद है मैं इसके दिन गिनूं या दांत?

६८३ घर तो घोस्यां का ही बलसी पण सुख ऊंदरा भी कोनी पावै।
घर तो घोसियों के भी जलेंगे किन्तु सुख चूहों को भी नहीं मिलेगा। वे भी घर के साथ जल जायगे।
रू० घर तो घोबीरो ही बलसी पण सारा तो ऊंदरा ही को देवै नी।

६८४ घर तो नागर बल पड़ी पाड़ोसण को चोखो चूस।
अपने पास सब कुछ होते हुए भी दूसरे की तुच्छ वस्तुओं को भी हड़पता है।

६८५ घर नै खाई साळो।
साला घर को बरबाद कर देता है।

६८६ घर बलती कोनी दीखै डूंगर बलती दीखै।
घर में जलती हुई आग नहीं दिखलाई पड़ती पर्वत पर जलती हुई दिखलाई पड़ती है।
अपने दोषों पर दृष्टि नहीं जाती पराये दोष बड़ी जल्दी दिखते हैं।

६८७ घर-बार थारा पण ताळा कूंची म्हारा।
हे बहू! घर-बार तो तुम्हारा ही है लेकिन ताले-चाबी के मालिक हम ही हैं।

६८८ घर ब्याह, बू पीपळां।
घर पर विवाह है और बहू इधर-उधर हो रही है।

६८९ घर में अंधेरो तिलां की सी रास।
घर में अन्धकार इस प्रकार व्याप्त है मानो तिलों की राशि हो।

६९० घर में आई जोय टेढ़ी पगड़ी सीधी होय।
घर में जब स्त्री आ जाती है तो टेढ़ी पगड़ी भी सीधी हो जाती है।

६९१ घर में नखालो ओढ़ै दुसालो।
घर में तो अभाव के कारण तकलीफ उठानी पड़ती है और बाहर आप दुशाला ओढ़ते हैं।

६९२ घर में कोन्या तेल न ताई रांड मरै गुलगुलां ताई।

घर में मेल-जोल कुछ है नहीं और रोज गणगौरों के लिये लालायित हो रहे हैं।

६९३ घर में नाही भरत को बीज रोज पूजै आखा तीज।
घर में तो धान्य का दाना भी नहीं और रोज अक्षय तृतीया के उपलक्ष में पूजा करती है।

६९४ घर में साळो दीवाल में आळो
आज नहीं तो काल दिवाळो।
घर में यदि साला रहने लगे और दीवार में यदि आला हो तो कभी-न-कभी दिवाला निकल जाता है।
क० भींत बिगोई आळां'र घर खाओ साळां।
तात्पर्य यह है कि यदि दीवार में बहुत-से आले हुए तो दीवार का रूप बिगड़ जायगा। इसी प्रकार यदि घर में सालों का प्राधान्य हुआ तो उस घर को गया ही समझिये।

६९५ घर मोटो टोटो घणूं मोटो पिव को नांव।
ऐं कारण भय दूबळी म्हारो रस्ता ऊपर गाँव।
घराना बड़ा है घाटा बहुत है पति का बड़ा नाम है और रास्ते पर गाँव है जिससे अतिथि बहुत आते हैं इसलिए मैं दुबली हो रही हूँ।

६९६ घर रोवती सालां भींत रोती आळां।
सालों से रोता हुआ घर और आलों से रोती हुई दीवार बरबाद हो जाती है।

६९७ घर घाले की रांड अर मोल को बेटो बिरळाई गुजारो करै।
विवाह-संस्कार के बिना घर में लाई हुई स्त्री और मोल का लड़का मुश्किल से ही निबाह करते हैं।

६९८ घर से उठ बन में गया'र बन में लागी लाय।
घर से उठ कर बन में गया और बन में आग लग गई।
अभागे मनुष्य का दुर्भाग्य पीछा नहीं छोड़ता।

६९९ घर से कढी धीवड़ी, भावे जम ल्यो भावे जंवाई ल्यो।
बेटी का विवाह कर देने के बाद फिर पिता पर उसका दायित्व नहीं रह जाता वह जामाता के यहाँ रहे चाहे यम के घर जाए।

७०० घरै घाणी, तेली लूखो कई खावै ?

घर में जब खाणी है तब तकी क्या-सूखा क्यों खाय ? सेठ के साथ तो क्या कर खा ही सकता है।

७०१ घाघरी की साख मतीस को हो ज्याय।

दो तरह के सम्बन्ध होते हैं एक पगड़ी का दूसरा घाघरी का। पुरुष का भाई बेटे तथा आदि का सम्बन्ध पगड़ी का सम्बन्ध कहलाता है और स्त्री के निमित्त को लेकर जो सम्बन्ध होता है वह घाघरी का सम्बन्ध कहलाता है। घाघरी का सम्बन्ध अधिक प्रिय होता है अर्थात् साला तथा साली भाई-बहिनों की अपेक्षा अधिक प्रिय लगते हैं।

मि० ससुरारि पियारी लगी जबतें रिपु रूप कुटुम्ब भयो तब तें।

(तुलसीदास)

७०२ घाव तो बैरी को सराहिये।

शत्रु की वीरता भी प्रशंसनीय है।

मि० पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। (रघुवंश)

७०३ घिरत ढुळ्यो मूंगां के माँय।

घी मूंगों में ही बिखरा व्यर्थ नहीं गया।

मि० घी कठे ढुळ्यो ? कह—खीचड़ी में (घी कहाँ बिखरा ? उत्तर खिचड़ी में) नष्ट होती हुई वस्तु भी जब अपने ही काम आ जाती है तो इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

७०४ घी जाणूं तो पगड़ी राखे कर जाणूं।

जो जाना हो तो इज्जत रख कर जाना चाहिए।

७०५ घी घाल्योड़ो तो अंधेरा में भी छानूं कोन्या रेवे।

घी परसा हुआ तो अन्धकार में भी छिपा नहीं रहता।

किया हुआ गुण प्रकट होकर ही रहता है छिपता नहीं।

७०६ घी बाट को तेल हाट को।

घी बाट का और तेल दुकान का अच्छा होता है क्योंकि बाट के घी में मिलावट नहीं होती और दुकान का तेल पुराना रहने से साफ और गुणकर होता है।

७०७ घी सक्कर जब दूध न ऊपर पप्पड़ा
साल मायां के बीच लगायो कप्पड़ा।
घर में बीवी होय न हुंडी चोळ्या
पता दे करतार केर यह बोलणा।

साहूकार परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे त्रिलोकीनाथ! मुझे घी शक्कर और मलाई से परिपूर्ण दूध पीने को मिले। सात भाइयों के बीच में सजाये कपड़े पहनने को मिलें। घर में यौवन प्रचुर मात्रा में हो और मेरी हुंडी बाजार में चलती रहे। इतना तू मुझे दे दे तो फिर कहना ही क्या!

७०८ घी सुधारे खीचड़ी नाम बहू को होय।
घी की वजह से खिचड़ी अच्छी बनती है और नाम होता है बहू का। किसी काम के सुधारने का कारण तो और ही हो और यश किसी और को ही मिले तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

७०९ घुरी में गादड़ो ई सेर।
अपनी घुरी में गीदड़ भी शेर होता है।

*७१० घूंस चालती तो बाणियो धरमराज में भी घूंस दे देतो।
अगर धर्मराज के यहाँ रिश्वत चलती तो बनिया वहाँ भी न चूकता। वह अमर हो जाता।

७११ घूमटा सूं सती नहीं मुंडाया सूं जती नहीं।
कोई स्त्री घूंघट निकालने से ही सती नहीं हो जाती और मूंड मुंडा लेने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता।

७१२ घूमरहाली के बिछिया चायें।
नृत्य करने वाली को नूपुरों की आवश्यकता होती है।
शिल्पकार को औजार चाहिए।

७१३ घोड़लां कै ब्या में गादड़ा ही गीत गाव।
घोड़ों के विवाह में गीदड़ ही गीत गाने वाले होते हैं।

७१४ घोड़ी तो ठाण बिकै।
घोड़ी चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हो यदि वह किसी गरीब के यहाँ है तो खरीदने वाला उसकी अच्छी कीमत देने के लिए तैयार न होगा। वस्तु की उपयुक्त जगह पर कीमत होती है।

७१५ घोड़े के असवार को अर चूल्ही माई को साथ?
अर्थात् कहाँ घुड़सवार का तेजी से घोड़ा दौड़ाते हुए चलना और कहाँ बुढ़िया का चींटी की तरह रेंगते हुए चलना!

*७१६ घोड़े के नाल जड़ता मेंढकी भी पग उठावै।
घोड़े के नाल जड़ी जाती देख कर मेंढकी भी पैर उठाती है।

मोटा व्यक्ति भी बड़े के सम्मान को देख कर उसके लिए लालायित हो उठता है।

७१७ घोड़े की लात सूं घोड़ो थोड़ो ही मरै।
घोड़े की लात से घोड़ा नहीं मरता।
समान शक्ति वालों के पारस्परिक प्रहार से विशेष नुकसान नहीं होता।
तु० घोड़े की लात से घोड़ा को मरै ना।

७१८ घोड़ो घास सूं यारी करै तो खाय के ?
घोड़ा घास से दोस्ती करे तो क्या खाय ?
जिसको जिस पेशे से पारिश्रमिक मिलता है उसमें रियायत करे तो निर्वाह कैसे हो ?
तु० मेंढ जल से यारी करै तो खाय के ?

७१९ घोड़ो चाये निकासी में, आवड़तो सो आए।
कोई किसी के पास घोड़ा मांगने गया। बरात की निकासी के अवसर पर घोड़े की आवश्यकता थी। उत्तर मिला—कुछ देर घूम-फिर कर आना। अवसर पर कोई वस्तु न मिले तो वह फिर किस काम की ?

७२० घोड़ो दौड़ै घोड़ी दौड़ै चूक जावै।
दौड़ने वाला घोड़ा है या घोड़ी यह नहीं जाना जाता।
न जाने कब किस प्रकार की परिस्थिति पैदा हो जाय ?

७२१ घोड़ो मर्द मकोड़ो पकड़्यां पाछ छोड़ै थोड़ो।
घोड़ा मर्द और मकोड़ा इनमें से यदि कोई किसी को पकड़ लेता है तो फिर छोड़ता नहीं।

च

७२२ चक्कू खरबूजै पर पड़ै तो खरबूजै को नाश खरबूजो चक्कू पर पड़ै तो खरबूजै को नाश।
दोनों ओर खरबूजे का नाश है चक्कू का कुछ नहीं बिगड़ता।
दुष्ट का क्या बिगड़े ? सज्जन को ही मुश्किल है।

७२३ चढ़ती जवानी हर अरघोड़ी आद कितना औगण कोनी करै ?
चढ़ती जवानी और समृद्धि कितने अवगुण नहीं करती ?
मि० यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ?

७२४ चढ़सी जिका नै गिरसी सरसी ।
जो चढ़ेगा सो गिरेगा ।

७२५ चना चाब कर कहै म्हे बादाम खाया, म्हारी छान पर फूस, म्हे हेली में आया ।
चने चबाते हैं और कहते हैं हम बादाम खाने वाले हैं, छप्पर पर फूस तक नहीं है और कहते हैं हम हवेली से आये हैं ।
पास में कुछ नहीं और आडम्बर बहुत है ।

७२६ चना जठै दांत ना अर दांत जठै चना ना ।
जहां चने हैं वहां दांत नहीं और जहां दांत हैं वहां चने नहीं ।
बहुधा कार्यकर्ता को उपयुक्त साधन का अभाव रहता है, जहां साधन है वहां कार्यकर्ता नहीं ।

७२७ चणू उछल कर किसो भाड़ नै फोड़ देसी ?
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।
क्षुद्र व्यक्ति रुष्ट होकर भी कोई बड़ी हानि नहीं कर सकता । किसी को हानि पहुँचाने के लिए भी आदमी में सामर्थ्य होनी चाहिए ।

७२८ चतर नै चौगणी मूरख नै सौ गणी ।
लक्ष्मी दूसरे के पास चतुर मनुष्यों को चौगुनी दिखलाई पड़ती है, और मूर्ख मनुष्य को सौ गुनी ।

७२९ चमारी र रावळ आयागी ।
चमारी और फिर वह रनवास में आ गई । अब वह अपने को अनुपम समझती है ।

७३० चलतो को नांव गाडो है ।
चलती का नाम गाड़ी है अन्यथा वह काष्ठ की ढेरी है ।
मनुष्य चलता फिरता है तो उसका आदर है, घर में बैठ जाने पर कोई नहीं पूछता ।

७३१ चांद देई कठै चुम्मो भी त्यार है ।*

---

* (क) तूं मत चांद चढ़ै मत मूरख चांद चढ़ै थांई चुम्मी देसां ।
(ख) चढ़ूं तूं " " "
(ग) बिरथा " " "

मि० भोजनाच्छादने चिन्ता वृथा कुर्वन्ति मानवा (श्लोकमंजरी)

परमात्मा ने जहां चोंच दी वहां खाद्य-द्रव्य भी तैयार है।

७३२ चांद को ग्रहण मंडक नै मारयो।
चन्द्रमा का ग्रहण कुत्ते के लिए भारी होता है क्योंकि सूर्यग्रहण तो दिन में होता है चन्द्रग्रहण रात्रि को ही पड़ता है इसलिए भिखारियों के भिक्षार्थ घूमने के कारण कुत्तों को भौंकना पड़ता है।

७३३ चांद सूरज कै भी कलंक लागै।
चन्द्रमा और सूर्य के भी कलंक लगता है।

७३४ चाए जितर पालो पांख उगतां ही उड़ ज्यासी।
पक्षी के बच्चों को चाहे जितना पालो पंख उगते ही वे उड़ जायेंगे।

७३५ चाकरी सैं सूं आकरी।
नौकरी सबसे कठिन है।

७३६ चाकी में पड़ कर साबतो कोनी नीसरै।
चक्की के दो पाटों के बीच में पड़ कर तो पिसना ही पड़ता है अर्थात् धरती और आकाश रूपी दो पाटों के बीच आकर कोई साबित नहीं बचता उसे मृत्यु के मुंह में जाना ही पड़ता है।

७३७ चान सामैं सूंपड़ी कतीक बार छिपै।
चन्द्रमा के आगे बादली कितनी बार छिपे!

७३८ चाम को कै प्यारो काम प्यारो है।
चमड़ी का क्या प्यारा काम प्यारा है।

७३९ चालणी को चाम घोड़ै की लगाम
संजोगी को चाम करै न आवै काम।
चलनी का चमड़ा घोड़े की लगाम और दागो का लड़का किसी काम के नहीं होते।

७४० चालणी में दूध दूवै करमां नै दोस देवै।
चालनी में दूध दुहता है और कर्मों को दोष देता है।
स्वयं मूर्खता करता है और व्यर्थ में भाग्य पर दोषारोपण करता है।

७४१ चाली चिरमां पूग मतीरी पीली।
चरमा चलने से मतीरी पीली पड़ कर गल जाती है।

७४२ चावळा की जणार को कै हुवै चाकरी को की ही सीखर्यू हो।
गरीब का लड़का मूर्ख रहने पर भी शारीरिक श्रम तो कर ही सकता है अमीर का लड़का अशिक्षित रहने से शिक्षा के लाभ से तो वंचित रह

ही जाता है शारीरिक श्रम भी उससे नहीं बन पड़ता ।

७४३ चावलां को खाणो फलर्म तांई आणो ।
जो चावल खाता है उसमें बल नहीं होता यह केवल हाथ तक जा सकता है ।

७४४ चिड़चिड़े सुहाग सूं रंडापो ही चोखो ।
अयोग्य और निकम्मे पति से वैधव्य ही अच्छा ।

७४५ चिड़ा-चिड़ी की के लड़ाई चाल चिड़ा म आई ।
चिड़िया और चिड़े की परस्पर कैसी लड़ाई ? हे चिड़े ! चलो मैं आई ।
दम्पति की लड़ाई स्थायी नहीं होती ।

७४६ चिड़ी की चांच में सो मण को लक्कड़ो ।
चिड़िया की चोंच में भी मन का लक्कड़ नहीं समा सकता ।

७४७ चित्रा दीपक चेतवे स्वाते गोवरधन ढंक कहे हे भड्डली अन्न नीपजै सब ।
यदि चित्रा नक्षत्र म दिवाली हो और गोवर्धन पूजने के समय स्वाति नक्षत्र हो तो ढंक भड्डली से कहता है कि खूब अन्न उपजे ।

७४८ चींचड़ी र खाज ।
मि० मेंढकी और जुकाम

७४९ चोखली चाटी चा स भगवान ।
धनवान से सभी लोग कुछ लेने की इच्छा रखते हैं ।

७५० चीकणे घड़ै पर पाणी की बूंद को ठहरै ना ।
चिकने घड़े पर पानी की बूंद नहीं ठहरती ।

७५१ चीकण घड़ै पर बूंद न लागै लागै तो चीठो ।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता पर मैल जम सकता है ।

७५२ चील को मांस तो चुटक्यां में ही जागी ।
चील का मांस तो चुटकियों में ही चला जायगा ।

७५३ चुसी की सिकार और ग्यारा तोप ।
चुहिया की शिकार और ग्यारह तोपें ।

७५४ चूंटी चूंटी को भी लंक सामै है क्यूं के नित चाढ़ी है ।
जरा जरा इकट्ठा करने से बहुत बड़ा समूह बन जाता है क्योंकि नित्य बढ़ती होती है ।

७५५ चूंटी चून पड़ा घर पाणी सा ।
काम कुछ नहीं आडम्बर बहुत ।

मि पाव चून चौबारै रसोई ।

७५६ चून को लोभी बातां सूं पड़ मानै ।

आटे का लोभी बातों से कैसे मान सकता है ?

तु० बगड़ा को लोभी बातां स कोनी रीझै ।

७५७ चूनड़ ओढ़े बाप की नांव पीर को होय ।

चुनरी तो पैसा खर्च करके ओढ़ती है किन्तु नाम पीहर का होता है ।

७५८ चूहै का जाया तो बिल ही खोदेगा ।

चूहे के बच्चे तो बिल ही खोदेंगे ।

७५९ चूहे के बिल में ऊंट क्यां समावे ।

चूहे के बिल में ऊँट कैसे समा सकता है ?

७६० चेला ख्यावै मांग कर, बैठा खावै महन्त ।

राम भजन को नांव है पेट भरन को पन्थ ।

चेले मांग कर लाते हैं महन्त बैठे मौज उड़ाते हैं । राम-भजन का तो केवल बहाना है यह सब तो पेट भरने का रास्ता है ।

७६१ चैत चिड़पड़ो सावन सरवाड़ो ।

यदि चैत में छोटी-छोटी बूंदें गिरें तो सावन में वर्षा बिल्कुल न होवे ।

तु० चैत चिड़पड़ा सावन निरमला ।

७६२ चैत पीछले पाख नो दिन तो बरसज्यो राम ।

हे इन्द्रदेव ! चैत शुक्ल पक्ष के नवरात्र में तो वर्षा न करो नहीं तो अकाल पड़ जायगा ।

७६३ चैत महिने बीज लुकोवे भर बैसाखां केसू धोवे ।

यदि चैत भर बिजली न दिखाई दे तो बैसाख के आरम्भ में वर्षा हो ।

७६४ चैत मास उजाले पख नव दिन बीज लकोई रख ।

आठम नम नीरत कर जोय जो बरसे तो दुरभख होय ।

यदि चैत के शुक्ल पक्ष में प्रथमा से नवमी तक बिजली न चमके (अष्टमी और नवमी को खास तौर पर देखना चाहिए) तो जहाँ वर्षा हो वहाँ अकाल पड़ेगा ।

७६५ चैत मास में पख अंधियारा आठम चावदस हो दिन सारा ।

जिण दिस बादल जिण दिस मेह, जिण दिस निरमल जिण दिस खेह ।

चैत के कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को दिन भर जिस दिशा से बादल आवें उसी दिशा में वर्षा अच्छी हो और जिस दिशा में बादल न हों उस

दिशा में बूंद की वर्षा हो मानो वर्षा न होगा ।

७६६ चोखो करगो नाम करगो ।

जो अच्छा कर गया उसका हमेशा के लिए नाम हो गया ।

७६७ चोटी काढ्यां चेलो कोनी होय ।

केवल बाह्य आडम्बरों से ही शिष्य नहीं हो सकता ।

७६८ चोटी राख कर घी खाणूं ।

यथाशक्ति व्यय करना चाहिए नहीं तो सर्वनाश का भय है ।

क० घी खाणूं तो चमड़ो राख कर खाणूं ।

७६९ चोपड़ो अर दो दो ।

चुपड़ी और दो-दो । फिर क्या चाहिए ?

दो-दो जगह से लाभ होना ।

७७० चोबदारां कै स कुण परोसो लै ?

चोबदारों के यहाँ से कौन परोसा ले सकता है ?

चोबदार लाभ के मुताबिक दूसरों के यहाँ से परोसा लेते हैं उनसे परोसा कौन ले सकता है ?

७७१ चोर की जड़ चोर ही खाव ।

चोर की जड़ चोर से ही कटती है ।

७७२ चोर की मा घड़ में मुंह देकर रोवै ।

चोर की माँ छिप कर रोती है क्योंकि सबके सामने रोने से भेद खुलने का डर रहता है ।

७७३ चोर की मा रो भी कोनी सकै ।

चोर की माँ रो भी नहीं सकती ।

७७४ चोर कै छाती ह पग पग काची ।

चोर चाहे जहाँ चोरी करने की हिम्मत कर लेता है किन्तु जब उसका कोई मुकाबला करता है तो भग छूटता है।

७७५ चोर कै चामली ही कोनी ।

चोर के पास झोली ही नहीं होती । वह तो सभी वस्तुएँ दूसरों के यहाँ से ही चुराता है । चोर प्रायः चोरी का सामान बाँधने के लिए कपड़ा रखता है जब उसके पास कपड़ा नहीं रहता तब इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

७७६ चोर चोरी करै पण घर आव नै तो ढाब चाले है ।

चोर चोरी तो करता है किन्तु अपने घर में तो सब कह देना चाहिए ।

मि० बाहर टेढी चलत है बाँबी सूधो साप ।

७७७ चोर चोरी सूं गयो तूंबी फेरासूं सूं थोड़ो ई गयो ।
दूसरे के उपदेश से चोर ने चोरी करना छोड़ दिया । एक बार जब उसने दूसरे के जूते बदल लिए तो किसी के पूछने पर उसने जो उत्तर दिया वह इस उक्ति में है ।
आदत सहसा नहीं छूटती ।
क० चोर चोरी सूं गयो तो हेराफेरी सूं भी थोड़ो ई गयो ।

७७८ चोर नै कहै लाग साहू नै कहै जाग ।
चोर से कहता है, चोरी कर और साहूकार को कहता है जाग ।

७७९ चोर नै के मारै चोर की मा नै मारै ।
चोर को क्या मारे असल में चोर की माँ को ही मारना चाहिए जिससे चोर का जन्म ही न हो ।
बुराई की जड़ को ही नष्ट करना चाहिए ।

७८० चोर लेई लियो ले जाओ ताली तो मेरे कनै है ।
चोर यदि संदूक ले गया तो ले जाओ चाबी तो मेरे पास है ।

७८१ चोरी अर सीना जोरी ।
(स्पष्ट है)

७८२ चोरी को धन मोरी में जाय ।
चोरी का धन फलप्रद नहीं होता ।

७८३ चौमासे को गोबर लीपण को, न थापण को ।
चौमासे का गोबर न लीपने के काम आता है न थापने के ।

७८४ च्यार कूंट सूं मथुरा न्यारी है ।*
दुनिया के चारों कोनों से इसकी मथुरा न्यारी है ।
मि० मुरारेस्तृतीय पन्था

७८५ च्यार चोर चौरासी बाणिया के करै बापड़ा एकला बाणिया ।
चार चोर हैं और चौरासी बनिये हैं बेचारे बनिये अकेले क्या करें ।
बनियों की कायरता पर व्यंग्य है ।

७८६ च्यार दिना री चानणी फेर अंधेरी रात ।
चार दिन की चाँदनी है फिर अंधेरी रात आ जायेगी ।
वैभव क्षणभंगुर होता है ।

क० तीन लोक सैं मथरा न्यारी ।*

(छ)

७८७ छदाम को छावलो नौ टका गंठाई का।
छाम तो है छदाम का और उसके गठवाने के लिए छ टके।

७८८ छन में छार उड़ावे पल में करे निहाल।
परमात्मा क्षण भर में किसी को गरीब और क्षण भर में धनवान बना देता है।

७८९ छाज तो बोलै सो बोलै पण चालणी भी बोलै जकै ठोतरसौ छेद।
छाज तो बोल सकता है किन्तु चलनी क्या बोले जिसमें १०८ छिद्र हैं। निर्दोष तो दूसरे को कुछ कह सकता है किन्तु जो स्वयं दोषी हो वह दूसरे को क्या कह सकता है?

७९० छींकत खावे, छींकत पीवे छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर कदे न जावे आछी कदे न होय॥
भोजन पान तथा निद्रा के समय की छींक शुभ मानी जाती है दूसरे के घर पर जाते हुए छींकना अशुभ समझा जाता है।

७९१ छूट्योड़ा तीर पाछा कोनी आवै।
कमान से छोड़े हुए तीर वापिस कमान पर नहीं आते।

७९२ छेलो दूध तो देवै पण देवै मींगण्यां करकै।
बकरी दूध तो देती है पर देती है मेंगना करके।

७९३ छोटी-मोटी कामणी सगळी विस की बेल।
छोटी-मोटी कामिनी सभी विष की बेल है।

७९४ छोटो कतरू ही खोटो।
जितना छोटा है उतना ही खोटा है।

७९५ छाजा छालण मूंड मुंडाइण, बणबणियो और नाई
एता बेला न करो गहलो काम न आवै कोई॥
कपड़ा छीलने वाला बीज उपाइन वाला ईंट बापन वाला तथा नाई को बेला नहीं बनाना चाहिए। ये किसी काम के नहीं होते।

७९६ छोड़ा ईस, बैठो बीस।
चारपाई की 'ईस' को छोड़ कर चाहे उस पर बीस बैठ जावें वह टूटेगी नहीं।

७९७ छोरा! तेरो पेट तो बांडो, कह काई मेरे राबड़ी तो पेट ही में उतराऊं!
हे छोकरे! तुम्हारा पेट तो बांका है। उसने गम कर कहा "अढाई मर

रावड़ी तो मैं इसी से जमका सकता हूं।

७९८ छोरा ! पेट क्यूं फूटग्यो ? के माटी खाऊं हूं।
हे छोकरे ! पेट क्यों टूटा ? उत्तर, मिट्टी खाने से।
इस बात का उसे पता है और फिर भी ऐसा करता है यही आश्चर्य है।

७९९ छोरा, बार मत जाजे, बीजळी मार देसी, कह—ऐ बारली ग्वाळा का खेलै है कह ऐ तो बीजळी का मार्‌योड़ा ही है।
किसी ने कहा हे लड़के ! बाहर मत जाना बिजली मार देगी।
लड़के ने कहा ये ग्वालों के लड़के भी तो बाहर खेल रहे हैं इन्हें तो कुछ नहीं होता। उत्तर मिला ये तो बिजली के मारे हुए ही हैं।

८०० छोरी ऐं गांव में चौधर कै कै कह, पर्द पहल काळै तो म्हारै खेत निपज्यो हो सो चौधर म्हारै थी। इबकै बाजरी मेरे काका कै हो गई सो चौधर बठै चली गई।
हे छोकरी ! इस गांव में चौधरीपन किस के यहां है ? उत्तर मिला— गत वर्ष तो हमारे खेत में खूब पैदावार हुई थी इसलिए चौधरीपन हमारे यहां था। इस साल बाजरा मेरे चाचा के यहां हुआ इसलिए चौधरीपन भी वहीं चला गया।

८०१ छोरो बगल में ढूंढै जंगल में।
बच्चा बगल में है और उसे जंगल में ढूंढा जा रहा है।

८०२ छोर्‌यां सेती घर बस ज्याय तो बाबो बूढली क्यूं ल्यावै ?
यदि छोकरियों से ही घर बस जाय तो बाबा बुढ़िया क्यों लावे ?

ज

८०३ जगत को चोर, रोकड़ को रखवाळो।
यों जगत का चोर, यहां रोकड़ की रखवाली करने वाला।
मि॰ दूध की रखवाली बिल्ली के सिपुर्द।

८०४ जड़ खोस्यां किसा ऊंट मरै है ?
घास खसोटने से ऊंट नहीं मरते।

८०५ जद बगे बदळी जद जाणी
बादळ तीतर-पंख बखाणी
अपस नील रंग व्है असमाणी
मघ बरसे जळ री घमसाणी।

जब बरगद की जगह बहुत सस और बादल का रंग तीतर के पंख के जैसा हो जाय या आसमान का रंग बिल्कुल नीला हो जाय तो अवश्य खूब वर्षा होगी।

८०६ जठै देखै तवा परात उठै नाचै सारी रात।
जहाँ भोजन का ठौर देखता है वहाँ दिन-रात नाच करने के लिए तैयार रहता है।

८०७ जठै पड़ै मूसल उठै ही खेम कुसल।
जहाँ मूसल पड़ रहा है अर्थात् जहाँ चूरमा बन रहा है वह कल्याण-क्षेम का द्योतक है।

८०८ जठै रामजी बसै उठै ही उदैपुर है।
जहाँ रामजी बसते हैं वहाँ उदयपुर है। जहाँ राम हैं वहीं अयोध्या समझना चाहिए।

८०९ जठै रोजगार उठै घर बार।
मनुष्य जहाँ रोजगार करता है वहीं उसका घर-बार है।

८१० जब तक बिल्ली ठंबरी।
जब तक बिल्ली ठबरा के ही अधिकार में रही।
किसी का अधिकार छीन लिया जाय तब उसकी पुनः प्राप्ति के लिए यह कहावत गर्वोक्ति की तरह प्रयुक्त होती है।

८११ जननी जणे तो दोय जण के दाता के सूर।
नातर रहजै बांझड़ी मना गमावे नूर।
क० जननी जणै तो भगत जण कै दाता कै सूर।
नाहीं तो मत बांझ रह मती गंवावै नूर॥

१२ जब लग तेर पुण्य को बीत्यो नहीं करार।
तब लग तेरो माफ है औगण करो हजार।
जब तक मनुष्य का पुण्य बाकी है तब तक वह चाहे हजार अवगुण करता रहे उसके सब माफ हैं अर्थात् उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

८१३ जबान में ही रस अर जबान में ही बिस।
बोली में ही रस है और बोली में ही विष रहता है।

८१४ जमी जोरु जोर की जोर हटयाँ और की।
जमीन और स्त्री पर से जब जोर हट जाता है तब वे दूसरे की हो जाती है।

८१५ जमींदार का बाळक हाथ हुवै।
जमींदार के बालक हाथ होते हैं अर्थात् उसके बालक चरित्र होते हैं।

८१६ जमीन को सोवणियो र झूठ को बोलणियो संकड़ेली क्यूं भुगतै ?
जमीन पर सोने वाला और झूठ बोलने वाला तंगी क्यों भुगते ?

८१७ जमो चींचड़ो बतायु जदमल मारुं ज्यूं
अकल गई करतार की अक्ल बतावा क्यूं।
जमो—एक विषैला जीव। चींचड़ी—उसी जाति का जीव।
(अर्थ स्पष्ट)

८१८ जल का झाला पहर कर, हर का मंदर देख।
स्नान करके भगवान के दर्शन कर।

८१९ जल को डूब्यो तिर कर निकळै तिरिया डूब्यो बह ज्याय।
जल का डूबा हुआ तैर कर निकल सकता है लेकिन जो नारी में आसक्त है वह अवश्य डूब जाता है।

८२ जलम अकारथ हो गयो मोरो गळै न लगा।
(अर्थ स्पष्ट)

८२१ जलम को आंधो नाम नैणसुख।
जन्म का अन्धा है और नाम नयनसुख।

८२२ जलम को दुखियारो नाम सदासुखराम।
जन्म का दुखी और नाम सदासुखराम।

८२३ जलम घड़ी र मरण घड़ी टाली कोनी टळ।
जन्म-घड़ी और मरण-घड़ी किसी के टाले नहीं टलती।

८२४ जलम-रात र फेरां रात टाली कोनी टळ।
जन्म की रात और विवाह की रात टालने पर भी नहीं टलती।

८२५ जसा बोलै डोकरा बसा बोलै छोकरा।
जिस तरह वृद्ध बात करते हैं उस घर के बच्चे भी बातचीत में उन्हीं का अनुसरण करते हैं।

८२६ जसा साजन उसा भोजन।
जैसे साजन हैं वैसे ही भोजन मिलते हैं।

८२७ जसा देव बसा ही पुजारा।
जैसे देव वैसे ही पुजारी।

८२८ जसो राजा वसी ही परजा।
जैसा राजा वैसी ही प्रजा।

८२९ जहर खायसी सो मरसी।
जो जहर खायगा वह मरेगा।

८३० जहर नै जहर मारै।
जहर जहर को मारता है।
मि० विषस्य विषमौषधम्।

८३१ जां का मरग्या बादस्याह रुलता फिरै वजीर।
जिनके बादशाह मर जाते हैं उनके वजीर यों ही फिरते हैं।
समर्थ स्वामी के अभाव में अनुचरों की दुर्दशा होती है।
मि० जां का मरग्या धावका बांठा के घर बार ?

८३२ जांट चढ़ै जको ही रामजी बोलै।
जो जांटी के पेड़ पर चढ़ता है वही खतरे के निवारणार्थ देवता का प्रसाद बोलता है।

८३३ जागै सो पावै सोवै सो खोवै।
जो जगता है वह लाभ में रहता है जो सो जाता है उसे हानि उठानी पड़ती है।

८३४ जाट कहै सुण जाटणी इणी गांव में रैणो ऊंट बिलाई लेगई हांजी हांजी कहणो।
जाट अपनी स्त्री से कहता है कि हमें तो इसी गांव में रहना है इसलिए बिना खुशामद के काम नहीं चल सकता। यदि कोई यह भी कहे कि बिल्ली ऊँट को उठा ले गई तो भी हमें उसकी हां में हां मिलाना होगा।
क० जाट कहै सुण जाटणी ई गांव में रहणू।
ऊंट ऊंदरो ले गई हांजी हांजी कहणू।

८३५ जाट की बेटी अर काकोजी की सूं।
जाट की लड़की और काकाजी की शपथ।
छोटा भी जब ज्यादा समझदारी दिखाने लगता है तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।
मि० जाट री बेटी काकोजी सोंव।

८३६ जाट को के जजमान राबड़ी को के पकवान।
जाट का क्या यजमान ? राबड़ी का क्या पकवान ?

८३७ जाट गंगाजी न्हा आया के ? कह, मुंडाई कुण है ।
जाट से जब किसी ने पूछा कि गंगा-स्नान कर आये क्या ? तब उसने उत्तर दिया कि यह मुंडवाई हुई किसकी है ? मैंने ही तो गंगा को मुंडवाया है—मुझसे स्नान करने की क्या पूछते हो ?

८३८ जाट जंगल मत छेड़िये हाट्यां बीच किराड़ ।
रांगड़ कदे न छेड़िये जब तब करै बिगाड़ ॥
जाट को जंगल में और बनिये को दुकान पर नहीं छेड़ना चाहिए । राजपूत को तो कभी नहीं छेड़ना चाहिए, वह चाहे जब बिगाड़ कर सकता है ।

८३९ जाट जंवाई भाणजो रैबारी सुनार ।
अे न होसी आपणा कर देखो व्योहार ।
जाट जामाता भानजा ऊंटों का व्यापारी तथा सुनार, ये कभी अपने नहीं होते चाहे इनसे व्यवहार करके देख लो ।
पा० जाट जंवाई भाणजो रैबारी सुनार,
इसरा करै न आपरा कर देखो उपकार ।

८४० जाट जठे ठाठ ।
जहां जाट है वहीं दूध-दही के ठाठ रहते हैं ।

८४१ जाट जडूले मारिये कागलिये नै काचे ।
मांठ बगर में पाड़िये चोखू हो तो बाचे ।
जाट जब तक वयस्क नहीं हो जाता कौआ जब तक उड़ना नहीं सीख लेता तब तक ही ये वश में आते हैं । मोठा पर जब तक बगर बाचा रहता है तब तक ही उपाड़ना ठीक है ।

८४२ जाट जाट तेरो पेट बांको कह मैं ओ में ई दो रोटी रावड़ी अलबा घसूंलो ।
किसी ने कहा हे जाट ! तुम्हारा पेट तो बांका है । उत्तर मिला "मैं इसी में दो रोटी-राबड़ी रखता हूं ना ।

८४३ जाट डूबै धोळी धार, बाणियो डूबै काळी धार ।
धौळीधार डूबने से तात्पर्य पशुओं या दूध के अभाव से है ।

८४४ जाटणी की छोरी' र फलकै बिना सीरो ।
जाट की लड़की है फुलका नहीं मिलता तो उसके लिए नाराज होती है मानों उसे हमेशा फुलका खाने के लिए मिलता ही हो !

८४५ जाट न जाणै गुण करै चणै न जाणै बाड़,
जमत छिड़ो बछरालयो अब क्यूं रोवै बराड़ ।

शूकर समुदाय ने जाट का एक खेत खाने में सहायता दी जब फसल हुई तो आधी-आधी बाँट ली गई। शूकर चरने ये और उन पर चोट पड़ती थी तो वे बबूल के पेड़ से खाज को रगड़ लेते। खाज अच्छा हो जाता। जाट ने उनसे भेद ले लिया बबूल के पेड़ को कटवा दिया। इसी घटना को लक्ष्य में रखकर उक्त कहावत कहा जाता है

५४६ जाट रे जाट! तेरै सिर पर खाट कह मियाँ रे मियाँ! तेरै सिर पर कोल्हू कह तुक तो मिली ना कह बोझ्यां तो मरैगो।

किसी ने जाट से कहा तेरे सिर पर खाट। जाट ने कहा मियाँ रे मियाँ! तेरे सिर पर कोल्हू। किसी ने कहा तुक नहीं मिली। जाट ने कहा बोझ तो मरेगा।

५४७ जाण न पिछाण मैं लाडा की भुआ।

जहाँ कोई अपने आप को जबरदस्ती काम में अगआ बना लेता है वहाँ इसका प्रयोग होता है।

५४८ जाण मारै बाणियूं पिछाण मारै चोर।

बनिया जानकार को अधिक ठगता है और भेद से चोरी होती है।

५४९ जावती चावलां र कैवै मौड़्योड़ो को खावूं नी।

चावल को तो चाबती है और कहती है कि छना हुआ खाऊँगी ही नहीं!

५५० जातै चोर रा मीठा ही चोखा।

जहाँ कुछ भी मिलने की आशा न हो वहाँ जो कुछ मिलना ही अच्छा।

५५१ जामण जाम्यां दूध जमै।

बिना जामन के दूध नहीं जमता।

५५२ जायो कलकलै सूं आगी करम छोनली लारी।

यही जाने आगे भाग्य साथ जाता है।

५५३ जायो भाई जंगी के बीच कोई माथो कोई कोड़।

ऊपर वाली कहावत देखिये।

५५४ जायो जाय रही लाज।

चाहे हजारों रुपये चले जावें लाज न जानी चाहिए।

५५५ जायो पहली न्हाण किसो?

बच्चा उत्पन्न होने के पहले ही प्रसूति-स्नान कैसा?

५५६ जिंदै गाँव नहीं जाणूं उंठो गैलो ही क्यूं पूछणूं?

जिस गाँव जाना ही नहीं उसका रास्ता क्यों पूछना?

जो काम करना ही नहीं उसके विषय में पूछताछ व्यर्थ है।

८५७ जिण रा पड़या सुभाव' क जासी जीव सूं।
नीम न मीठो होय सींचो गुड़' र घीव सूं॥
स्वभाव प्राणी के साथ ही जाता है नीम गुड़ और घी से सींचने पर भी मीठा नहीं होता।

८५८ जितणे की ताण कोनी उतण का मजीरा फूटगा।
जितने की ताब नहीं थी उतने मूल्य के मजीरे फूट गये।

८५९ जितणा मूंडा उतणी बात।
जितने मुंह उतनी बातें।
मि० मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी।

८६० जिसी करणी उसी भरणी।
जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल मिलता है।

८६१ जींके घर में दूझै गाय सो क्यूं छाछ पराई जाय ?
जिसके घर में गाय दूध देती है वह पराई छाछ मांगने क्यों जायेगा ?

८६२ जीं हांडी में सीर नहीं जा चाहतो ई फूटै।
जिसकी हांडी में सीर नहीं जिसकी कमाई में सीर नहीं वह हांडी फूटे तो फूटे दूसरे किसी को दुख-दर्द नहीं होता। कंजूस या सूम आदमी कमाये या न कमाये किसी दूसरे को क्या मतलब है ? इसकी एक विपरीत कहावत है 'सखी की कमाई में सै का सीर है।
मि राम विमुख सम्पति प्रभुताई। जाय रही पाई बिनु पाई।
(तुलसीदास)

८६३ जी की खाई बाजरी ऊंकी भरी हाजरी।
जिसका अन्न खाय उसी की खुशामद की जाती है।

८६४ जी को चून ऊंको पुन्न।
जिसका चून उसी का पुण्य।

८६५ जी को बाप बीजली से मरै बो कड़कै से डरै।
मि दूध को जळेड़ो छाछ नै फूंक-फूंक पीवै।

८६६ जो नै देख्यां ताव आवै बो ही मिंगोड्यो ब्यावण आवै।
जिसको देखते ही ज्वर आता है वही निगोड़ा विवाह करने के लिए आता है।

८९७ जीवड़ल्यां घुर ऊजड़ै जीवड़ल्यां घर होय ।
कुटु माया से घर उजड़ जाते हैं मगर माया से घर बस जाते हैं ।
८९८ जीमड़ली मेरी आलपताल कड़कोला का मेरो फाड़सी कपाल ।
मेरी जीभ बाहु जो अल्पटप बक देती है और दूसरा वे हाथों का प्रहार सहना
पड़ता है मेरे लड़के कपाल को ।
मि० रहिमन जिह्वा बावरी कह गई सरग पताल ।
आप तु कह भीतर गई, जूती खात कपाल ॥
८९९ जीम्यां पाछै चल होय है।
भोजन करने के बाद बल को आती है ।
९०० जीम्यां'र पातल फाड़ी ।
भोजन किया और पत्तल फाड़ दी ।
९०१ जीव को जीव साजू ।
एक प्राणी दूसरे के प्राणों का ग्राहक होता है ।
९०२ जीवतड़ा नहीं हाल, मर्‌यांने पकवान ।
जब जीवित थे तब तो उनका कष्ट नहीं किया मरने पर उनके लिए पकवान
बनाये जाते हैं ।
मि० (क) जीवत पिता की करी न सेवा मर्‌यां पाछै लाडू मेवा ।
(ख) जीवत पिता को पूछी न बात मर्‌यां पाछै चावल भात ।
(ग) जीवत पिता के रहया न नेड़ो मर्‌यां पाछै दीनों हाड़ो ।
(घ) जीवत पिता से जगमजंगा मरे पिता पूगावै गंगा ।
९०३ जीवतो लाख का, मर्‌यां सवा लाख का ।
जीवित लाख का था मरने के बाद सवा लाख का हो गया ।
हाथी के लिए प्रयुक्त कहावत ।
९०४ जीवती माखी गिटी जाय
जीती हुई मक्खी का निगला नहीं जा सकता ।
जान-बूझ कर कोई बुरा काम नहीं किया जा सकता ।
९०५ जीवैगा नर तो करैगा घर ।
मनुष्य जीता रहेगा तो घर भी बना लेगा ।
९०६ जीवी बात की कहणियूं जीवो हुंकारा दीजियूं ।
हुंकारा देने से ही बात का रंग जमता है अन्यथा नहीं ।
९०७ जी होंठी में साव जी में हो टेव करै ।

जिस हँडिया में खाय उसी में छेद करता है।

८७८ जुगत जाणनूं हांसी खेल कोनी।
युक्ति जानना हँसी-खेल नहीं है।

८७९ जुग देख जीणूं है।
जमाना देख कर जीना है।
समयानुसार चलना चाहिए।

८८० जुग फाट्यां स्यार मरै।
भेद से ही नाश होता है।
संगठन टूटने से ही नाश होता है।

८८१ जूती चालसी कतीक, कह बीमारी जाणिये।
जूती कितने दिन चल जायेगी? उत्तर मिला देखें बीमारी कैसी होती है। बीमारी होने पर जूती काम में नहीं ली जाती पड़ी रहती है।

८८२ जे टूट्या तो टोडा।
यह घराना सम्पन्न है यहाँ टूटे तो भी टोडे टूटे।
मि० समदर सूक्या तो भी मोती सूके।

८८३ जेठ बरस्यो बाजर पक्यो।
ज्येष्ठ में अगर वर्षा हो तो बाजरा पक जाता है क्योंकि ज्येष्ठ की वर्षा से बाजरा अधिक होता है।

८८४ जेठ जी की पोळ में जेठ जी ही पोढै।
(स्पष्ट)

८८५ जेठ बीती पहली पड़वा जो अम्बर गरजै।
आसाढ़ सावण काढ़ कोरो भादवै बिरखा करै॥
आषाढ़ की प्रथमा को यदि बादल गरजेगा या वर्षा हो तो आषाढ़ और श्रावण मास सूखे जायेंगे और भादों में वर्षा होगी।

८८६ जेठ मूंगा सदा सूंगा।
जेठ मास में महँगाई हो तो वर्ष भर सस्ता ही रहेगा।

८८७ जेठा अन्त बिगाड़िया पूनम नै पड़वा।
यदि ज्येष्ठ की पूर्णिमा और आषाढ़ की प्रतिपदा को छींटे पड़ें तो अपशकुन समझना चाहिए।

८८८ जेठा बेटा भाई बराबर।
सबसे बड़ा लड़का भाई के समान होता है।

८८९ जेठा बेटा' र जेठा बाजरा राम दे तो पावै ।
ज्येष्ठ लड़का और ज्येष्ठ मास में बढ़ा हुआ बाजरा भाग्य से ही मिलता है ।

८९० जेबां घाल्यां हाथ जणा ही जाणिया,
रूठ्योड़ी भूपाल क तूठ्या वाणियां ।
राजा रुष्ट होने के बाद और बनिया तुष्ट होने पर जेब में हाथ डाले तो समझिये कि शायद ही कुछ मिले ।

८९१ जेर ही शेर हुया करै है ।
छोटे बच्चों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, वे ही कालान्तर में बलवान् हो जाते हैं ।

८९२ जेवड़ी बलज्या पण बल कोनी जाय ।
रस्सी जल जाती है किन्तु उसकी ऐंठ नहीं जाती ।

८९३ जैको खावै चूरमो जैका गावै गीत ।
जो जिसका खाता है वह उसी के गीत गाता है ।

८९४ जैं को डाव, जैं को ही मोचरो ।
उसी का सिर, उसी के जूते ।
उसी की वस्तु से उसी का नुकसान अथवा उसी के पैसे से उसकी दावत करना ।

८९५ जैंतलदे बिना किसो रातीजुगो ?
जैंतलदे के गीतों के बिना रात्रि-जागरण व्यर्थ है ।
राजस्थान में स्त्रियां विवाहादि के उपलक्ष में रात्रि-जागरण किया करती हैं । उसमें जैंतलदे का गीत अवश्य गाया जाता है । इस अवसर पर देवताओं के मांगलिक गीत गाये जाते हैं ।

८९६ जै तू मरैली छोड़-मरोड़ मैं निकलूंगी कोठी फोड़ ।
बाजरी (अन्न विशेष) की उक्ति है यदि मुझे दो-तीन बार हल में देकर छोड़-मरोड़ बोओगे तो मैं इतनी बढ़ूंगी कि अन्न के भंडार में भी नहीं समा सकूंगी ।

८९७ जै धन दीखै जावतो आधो दीज बांट ।
अगर धन जाता दिखाई पड़े तो आधा बांट देना चाहिए ।

८९८ जै बाल्या तेरै पड़ गयो टोटो बड़ज्या घी का कोठा में
खीर खांड का भोजन करले घो भी टोटो टोटा में ।

हे बनिये ! यदि नुकसान हुआ तो भी क्या ? घी के कोठे में घुस जा और खांड का भोजन कर, समझ लेना टोटे में यह टोटा और सही ।

८९९ जे मीरग्यो ना काकड़ो तो क्यों खेड़े हाली लाकड़ो ?
मृग की संक्रान्ति के दिन अगर वर्षा न हो तो हल जोतना व्यर्थ है क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

९०० जे रिण तारे बाप को तो साढ़ा मूंग बुहाय ।
हे किसान ! अगर पिता के ऋण को चुकाना चाहते हो तो आषाढ़ में ही मूंग बो दो ।

९०१ जैसा जैसा घर भला, वैसा भला विदेस । (स्पष्ट)
तु० इसा ही जसा घर भला इसा ही परदेस ।

९०२ झोझरे घड़े को झोझरो अवाज ।
कमजोर घड़े की वैसी ही आवाज ।

९०३ जो जोड़ै सो तोड़ै ।
जो जोड़ता है उससे चीज टूट भी जाती है । यह कहावत ईश्वर के सम्बन्ध में भी प्रयुक्त होती है । पति-पत्नी दो में से एक न रहे तो कहते हैं
"जिन जोड़ी उन जोड़ी को तोड़ी ।

९०४ ज्यादा लाड सूं टाबर बिगड़ै ।
अधिक लाड से बच्चे बिगड़ जाते हैं ।
मि० लाडमें बहुओ तापास्याकन बहुओ मुवा ।

९०५ ज्यूं-ज्यूं बड़ो हुवै ज्यूं-ज्यूं पत्थर पड़ै है ।
ज्यों-ज्यों बड़ा होता है त्यों-त्यों बुद्धि पर पत्थर पड़ते हैं ।

९०६ ज्वर जाचक अर पावणो चौथो मंगणहार ।
लंघन तीन कराय दे फेरे न आवै द्वार ॥
ज्वर, याचक अतिथि और रुपये-पैसे उधार मांगने वाला यदि इनको तीन बार लंघन करा दिया जाय तो ये फिर कभी द्वार पर न आयेंगे ।

झ

९०७ झखत विद्या पचत खेती ।
विद्या रटने से और खेती परिश्रम से सफल होती है ।

९ ८ झगड़ै ही झगड़ै तेरी आंखूं तो देख ।
तुम दूसरों से ही झगड़ते हो अपने अवगुण तो देखो ।

२०९ झगड़ो अर मोठ बधाय जितणी ई बध ।
झगड़ा और मोठ इन्हें चाहे जितना बढ़ाया जा सकता है ।

२१० झट काती पट भाई ।
तुरत-फुरत काम करने पर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२११ झलकथ सूं सोनू कोनी होय ।
झलकने वाली वस्तु ही सोना नहीं होती ।
मि० All that glitters is not gold

२१२ झूठ की डागलां ताईं दौड़ ।
झूठ की छत तक दौड़ होती है झूठ अधिक नहीं चल सकती ।

२१३ झूठ बिना झगड़ो नहीं, धूल बिना धड़ो नहीं ।
दोनों ही अगर सच्चे हों तो झगड़ा किस बात का ? दो में एक झूठा होता है, तभी झगड़ा होता है । तराजू में तोलने के लिए जो धड़ा करते हैं उसमें रेत से धड़ा करने में सब से ठीक रहता है ।

२१४ झूठ बोलणियाँ र धरती पर सोवणियाँ संकड़ेलो क्यूं भुगतै ?
झूठ बोलने वाला और धरती पर सोने वाला तंगी क्यों भोगे ?
मि० झूठ बोलने में सरफा क्या ?

२१५ झूठी रात जागी न्हाबी न ताती पाणी ।
व्यर्थ ही मेहनत की कुछ भी नहीं मिला यहाँ तक कि तपी हुई पानी भी नहीं मिली ।

२१६ झूठे की के पिछाण के की सोगन खाय ।
झूठे की क्या पहिचान ? उत्तर, वह सौगन्ध खाता है ।

२१७ झेर नै झेर मारै ।
विष से विष का नाश होता है ।
क० १ झेर सूं झेर मरै २ कांटै नै कांटो मारै मि० विषस्य विषमौषधम् ।

ट

२१८ टका दाई ने दी गुर बूंटी फोड़गी ।
दाई टके ले गई और बूंद को फोड़ गई अर्थात् यह पापस है और इसका पग्म व्यर्थ ही हुआ ।
मि० १ दाई रांड मांगत का ई लेगी ।
२ साहुओं की मूंगी के सिर जाती है ।

९१९ टके की हांडी फूटी, गंडक की जात पिछाणी।
हमारी तो थोड़ी सी हानि हुई किन्तु दुष्ट के स्वभाव का पता चल गया।

९२० टके-टके भूत है।
बात-बात में झगड़ते हैं।
दो प्रतिस्पर्धियों के सम्बन्ध में उचित है।

९२१ टपकण लाग्यो टापरो, भींजण लाग्यो खाट।
वर्षा ऋतु में गरीब का छप्पर चूने लगा और खाट भीजने लगी।

९२२ टक्को टूंटी एक न बार, तोरण मारण होग्यो त्यार।
पैसा-टका पास में नहीं है और विवाह करने के लिए तैयार हो गये।

९२३ टक्को लाग्यो न पालड़ी घर में बू ढलक्यो आ पड़ी।
वधू-पक्ष के धनवान होने के कारण वर के पिता को बहू लाने में कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ा।

९२४ टाडो क्यूं हो? कै सांड हां। खोचर क्यूं करो? कै मां का जाया हां।
गरजते क्यों हो? सांड हैं। खोचर क्यों करते हो? माता से पैदा हुए हैं।
जैसा मौका देखे वैसा हो जाना।

९२५ टाटी के घर नै कोंवाड़ा के बार लागै?
छप्पर के घर के द्वार को घुमाने में क्या देर लगती है?

९२६ टाबर है पण बडां का कान कतरै।
है तो बच्चा किन्तु बड़ों को भी चकमा दे सकने में समर्थ है।

९२७ टाबरां की टोली बुरी, घर में नार टोली बुरी।
बहुत से बच्चों का जन्म अच्छा नहीं घर में बहुत सी स्त्रियों के होने से भी कलह बढ़ता है अथवा घर में अधिक स्त्री बुरी है।

९२८ टुकड़ा दे दे बाछड़ा पाल्या, सींग हुया जद मारण चाल्या।
टुकड़ा दे-देकर बछड़ों का पालन-पोषण किया अब वे बड़े हुए तो मारने आये।
कृतघ्न आश्रितों के लिए उचित।

९२९ टूट गई डाल र, उड़ गया मोर। धी मरी, जंवाई चोर।
डाली टूटने पर मोर उड़ गया। लड़की के मर जाने पर जामाता की आवभगत नहीं होती।

९३० टूटतै आकास कै थम्भो कोनी लागै।
टूटते हुए आकाश के कोई आधार-स्तम्भ नहीं लगाया जा सकता।

९११ टूटी की बूटी कोनी ।
जब आयु शेष नहीं रह जाती तो कोई दवा काम नहीं देती ।

९१२ टूटी नाड़ बुढ़ापो आयो, टूटी खाट दलिद्दर छायो ।
टूटी हुई गरदन बुढ़ापे की सूचक है और टूटी हुई खाट से प्रकट होता है कि घर में दरिद्रता छाई हुई है ।

ठ

९१३ ठंडो लोह तातां नै काटै ।
ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है ।
धैर्यसम्पन्न मनुष्य अपने धीरज से दूसरे की उग्रता को दूर कर देता है ।

९१४ ठठेरै की मिन्नी खुड़कां सूं कोनी डरै ।
ठठेरे की बिल्ली आवाज़ से नहीं डरती ।
अभ्यस्त को भय नहीं सताता ।

९१५ ठगां कै ठग पावणा ।
ठगों के यहाँ ठग ही मेहमान होते हैं ।

९१६ ठग्यां ठग ठगायां ठाकर ।
लेने वाला ठग और देने वाला ठाकुर कहलाता है ।

९१७ ठांगर कै हेत घणूं, आपीरी कै लेव घणूं ।
दूध न देने वाली निकम्मी गाय बछड़े के प्रति अधिक स्नेह करती है और जिसके पीहर न हो वह अधिक मसकाती है ।

९१८ ठाकर आया ए ठकराणी ! चूल्हे आग न परींडै पाणी ।
हे ठकुरानी ! ठाकर आये हैं किन्तु न चूल्हे में आग है और न जलागार में पानी । ठाकर के महान् दारिद्र्य का वर्णन है ।

९१९ ठाकर गया 'र ठग रहग्या, रहग्या मुलक रा चोर ।
वै ठकराणी मर गई, जणती ठाकर और ॥
(स्पष्ट है)

९२० ठाकर तो थांभै मांडयोड़ो ई बुरो ।*
ठाकुर तो मकान के बाहरी फाटक के पार्श्व-भाग पर चित्रित भी बुरा होता है ।

* एक सेठ ने अपनी हवेली के द्वार के एक पार्श्व भाग पर एक जमादार की तसवीर बनवाली । एक ठाकुर ने उसे देख कर पूछा—"सेठ साहब, यह क्या है ?" सेठ ने कहा—"यह आपके बापजी का चित्र है ।" ठाकुर ने कहा "तब उसका नाम चित्र के नीचे लिखवा दें ।" सेठ ने वैसा ही किया । कई वर्षों बाद ठाकुर

रू० १ सोन री चूक मंझ्योड़ी ई बुरी।
२ साबू री चूक मंझ्योड़ी ई बुरी।

९४१ ठाकर कहूं वी बात समजै अखरां।
सीरोही तरवार बहै सिर बकरां।
पातां सोमी थाळ व बैस पकसाया।
एता दे करतार केर क्या मागस्या॥

एक चारण परमात्मा से प्रार्थना करता है हे परमपिता! ठाकुर जो मिले वह बहुत सी बातों का जानकार हो कविता समझ सके। सिरोही की तलवार बकरों पर चलती रहे। जब थाल परोसने का समय आवे तो सबसे पहले मुझे ही थाल मिले। यदि इतना सा तू प्रदान करे तो फिर मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

९४२ ठाकरां अक्ल गई। कहू, गयां ही जाण है।
किसी ने कहा ठाकुर साहब! आपके यहां तो सब निकम्मे निकले। उत्तर दिया निकम्मे अब भी निकम्मे ही रहे हैं।
मि० बारलो छोरो तो अक्ल गयी! के गयां ही जाण है!

९४३ ठाकरां थांरे टाबर टीकर है? कहू, भाई रे साळे रे दो डावड़ा है।
हे ठाकुर! आपके सन्तान क्या है? उत्तर, भाई के साले के दो बच्चे हैं अर्थात् न मेरे, न मेरे भाई के कोई सन्तान है।

९४४ ठाकरां क्यूं गावो, कहू रोवण में ही कोनी आवां।
हे ठाकुर! कुछ गाओ। उत्तर, रोने से फुरसत मिले तब न!
रू० स्यामी जी फुरसत कोनी पावे। भ—रोवै न आयो सोक!

९४५ ठाकरां जल पावो हो? कहू, आ ही कूतां सूं चीसी है।
हे ठाकुर पानी पा रहे हो? ठाकुर उत्तर देता है यह भी कुत्तों से चीसी है।

९४६ ठाकरां भैर बजाव चढ़ो, कहू, भैर बजात तो म्है ही हां।

ने सेठ के यहां जाकर पूछा "आपके यहां कोई चोरी तो नहीं हुई?" सेठ ने कहा "नहीं।" ठाकुर ने कहा, 'मेरे बाबा पहरा दे रहे थे चोरी कैसे होती? — इतने वर्षों का मेरा हिसाब कर दें। सेठ ने कहा "हिसाब कैसा? मैं चित्त मिटाना दूंगा। ठाकर ने कहा "तब भी इतने वर्षों का हिसाब तो कर दें।" सेठ को विवश होकर हिसाब करना पड़ा। तभी से यह कहावत चल पड़ी कि ठाकुर तो चूके पर निश्चित भी बुरा होता है।

हे ठाकुर ! घर बकत अर्थात् डाका पड़ने आदि के समय आप कहाँ जाते हैं ?
उत्तर, घर बकत तो हम ही हैं अर्थात् हमारे ही कारण डाका पड़ता है ।

९४७ ठाकरां घोड़ी ठेका तीन देसी । ठाकर थार तो पल ही ठर्क जासी, दोय तो एकली देसी ।

हे ठाकर ! घोड़ी तीन उछाल मारेगी । उत्तर, ठाकर थार तो पहली ही उछाल पर नीचे गिर पड़ेगा दो उछाल तो घोड़ी अकेली देगी !

९४८ ठाकरां ठाडा कितराक ? कमजोर का तो बैरी ही पड़्या हां ।

हे ठाकुर ! आप कितने बलवान हैं ? उत्तर, कमजोर के तो पूरे शत्रु हैं ।

९४९ ठाकरां धोला आपणा और भाजो हो कह, भाग भाग तो धोला किया है, नहीं तो काळां में ही मार गेरता ।

हे ठाकुर ! आप के बाल सफेद हो गये और भगते हैं ? उत्तर भग-भग के ही तो सफेद तक पहुँचे हैं नहीं तो काळों में ही मार डालते ।

९५० ठाकरां पूंचो पतलो दीसे है ? कह लाग्यां बेरो पड़सी ।

हे ठाकुर ! कलाई पतली दिखाई पड़ती है । उत्तर, लगने पर पता चलेगा ।

९५१ ठाकरां, व्याया क कंवारा ? कह आधा । आधा क्यूं ? कह म्हे तो त्यार हां आपसो मिल ज्याय तो पूरा हो ज्यावां ।

हे ठाकर ! आप विवाहित हैं या अविवाहित ? उत्तर, आधे । आधे कैसे ? हम तो तैयार हैं कोई लड़की देने वाला मिल जाय तो पूरे विवाहित हो जायें !

९५२ ठाकरां भाग्यो कितराक ? कह, गैल की मार जाणिये ।

हे ठाकर ! आप कितने भग सकते हैं ? उत्तर, पीछे की मार जानिये ।

९५३ ठाकरां मरग्या सुण्या ? कह सांपरत अड़्या हां नी ।

ठाकर मालूम हुआ आप स्वर्ग सिधार गए । उत्तर, प्रत्यक्ष न खड़ा हूँ ।

९५४ ठाडा का दो बांटा ।

सबल के दो हिस्से होते हैं ।

९५ ठाडे के धन को चोखो-चोखा रुखाळो है ।

मतिनागी के धन को कोई जोखम नहीं ।

मि० ठाडे के धन का प्रबल रखवाला है ।

९५६ ठाडे को ठीलो सिर पर ।

सबल का लट्ठ सिर पर रहता है ।

९५७ ठाडे की डोको डांग में जाई ।

सबल का तिनका भी लाठी को फाड़ सकता है।
सबल अनुचित भी करे तो भी निर्बल को झुकना पड़ता है।
सबल की हल्की वस्तु भी निर्बल की जोरदार वस्तु से भारी होती है।

९५८ डाडै हीणै का पोथ वैका।
सबल और निर्बल के दो मार्ग होते हैं।

९५९ डाडो मारै अर रोवण भी कोन्या दे।
सबल मारता भी है और रोने भी नहीं देता।

९६० ठाली ठुकराणी की पेई में हाथ जाय।
बेकार बैठी हुई ठकुरानी अपनी वस्तुओं को सँभालती है।

९६१ ठालो बैठो जोकारी घर में बाल्यो पाड़ो।
बेकार बैठे रहने से लड़ना ही अच्छा।

९६२ ठालै बैठ्या सूं बेगार भली। (ठाला से बेगार भली)
बेकार बैठे रहने से बेगार करना ही अच्छा।
मि० १ ठालो बैठ्यो पत मूंडत होय।
२ ठाले बिणयै तो ताखू तुलावै।

९६३ ठिकाणे ठाकर पुजीजे।
राज्य से ही ठाकुर की प्रतिष्ठा होती है।

९६४ ठिकाणे से ई ठाकर बाजै।
राज्य से ही ठाकुर कहलाता है।

९६५ ठोकर खार हुस्यार होय।
मनुष्य ठोकर खाकर ही होशियार होता है।
तु० पड़ पड़ ई असवार होया करे है।

ड

९६६ डर तो धर्म खावें को है।
डर तो अधिक खाने में है।

९६७ डाकण अर चरख चढ़ी।
डाकिन और "चरख चढ़ी" और भी भयंकर हो जाती है।
मि० १ गिलोय अर नीम चढ़ी।
२ करेलो'र नीम चढ्यो।

९६८ डाकण बेटा लो क दे ?

डाकिन बच्चे लेती है या देती है ? अर्थात् लेती है ।
बुरे आदमी से भलाई की आशा नहीं की जा सकती ।

९६९ डाकण्यां के ब्यावां में भूतारां का भळका ।
डाकिनियों के यहाँ जब विवाह होता है तब वे भिखमंगों को ही निमन्त्र जाती हैं ।

९७० डाकण्यां सैं गांव का बच्चा के छाना है ।
डाकिन गाँव के बच्चों को भलीभाँति जानती है ।

९७१ डाडी के लाग्यां आपकी पहलां बुझावै ।
सब पहले अपने स्वार्थ को देखते हैं ।
मि० सर्व स्वारथ समीहहीं ।

९७२ दिगम्बरां के गांव में धोबी को के काम ?
दिगम्बरों के गाँव में धोबी का क्या काम ?

९७३ डूंगर चढ़तो पांगळो, सीस घणोड़ो भार ।
सिर पर बहुत सा बोझ लाद कर पंगु पर्वत पर चढ़ता है ।

९७४ डूंगर तो देखण का का ही होय है ।
पर्वत तो देखने के ही होते हैं ।

९७५ डूंगर बळती दीखै पगां बळती कोनी दीखै
पहाड़ पर जलती हुई आग दिखाई देती है, पैरों जलती हुई नहीं ।
दूसरों के दोष को देखता है अपने दोषों को नहीं ।
मि० डूंगर बळती लाय, दीसै सारो ही जगत
झाळजळी निज पाय, पती न सूझै राजिया ।

९७६ डूंगरां नै छाया कोनी होय ।
पर्वतों को छाया नहीं होती क्योंकि उनसे ऊँचा कोई नहीं होता ।
महापुरुषों की मदद करना साधारण आदमियों का काम नहीं वे अपनी मदद स्वयं ही करते हैं या ईश्वर उनकी मदद करता है ।

९७७ डूबतो सिवाळां नै हाथ घालै ।
डूबता हुआ मनुष्य सिवालों का आश्रय लेता है । विपत्ति में पड़ा हुआ तुच्छ से तुच्छ वस्तु का सहारा लेता है ।

९७८ डूमणी नाचै तो बजावै ।
डूम की स्त्री यदि कुछ नाचे तभी तो पुरुष गान का वादन कर सकता है ।

९७९ डूम गाय-बजाय मरै, बगीड़ं के मार्थ ही कोम्या ।

सूम मान्या कर मर जाता है, स्वामी को जरा-सी भी परवाह नहीं।
स० सूमड़ो रो-रो मरगो धणी के जाणे ही कोनी।

९८० सूमणी रे रोवण में ही राग।
सूम की स्त्री रागिनी में ही रोती है।
स० सूम की रोवै भी राग में है।

९८१ सूमां आडी डोकरी, बळदां आडी भैंस।
बुढ़िया सूमों के मार्ग में और भैंस बैलों के मार्ग में बाधक ही बनती है।

९८२ डेड बड़ो " र डोकवालू पाऊं।
घर में तो कुछ है नहीं और डोकवाले को पानी पिलाना चाहता है।

९८३ डेड ठैल वाँ नगरी में ठाई ठैल आवो है ठगीजो ठगावैगो नहीं।
जिस नगरी में डेढ़ ठैल रहता है वहां अढ़ाई ठैल आ सकता है वह उसे ठोकर ही ठगायेगा नहीं।

९८४ डोकरी भुसाव कैंका ? खावे-चावे का ?
हे डोकरी ! ये मसान किसके हैं ? उत्तर—जो खाते-चाते हैं उनके।

९८५ डोकरी र राज कसा कोम।
बूढ़ा को राजनीति से क्या काम ?

ढ

९८६ ढक्योड़ो मत उघाड़ और भू घर तेरो ई है।
बहू ! ढकी हुई वस्तुओं को तो उघाड़ना मत और वैसे घर तुम्हारा ही है।
घर का पर्दाफाश न करना।

९८७ ढबां खेती, ढबां न्याव।
ढंग से ही खेती होती है और ढंग से ही न्याय होता है।

९८८ ढस्यो घाटी हुयो माटी।
स्वाद तो जिह्वा में ही है जब भोजन कंठ की घाटी को पार कर गया फिर मिट्टी ही है।

९८९ ढींगा करता ही पताले पताशी एक पाऊँ ना।
कहानी यों है कि एक आदमी किसी दुकानदार के पास एक पैसे का बताशा लेने गया। दुकानदार बताशा तोलने लगा तो ग्राहक ने कहा "एक ढींगी तो और डाल। इस पर दुकानदार ने उत्तर दिया "ढींगा ठेरो मन ही जितरा बताले पताशी नाखूंगा एक।"
इस कहावत का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए होता है जिससे बात चाहे जितनी

करवाओ किन्तु सिहाम किसी को नहीं करता ।

११० ढेढ को मन रहयावड़ै में ।

ढेढ का मन निकृष्ट वस्तुओं में रहता है

१११ ढेढनी और रावळ आ आई ।

ढेढनी और रमवास में आ आई । अब किसके बराबर ।

११२ ढेढ न सुपन में भी बेगार ।

ढेढ को स्वप्न में भी काम करना पड़ता है ।

मि० ढेढ ने सुपन में ही बिसाई कोनी ।

११३ ढेढ रे साथे खाय 'र चोखो भावें आंगळी भर कर चाखो ।

ढेढ के साथ छक कर भोजन करो या अंगुलि भर कर चखो एक ही बात है ।

११४ ढेढ रो कपड़ो लगावो, भावें कार्य पड़ो ।

ढेढ का कपड़ा स्पर्श करो या गले लगा कर मिलो एक ही बात है ।

११५ ढेढां की कुरलीस सूं ढांढ थोड़ा ही मरै ।

(कागलां के सराप सूं ऊंट कोनी मरै)

ढेढों के कोसने से पशु नहीं मरते ।

११६ ढोसी का डूंगर बीकता होता तो नारनौल का कुत्ता कदेस का बाट ल्यावता ।

ढोसी के पहाड़ यदि बिकते होते तो नारनौल के कुत्ते कभी के बाट लाते ।

ढोसी के पहाड़ पर च्यवन ऋषि का आश्रम है जो नारनौल से पांच मील की दूरी पर पश्चिम में स्थित है ।

त

११७ तंगी में कुण संगी ?

जब पैसा पास में नहीं रहता तो कोई साथ नहीं देता ।

मि० ले होई-होई का सीरी है ।

११८ तड़के तो म्हो चकाचक । कहू, कैं कै ? कहू आ भो लोबो है ।

कल तो खूब मिठाई चखेगी । दूसरे ने पूछा किसके यहाँ ? उत्तर दिया, यह भी सच्ची बात है ।

११९ तरवार को घाव भर ज्या, बात को कोनी भरै ।

तलवार का घाव भर जाता है बात का घाव नहीं भरता ।

मि० १ लोह तणी तलवार न लागे, जीभ तणी तलवार जिसी ।

२ तरवार को घाव भर ज्याय पण बोली को घाव को भरै ना।
३ गोली को घाव भर ज्याय बोली को कोनी भरै।

१००० तळै तो हूँ पर ऊपर टांग मेरी ही है।
कुश्ती में चित कर दिया गया है किन्तु फिर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करता। कहता है, नीचे हूँ तो क्या हुआ? टांग तो मेरी ही ऊपर है।

२००१ तवै की काची नै सासरै की भाजी नै कठैई ठोड कोनी।
तवे पर जो रोटी कच्ची रह जाती है तथा जो स्त्री ससुराल से भग जाती है इन दोनों का कहीं ठौर ठिकाना नहीं रहता।

२००२ तवै चढ़े नै चाढ़ खाय।
जब घर में खाने वालों की संख्या अधिक हो और साथ ही हो दारिद्र्य तो खाने वाले तवे पर से ही रोटी ले लेते हैं इस डर से कि कहीं वे वंचित न रह जाय।

२००३ ताम्बा तेरै मांय बास आवै है, कह, मेरी वासो भी कठै है।
हे कोपीन! तुझ में दुर्गन्ध आती है। उत्तर, मेरा निवासस्थान तो देखो।

२००४ ताम्बूं कूमतो पोसाका में।
कोपीन कोई पोशाक थोड़े ही है?

२००५ ताता पाणी सैं कठी बाड़ बळै?
गरम पानी से बाड़ नहीं जल सकती।
केवल कोप भरे वाक्यों से किसी का अनिष्ट नहीं हो सकता।

२००६ ताती खावै छाया सोवै जैको वैद पिछोकड़ रोवै।
जो गरम भोजन करता है और छाया में सोता है उसका वैद्य से कभी पाला नहीं पड़ता।

२००७ ताली कान्यां ताळो खुलै।
चाबी से ही ताला खुलता है।
युक्ति से ही काम होता है।

२००८ तावळो सो बावळो।
जो शीघ्रता करता है वह पागल है।

२००९ तिरिया चरित न जाने कोय खसम मार के सती होय।
स्त्री के चरित्र को कोई नहीं पहचान सकता।
स्त्री अपने पति को मार कर भी सती हो जाती है। इस सम्बन्ध में लोक-कथा प्रसिद्ध है।

१०१० तिल देखो तिलों की धार देखो।
तिल देखो तिलों की धार देखो अर्थात् धैर्य रक्खो।

१०११ तीज त्युहारां बावड़ी ले डूबी गणगौर।
तीज के बाद जल्दी-जल्दी त्योहार आते हैं गणगौर के बाद चार महीनों तक त्योहार नहीं आते।

१०१२ तीजां पाछै लोवड़ी होली पाछै पूंठ,
फेरां पाछै चूनड़ी लाण लगाम री मूंठ।
तीज के त्योहार के बाद यदि कोई वस्त्रादि भेजे और होली के बाद होली के उपलक्ष में कोई चीज भेजी जाय भावर फिर लेने के बाद यदि चूनड़ी भेजी जाय तो सब व्यर्थ है। समय पर ही कोई वस्तु काम देती है।

१०१३ तीतर के मूंडै सगुन है।
अगर तीतर शुभ बोलता है तो अच्छा शकुन समझा जाता है।
समाज का कोई विशिष्ट व्यक्ति जो कह दे वही प्रामाणिक है।
इस कहावत का प्रयोग उस समय होता है जब दो आदमियों का झगड़ा पंचायत या अदालत में चला जाय। तात्पर्य यह है कि अब सरपंच जो कुछ कह दे वही ठीक है अथवा हाकिम जो कुछ फैसला कर दे वही मान्य है।
मि० १ पंच कर दे सो न्याय। २ हाकिम के मूंडै न्याय है।

१०१४ तीतर छोड़ बनी में दीया भटजी हो गया नीराला।
भट्टजी ने तीतर पाल रखे थे जब उन्हें वन में छोड़ दिया तो भट्टजी निर्लिप्त हो गये।
क० तीतर छोड़ बनी में चाल्या, भटजी हुया निराला।

१०१५ तीतर पंखी बादली, विधवा काजल रेख
वा बरसै वा घर करै ई में मीन न मेख।
यदि तीतरपंखी बदली हो और विधवा स्त्री की आंख में काजल की रेखा दिखाई दे तो समझना चाहिए कि पहली तो अवश्य बरसेगी और दूसरी अवश्य ही नया पति करेगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

१०१६ तीन तेरा घर बिखरै।
तीन तेरह होने से घर बिखर जाता है।

१०१७ तीन बुलाया तेरा आया भई राम की बाणी,
राघो चेतन यूं कहै दो दाल में पाणी।
तीन बुलाये और तेरह आगए। अब उतनी ही दाल से काम नहीं चल

सकता। इसलिए दाल में पानी दे देना चाहिए।

१०१८ तीन सुहाली तेरा थाली, बाँटण वाली सत्तर जणी।
तीन मैदा की पपड़ियाँ हैं जिनके लिये ११ थालियाँ और उन्हें बाँटने के लिए ७० स्त्रियाँ। इतना आडम्बर!!

१०१९ तीसरे सूखो आठवें अकाल।
प्रति तीसरे वर्ष वर्षा का अभाव प्रति आठवें वर्ष अकाल। राजस्थान के लिए उक्ति।

२०२० तुरकणी के रांद्योड़ा में के कसर?
मुसलमान स्त्री के अन्नादि पकाने में कोई त्रुटि नहीं रहती क्योंकि वह बीच-बीच में चख कर परीक्षा कर लेती है।

१०२१ तुरकणीरे कात्योड़े में ही चिलकड़ो।
मुसलमान स्त्रियाँ चर्खा कातने में सिद्धहस्त होती हैं यदि उनके काते सूत में मोटा अंश आ जाय तो यह अनहोनी बात होगी।

२०२२ तू आंधीली मैं अलसीली कयूंकर हुसि बणाव?
जहाँ दोनों अपने-अपने हठ पर अड़े रहें वहाँ कैसे निर्वाह हो सकता है?

२०२३ तू ही गांव को चौधरी तू ही नम्बरदार।
तू ही गाँव का चौधरी तथा तू ही नम्बरदार है।

१०२४ तूं क्यूं लाडो उणमणी तेरे बैठीवाळो साथ।
मेरी लाडली लड़की! तू उन्मन क्यों है? आछा वारण करने वाला तुझे पति के रूप में प्राप्त हुआ है।

१०२५ तूं जजमानी मैं पाडियो तूं बेस्या मैं भांड।
बैर जिमाबे मेरे बीजमां में पत्थर पड़िया रे रांड।
एक बार एक वेश्या ने पुण्य लूटने के लोभ से एक ब्राह्मण को निमंत्रित करने का निश्चय किया। उसने अपने आप को जजमानी के रूप में प्रकट किया। कोई ब्राह्मण तो उसके यहाँ गया नहीं। तब किसी भांड ने ब्राह्मण की वेशभूषा बनाकर उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। जब भांड भोजन कर चुका तो वेश्या ने उससे कहा कि धर्मोपार्जन की दृष्टि से मैंने आज एक ब्राह्मण को निमंत्रित किया था। इस पर उस भांड की उक्ति है कि यदि तू जजमानी है तो मैं ब्राह्मण हूँ यदि तू वेश्या है तो मैं भांड हूँ। दो बराबर के अधम व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहार पर उक्ति।

१०२६ तूं डाल-डाल मैं पात-पात।

तुमसे अधिक मैं चालबाज हूँ अर्थात् तुम्हारी चालों को भली भांति समझता हूँ।

मि० तुमि बेड़ाठ डाले डाले आमि बेड़ाइ पाताय पाताय।

२०२७ तूं बी राणी मैं बी राणी,
कूण भरै पैंडे को पाणी ?
जब घर का कोई व्यक्ति अपने हाथ से काम नहीं करना चाहता तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

२०२८ तू आवै दिन एक बार तो म आऊं दिन अट्ठ।
तू म्हां सें करड़ो रहै तो म्हे बी करड़ा लक्ठ॥
यदि तुम मेरे पास एक बार आओ तो मैं आठ बार आऊँ। यदि तुम दूर रहो तो मैं भी लक्ठ की तरह कठोर हूँ।

२०२९ तू कानूं मैं खोड़ो राम मिलायो जोड़ो।
तू काना है और मैं लँगड़ा हूँ। भगवान् ने अच्छी जोड़ी मिलाई है।

२०३० तू चालै तो चाल निमोड़्या मैं तो गंगा न्हाऊंली।
२। तुम चलो तो चलो, मैं तो गंगा-स्नान करने जाऊँगी।

२०३१ तू रोवै है छाछ नै मैं पूछण आई कै उधारो की कै अंठ ल्याऊं।
तू छाछ न मिलने से दुखी हो रहा है मैं यह पूछने के लिए आई हूँ कि उधार कहीं न लाऊँ ?

२०३२ तेरा मेरा दो गैला।
तुम्हारे और मेरे अलग अलग रास्ते हैं।

२०३३ तेरी आंख में ताड़ू पूं हूं कायर मना हुए।
तुम्हारी आंख में ताड़ू झोंक रहा हूँ कायर मत होना।

२०३४ तेरी मेरी दोन्यो में ई ल्यो बलै ना।
हम दोनों की बातचीत में ही नहीं बनती।

२०३५ तेरै न्होड़िय नै म्यूरो है कद मेरै तो सगला ढाई सेरया है।
तुम्हारे छोटे बच्चे का निमंत्रण है। उत्तर मिला तुम बड़ों का निमंत्रण दो या छोटे का मेरे तो छोटे-बड़े सभी बच्चे अढ़ाई सेर खाने वाले हैं।

२०३६ तेल तो तिल्यां में सें ही नीकलसी।
तेल तो तिलों से ही निकलेगा।

२०३७ तेल बल बाती बर्ल, नांव दिवा को होय।

तेल जलता है, बत्ती जलती है किन्तु दीपक का नाम होता है। लोग कहते हैं दीपक जल रहा है।

मि० तेल जलै बाती जलै, नाम दिये का होय।
बेटा तो बीरी जणै नाम पियै का होय।।

१०३८ तेल लासका भैंक पूजा।

तेल और छिपाये हुए गोठ से भैंक की पूजा होती है।

१०३९ तेली को बीर रूखो क्यूं खाय ?

तेली की स्त्री जहाँ सदा तेल का ठाठ रहता है रूखा-सूखा क्यों खाय ?

१०४० तेली सूं खल उतरी हुई बलीतै जोग।

घाणी से खली जब उतर गई, तब वह ईंधन के योग्य हो गई।

थ

१०४१ थारी म्हारी बोली में इतरो ही फरक।
तू तो कहे फरेस्तो'र हूं कहूं जरख।।

तुम्हारी और मेरी बोली में इतना ही अन्तर है। जिसे मैं जरख कहता हूँ उसे तुम फरिस्ता कहते हो। जरख जब शव को कब्र में से निकाल लेता है तो मुसलमान कहते हैं फरिस्ता इसे बिहिश्त में ले जा रहा है।

१०४२ थारी उतरन, म्हारो सिणगार।

मालिक जिस कपड़े आदि को पुराना समझ कर उतार फेंकता है वह गरीब नौकर-चाकर के लिए शृंगार का काम देता है।

१०४३ थावर की थावर ही किता गांव बसै हैं।

पुत्र-कामना करने वाली मूर्ख स्त्रियां शनिवार के दिन दूसरों के घर में आग लगा देती हैं किन्तु हर शनिवार को ऐसा थोड़े ही होता है ? अन्ध विश्वास के अनुसार ही यदि अभिष्ट होता जाय तो संसार कैसे बसे ?

१०४४ थोथो चणो बाजै घणो।

थोथा चना अधिक शब्द करता है।

जिनमें गुण नहीं होते वे ही बढ़-बढ़ कर बातें करते हैं।

मि० संपूर्ण कुम्भो न करोति शब्दम् अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान्कुलीनो न करोति गर्वम् गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति।

१०४५ थोथो संख पराई फूंक सूं बाजै।

थोथा शंख पराई फूंक से बजता है।

जिसमें गांठ की बुद्धि नहीं होती वह स्वतः कोई कार्य नहीं कर सकता।

दूसरा जैसा कहता है वह वैसा ही करता है।

द

१०४६ दयावान दूध नर्म चीतो मोर कमाण ।
दयावान चीता मोर तथा मनुष्य में सब दूध समान हैं।

१०४७ दयो कैको लगो नहीं ।
दयावान किसी से भी दया करने से बाज नहीं आते ।

१०४८ दबी मूसी कान कटावै ।
मि० दबी बिल्ली चूहों से कान कटाय ।

१०४९ दमड़ां को लोभी बातां स कोनी रीझै ।
धन का लोभी बातों से सन्तुष्ट नहीं हो सकता ।

१०५० दमड़ी का छाबा पुलीपार भचाई ।
पैसा थोड़ा आडम्बर बहुत ।

१०५१ दलाल कै दिवालो नहीं मसजीत कै ताळो नहीं ।
दलाल के दिवाला नहीं होता मसजिद के ताला नहीं होता क्योंकि मसजिद में रखा ही क्या है जो ताला लगाया जाय ?

१०५२ दसां बाळको बीसां बावळो
तीसां तीखो चाळीसां चोखो ।
पचासां पाको साठां थाको
सत्तरां सूखो अस्सी भूखो ।
नव्वै नांगो सोवां तो भागो ई भागो । *

अर्थात् दस वर्ष की अवस्था तक तो बच्चे का लाड़-दुलार होता रहता है उसके बाद बीस वर्ष तक अल्हड़पन की अवस्था रहती है तीस वर्ष तक तीखेपन की अवस्था है, तत्पश्चात् चालीस तक समझदारी की अच्छी अवस्था है फिर पचास तक आते-आते मनुष्य परिपक्व हो जाता है साठ वर्ष की अवस्था में पहुँच कर वह थकने लगता है ६१ से ७० तक अनेक प्रकार के दुःख (रुग्ण) सताने लगते हैं तदनन्तर अस्सी वर्ष की अवस्था

* पाठान्तर—सत्तर में सूखो अस्सी में लूखो
नव्वै में नागा सौ में तो उठ भागो जो भागो ही भागा ।
मूस्या = अर्थहीन सोचना । लूखा = सूखे हुए शरीर वाला ।
(पाठान्तर श्री ब्रजमोहन जावलिया के सौजन्य से प्राप्त)

तक आंखों से पहुंचा घर कर लेती है फिर ० वर्ष की अवस्था तक यह देह की सुध-बुध भूल कर गधे की तरह रहने लगता है और ९० के बाद १०० वर्ष तक तो संसार से विदाई ही विदाई है कभी भी महाप्रयाण के लिए निमन्त्रण आ सकता है।

१०५३ दांत दरद्यो दायमो दारो और दरबार,
ये पांचू दद्दा बुरा पत राखै भगवान।
दांत दरदी दायमा दारी और दरबार द अक्षर से प्रारम्भ होने वाले ये पांचों बहुत बुरे होते हैं भगवान ही इज्जत रखे।

१०५४ दांत भलांई टूट ज्यावो, को लोही चवै।
दांत भले ही टूट जाओ कोई लोहा नहीं चबा सकता।

१०५५ दांतला खसम को रोवता को बेरो पड़ै न हांसता को।
दन्तुल पति का न रोते हुए का पता लगता है न हंसते हुए का।

१०५६ दाई से पेट छानो कोनी।
दाई से पेट छिपा नहीं है।
जब ऐसे मनुष्य से कोई बात गुप्त रखने की चेष्टा की जाती है जो सब रहस्य जानता हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

१०५७ दाता दे भंडारी को पेट बळै।
दाता दान देता है भंडारी का जी दुखता है।
क० दाता दे भंडारी को पेट फाटै।

१०५८ दाता से सूम भलो जो तुरत दे जवाब।
जब कोई दातार किसी को देने के लिए वचन तो देता है लेने जाता है तो टालता रहता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के दातार से सूम अच्छा है जो शीघ्र जवाब तो दे देता है।

१०५९ दादूद्वारा में कांगसियां को के काम?
दादूद्वारे में कंघों का क्या काम क्योंकि दादू पंथी सफाचट रहते हैं।

१०६० दादो असो काढ्यो लाडूओ के ब्याव दिन के दिन आई रही।
दादा ने ऐसा विवाह-मुहूर्त निकाला कि बरात उसी दिन आई रही। किसी अनुमान के हूबहू सच्चा सिद्ध होने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१०६१ दादो की जायो म्हारी हवेली सूंवस्यो।
पूर्वजों का गौरव दिखलाने के लिए यह उक्ति है।

१०६२ दाम की दाळी का दांत कुण देख्या?

जो बख्शिश दान में मिलती है उसके दाँत नहीं देखे जाते।

२०६३ दाणै दाणै मोहर-छाप है।

प्रत्येक दाना भी भाग्य में लिखा हुआ ही मिलता है।

२०६४ दान मान सब्बा बीसारा, ऐ बाई! परताप तुम्हारा।

किसी ने वृद्ध के साथ अपनी लड़की का विवाह कर दिया जिससे लड़की के पिता का बड़ा स्वागत-सत्कार होने लगा। उसे दान-मान मिलने लगे। इस पर उसकी अपनी लड़की के प्रति उक्ति है।

२०६५ दास सदा उदास।

जो नौकर है परतन्त्रता के कारण वह सदा उदास रहता है।

२०६६ दिन आयाँ रावण मरै।

जब समय आता है तो रावण जैसे शक्तिशाली भी काल-चक्र की लपट में आजाते हैं।

२०६७ दिन करै सो बैरी कोन्या करै।

जो समय करता है वह बैरी भी नहीं करता।

मि० दिन देख नहीं सकते सविताप किसी जन का सुख सौख्य कभी

(साकेत नवम सर्ग)

२०६८ दिनगे को भूल्योड़ो सँझ्या घरै आ ज्याय तो भूल्योड़ो कोनी बाजै।

सुबह का भूला हुआ यदि साँझ को घर आ जाय तो भूला हुआ नहीं कहलाता।

२०६९ दिन गयाँ बार कोनी लागै।

समय को जाते देर नहीं लगती।

मि० १ दिनड़ा जाय ताली ज्यूं देता।

२ जिमि जात नहिं लागहि बारा। (तुलसी)

२०७० दिन दीठ्यां न बूढ़ पीसै।

जब तक धूप नहीं निकलती बुढ़िया पीसना प्रारम्भ नहीं करती।

२०७१ दिलाँ का दिल साखिदार है।

दिलों का साक्षी दिल है।

मि० मैं तनै किस्योक लागूं? के—तू तेरी आत्मा नै ही पूछ ले। तू तनै ही पूछ ले।

२०७२ दिल्ली की कमाई दिल्ली में लगाई।

दिल्ली की कमाई दिल्ली में ही खर्च कर दी। दिल्ली खर्चीली जगह है इसलिए वहाँ की कमाई वहीं उड़ जाती है। मि० मकै की कमाई

मूंड मुंडाई में गमाई। मड़ना जो कुछ कमाता है वह मूंड-मुंडाई में खर्च हो जाता है।

१०७१ दिल्ली में रह कर भी भाड़ झोंकी।

रू० बारा बरस दिल्ली में रया' र भाड़ झोंक्या।

१०७४ दीपक के जीवे नहीं जल जल मरे पतंग।

पतंग जल-जल कर अपने आपको दीपक पर न्यौछावर कर देता है दीपक को इसकी परवाह ही नहीं।

१०७५ दीवा बीती पंचमी, जो शनि मूल पड़न्त।

तिगणा तिगणा चौगणा, मूंघा नाज करन्त॥

कार्तिक सुदी ५ को मूल नक्षत्र में यदि शनिवार हो तो नाज तिगुना चौगुना महंगा हो।

१०७६ दीवा बीती पंचमी, मूल नक्षत्तर होय

खप्पर ले हाथां फिरे, भीख न घालै कोय।

यदि कार्तिक शुक्ला पंचमी को मूल नक्षत्र हो तो अकाल पड़ेगा। खप्पर हाथ में लेकर फिरने पर कोई भीख तक नहीं देगा।

१०७७ दीवा बीती पंचमी, सोम सुक्कर गुरु मूल,

डंक कहै है भड्डली, निपजे सातूं तूल।

कार्तिक सुदी पंचमी को यदि मूल नक्षत्र में सोम बृहस्पति या शुक्र हो तो सातों किस्म का नाज खूब उपजे।

१०७८ दीवाली का दीवा दीठा,

काचर बोर मतीरा मीठा।

दिवाली के बाद काचर, बेर, मतीरे मीठे हो जाते हैं।

१०७९ दुखां को बाजो नाम सदासुखराम।

है तो दुखों का भंडार और नाम है सदासुखराम।

१०८० दुनिया की जीभ कुण पकड़ै?

दुनिया की जीभ कौन पकड़ सकता है। वह तो जो चाहेगी कहेगी ही।

१०८१ दुनिया दुरंगी है।

(स्पष्ट)

१०८२ दुनिया [illegible] जसी कहवे।

दुनिया जैसा देखती है वैसा कह देती है।

१०८३ दुनिया में कुण जीतै?

दुनिया को कौन जीत सकता है ?

१०८४ दुनिया पराये सुख दुखली है ।

दुनिया के लोग दूसरों के सुखों को देख कर जलते हैं इसलिए वे ईर्ष्याग्नि में जलते रहने से दुबले हो जाते हैं ।

१०८५ दुनिया में दो गरीब है के बेटी, कै बैल ।

दुनिया में दो ही गरीब हैं या तो बेटी या बैल जो सदा दूसरों के अधीन रहते हैं ।

१०८६ दुनिया है गरज मतलब है ।

दुनिया में सिवाय स्वार्थ के और कुछ नहीं है ।

१०८७ दुरजन की किरपा बुरी, भली सैन की त्रास,

आडंग कर गरमी करे, जद बरसण की आस ।

प्रभु की कृपा की अपेक्षा मित्र की डाँटडपट अच्छी है । बादल मंडरा कर जब गर्मी होती है तब वर्षा की आशा होती है ।

१०८८ दूजबर की गोरड़ी हाथां चरती मोरड़ी ।

धमड़ धमड़ नाचैली, बोलैलो तो पालैली कर म्यालैली ।

दूजबर की स्त्री हाथ पर की मोरनी के समान है । उसका बहुत आदर होता है । उसकी इच्छा-पूर्ति में बाधा डाली जाय तो वह मारने अथवा स्वयं मरने की धमकी देती है ।

१०८९ दूध दयां का पावणा छाछ नै अणखावणा ।

दूध-दही वाले मेहमान छाछ पीना पसन्द नहीं करते ।

१०९० दूध को दूध, पाणी को पाणी ।

जब यथोचित न्याय कर दिया जाता है तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

टि० इस कहावत के पीछे जो लोक-कथा कही जाती है, वह अत्यन्त प्रसिद्ध है ।

१०९१ दूध चुंघावै मावड़ी, नाम बाप को होय ।

बचपन में तो माता दूध पिलाती है और नाम बाप का होता है ।

१०९२ दूध पीती बिलाई मंडकड़ा में आ पड़ी ।

दूध पीती हुई बिल्ली मटके में आ पड़ी अर्थात् मौज से जीवन व्यतीत करने वाले पर आकस्मिक संकट आ पड़ा ।

१०९३ दूध बेचो भावैं पूत बेचो ।

दूध बेचना और पूत बेचना समान है ।

दूध बेचना निषिद्ध समझा गया है ।

१०९४ दूध भी धोलो, छाछ भी धोली।
यह भोला-भाला है इसके लिए दूध भी सफेद है और छाछ भी सफेद है।

१०९५ 'दूध भी राखे' दुहारी भी राखे।
इज्जत भी बनी रहे पैसा भी बचा रहे।
ऐसा काम जिसमें दोनों में किसी का नुकसान न होवे।
मि० साँप भी मर जाय लाठी भी न टूटै।

१०९६ दूध दुहारी की छाछ भी सहणी पड़ै।
जो गाय दूध देने वाली होती है उसकी छाछ भी सहनी पड़ती है।

१०९७ दूवड़ी तो चरवाने ही होवे।
दूब तो चरने के लिए ही होती है।
सार्वजनिक वस्तु सब के उपयोग के लिए होती है।

१०९८ दूबले पर दो आवें।
दुबले पर दो लगते हैं।

१०९९ दूबली धर दो साढ़।
निर्बल गाय-भैंस हो और दो आषाढ़ आजायं तो उसके लिए वर्षा के अभाव में और भी मुश्किल हो जाती है।

११०० दूबली खेती धणी नै मारै।
कम अन्न पैदा हो तो खेती करने वाले को नुकसान उठाना पड़ता है।

११०१ दूबलो धीन् दूसरा की छाछ से चोखे।
जब किसी के यहाँ गाय अथवा भैंस तो हो किन्तु दूध बहुत कम देती हो तो उस घर वाले दूसरों के यहाँ छाछ के लिए भी नहीं जा सकते।

११०२ दूबलो जेठ देवर बराबर।
कमजोर जेठ (पति का बड़ा भाई) देवर के बराबर समझा जाता है।
पद में उच्च होने पर भी कमजोर का आदर नहीं।

११०३ दूर का ढोल सुहावना लागे।
दूर की वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।
मि० दूर का पहाड़ सुहाणा लागै।
दूरस्था पर्वता रम्या।

११०४ दूर जंवाई फूल बरोबर, गाँव जंवाई आधो न।
घर जंवाई धर्थ बरोबर, जाने जितनो लावे।
जामाता यदि दूर रहे तो वह फूल-सदृश समझा जाता है। उसका बड़ा

भाइ-भाव होता है और वह मानस्वरूप नहीं जान पड़ता। यदि वह उसी गाँव में रहने वाला हो तो उसका मान आदर घट जाता है और यदि जंवाई घर में ही रहने लग जाय तो वह गध जैसा समझा जाता है और उससे चाहे जितना काम लिया जा सकता है।

११०५ दूसरां रै घरां ब्याव बाटी पर कमर पूल।
दूसरां के घर ब्याह लगन पर कमर बांधा जो जाती है।
दूसरों के यहाँ अधिक आडम्बर किया जाता है।

११०६ दूसरां री माल तूंतड़ो को पड़ नै जाय।
दूसरा का धन लापरवाही से व्यय किया जाता है।

११०७ दूसरां पर बुरी चोतै जका आप पर ई पड़।
जो दूसरों का बुरा सोचता है उसी का अनिष्ट होता है।

११०८ दूसरै री थाली में घी घणूं दीसै।
दूसरे की थाली में घी अधिक दिखलाई पड़ता है।

११०९ देन्दे नैणा चालती गोडां।
आँखों में दमन का तथा पैरों में चलते रहने की शक्ति रहते ही मृत्यु हो जाय तो सुन्दर है।

१११० देज पराई चूपड़ी मत ललचावै जी
लूखी-सूखी खाय कर ठंडो पाणी पी।
पराई चुपड़ी देख कर अपना जी न ललचा न कर रूखी-सूखी खा कर तथा ठंडा पानी पी कर जो कुछ पास है उसी से सन्तुष्ट रह।

११११ देख पराई चोपड़ी पड़ मत बहिमाल
दो घड़ी की सरसी आठ पहर आराम।
पराई चुपड़ी रोटी को देख कर उस पर टूट पड़। थोड़ी देर के लिए भले ही अच्छा लगेगा किन्तु फिर आठ पहर आराम से सोऊँगे।

१११२ देख्या ब्याव बुराय का लिका रचाया रंग
धनवान धनी घर तेती चर्च लूरत।
ईश्वर का लख देगा। उनको भी क्या चिन्ता जाता है कि धनवाले ही धनी करते हैं और तमा चीटों पर चढ़ते हैं।

१११३ देख्यां-देखी साधै जोग छीजै काया बधै रोग।
जो दूसरों की देखा-देखी योग सिद्ध करता है उसका शरीर क्षीण होने लगता है और रोग बढ़ जाता है।

१११४ देख्या देस बंगाळा, दांत लाल मूं काळा।
बंगाल के लोग पान अधिक खाते हैं। इसलिए उनके दांत लाल रहते हैं, उनके मुंह का रंग प्रायः काला होता है।

१११५ देख्यो नांही जैपरियो, कळ में आकर के करियो।
जयपुर की प्रशंसा में कहा गया है कि यदि जयपुर नहीं देखा तो मनुष्य-शरीर धारण करके क्या किया।

१११६ देणूं अर मरणूं बराबर है।
किसी कृपण के लिए दूसरे को कुछ देना मरण-तुल्य है।

१११७ देवा में लेवा में रामजी को नांव है।
देने-लेने के लिए कुछ नहीं है।

१११८ दे रे बाह्मण असीस, के के देऊं, मेरी आत्मा ही देसी।
हे पंडित! आशीर्वाद दो। उत्तर, मैं क्या आशीर्वाद दूं मेरी आत्मा ही देगी।

१११९ देव जिसाई पुजारा।
जैसे देव वैसे ही पुजारी।

११२० देव देख्यां'र जात पूरी हुई।
देवता के दर्शन हुए और देव-यात्रा पूरी हुई।

११२१ देवां से बामण बडा होय है।
देवताओं से ब्राह्मण बड़े होते हैं।
क० देव सैं बामण बडो।
मि० चोरां में साहूकार कोनी लाधै।

११२२ देस चोरी, परदेस भीख।
परदेश में भीख भी मांगी जा सकती है क्योंकि वहां कोई जानने वाला नहीं होता अपने देश के सब स्थान परिचित होते हैं इसलिए वहां चोरी आसानी से की जा सकती है।

११२३ देस जिसाई भेस।
जैसा देश वैसा वेश।

११२४ देसी कुतिया विलायती बोली।
कुतिया तो देशी है और विलायती बोली बोलती है।
मि० देसी डारखी पूरबी चाल।

११२५ दो तो चून का भी बुरा।
दो तो चून के बने हुए भी बुरे होते हैं।

क० वो तो माटी का भी बुरा ।
वो तो मिट्टी के बने हुए भी बुरे होते हैं ।

२१२६ दो दाणा की खातर मोड़ी बेची जायगी के ?
तुमने मोडी को दो दाने खिला दिये इसीलिए मोड़ी बेची थोड़े ही जायगी ?

२१२७ दोनूं हाथ मिलायां ही धुपै ।
दोनों ओर से कुछ झुकने पर ही समझौता होता है ।

२१२८ दोपती तो कुंआरी डोलै नानी का नो-नो फेरा ।
(स्पष्ट है)

२१२९ दो बुरां बुराई हुवै ।
दो बुरे मिलने से ही बुराई होती है । यदि एक बुराई करे और दूसरा शान्त रहे तो झगड़ा नहीं हो पाता ।

२१३० दोय दोय गयंद न बंधसी एकै कंबू ठाण ।
एक ठाम में दो-दो हाथी नहीं बंध सकते ।

२१३१ दोय मूसा दोय कातरा दोय टीडी दोय ताव ।
दोयां री बादी जल हरै दोय बीसर दो बाव ॥
यदि माघ के प्रथम दो दिनों में हवा न चले तो चूहे पैदा हों तीसरे-चौथे दिन हवा न चले तो जहरीले कीड़े हों पांचवें-छठे दिन हवा न चले तो टिड्डी-दल हो सातवें-आठवें दिन न चले तो बुखार फैले नवें-दसवें दिन न चले तो वर्षा कम हो ११ वें १२ वें दिन न चले तो जहरीले कीड़े और जानवर पैदा हों १३वें १४वें दिन न चले तो खूब आंधी उठे ।

२१३२ दोय लड़ै जठै एक पड़ै ।
जहां दो लड़ते हैं वहां एक नीचे गिरता ही है ।

२१३३ दोलत सूं दोलत बधै ।
दौलत से दौलत बढ़ती है पैसे के पास पैसा आता है ।

२१३४ दो सावण दो भादवा दो कातिक दो मा
ढांडी—ढोरी बेच कर, नाज विसावण जा ।
जिस वर्ष श्रावण भाद्र कार्तिक और माघ के दो महीने पड़ेंगे उस वर्ष भयंकर अकाल पड़ेगा । पशु आदि बेच डाले पड़ेंगे और अनाज खरीद कर रखना पड़ेगा । पैदावार कुछ नहीं होगी ।

ध

२१३५ धणी को सिर हुवा दियो डीगी की जबान कोनी हुवाई ।

घड़ी भर वजन वाला सिर तो हिला दिया किन्तु एक धोंगे भर वजन वाली जबान नहीं हिलाई गई।

११३६ धणी की खोच बाचण गई अर पड़ी आपकी।
पति की खोच बचाने गई थी किन्तु आ पड़ी अपनी।
एक अनर्थ को दूर करने के प्रयत्न में जहाँ दूसरा अनर्थ हो जाय वहाँ इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

११३७ धणी रे धणी म्हारा निधन धणी।
तू बैठ्यां म्हारै चिन्ता घणी।
किसी स्त्री की अपने निर्धन पति के प्रति उक्ति है हे निर्धन स्वामी! तुम्हारे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है।

११३८ धन का तेरा मकर पचीस जाड़े दिन दो कम चालीस।
तेरह दिन धन संक्रान्ति के और पच्चीस दिन मकर के इस प्रकार दो कम चालीस अर्थात् ३८ दिन तक जाड़ा जोर से पड़ता है।
मि० धन के पन्द्रह मकर पचीस जाड़ा चिल्ला दिन चालीस।

११३९ धन खेती धिक चाकरी।
खेती धन्य है नौकरी को धिक्कार है।

११४० धन दायजा बहुणा खाती कूटा पहुणा।
दहेज के लोभ में बहू को घर ले आये, जिस पर किसी की उक्ति है।

११४१ धन धणियाँ को गुवाल के हाथ में लकड़ी।
धन तो स्वामी का है ग्वाल के हाथ में तो लकड़ी है जिससे वह पशुओं को हाँकता है।

११४२ धनवन्ता कांटो लग्यो, सहाय करी सब कोय
निरधन पड़्यो पहाड़ सूँ बात न पूछी कोय।*
धनवान के यदि काँटा भी चुभ जाता है तो सब सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं किन्तु निर्धन यदि पहाड़ से भी गिर जाता है तो उसे कोई नहीं पूछता।

११४३ धनवान को के कबूल अर गरीब को के दातार।

---

*तु० भागवान कै कांटो गडयो पूछत है सब कोय।
निरधनियाँ डूंगर सें गुड़यो पूछै नाही कोय॥
(और किसी की तो बात ही क्या घर की जोरू तक भी बात नहीं पूछती।)

धनवान का क्या कंजूस ? क्योंकि वह पैसेवाला है कभी न कभी कुछ देही देता है और गरीब का क्या दातार ? क्योंकि उसके पास जब धन ही नहीं तो दे कहां से ?

११४४ धरतियां सोवणियूं संजोग क्यूं सुवै ?
पृथ्वी पर सोने वाला तंगी क्यों सोवे ?

११४५ धरती परै सरक ज्याए, ठैका पांव धरेंगा ए ।
हे पृथ्वी ! कुछ खिसक जाओ शौकीन इधर बढ़ना चाहते हैं । अधिक छैल-छबीले इस प्रकार आकाश में चलते हैं मानों पृथ्वी पर पैर ही नहीं रखते ।

११४६ धरम की जड़ सदा हरी ।
धर्म की जड़ सदा हरी रहती है ।

११४७ धरम को धरम करम को करम ।
जब स्वार्थ-परमार्थ दोनों सिद्ध हों ।

११४८ धान पुराणा घृत नया, त्यूं कुलवन्ती नार ।
चौथी पीठ तुरंग की सुरग निसाणी च्यार ॥
पुराना धान नया घी कुलवंती स्त्री घोड़े की पीठ ये चार स्वर्ग के चिन्ह हैं ।

११४९ धानी धन की भूखी क साला की ?
धानी (किसी स्त्री का नाम) धन की भूखी नहीं स्पर्धा (होड़) की भूखी है ।

११५० धाया तेरी छा राबड़ी तेरै पंजरड़ां ने तो बड़ाए ।
कोई किसी के यहां छाछ मांगने गया । वहां छाछ तो नहीं पड़ी थी कुत्ते और भौंकने लगे । इस पर उसकी उक्ति है रहने दे तेरी छाछ इन कुत्तों से तो मुझे बचा ।
किसी के पास सहायतार्थ जाय और उसी को लगकर विपत्ति बढ़ने की आशंका हो उस प्रसंग की उक्ति ।

गयो जाट गाडी रो बार* काई ।
गया जाट कुछ-न-कुछ काम करता ही है यदि काम न हो तो गाड़ी का नाप ही काढ़ता है ।

---

*बार—आई चर्म रज्जु

मि॰ ठाली न बैठ कुछ किया कर, यदि न हो कुछ काम तो जामा उधेड़ कर सिया कर।

२१५२ जाणे आभूं टेटी हाथां पग करै।

टेटी एक जानवर-विशेष होता है जो रात्रि में ऊपर की ओर पैर करके सोता है इस डर से कि कहीं आकाश न टूट पड़े मानो आसमान की रक्षा का भार उसी पर है।

गरीब आदमी यदि सहसा अधिक सम्पन्न हो जाय तो वह किसी को नहीं गिनता।

२१५३ ज्वानो मीर, बूढो फकीर, मर्‌यां पाछै पीर।

मुसलमान के लिए कहा गया है कि वह तरुण हो तो अमीर कहलाता है बूढ़ा हो तो फकीर कहलाता है, मरने पर पीर कहलाता है।

२१५४ ज्वानो राजपूत धन हरै बूढो तजै पिराण।

तरुण राजपूत धन हरण करता है और बूढ़ा प्राण देता है।

२१५५ दूधोड़ी कै साथै ठोणोड़ी मर ज्याय।

दुधारी गाय के साथ बिना दूधवाली को कोई नहीं पूछता।

२१५६ दूधूं भैंस को, हो भावे सेर ही।

दुग्ध आदि के लिए तो भैंस ही रखनी चाहिए, चाहे वह सेर दूध ही क्यों न दे।

२१५७ धीरे धीरे ठाकरां, धीरे सब कुछ होय

माली सींचै सौ घड़ा, रुत आयां फल होय।*

हे ठाकुर! धीरे-धीरे सब कुछ होता है। माली चाहे सौ घड़ों से सींचे, किन्तु ऋतु आने पर ही फल लगेंगे।

२१५८ धूल फाक्यां किसो पेट भरै ?

धूल फाँकने से पेट नहीं भरता।

२१५९ धूल धाणी, राख छाणी।

जिस जगह सब कुछ निरर्थक हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है

२१६० धेला की म्यूजरा, धान कै धान जावै।

राजस्थान में विवाहादि के अवसर पर मित्रवर्ग व सम्बन्धी कर्ण

*मि॰ शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वत लंघनम्।

शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः॥

तरफ से लड़की या वर के पिता को दस्तूर के रूप में कुछ नगद सहायता दी जाती है जिसे न्यूता बासना कहते हैं। जो सहायता देने वाले हैं उनके पास देने को तो कुछ है नहीं किन्तु अपने आप को इस प्रकार दिखाते हैं मानों वे ही सर्वेसर्वा हों।

११६१ धोबे की हांडी फूटी पंडत को बात सिखावी।

मि० डम्बे की हांडी फूटी पंडत को बात सिखाणी।

(स्पष्ट)

११६२ धोबी के सब उघाड़ा है।

घाणी के भीतर सब नंगे हैं अर्थात् दोष सभी में होते हैं।

११६३ धोवन से के देवन घाट, डंक मोगरी अंटे लाठ।

जहां दोनों ही बुरे हों कोई किसी से कम न हो वहां इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

११६४ धोबी की हांने धपी जाय।

धोबी का धन धोबी जाता है।

११६५ धोबी के घर में बड़या चोर, दूख्या और ई और।

धोबी के घर में चोरी होती है तो दूसरों का ही हानि उठानी पड़ती है।

११६६ धोबी के बसो चाहे कुम्हार के धपी ती लदसी।

गधा चाहे धोबी के हो या कुम्हार के उस तो लदना पड़ेगा। मजदूर को मजदूरी करनी ही होती है।

११६७ धोबी को गधो घर को न घाट को।

धोबी का गधा न घर का रहता है न घाट का।

११६८ धोबी को गधो स्वामी की गाय

राजा को नौकर, तीनूं धन्धा तें जाय।

धोबी का गधा साधु की गाय और राजा का नौकर, फिर दूसरे काम का नहीं रहते।

धोबी के गधे को सिर्फ कपड़ों का ही भार उठाना पड़ता है साधु की गाय को भिक्षा में प्राप्त रोटी आदि खाने को मिलती रहती है और राजा का नौकर दूसरों पर रौब गांठने का आदी हो जाता है।

११६९ धोबी बेटा चाम-सा, धोती न पहरा।

धोबी का लड़का दूसरों के कपड़े पहन कर बना-ठना फिरता है।

११७० धोबी घर दाम लावे।

सफेद वस्त्र पर ही धब्बा लगता है।

पहले से ही जो कलंकित है उस पर यदि एक कलंक और लग जाय तो उसे इस बात की तनिक भी परवाह नहीं रहती किन्तु यदि किसी प्रतिष्ठित मनुष्य पर कलंक लग जाय तो उसका मरण हो जाता है।

मि० संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। (गीता)

न

२१७१ नंदी परलो रूंखड़ो—जद कद होय विणास।

नदी-तट पर स्थित वृक्ष चाहे जब नष्ट हो जाता है।

२१७२ नई नो दिन पुराणी सौ दिन।

वस्तु नई तो थोड़े ही दिन रहती है अन्त में तो वह पुरानी होकर ही रहती है।

२१७३ नकटा देव भूण्डा पुजारा।

जैसे देव वैसे ही पुजारी।

२१७४ नकटा, नाक कटी कहै मेरी तो सवा गज बधी।

निर्लज्ज को लज्जा नहीं आती।

२१७५ नकटी-बूची को बोदो खसम।

(स्पष्ट)

२१७६ न कोई की राई में न कोई की दुहाई में।

वह अपने काम से काम रखता है।

२१७७ नखरो नायण को अकलाबलो ब्यामण को।

नखरा तो नाइन का ही अच्छा होता है क्योंकि घर-घर घूमने के कारण वह चतुर हो जाती है और बातचीत सभी की अच्छी है।

२१७८ नगद नाणा बींद परणे काणा।

यदि पास में नगद रुपये हों तो काने बुड्ढे का भी आसानी से विवाह हो जाता है। धन से क्या सिद्ध नहीं होता?

२१७९ नगारां में तूती की आवाज कूण सुणै?

नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है?

जहाँ बड़े आदमियों की चलती है वहाँ छोटों को कौन पूछता है?

२१८० नट विद्या आ ज्याय पण जट-विद्या कोनी आवै।

नट विद्या आ जाती है लेकिन जाट की विद्या नहीं आती।

२१८१ नजर को मारयोड़ो नर लगाकर रोई,

पाछै फिर कर देखयो तो सभी न कोई ।
नगद का मलाई कुछ नहीं लगता। देखने में तो यह सम्बन्ध-सा लगता है किन्तु वास्तव में कुछ नहीं।

११८२ नव कोई नगद न दीनी ।
यदि नव लो जाय तो यह समझ लिया कि नगद को देदी ।

११८३ नदी किनार बैठ की क्यूं न हाथ पखाले ?
नदी के किनारे बैठ कर हाथ क्यों नहीं धो लेते ?
किसी कृपण के प्रति उक्ति है हे कृपण ! अगर तुम्हारे पास धन है तो दान क्यों नहीं करते ?

११८४ न नौ मन तेल होय न राधा नाचे ।
जब कोई मनुष्य ऐसी बात पर काम करने के लिए कहे जो असम्भव हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

११८५ न भेदे काकड़ो तो क्यूं ढेरै हाली लाकड़ो ?
हे किसान ! अगर कर्क-संक्रान्ति के दिन वर्षा न हो तो तुम क्यों व्यर्थ में हल जोतते हो ? कर्क-संक्रान्ति के दिन वर्षा न होने से दुर्भिक्ष पड़ता है।

११८६ नवो जोबन काठ की मूठ ।
(स्पष्ट है)

११८७ नवो बलद मूंठो तोड़ै ।
नया बैल जूआ तोड़ता है।
नया आदमी शुरू में भूलें करता है।

११८८ नर मानरे, घोड़ो बापेरे ।
आकृति प्रकृति में पुरुष मातृकुल का अनुकरण करता है और घोड़ा पितृकुल का। मि० मा पर पूत पिता पर घोड़ा लोक-भेद या बतलाता।

११८९ नर में नाई जाणसो पंखेरू में काग,
पाणी मांलो काछवो तीनूं दगाबाज ।
मनुष्यों में नाई चालाक होता है पक्षियों में कौआ और जलचरों में कछुआ ये तीनों दगाबाज होते हैं।
मि० नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः ।

११९० नवरा में नवरो मारै कै मारै करतार ।
जबरदस्त को या तो जबरदस्त ही मार सकता है या ईश्वर।

११९१ नवे चन्द्रमा नै तो राम-राम करे।
द्वितीया के चन्द्रमा को सब नमस्कार करते हैं क्योंकि वह अभ्युदय का द्योतक है।

"प्रणमत्यनपायमुत्थितं प्रतिपच्चन्द्रमिव प्रजा नृपम्।"
(किरातार्जुनीयम्, द्वितीय सर्ग)

११९२ जस्या देव जी जस्या पूजा।
जब कोई दुष्ट समझाने-बुझाने से भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तब उसको ठोकने-पीटने से ही काम चलता है।

११९३ नसीब की खोटी, प्याज और रोटी।
भाग्य अच्छा न हो तो प्याज और रोटी खाने को मिलते हैं।

११९४ नांव गंगाधर, न्हावै कोनी उमर में।
नाम तो है गंगाधर किन्तु उम्र में कभी स्नान ही नहीं करता।

११९५ नांव तो बंसीधर, बावै कोनी अलगोजो बजाणूं ही।
नाम तो है बंसीधर, किन्तु अलगोजा बजाना ही नहीं जानता।

११९६ नांव चावली, फिरै टुकड़ा मांगती।
नाम तो है चावली (तृप्ता) किन्तु रोटियों के टुकड़े मांगती फिरती है।

११९७ नांव मोटा घर में टोटा।
नाम बड़ा है किन्तु घर में तंगी है।

११९८ नांव रावै गीतड़ां के भींतड़ां।
मनुष्य का नाम चिरस्थायी रहता है या तो काव्य-निर्माण से या भवन बनाने से।

११९९ नांव लिछमीधर, कनै कोनी छिदाम ही।
नाम तो है लक्ष्मीधर, पास में एक छदाम तक नहीं।

१२०० नांव सिंघां हिरण खोड़ा होय।
उसके प्रताप का आतंक छाया हुआ है उसका नाम लेने से ही हरिण लंगड़े हो जाते हैं।

१२०१ नांव लेवा न पाणी देवा।
उसके पीछे न उसका नाम लेने वाला है न कोई पानी देने वाला है।

१२ २ नांव विद्याधर, आवै कोनी कक्को ही।
नाम तो है विद्याधर किन्तु ककहरा भी नहीं जानता।

१२०३ नांव शीतलदास, दुर्वासा-सो तातो।

नाम तो है शीतलदास और है दुर्वासा-सा क्रोधी ।

१२०४ नांव हजारीलाल घाटो ग्यारा सै को ।
नाम तो है हजारीलाल और घाटा है ११०० का ।

१२०५ नाई की परख मूंछां में है ।
मालूम काटने में ही नाई की चतुराई की परीक्षा होती है ।

१२०६ नाई दाई बैद कसाई इण को सूतक कद न जाई ।
नाई, दाई, वैद्य और कसाई, ये सदा अशुद्ध समझे जाते हैं इनका सूतक कभी नहीं जाता ।

१२०७ नाई नाई बाल कित्ताक ? कह जजमान ! मूंडै आगा आ ज्याय है ।
हे नाई ! मेरे सिर पर कितने बाल हैं ? उत्तर, अभी सामने आ जाते हैं ।

१२०८ नाई बामण कुत्तो जात देख हू हू करतो ।
नाई, ब्राह्मण और कुत्ता ये तीनों अपनी जाति वालों को देख कर हू-हू करते हैं ।

१२०९ नाई हालो ठोलो बाणिया हालो टक्को ।
एक नाई किसी बनिये के यहां हजामत बनाने गया । जब वह हजामत बना चुका तो उसने बनिये की टाट को एक बार अपनी अंगुलि की ग्रन्थि से बजाया । यद्यपि इससे बनिया मन ही-मन रुष्ट तो बहुत हुआ तथापि उसने नाई को उसकी करतूत का फल चखाने के उद्देश्य से कृत्रिम हर्ष प्रकट किया और उसे एक टका भेंट कर दिया । वही नाई एक दिन किसी ठाकुर के यहां हजामत बनाने गया । बनिये से पुरस्कार मिल जाने के कारण उसे तो हजामत के बाद टाट बजाने का चस्का पड़ गया था । इस लिए पुरस्कार के लिए लालायित होकर ठाकुर के सिर पर भी उसने अंगुलि की ग्रन्थि को बजाया । ठाकुर ने इसे अपना अपमान समझा और तुरन्त ही तलवार हाथ में ले नाई का सिर धड़ से अलग कर दिया ।* इस प्रकार जब किसी को उसके कर्म की सजा दिलवाने के लिए कुछ प्रलोभन देकर कुमार्ग की ओर प्रवृत्त कर दिया जाता है तब उक्त "न्याय" का प्रयोग किया जाता है ।

१२१० ना कोई से दोसती, ना कोई स बैर ।

*मि० टोचर लाग्यो हजामनी, आप्यूं भलूं इनाम ।
सिर छेदाव्यूं हजाम नूं, थयो वणिकनो काम ॥

वह तटस्थ है न किसी से शत्रुता न किसी से मित्रता।

१२११ नागां का रामजी परो कर नेड़ा होयोड़ा करे है।

बदमाश ईश्वर से भी नहीं डरते। ईश्वरीय मर्यादा का उल्लंघन करते हुए भी उन्हें कुछ हिचकिचाहट नहीं होती।

मि० राज को सिर पर कै पेसी।

१२१२ नागाई की आस बुरी।

बदमाश से सब डरते हैं।

१२१३ नागा को लाय में के बळै ?

नंगे का आग में क्या जले ? अर्थात् जब नंगे के घर में आग लगती है तब उसके घर में वस्तादि न होने के कारण उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

मि० बांडिये बळी को लाय में के बळै ?

१२१४ नागी के धोवै अर के निचोवै ?

नंगी क्या धोवे और क्या निचोड़े ?

१२१५ नाम्यो बूढो से ले ऊंचो।

क० (क) नाम्यो राम हैं बड़ो।

(ख) नाम्यो राम से भी बुरो।

मि० बुरा करनी सो करे नाम्यो तत्काल कर दे।

१२१६ ना घर तेरा ना घर मेरा एक दिन होयसी जंगल डेरा।

क० ना घर तेरा ना घर मेरा (यहां तो) चिड़िया रैन बसेरा है।

१२१७ नाचण ई लागी जद घूंघट क्यां को ?

जब नाचना ही स्वीकार किया तब लज्जा कैसी ?

१२१८ नाचूं क्यां ? आंगणूं बांको।

मि० नाच न जाने आंगन टेढ़ा।

१२१९ नाजरजी बेल बधो। कै बस म्हां तांणी ही है।

किसी ने नपुंसक को आशीर्वाद दिया तुम्हारी वंश-वृद्धि हो।

उत्तर मिला वंश मुझ पर ही खतिमी है।

१२२ नाजुरतिये की लुगाई जगत की भोजाई।

सामर्थ्यहीन की स्त्री सारे संसार की भौजाई होती है।

१२२१ नाको नाथ बिना रह ज्याय काजळ-टीकी बिना कोनी रवै।

हिजड़ा नथ बिना रह जाता है किन्तु कज्जल-टीकी बिना नहीं रहता।

१२२२ नाड़ी टोवण वाळा चिकारण तू मत जाणै म्हारी साजण।

एक बार आषाढ़ में वर्षा होकर फिर बीस पच्चीस दिन तक जोरों की हवा चलती है जिससे खेती को बहुत नुकसान पहुँचता है। ऐसी हवा राजस्थान में "भाडली" नाम से प्रसिद्ध है।

किसी की झंझावात के प्रति उक्ति है।

१२२३ नादान की दोस्ती जीव का जंजाल।

नादान की दोस्ती प्राणों के लिए एक प्रकार का जंजाल है।

१२२४ नादीदी का सौ फेरा।

जिसके लिए किसी वस्तु का अभाव होता है उसका उस वस्तु के लिए अधिक चाव देखा जाता है।

१२२५ नादीदी के लोटो हुयो रातूं उठ-उठ पाणी पियो।

जिसके पास कभी लोटा नहीं था जो लोटे के लिए तरसती थी उसके पास जब लोटा हो गया तो उसने रात में कई बार उठ-उठ कर पानी पिया।

१२२६ नादीदी के हुई कटोरी पाणी पी-पी हुई पटोरी।

नादीदी को अगर इष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है तो उसका वह आवश्यकता से अधिक उपयोग करती है।

१२२७ नादीदी को खसम आयो दिन में दीवो जोयो।

जिस स्त्री का पति कभी उस समय भी नहीं देखा था जो पति के लिए तरसा करती थी उसका पति जब आ गया तो उसने दिन में दीपक जलाया।

१२२८ नाना मिनख नजीक, उमरावां आदर नहीं।
वो ठाकर नह ठीक, रण में पड़सी राजिया॥

जो राजा ओछे मनुष्यों का आदर करता है सरदारों का नहीं उस राजा को युद्ध में सब पता चल जायगा। उक्त पद राजिया को सम्बोधित करके कहा गया है।

१२२९ नानी खसम करै दूयती नै डंड।

नानी तो दूसरा पति करती है और दोहितियों को दण्ड मिलता है।

क० नानी खसम करै अर दोयती डंड भरै।

अपराध कोई करे और दण्ड किसी और को मिले।

और करे अपराध कोउ और पावे फलभोग।

(तुलसीदास)

१२३० नानी रांड कंवारी मरगी दोयती का सौ-सौ फेरा।

जो छीतर आदमी अपने बड़प्पन की शेखी बघारता है उस पर यह व्यंग्य कसा गया है ।

१२११ नार्वे सो गज फाड़ै कोस्या एक नव ।
दान आदि के सम्बन्ध में शेखी बघारना और देना-करना कुछ नहीं ।
क० नार्वे घणो फाड़ै थोड़ो । मि० लंबा हुक्म ओछी बीख ।

१२१२ नामी चोर मार्‌यो जाय नामी साहु कमा जाय । (स्पष्ट)
मि नामूद बाण्यो कमा जाय नामूद चोर मार्‌यो जाय ।

१२१३ नामां की जनेत में सब ई ठाकर ।
जहां अपने हाथ से कोई काम नहीं करना चाहता वहां इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
मि० हजाम की बरात में सभी ठाकोर ।

१२१४ नारनोल की भाय पटीकड़ो पावै ।
अपराध कोई करता है और दण्ड किसी और को मिलता है ।

१२१५ नारड़े का मूंडा कुण धोया है ?
सिंहों के मुंह किसने धोये हैं ?

१२१६ नारी को तो एक ही चोखो, सुरी का बारा ही के काम का ?
सिंहनी का तो एक ही बच्चा अच्छा सूकरी के बारह भी किस काम के ?
एक वीर पुत्र अनेक कायरों से अच्छा है ।

१२१७ नारी नर की खान ।*
नर रत्न भी नारी रूपी खान से ही उत्पन्न होते हैं ।

१२१८ नाहर नै रजपूत नै टैकारै री गाल ।
सिंह और राजपूत "तुकार" को ही गाली समझता है । अर्थात् इसमें वह अपना अपमान समझता है ।
क० रजपूत के टैकारे की गाल ।

१२१९ निकमो नाई पाटड़ा मूंडै ।
निकम्मा नाई बैठा बैठा बच्चों को मूंड़ता है ।

१२४० निकली होठां चढ़ी कोठां ।
बात मुंह से निकलते ही सब जगह फैल जाती है ।

१२४१ निकाशी के बखत घोड़ी नाचे के लिदणी ली आवे ।

*मि० मैं न नारियों सीपियों इनका मोल न तोल ।
ना जाने किस कोख में छिपा रत्न अनमोल ॥

वर के विवाहार्थ शुभ लग्न में अपने गाँव से निकलने को निकासी कहा जाता है। निकासी के समय जुलूस निकलता है जिसमें वर घोड़े पर चढ़ता है। निकासी के लिए कोई किसी के पास घोड़ा माँगने गया। उत्तर मिला कि थोड़ी देर घूम कर फिर आना। अवसर पर आवश्यक वस्तु न मिले तो वह फिर किस काम की?

१२४२ नीचो करयो चोखो देवण हाले आंधो।
जब किसी ने अपनी आँखें नीची कर लीं तब उसके लिए दलन आना अन्ध के तुल्य है।

१२४३ नीत नैड़ बरकत है।
ईमानदारी से ही धन की वृद्धि होती है।

१२४४ नीम तल सोगन खा ज्याय पीपल तल मर ज्याय।
पग-पग पर झूठ बोलने वाले के सम्बन्ध में यह उक्ति है।

१२४५ नीम न मीठो होय सींचो गुड़ घीव से
जिसका पड़्या सुभाव क जासी जीव सें।
घी और गुड़ से सींचने पर भी नीम मीठा नहीं हो सकता। स्वभाव भी प्राणों के साथ ही छूटता है।

१२४६ नेकी-बदी साथ जासी।
भलाई-बुराई ही मनुष्य के साथ जाती है।

१२४७ नैण में मिलेल पड़े सीख में मुजरो पड़ै।
नेत्र पल भर में ही मिलने वाला है और विदाई में केवल नमस्कार की देर है। जब कोई काम तुरत-फुरत होने वाला हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

१२४८ नेम निमाणा धम छिनाया।
नियम और धर्म नियमी और धर्मी के पास ही रहते हैं।

१२४९ नौकर राम ठोकर।
नौकर को ठोकरें खानी पड़ती हैं।

१२५० नौकर मालिक का हो क बैंगण का?
मालिक ने बैंगन की तरकारी खाई और उसे बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने नौकर के सामने कहा "बैंगन बहुत अच्छा है।" नौकर ने भी हाँ भरी— "सिर पर मुकुट धरा है।" रात को मालिक का पेट दुखा और सवेरे उसने नौकर से कहा— "बैंगन खराब होता है।" नौकर ने भी उत्तर दिया

वाक्-चातुर्य व्यक्त होता है। प्राय ग्रामीण चतुर होते हैं।

मि० बिना पढ्योड़ी बायणी पढ्यो—पढ़ायी चीज।

१२६९ पढ्यो तो है पण गुण्यो कोनी।

पढ़ा तो है पर पढ़ कर मनन नहीं किया।

१२७० पतली छाछ आशा से क्यूं खोवै ?

अनिश्चित लाभ के प्रलोभन में पड़ कर निश्चित लाभ को नहीं छोड़ना चाहिए। छोटी चीज को व्यर्थ नहीं खोना चाहिए। छोटी चीज है तो छोटे काम में आ जायगी नष्ट क्यों की जाय ?

मि० पतली छा छाटे सै खोई गयी।

१२७१ पर घर जाणी घूम क्यूं जावै पर जाणी किस जाय ?

पर-नारी प्रसंगवश के वेष से जाती है किन्तु अपनी पत्नी कहां जाय ?

१२७२ पर नारी पैनी छुरी तीन ठौर स खाय *

धन छीजै जोबन हरै पत पंचा में जाय।

पर नारी पैनी छुरी के समान है। वह तीन ओर से खाती है।

१ धन क्षीण होता है। २ यौवन का नाश करती है।

३ लोकापवाद होता है।

१२७३ परभाते मेह डंबरा सांझे सीळा वाव

डंक कहै हे भड्डली, काळा तणा सुभाव।

डंक भड्डली से कहता है कि यदि प्रातःकाल में बादल गाजे आ रहे हो और सायंकाल में ठण्डी हवा चले तो अकाल पड़ेगा।

१२७४ परभाते मेह डंबरा दोफारां तापन्त,

रातूं तारा निरमळा चेला करो गछंत।

यदि प्रातःकाल में बादल दीखें दोपहर को धूप तेज हो और रात्रि को निर्मल आकाश में तारे दिखाई दें तो हे शिष्य ! उस देश को छोड़कर अन्यत्र चलना चाहिए क्योंकि वहां अकाल पड़ेगा।

१२७५ परमात्मा बगसेवो है।

परमात्मा बहुत देने वाला है।

१२७६ परमारथ के काम में क्यों को पूछणूं ?

---

*६० पर नारी पैनी छुरी तीन ठौर सै खाय।

धन छीजै जोबन हरै, अन्त नरक लै जाय॥

परमार्थ के काम में क्या पूछना ? अर्थात् यह तो बिना पूछे ही करना चाहिए ।

१२७७ पराई आस सीवड़ी पहूचै मेल्यो भीच ।

परान्नभोजी की सारी स्वतन्त्रता मारी जाती है । वह अपने प्राणों का भी स्वामी नहीं रह जाता ।

१२७८ पराई थाली में घी घणूं दीसै ।

दूसरे की थाली में घी अधिक दिखलाई पड़ता है ।

१२७९ पराई पीर परदेस बराबर ।

पराई पीर की उपेक्षा की जाती है । परदेश के आदमी की यदि कोई चिन्ता करे तो पराये दुःख की करे ।

१२८० पराया पूत कमाई ओवाई पाले ।

पराये पुत्रों से कमाई की आशा करना व्यर्थ है ।

१२८१ परायी आस सदा निरास, आपकी आस भोग बिलास ।

जो दूसरे की आस तकता रहता है उसे निराश होना पड़ता है किन्तु जो सहायता आदि के लिए किसी की अपेक्षा नहीं रखता, किसी की बाट नहीं देखता, वह सदा आनन्द मनाता है ।

१२८२ पवन गिरी छूटै परवाई, अन्ने धका छला चढ़ आई ।
तरो नाग कर सरसाई, घर गिर छोलो हरा बणाई ।

यदि पूर्व से हवा चले और बिजली की चमक से बादल चढ़े तथा घास हरा होने लगे तो भूमि और पर्वत का वर्षा तृप्त करे ।

१२८३ पहलां आत्मा पूपरी, पाछै आत्मा प्रीत ।

जो पहले अपना पेट भर के दूसरे का काम करते हैं पहले अपना स्वार्थ सिद्ध करके परार्थ में प्रवृत्त होते हैं ।

१२८४ पहलां बाबाजी सूतरा घणा फेर दाढ मुंडासी ।

एक तो बाबाजी सुन्दर बहुत और फिर मूँछें मुंडा लिया ।

१२८५ पहलां लिख कर पाछै देय भूल पड़्यां कागद स लेय ।

जो पहले लिख कर पीछे किसी को रुपये उधार देता है उसके हिसाब में भूल नहीं होती ।

१२८६ पहली जद्दै जिको धणखाऊ कोनी बाजै ।

जो पहले यह देता है वह अधिक खाने वाला नहीं कहलाता चाहे फिर कितना ही क्यों न खावे ।

१२८७ पहली पड़वा गाजै तो दिन बहत्तर की गाजै ।
अगर आषाढ़ कृष्णा १ के दिन बहुत जोर से बादल गरजे तो ७२ दिन तक वर्षा नहीं होती ।
तु० पहली पड़वा गाजै दिन बहत्तरो गाजै ।

१२८८ पहली पेट पूजा फेर काम दूजा ।
पेट-पूजा सब से पहले है कोई भी दूसरा काम उसके बाद में आता है ।

१२८९ पहली रहतो यूं तो लगियो खातो क्यूं ?
पहले यदि तुम सतर्क रहते तो तुम्हें हानि क्यों होती ?

१२९० पहली रोहण जल हरे बीजी बहोतर जाय
तीजी रोहण तिण हरे चौथी समन्दर जाय ।
यदि पहली रोहिणी में वर्षा होवे तो अकाल पड़े दूसरी म ७२ दिन वर्षा न हो तीसरी में घास का अकाल पड़े और चौथी में मूसलाधार वर्षा हो ।

१२९१ पहलो सुख नीरोगी काया । दूजो सुख हो घर में माया ।
तीजो सुख पुत्र अधिकारी । चौथो सुख पतिव्रता नारी ।
पांचवों सुख राज में पासा । छठो सुख सुस्थाने वासा ।
सातवों सुख विद्या फलदाता । ए सातों सुख रच्या विधाता ।
पहला सुख है नीरोग शरीर, दूसरा सुख है घर में ऐश्वर्य का होना तीसरा सुख है अधिकारी पुत्र चौथा सुख है पतिव्रता स्त्री पांचवां सुख है राज्य में काम-काज छठा सुख है सुस्थान में निवास सातवां सुख है फलदायिनी विद्या । विधाता ने उक्त सातों सुखों की सृष्टि की है ।

१२९२ पांगळो अर परवत लांघै ।
है तो लंगड़ा और पर्वत पार करने का मनसूबा बांधता है ।

१२९३ पांगळी डाकण घरकां नै ही खाय ।
लंगड़ी डाकिन अपने घर वालों को ही खाती है क्योंकि वह चल नहीं सकती ।

१२९४ पांच आंगळियां पूंच्यो भारी ।
एकता में बल है ।

१२९५ पांच पंच कूड़ो पटवारी लुच्चा कैस पराई नारी ।
फिरतो फिरतो घातण करै, जका पाप सूं डीका मरै ।
पांच पंच झूठा पटवारी पराई स्त्री का अपहरण करने वाला तथा घूमता

फिरता पड़ोस करने वाले ये इतने पापी होते हैं कि इनके पाप से कीड़े भी मर जाते हैं।

१२९६ पांच पंच मिल कीजे काज, हारे जीते आवै न लाज।
पांच आदमी मिल कर काम करते हैं तो हार जीत में लज्जा की प्रतीति नहीं होती।
मि० न गणस्याग्रतो गच्छेत्, सिद्धे कार्ये सम फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्यात् मुखरस्तत्र हन्यते॥

१२९७ पांच सात की लाकड़ी एक जणे को भार।
सब काम में बंटा हो तो काम भारी नहीं जान पड़ता। यदि पांच-सात मिल कर काम को आपस में बांट लें तो उनके हिस्से में तो एक-एक लकड़ी आती है, यदि न बांटें तो एक के लिए वह भारस्वरूप हो जाता है।

१२९८ पांचूं आंगली एक सी कोनी होय।
पांचों अंगुलियां एकसार नहीं होतीं अर्थात् सब भाई समान नहीं होते।

१२९९ पांचूं भाई पांच ठौड़, मौके आयां एक ठौड़।
यों तो पांच भाई पांच स्थानों पर अलग अलग हैं किन्तु मृत्यु आदि के आकस्मिक अवसर पर एक हो जाते हैं।

१३०० पांत में दुभांत क्यों करी?
जो एक ही पंक्ति में बैठे हैं उनके साथ दूसरी तरह का बर्ताव नहीं किया जाना चाहिए।

१३०१ पांव उघाड़ा जावसी कोड़ीधज कंगाल।
धनी-गरीब सभी मरने के समय नंगे पैर जायेंगे।

१३०२ पांवरी कुत्तो पकवान की रखवाळी।
मिठाई आदि के पास पांवरी कुत्ता जाने नहीं देता।

१३०३ पांवरी कुत्ती पूंछ में कांगसियो।
कुत्ती के पांव का रोग होने पर शरीर के सब बाल उखड़ जाते हैं। अतः जब कुत्ती पर बाल ही नहीं तो कंघे का क्या काम?

१३०४ पांवरी सांड मारवाड़ री गाड़ी।
पांव वाली ऊंटनी रोग के कारण दुर्बल हो जाती है इसलिए वह बहुत दूर तक चलने में असमर्थ हो जाती है।

१३०५ पांवरी सांड पकवान की भूखी।
पांवरी ऊंटनी को मिठाई कौन खिलावे?

१३०६ पांवरी लांब चमाती खूंदी ।

पामायुक्त ऊंटनी की पीठ पर सुन्दर जीन शोभा नहीं देती ।

१३०७ पांवरी सांड कजामगजी को भाड़ो ।

ऊंटनी को पांव रोग हो रहा है और उसको लेकर लाहौर तक का भाड़ा निश्चित किया जा रहा है ।

१३०८ पापी हालो पहली करवै

जखम में पहले दर्द होता है ।

दोषी अपने दोष की बात सुनता है तो उसे चुभती है ।

मि० १ आठे मुहारा निष्पत्ति ।

२ चोर की दाढ़ी में तिनका ।

१३०९ पाळै को मर मरावै जाई को राम बेली ।

मनुष्य से अधिक काम लिया जाता है और दूसरे की लड़की के प्रति माता-पिता जैसी सहानुभूति नहीं दिखाई जाती । इसलिए इन दोनों का भगवान् ही मालिक है ।

१३१० पाणी तो निवाण में जाय ।

पानी ढालू जमीन की ओर ही जाता है ।

१३११ पाणी पीकर कै जात पूछणी ?

पानी पीकर फिर क्या जाति पूछना ?

१३१२ पाणी पीजै छाण सगपण कीजै जाण ।

पानी छान कर पीना चाहिए और विवाहादि सम्बन्ध अच्छी तरह देख भाल कर करना चाहिए ।

१३१३ पान पड़ंतो यूं कहै सुण तरवर वनराय

अबका बिछड़्या कब मिलां दूर पड़ांगा जाय ।

गिरता हुआ पत्ता कहता है कि हे तरुवर ! अब दूर जा पड़ूंगा पता नहीं बिछुड़ने पर फिर कब मिलना हो !

१३१४ पाणी पाला पातसा उत्तर सूं आवै ।

वर्षा पाला और बादशाह उत्तर दिशा से ही आया करते हैं ।

१३१५ पाप को पाण आयां बिना कोनी रैव ।

पाप अपना प्रभाव दिखलाये बिना नहीं रहता ।

१३१६ पाप को घड़ो भर भर फूटै ।

पाप का घड़ा फूटे बिना नहीं रहता । पाप अन्त में प्रकट हो ही जाता है ।

पाप का भंडाफोड़ हो ही जाता है।

मि० पाप को घड़ो फूट्यां बिना कोनी रैवै।

१११७ पापी कै मन में पाप बसै।

पापी के मन में पाप बसता है।

१११८ पापी को धन परलै जाय।

पापी का धन नष्ट हो जाता है।

मि० पापी को माल अकारथ जाय चोर मरै के चीर ले जाय।

१११९ पापी नाव डबोवै।

एक पापी अपने पाप की वजह से नाव को ले डूबता है।

मि० एक पापी नाव को ले डूबता मंझधार में।

११२० पाव चून चोबारे रसोई।

चून तो केवल पाव भर है और ऊपर के कमरे में रसोई।

सामान थोड़ा है और आडम्बर बहुत।

११२१ पाव बीगा धरती बी में अड़ाणी न्यारी।

सिर्फ पाव बीघा धरती है उसमें भी गोचर-भूमि अलग रखी है। फिर उपज क्या होगी खाक।

११२२ पिरवा पर पिछवा फिरै घर बैठी पणिहार भरै।

हवा जब परवा से पिछवा चलने लगती है तो बहुत जोरों की वर्षा होती है।

११२३ पिव बिन किसा तिंवार ?

प्रियतम के बिना त्योहार किस काम के ?

११२४ पिसारी कै तो चावल कोई लाभो।

पीसने वाली को चक्की पीसते समय जो कुछ चबाले वही उसके लिए लाभ है।

११२५ पीपल तलै हां भर भर कीकर तलै नट ज्याय।

पीपल के पेड़ के नीचे किसी बात के लिए 'हां' कह देना है और 'बबूल' के पेड़ के नीचे 'ना' कह देता है।

११२६ पीरयां की आस करै, जको भाईड़ां नै रोवै।

जहां से कुछ मिलने की आशा न हो वहां से आशा रखना व्यर्थ है।

११२७ पीरां त्याव खातली, घरां कहाड़ी जाय।

पीहर से खाली आती है और घर की कुल्हाड़ी ले देती है। जहां लाभ

धोखा और हानि अधिक होती है, वहाँ इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

११२८ पोसाँ की जोर है।

धन की महिमा है।

११२९ पीसै कनै पीसो आवै।

पैसे के पास पैसा आता है।

११३० पीसैसी जो तो पिसाई लेसी।

जो काम करेगी वह मजदूरी अवश्य लेगी।

११३१ पीसै हाळी को बेटो झुनझुणिए सै खेलै।

पैसे वाले का लड़का खिलौनों से खेलता है।

११३२ पीसो पास को हथियार हाथ को।

पास में हुआ पैसा और हाथ का हथियार ही समय पर काम देते हैं।

११३३ *पीसो रूखां कै कोनी लागै।*

पैसा पेड़ों के नहीं लगता।

धन कमाना सरल काम नहीं है।

११३४ पीसो माई पीसो बाप पीसे बिना बड़ो सन्ताप।

पैसा ही माता है पैसा ही पिता है पैसे बिना बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।

११३५ पीसो हाथ को मैल है।

पैसा हाथ का मैल है।

११३६ पुजारी की पागड़ी, ऊंटवाळ् की जोय।

बेजारा की मोचड़ी सदा पुराणी होय।

पुजारी की पगड़ी ऊंटवाले की स्त्री तथा मोची के जूते ये पड़े-पड़े पुराने हो जाते हैं। पुजारी नंगे सिर मंदिर में रह कर पूजा-पाठ करता रहता है इसलिए उसे पगड़ी बांधने का अवसर नहीं मिलता ऊंटवाला किराये पर बाहर जाता रहता है, इसलिए स्त्री के साथ उतना नहीं रहता। मोची गांठ-सेवन करता है इसलिए जूते पड़े पुराने रहते हैं।

११३७ पुराणी बहल अर चिमकणा नारा।

गाड़ी पुरानी होने के कारण जीर्ण हो रही है और बैल चौंकने वाले हैं यह बड़ा पार कैसे लगेगा?

११३८ पुन का काया मोती निपजै।

अवसर पर किया हुआ काम ही फलदायी होता है।

म० बखत का बाया मोती नीपजै ।

१३३९ पूछता नर पंडित ।

पूछते-पूछते मनुष्य पंडित हो जाता है ।

१३४० पूत का पग पालणै ही दीस्यावै ।

बाल्यावस्था में ही बालक के भविष्य की कल्पना कर ली जाती है ।

१३४१ पेट की लाय बुझती सी बुझै ।

पेट की ज्वाला एकदम शान्त नहीं होती ।
स्त्री का बच्चा मर जाय तो दुःख धीरे-धीरे शान्त होता है ।
मि० कालजा की लाय बुझती सी बुझै ।

१३४२ पेट में आगे ना है ।

जब पेट भर जाता है तो "ना" कहना ही पड़ता है ।

१३४३ पेट री दर्द नै माथो कै जाणै ?

पेट के दर्द का मस्तक को क्या पता ? अर्थात् दूसरे के दर्द को दूसरा नहीं जान सकता ।

१३४४ पेट फूटै तो गोडां नै भारी ।

पेट फूटता है तो घुटनों पर ही जोर पड़ता है अर्थात् अपना कपूत अपने को ही भारी होता है ।

१३४५ पेट पिरोत मूंह जजमान ।

पेट पुरोहित है और मुंह यजमान है ।

१३४६ पैरण नै घाघरो ई कोन्या नांव सिणगारी ।

पहनने के लिए लहंगा ही नहीं है और नाम है शृंगारिणी ।

१३४७ पोता मूं की राबड़ी, पोयता मूं की खीर ।
मीठी लागी राबड़ी खाटी लागी खीर ॥

पोते की बहू की 'राबड़ी' भी अच्छी लगती है और दोहिते के लड़के की खीर भी अच्छी नहीं लगती क्योंकि वंश पोते की बहू से चलता है ।

१३४८ पोथा में पोथा हुआ पंडित हुआ न कोय ।
ढाई अक्खर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ॥

केवल पोथे पढ़ कर कोई पंडित नहीं होता । जो प्रेम के ढाई अक्षर पढ़ लेता है वही पंडित है ।

१३४९ पोटी भाखर मूल बिन, रोहिड़ (बिन) आरामीज ।

श्रवण बिना सखुणियूं क्यूं बावै है बीज ?

हे किसान ! अगर पौष की अमावस्या के दिन मूल नक्षत्र न हो और वैशाख की अक्षयतृतीया को रोहिणी नक्षत्र न हो और श्रावणी पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र न हो तो खेत में क्यों व्यर्थ में बीज बोते हो ? क्योंकि अकाल पड़ेगा । फ

१३५० फूलको खेट सूं बालक पेट सूं ।

फूलकों की खेट में से फूलका कैसा निकले और पेट में से बालक कैसा निकले कुछ पता नहीं चलता अथवा खेट का फूलका अच्छा होता है और पेट का बालक ही लिहाज करता है ।

१३५१ फागण मर्द अर ब्याह लुगाई ।

फाल्गुन में होली के समय पुरुषों को उच्छृंखल और विवाह में स्त्रियों को उच्छृंखल देखा जाता है ।

१३५२ फागण में तो चौगणो जे बाजैगी बाल ।

फाल्गुन में यदि हवा चलने लगे तो चौगनी सर्दी पड़ती है ।

१३५३ फाटी घाघरो रेसम को नाड़ो ।

फटा हुआ लहँगा पहन रखा है और रेशम का नाड़ा डाल रखा है ।

१३५४ फाटे नै सीमै ना रूठै नै मनावै ना तो काम कय्यां चालै ?

फटे हुए को यदि सिलाया न जाय रूठे हुए को यदि मनाया न जाय तो काम कैसे चले ?

१३५५ फाड़्या कपड़ा मत देखो घर दिल्ली है ।

फटे हुए कपड़ों से ही इन्हें सीधे-सादे न समझना वैसे ये बड़े पहुँचे हुए हैं ।

१३५६ फाड़णियै नै सीमणियूं कोनी नावड़ै ।

यदि एक ओर सीने वाला कपड़ा सीता चला जाय और दूसरी ओर फाड़ने वाला कपड़े फाड़ता रहे तो सीने वाला आखिर कहाँ तक सिये ? जहाँ बेहद खर्च होता हो वहाँ कमाने वाला कहाँ तक कमाये ?

१३५७ फिरै सो चरै, बंध्यो भूखो मरै ।

घूमने वाला चरता है और बँधा हुआ भूखों मरता है अर्थात् जो परिश्रम करता है वह कमा खाता है और जो निकम्मा होकर घर में बैठ जाता है वह भूखों मरता है ।

१३५८ फूंकण लुगती जीव कोम्या निचली रहै ।

यह फूंक देने योग्य जीभ चुप नहीं रहती अंटसंट चाहे जो बक देती है

जिसका दुष्परिणाम भोगना पड़ता है।
क० बालक चोली चोर मिसरी चोली देवै।

११५९ फूटै लाडू में स को सीर।
जहाँ लड्डू फूटता है वहाँ सभी को कुछ न कुछ मिलता है।
क० लाडू फूटै जठे भोरो खिरै है।

११६० फूटग्या भाग फकीर का, भरी चिलम ढुल ज्याय।
भाग्य फूट जाय तो फकीर की भरी चिलम भी ढुल जाती है।

११६१ फूटयो घड़ो अवाज सं पिछाण्यू जाय।
फूटा घड़ा आवाज से पहचान लिया जाता है क्योंकि उसकी आवाज ही थोथी-थोथी होती है।

११६२ फूड़ (रांड) को फेरां ताईं उपलम।
भांवर फिरने तक फूहड़ की पसन्द रहती है अर्थात् वह भांवर फिरने के समय भांवर फिरने के लिए इन्कार कर सकती है।
फूहड़ ऐन मौके पर भी इन्कार कर देता है।

११६३ फूड़ के घर हुई फूंचाड़ी कुत्ता मिल चाल्या रेवाड़ी।
काले कुत्तै सोच्या सून करता तो भी जग सकसी कूण॥
फूहड़ के घर किवाड़ लग गये। इसलिए कुत्तों ने मिलकर रिवाड़ी जाने का निश्चय कर लिया क्योंकि घर के किवाड़ बन्द हो जाने पर अब वे अन्दर नहीं आ सकेंगे। इतने में काले कुत्ते ने शकुन देख कर कहा "हमें रिवाड़ी जाने का कष्ट नहीं उठाना चाहिए। फूहड़ के घर में किवाड़ तो अवश्य हो गये हैं किन्तु वह उनको बन्द करने का कष्ट कभी न उठायेगी। इसलिए हम पहले की तरह बिना किसी डर के अन्दर प्रवेश करते रहेंगे।

११६४ फूड़ की मैल फागण में उतरै।
फूहड़ की मैल फाल्गुन में उतरती है क्योंकि फाल्गुन में गर्मी के कारण जब वह परेशान हो जाती है तब स्नान करने के लिए विवश होती है।

११६५ फूड़ चालै नौ घर हालै।
फूहड़ जब बाहर जाती है तो नौ घर हिल जाते हैं। नौ घरों तक उसका फूहड़पन प्रकट होता है।

११६६ फूली फूलग्यो, मैंस का दिन भूलग्यो।
फूलो जब गर्व में आ गई अपने सामने किसी को गिनती ही नहीं। पिछले

दिन अब उसे याद नहीं रहे। धन हो जाने पर लोग गरीबी को भूल जाते हैं।

११६७ फेरां के बखत कन्या तिसाई।

भाँवर फिरने के समय कन्या प्यासी अर्थात् आवश्यक कार्य पहले कर लेना चाहिए, ऐन मौके पर नहीं।

११६८ फेरां के बखत दादी काम अर खाबा में पोती।

जब विवाह के वक्त काम करने का अवसर आता है तब दादी को करना पड़ता है और विवाह के उपलक्ष में जब खाने का अवसर आता है तब पोती तैयार रहती है।

११६९ फौज के अगाड़ी, घोड़े के पिछाड़ी।

फौज के अगाड़ी खतरा रहता है और घोड़े के पीछे खतरा रहता है।

११७० फोग आलो ही बळै, सासू सूधी ही लड़ै।

आर्द्र फोग भी जलता है और सास चाहे कितनी ही सीधी क्यों न हो फिर भी बहू को बुरा-भला कहती है।

११७१ फौज को आगो अर ब्याव को पाछो घणूं करड़ो होय है।

फौज में आगे लड़ने वाले को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और विवाह के पीछे कन्या के पिता को विवाह में काम करने वाले कर्मचारियों को रुपया-पैसा चुकाने में तथा उनको सन्तुष्ट करने में अधिक से अधिक व्यय करना पड़ता है।

ब

११७२ बंधी मारी लाख की खुल्ली बीखर ज्याय।

संयुक्त परिवार में रहने से प्रतिष्ठा बनी रहती है, भाइयों के अलग-अलग होने से इज्जत जाती रहती है।

११७३ बंधी मूठी लाख की खुल्ली मूठी राख की।

किसी के पास चाहे धन न हो किन्तु दूसरे यह समझते रहें कि वह धनी है तो प्रतिष्ठा बनी रहती है। भ्रम खुलने पर प्रतिष्ठा चली जाती है अथवा पैदा होते समय बच्चा अपने बहुमूल्य भविष्य को छिपाये हुए संसार में आता है और मृत्यु के समय खाली हाथ चला जाता है।

११७४ बकरी छोड्यो ढाक, ऊंट छोड्यो आक।

ढाक को छोड़ कर बकरी सब कुछ खा लेती है, इसी प्रकार आक को छोड़ कर ऊंट सब कुछ खा लेता है।

२१७५ बकरी दूध तो दे पण दे मींगणी करके।
आदत से लाचार होने की वजह से काम का मजा खोकर काम करने पर यह उक्ति कही जाती है।

२१७६ बकरी रोवै जीव नै कसाई रोवै मांस नै।
बकरी अपने जीव को रोती है कसाई अपने मांस को रोता है। बकरी सोचती है मर गई कसाई देखता है मांस थोड़ा ही मिला।

२१७७ बकरे की मा कद तांई खैर (कुशल) मनावै ?
बकरे की मा कब तक कुशल मनाये ? उसकी कभी न कभी बलि दे दी जायगी।
मि० सिंहं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजापुत्रं बलिं दद्यात् दैवो दुर्बलघातकः॥

२१७८ बखत चल्यो जाय पण बात रै ज्याय।
समय चला जाता है किन्तु बात रह जाती है।

२१७९ बखत नहीं जिणमें जको बाणियूं गंवार।
वह बनिया मूर्ख है जो मौके पर व्यापार नहीं करता।

२१८० बगल में सोटो नाम गरीबदास।
बगल में तो आप सोटा रखते हैं और नाम है गरीबदास।

२१८१ बटोड़ में सैं तो छाणा ई नीसरै।
कण्डों के ढेर में से तो कण्डे ही निकलते हैं। निम्न कुल में कुलीन उत्पन्न नहीं हो सकता।

२१८२ बडका जीता तो फौज भली हो ज्याती।
एक पुरुष ने कहा यद्यपि मैं कम कमाता हूँ किन्तु फिर भी खाने-पीने में यदि मुझे कुछ व्यय न करना पड़ता तो मेरे पास आज सम्पत्ति का ढेर लग जाता। इस पर दूसरे ने उत्तर दिया कि यदि तुम्हारे सब के सब पूर्वज अब तक जीवित रहते तो तुम्हारे यहाँ एक बड़ी से बड़ी सेना न तैयार हो जाती!
क० बडका जीता तो किती फौज कोनी भेली हो ज्याती!

२१८३ बड़े लोगां कै कान होय है आंख नहीं।
बड़े लोग सुनी हुई बात पर विश्वास कर लेते हैं क्योंकि वे स्वतः जांच पड़ताल नहीं कर पाते।

२१८४ बड़की बू का बड़का भाग छोटी बहुड़ी घणो सुहाग।

वर यदि छोटा हो और बहू बड़ी हो तो बहू के वृद्ध होने पर भी वह युवा ही रहेगा इसलिए वर की ओर से स्त्री को अपनी मृत्यु तक सौभाग्य प्राप्त होता रहेगा।

यह उक्ति राजस्थान के बाल-विवाह के प्रेमियों पर परिहास होती है।

११८५ बड़ां की बड़ी है बात।
बड़ों की बातें भी बड़ी ही होती हैं।

११८६ बड़ा घरां का बड़ा है बारणा।
बड़े घरों के बड़े ही द्वार होते हैं।

११८७ बड़ी बड़ी बात बगल में हाथ।
बातें बड़ी और पास में कुछ नहीं।

११८८ बड़ी रातां का बड़ा है तड़का।
बड़ी रातों के बड़े ही प्रातःकाल होते हैं।

११८९ बड़े भाव बोक, बड़ा लाडू खाऊं।
मनुष्य को अपने परिश्रम का ही फल मिलता है फिर भी वह अपनी आशाओं की पूर्ति के लिए हवाई किले बांधता रहता है।

११९० बड़े रूंखां का बड़ा डाला।
बड़े पेड़ों की बड़ी ही शाखाएं होती हैं।

११९१ बड़ो बड़कलो बाणियूं, कांसी और कसार।
ताता ही नै तोड़िये ठंडो करै बिकार।*
बड़ा बड़कला बनिया कांसी और कसार, ये ठंडे होने पर विकार करते हैं गरम ही तभी इनका उपयोग करना चाहिए।

११९२ बणिया लिखै पढ़ै करतार।
बनिया इस तरह की अपाठ्य लिपि में लिखता है कि उसे भगवान् ही पढ़ सके।

---

* मि बड़ो पकौड़ो बाणियूं, ताती लीजे तोड़ अर्थात् बड़ा-पकौड़ा गरम-गरम ही अच्छा लगता है। बनिया भी जब गरजी पर आया हुआ हो उकताया हुआ हो मजमान्ध हो आतुर हो किसी काम को करने की उसकी प्रबल इच्छा हो उस समय ही उससे स्वार्थ सिद्ध हो सकता है उस अवसर का लाभ उठाना चाहिए, अन्यथा वह कुछ निहाल करने वाला नहीं होता।

१३९३ बणी बणावै बाणियूं।
बनिया बनती हुई बात को बना लेता है।

१३९४ बदी भादूड़ी अष्टमी नहिं बादल, नहिं बीज।
हल फाड़ो ईंधन करो बैठा चाबो बीज॥
भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को यदि बादल और बिजली नहीं दिखलाई पड़े तो हे किसान! अपने हल को तोड़ कर उसका ईंधन की तरह उपयोग करो और बैठे-बैठे बीज चबाते रहो क्योंकि अकाल पड़ेगा।

१३९५ बदी को सिर नीचो।
बुराई करने वाले का सिर नीचा होता है। आखिर उसको लज्जित होना ही पड़ता है।

१३९६ बदी राम बर।
बुराई करने वाले का भगवान् से बैर होता है।

१३९७ बरसै भरणी छोड़ै परणी।
यदि भरणी नक्षत्र में वर्षा होवे तो पति अपनी स्त्री को छोड़ भागे अर्थात् अकाल पड़ने से विदेश जाना पड़े।

१३९८ बलद ब्यावै तो कोनी बूढा तो होय।
बैल प्रसव तो नहीं करते किन्तु बूढ़े तो होते ही हैं।

१३९९ बलदां खेती घोड़ां राज मरदां सुधरै पराया काज।
बैलों से खेती और घोड़ों से राज्य सम्भव है तथा मर्दों से ही पराया काम सुधरता है।
टि० बदलती हुई परिस्थितियों में यह उक्ति सर्वांशतः लागू नहीं होती।

१४०० बल बिना बुध बापड़ी।
बल के बिना बुद्धि बेचारी अकेली क्या कर सकती है?
शारीरिक बल तथा धन-बल के बिना अकेली बुद्धि क्या करे?

१४०१ बाऊं तीतर, बाऊं स्याल, बाऊं खर बोलै असराल।
बाऊं घू घू धमका कर (तो) लंका को राज बिभीखण करै॥
तीतर का बायीं बोलना, शृगाल का बायीं जाना, गधे का जोर से बायीं बोलना, उल्लू का बायीं बोलना ये शुभ लक्षण समझे जाते हैं। विभीषण को ये शकुन हुए थे इसलिए उसको लंका का राज्य मिला।

१४०२ बांका रहज्यो बालमा बांको आदर होय।
बांकी बन में लाकड़ी, काट न सकै कोय॥

हे प्रियतम ! बाँके रहना बाँकों का ही आदर होता है । वन में टेढ़ी लकड़ी को नहीं काटा जा सकता ।

मि॰ टेढ़ जानि शंका सब काहू वक्र चन्द्रमहि ग्रसै न राहू । (तुलसी)

१४०३ बाँझड़ी के जाणे जापे की पीड़ ?

बन्ध्या प्रसव-पीड़ा को क्या समझे ?

मि॰ १ न हि बन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसववेदनाम् ।

२ बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा (तुलसीदास)

१४०४ बाँझ ब्यावै तो कोनी पूछी तो होय ।

बाँझ प्रसव तो नहीं करती किन्तु बूढ़ी तो होती ही है ।

१४०५ बाँट कर खाणा अर सुरग में जाणा ।

जो बाँट कर खाता है वह स्वर्ग में जाता है ।

१४०६ बाँदी कैंका घोड़ा बगसे है ?

बाँदी कहाँ से घोड़े बख्शीश में दे दे ? घोड़ों का मालिक तो राजा है । बाँदी तो दासी मात्र है । वह घोड़े बख्शीश में नहीं दे सकती ।

१४०७ बाँदी दूसरां का पग धोवै पण आपका को धोणा वाळ ना ।

बाँदी दूसरों के पैर धो देती है किन्तु अपने पैर उससे नहीं धोये जाते ।

१४०८ बाँध्यो तो बळद ई को रैवै ना ।

बाँध कर तो बैल को भी नहीं रख सकते ।

किसी से जबरन काम नहीं लिया जा सकता ।

१४०९ बाडूं भलो न दाहिणो, स्याणो बरळ सुनार ।

मेड़िया बरळ और सुनार, ये दोनों न बाँये अच्छे और न दाहिने ।

१४१० बाँस चढ़ी नटणी कहै दुर्या न नटियो कोय ।

बाँस चढ़ी नटणी हुई जद तो नटणी होय ॥

बाँस पर चढ़ी हुई नटनी कह रही है कि किसी के पास दान देने की थोड़ी भी सामर्थ्य होने पर वह इन्कार न करे । दान न देने से 'न' कहने से मैं नटनी हुई । (संकेत भी है) मैं नटने से (नट का काम करने से) नटनी हुई अर्थात् पूर्वजन्म में दान न देने का फल मैं अब भोग रही हूँ । जो नटता है दान नहीं देता है उसे आगे के जन्म में नटनी का नाच नाचना पड़ता है । दान की महिमा गाई गई है ।

टि॰ इस उक्ति के सम्बन्ध में जो लोक-कथा है वह अत्यन्त प्रसिद्ध है ।

१४११ बाई का फूल बाई कै ई लागग्या ।
जिस कार्य से जो आमद हुई वह उसी कार्य के निमित्त खर्च गई ।

१४१२ बाईजी पेट में सं तो नीसर्या पण हांडी में सं कोनी नीसर्या ।
राजपूतों के यहाँ जब लड़की पैदा होती थी तब बहुत से निर्धन राजपूत पैदा होते ही उसको एक हंडिया में रख कर उसके मुंह को जोर से बन्द कर देते थे जिससे दम घुट जाने के कारण लड़की की मृत्यु हो जाती थी। उस हंडिया को जंगल में ले जाकर गाड़ देते थे। इस पर यह उक्ति है।

१४१३ बाई सोवणी तो घणी ई पण आंख में फूलो।
बाई सुन्दर तो बहुत है किन्तु आँख में फूला है।

१४१४ बागल के बागल पावणो एक डाळी कै लूंबी लूमग्या।
बागल (एक पक्षी विशेष जो वृक्ष की छोटी डालियों को पाँवों से पकड़ कर नीचे की ओर लटकता रहता है और मुंह द्वारा ही जो अपना मल विसर्जन करता है) के यहाँ मेहमान के रूप में आई हुई दूसरी बागल ने पूछा मैं कहाँ रहूँ? उत्तर मिला "मेरी तरह तू भी लटक जा।"

१४१५ बाछड़ो खूंटे कै पाण कूदै।
बछड़ा खूंटे के बल कूदता है।

१४१६ बाजरो तातियां, मोठ फळियां।
बाजरा धूप में बढ़ता है और मोठ फलियों में।

१४१७ बाजै अबला पण छ प्रबला।
अबला कहलाती है किन्तु स्त्री वास्तव में प्रबला है।

१४१८ बाजै डावर, खाय बराबर।
बच्चा तो नाम मात्र का है खाने में किसी से कम नहीं।

१४१९ बाजै पर ढाल आवै।
बाज पर ढाल आती है।

१४२० बाड़ कै सहारै दूब बधै।
कमजोर मनुष्य भी आश्रय पाकर बढ़ता है।

१४२१ बाड़ खेत नै खाय।*
बाड़ खेत की रक्षा के लिए लगाई जाती है किन्तु वही जब खेत को खाने लगे तो अनर्थ हो जायगा।

*पूरा पद—राजा रूठै पीत नै रोवै जिण विध बात।
बाड़ लगाई खेत नै बाड़ खेत नै खाय॥

मि० कस्यार्थ छत कि मूत्रारवको यत मलक: ?

१४२२ बाड़ में मूत्यां कठो बेर नीकळे ?

बाड़ में मूत्र विसर्जन करने से थोड़े ही प्रतिशोध लिया जा सकता है ?

१४२३ बाड़ में हाथ घालस्यै तो कांटो ही लागै ।

बाड़ में हाथ लगाने से तो कांटे ही चुभते हैं अर्थात् दुष्ट के संसर्ग से कष्ट ही सहना पड़ता है ।

१४२४ बाणिया की नाट बुरी कातिक की छांट बुरी ।

बनिया एक बार इन्कार कर देने पर फिर नहीं देता इसलिए उसका "नहीं कहना" बुरा है । कार्तिक की वर्षा काटी हुई फसल को हानिकारक होती है ।

मि काती को मेह कटक बराबर ।

१४२५ बाणियूं के तो काळ में दे के काट में दे ।

बनिया या तो मुश्किल का कोई अवसर आने पर देता है या बीमार होने पर धार्मिक कार्यों में व्यय करता है ।

१४२६ बाणिये को बेटो के मांस के सुवाद की के बेरी ?

बनिये का लड़का मांस के स्वाद को क्या जाने ?

जिसका जिससे सम्बन्ध नहीं वह उस वस्तु के बारे में क्या जाने ?

१४२७ बाणियो काट में तो बामण ठाठ में ।

बनिया यदि बीमार होता है तो फिर ब्राह्मण के ठाठ हैं क्योंकि ऐसे मौके पर जप-तप आदि के लिए वह ब्राह्मण को नियुक्त करता है ।

१४२८ बाणियो ठाठ में तो बामण काट में ।

बनिया यदि ठाठ में रहता है तो धर्म-कर्म के प्रति वह उदासीन हो जाता है इसलिए यजमान के कारण बेचारा ब्राह्मण कष्टमय अपना जीवन व्यतीत करता है ।

१४२९ बाणियो मेवा को रूंख है ।

बनिया मेवे का वृक्ष है अर्थात् उससे सभी को कुछ न कुछ प्राप्त होता ही रहता है ।

१४३० बाण्यो लिखै, पढ़ै करतार ।

बनिया इस तरह के अक्षर लिखता है कि उन्हें खुदा ही समझे ।

१४३१ बात को बाकणूं अर संजोग को पीवणूं ।

संयोगवश काम होने पर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२४१२ बात में हुंकारो फौज में नगारो ।

बात में हुंकारा देने से आनन्द आता है फौज में नगाड़ा बजने से लड़ने वालों को जोश आता है जिससे वे दूने उत्साह के साथ युद्ध में प्रवृत्त होते हैं ।

२४१३ बातां रीझै बाणियूं गीतां सूं रजपूत ।
बामण रीझै लाडुवां बाकल रीझै भूत ॥

बनिया बातों से राजपूत गीतों से ब्राह्मण लड्डुओं से तथा भूत बाकलों से रीझता है ।

२४१४ बादल कर गर्मो करै जद बरसण की आस ।

आसमान में जब बादल छाकर सघन हो जाते हैं तभी बरसने की आशा बँधती है ।

२४१५ बादल की छाया सूं के दिन काम सरै ?

बादल की छाया से कितने दिन काम चल सकता है ?

२४१६ बाद तो रावण का ई कोनी बाल्या ।

किसी तरह का दुराग्रह करना किसी को शोभा नहीं देता । गर्व में चूर रहने वाले राक्षसराज रावण को भी अन्त में इस संसार से कूच कर जाना पड़ा ।

२४१७ बादल में दिन दीसै, फूड़ बतं न दीसै ।

बादलों में जब तक सूरज छिपा रहता है तब तक फूहड़ दिन चढ़ा नहीं समझती ।

२४१८ बाप बजोरै पीली जाय बेटां के बजत बाजी जाय ।

मुश्किल तो बड़े और बुजुर्ग पर, फूले-फूले बच्चे भुगते हैं ।

२४१९ बाप कै धन सौत को बेटी नै देसी रीत को ।

एक लड़की ने अपने पिता से कहा "आपके तो मुफ्त का माल आता है, फिर मुझे दहेज में इतना कम क्यों दिया जाता है ?" पिता ने उत्तर दिया "मेरे पास चाहे धन कैसे भी आवे लड़की को तो हिसाब का ही मिलेगा ।"

२४२० बाप को मार्‍यो मानै पुकारै पण मा को मार्‍यो कीनै पुकारै ?

पिता यदि पुत्र को पीटे तो पुत्र माँ के पास पुकार करता है किन्तु यदि माँ ही उसे पीटने लगे तो वह किसे पुकारे ?

२४२१ बाप बराया बाछड़ा माय पधाई धीन ।
के बापनी बापड़ी बेह घरी की रीत ॥

किसी लड़की के गर्व करने पर दूसरे की उक्ति है तुम्हारे बाप ने तो बछड़े चराये तुम्हारी माँ दूसरों से "चराई" (चराने का मूल्य) वसूल करती रही। ऐसे निकृष्ट कुल में उत्पन्न तुम कमीन घरों के रीति रिवाजों को क्या समझो !

१४४२ बाप न मारी लूंकड़ी बेटो तीरंदाज।
बाप ने तो लोमड़ी भी नहीं मारी और बेटा तीरंदाज बन बैठा। जो लम्बी-चौड़ी हाँकता है उस पर व्यंग्य कसा गया है।

१४४३ बापमुई कहो चाहे मामुई।
वह अनाथ है उसके न माँ है न बाप।

१४४४ बाबाजी की झोली में चोपड़ा ही नीकळ्या।
बाबाजी की झोली में मूंज के रस्से ही निकले।

१४४५ बाबाजी को बाबाजी तरकारी को तरकारी।
एक बाबाजी का नाम बैंगनदास था जिसे लेकर ऊपर की उक्ति कही गई है।

१४४६ बाबाजी, थारा ही चरणां को परसाद है।
एक बाबाजी एक बनिये की दुकान पर गये। बनिया था कंजूस। बाबाजी के प्रतिष्ठित स्वागत करना उचित था। बाबाजी ने अपने जूते सीढ़ियों पर रख दिये। बनिये ने अपने नौकर से बाबाजी के जूते बेच डालने का इशारा किया और उन पैसों से बाबाजी के लिए मिठाई मंगाली। बाबाजी ने कहा मिठाई तो बहुत अच्छी बनी। बनिये ने कहा "बाबाजी यह आपके चरणों का ही प्रसाद है।"

१४४७ बाबाजी धूणी क्यो द्यो ? कह माया काया जाण है।
बाबाजी ! धूनी तप रहे हैं ? उत्तर, "भैया मेरी काया ही जानती है।"

१४४८ बाबाजी बाछड़ा घेरो। कह बाछड़ा घेरता तो स्वामी क्यूं होता ?
किसी ने बाबाजी से बछड़े हाँकने के लिए कहा तो कहने लगे "यदि बछड़े हाँकते तो साधु क्यों बनते ?

१४४९ बाबाजी भजन कोन्या करो। बच्चा रोवण में ई कोन्या मारो।
बाबाजी ! आप भजन नहीं करते ? उत्तर बच्चे रोने से ही फुरसत नहीं मिलती।

१४५० बाबाजी में गुण होतो तो आवैस करणिया घणा।

बाबाजी में यदि गुण होंगे तो "आदेश" कहने वाले भक्तों की कमी न होगी।

१४५१ बाबाजी संख तो सुंधियो बजायो, बहू देव को ना देव के बाप को, टका नो काढ्या है।

बाबाजी! आज तो शंख सदा से अच्छा ही बजाया। उत्तर, शंख न देव का है न देव के बाप का है, नौ टके देकर मैंने खरीदा है, मैं जो चाहूँ सो करूँ।

१४५२ बाबाजी सरूप तो था ई, ऊपर स राख रमाली।

बाबाजी पहले ही बहुत सुन्दर थे, ऊपर से विभूति रमा ली।

१४५३ बाबो आयो चाये, चाहे छान फाड़ कर ही आवो।

बाबा आना चाहिए, चाहे छप्पर फाड़ कर ही आवे।

१४५४ बाबो आवै न ताळी बाजै।

किसी बाबा ने कहा, मैं आऊँ तब ताली बजा देना किन्तु न बाबा लौट कर आया, न ताली बजी।

अगस्त्य ऋषि की यह कथा भी अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसमें साष्टांग प्रणाम करते हुए अपने शिष्य विन्ध्याचल को अगस्त्य ने तब तक यहीं लेटे रहने के लिए कहा था जब तक वे दक्षिण से न लौट आवें किन्तु अगस्त्य फिर कभी लौटे ही नहीं।

निष्फल प्रतीक्षा के अर्थ में प्रयुक्त कहावत।

१४५५ बाबो गयो नौ दिन, नौ आया एक दिन।

बाबा नौ दिन के लिए कहीं दूसरी जगह गया। इसलिए घर में भोजन की बचत हुई किन्तु एक ही दिन नौ मेहमान एक साथ आ गये।

१४५६ बाबो गयो बीज नै, सिट्टा पाक्यां आयो।

बाबा बीज लाने के लिए गया था किन्तु जब सिट्टे पकने का भी समय आ गया तब लौटा। किसी को किसी काम के लिए भेजा जाय और वह बहुत देर करके वहाँ से आये तब इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

१४५७ बाबोजी का बालका कै पूजर कै मीड़।

बाबाजी के दासों में या तो पूजर है या मीड़।

१४५८ बाबो मरग्यो छोकरी जाई, रह्या तीन का तीन।

बाबा की मृत्यु हुई, उधर एक लड़की पैदा हुई, घर में तो वही तीन के तीन रहे।

२४५९ बाबो सै नै लड़ै, बाबा नै कुण लड़ै ?
बाबा सबको दोष देता है बाबा को दोष कौन दे ?
बड़े छोटों को दोष दे सकते हैं छोटे बड़ों को नहीं।

२४६० बाबो सोवै इं घर में टांग पसारै ऊं घर में।
बाबा सोता तो है इस घर में और टांग फैलाता है उस घर में।
उक्त कहावत उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो केवल अपने अकेले के लिए बहुत बड़ा स्थान रोकता है।

२४६१ बामण कढ़ बूडै बळद बढ़ बूडै।
ब्राह्मण कढ़ बाजता है बैल जमीन खोदता है।
मि० काम्यानां हि ब्राह्मणानां।

२४६२ बामण कुत्ता हाथी, कदे न जात का साथी।
ब्राह्मण कुत्ता और हाथी कभी अपनी जाति वालों का साथ नहीं देते।

२४६३ बामण कै हाथ में झोळो ही कचोळो है।
ब्राह्मण कभी भूखा नहीं रह सकता। किसी-न-किसी तरह मांग कर भी अपना निर्वाह कर लेता है।

२४६४ बामण तो हथळेवो जुड़ावण को धर्मी है।
ब्राह्मण का स्वार्थ तो केवल पाणिग्रहण करवाने तक है बाद में वर-वधू चाहे जीवित रहें या न रहें क्योंकि उसको दक्षिणा तो मिल ही जाती है।

• २४६५ बामण नाई कूकरो, जात देख घुर्राय।
कायथ कागो कूकड़ो, जात देख हरखाय॥
ब्राह्मण नाई, कुत्ता अपनी जाति वालों को देख कर घुर्राते हैं जब कि कायस्थ कौआ और मुर्गा अपनी जाति वालों को देख कर हर्षित होते हैं।

२४६६ बामण नै दी बूढ़ी गाय पुन हुयो न दाळद जाय।
ब्राह्मण को किसी ने बुड्ढी गाय दान में दे दी। उससे न तो देने वाले को पुण्य हुआ और न ब्राह्मण की दरिद्रता ही गई।

२४६७ बामण नै दे बूढ़ी गाय धर्म नहीं तो दाळद जाय।
ब्राह्मण को यदि बूढ़ी गाय दान देने में धर्म न होता हो तो भी ऐसा करके
२ दानी अपने दारिद्र्य से तो मुक्त होता ही है।
रू० बामण नै दे बूढ़ी गाय पुन हो घर को दाळद जाय।

ब्राह्मण को दूझती गाय दान में देने से धर्म भी हो और घर का दारिद्रय भी चला जाय ।

१४६८ बामण न साठ बरस ताईं तो बत आवै कोन्या पछै वा मर ।
ब्राह्मण को साठ वर्ष तक तो बुद्धि नहीं आती और फिर उसकी मृत्यु हो जाती है ।
मि० बामण का बेटा बावन वर्ष तक पोंगा ।

१४६९ बामण बचन परमाण ।
ब्राह्मण का वचन प्रामाणिक होता है ।

१४७० बामण बचन परमाण । सेघाजी की भौंकती गाय करके जाण ।
ब्राह्मण का वचन प्रामाणिक समझो । जाट और ब्राह्मण की प्रसिद्ध कथा की ओर संकेत है ।

१४७१ बामण रो जी लाडू में ।
ब्राह्मण मिष्टान्न-प्रिय होता है ।

१४७२ बामण सैं बामण मिल्यो पैलड़ा जलम का संस्कार ।
देण-लेण नैं कछु नहीं नमस्कार ही नमस्कार ।
पूर्वजन्म के संस्कारों से ब्राह्मण से ब्राह्मण की भेंट हो गई । दोनों के पास नमस्कार ही नमस्कार है लेने-देने के लिए कुछ नहीं !

१४७३ बामण हाथी चढ्यो भी मांगै ।
ब्राह्मण हाथी की सवारी भी कर ले तब भी मांगने की आदत को नहीं छोड़ता ।

१४७४ बामण हीर को गुर को न पीर को ।
बहीरा की वृत्ति वाला ब्राह्मण गुरु अथवा पीर किसी का नहीं होता ।

१४७५ बामणिये बतळायो सैंठे लाग्यो आयो ।
ब्राह्मण को किसी काम के लिए पूछने पर फिर वह कुछ प्राप्ति की आशा से पीछे हो लेता है ।

१४७६ बारठजी की पोळ हाथी हुई ।
एक चारण किसी ठाकुर के यहाँ आया जाया करते थे । वहाँ उनकी बड़ी आवभगत होती थी । चारण कई बार ठाकुर को कहा करते ठाकुर साहब कभी तो इस बंदे की झोंपड़ी भी पवित्र कीजिये । एक दिन घूमते घूमते ठाकुर चारण के यहाँ पहुँच गये । ठाकर ने पूछा "पोळी कहाँ बापू ?" चारण ने उत्तर दिया "इस मेरी दुष्ट जीभ के पोल जिससे यह भूल

हो गई कि उसने बिना सोचे-समझे सबको निमंत्रित कर दिया।

२४७७ बारलै गांव की छोरी लाडू बिना रोवै।

बाहर गांव की रहने वाली लड़की यह भी लड्डू खाने के लिए रुठ रही है मानो सदा ही उसे लड्डू खाने को मिलते हों।

२४७८ बारह बरस तांई केदी में रहग्यो घड़ी तांई चोखी ही गुजारसी।*

बारह बरस तक कैद में रहने के बाद अब मुक्त होने वाला है इसलिए घड़ी भर के लिए मिन्नत मांगना कहां तक उचित है!

*२४७९ बारा बरस सैं बांझ ब्याई पूत ब्याई पांगळो।

बारह वर्ष के बाद तो बन्ध्या के पुत्र उत्पन्न हुआ और वह भी पंगु!

*२४८० बारा बरस सैं बाबो बोल्यो बोल्यो "पड़ै अकाळ"।

बारह वर्ष के बाद बाबा ने अपना मौन भंग किया और कहा तो यह कि "अकाल पड़ेगा!"

२४८१ बालक देखै हीयो, बूढो देखै कीयो।

बालक तो हृदय देखता है प्रेम को पहचानता है और अवस्था में बड़ा मनुष्य किए हुए काम को देखता है। उसे काम चाहिये वह केवल भाव का भूखा नहीं।

२४८२ बालक राजा सेइये ढळती सेवे छांय।

बालक राजा का सेवन करना चाहिए क्योंकि उसके दीर्घ जीवन की आशा रहती है। ढलती हुई छाया का सेवन करना चाहिए क्योंकि वहां फिर धूप नहीं आती।

रू० बालो राजा सेइये ढळती लीजे छांह।

*२४८३ बाल खोस्यां मुरदा हळका कोनी होय।

मुर्दों के शरीर से बाल अलग कर देने पर वे हलके नहीं होते।

२४८४ बाल तोड़ू काम तोड़े।

वह स्वर्णाभूषण जला देने योग्य है जो कान तोड़ता है।

२४८५ बावळां का कसा गांव न्यारा होय है?

पागलों के कोई अलग गांव नहीं होते।

२४८६ बावळा मरग्या ओलाद छोडग्या।

---

* रू० बारा बरस तो काठ में रयो' र घड़ीक की तांई मन दुख्यो किंयो!

रू० बाबो बोल्यो कोनी, बोल्यो कोनी'र बोल्यो तो "मरसी बै बाळै।"

जो पागल थे मर गए और अपने पीछे सन्तान छोड़ गये ।

२४८७ बावळी 'र भूतां लागोड़ी ।
पगली तो पहले ही थी फिर भूत और पीछे लग गये !

२४८८ बावळो 'र भांग पीली ।
पागल पहले ही था अब भंग और पी ली !

२४८९ बावै सो लूणै ।
जो जैसा बोता है वैसा काटता है ।

२४९० बासी बचै न कुत्ता खाय ।
यह निश्चित है यहां भोजन बचता नहीं इसलिए बासी भोजन को कुत्ते खा जावें ऐसी नौबत आती ही नहीं ।

२४९१ बाही सो लावही करही सो भरही ।
जो कुछ बोया है वह काटेगा । जो करेगा वह भोगेगा ।

२४९२ बिरमा सो मोती ।
जो काम हो गया उसी में लाभ समझना चाहिए ।

२४९३ बिंदरावन में रहसी सो राधे गोविन्द कहसी ।
जो वृन्दावन में रहेगा वह 'राधे गोविन्द' कहेगा ।

२४९४ बिगड़ी तो चली बिगड़ी बाबाजी तो सिद्ध का सिद्ध ।
यदि भ्रष्ट हुई तो चेली भ्रष्ट हुई बाबाजी तो सिद्ध के सिद्ध रहे ।

२४९५ बिड़दायां बल आवै ।
प्रोत्साहनार्थ जब किसी की प्रशंसा की जाती है तो उस व्यक्ति में बल का संचार हो जाता है ।

२४९६ बिणज करसा बाणिया और करैला रीस ।
व्यापार तो बनिए करेंगे और लोग तो रीस करके अपना काम बिगाड़ लेते हैं ।

२४९७ बिणजी लाग्यो बाणियूं, चूंटी लागी गाय ।
आवड़ै तो आवड़ै नहिं तर मिळत पचाय ॥
व्यापार में फंसा हुआ बनिया दूसरों के खेतों में चरने वाली गाय अगर वापिस आये तो आये नहीं तो ये दोनों अपने काम में लग ही रहते हैं ।

२४९८ बिना थम्भा आकाश थम्यो है ।
आकाश को आधार-स्तम्भों की आवश्यकता नहीं ।

१४९९ बिना ताल तमूरो कोनी बाजे ।
बिना ताल के तम्बूरा नहीं बजता ।

१५०० बिना तेल दियो कोनी बले ।
बिना तेल के दीपक नहीं जल सकता ।

१५०१ बिन पकायोड़ो दाड़मो, पकायो-पकायो गोड़ ।
बिना पका हुआ दाड़िमा पके हुए गोड़ के बराबर होता है ।

१५०२ बिना पेंदे को लोटो चाहे जिने लुढ़ जाय ।
बिना पेंदे का लोटा चाहे जिधर लुढ़क जाता है ।
जिसका कोई निश्चित सिद्धान्त न हो ऐसे मनुष्य के सम्बन्ध में कही गई उक्ति ।

१५०३ बिना बलदां गाडी कोनी चालै ।
बिना बैलों के गाड़ी नहीं चलती ।
बिना साधन के कार्य सिद्ध नहीं होता ।

१५०४ बिना बाप को छोरो बिगड़ै बिना माय की छोरी ।
जिस लड़के का बाप न हो वह बिगड़ जाता है, और जिस लड़की के मा न हो वह लड़की बिगड़ जाती है ।

१५०५ बिना मन का पावणां थानें घी घालूं क तेल ?
कोई स्त्री मन ही मन किसी मेहमान के लिए कह रही है जो उसे अच्छा नहीं लगता "मैं तुम्हें घी खिलाऊँ या तेल ?

१५०६ बिना लिखे पावै नहीं बड़ी वस्त को भोग । *
बड़ी वस्तु का भोग बिना भाग्य में लिखे नहीं मिलता ।

१५०७ बिना लूण का दोनूं साग बिना पेच का बांधै पाग ।
बिना पेठ का बांधै राम, न साग न पाग न राम ।
(स्पष्ट है)

१५०८ बित भर की छोकरी, गज भर की जीभ ।
मि० छोटे मुंह बड़ी बात ।

---

* मि० १ सकल पदारथ हैं जगमांही । कर्महीन नर पावत नांही ।
(तुलसीदास)
२ कर्म लिख्या सोइ पावै जी ।
३ भूतल भोग पदारथ बहुता । करम हीन नर पावै नाहीं ।

१५०९ बिनीकण बिना सेव कुण बताव ?
बिनीलय के बिना सेव कौन बताये ?

१५१० बिरछां चढ़ किरकांट बिराजे स्याह सफेद लाल रंग साज।
बिजमत पवन सूरिया बाजे, घड़ी पलक मांहि मेह आवे ॥
यदि गिरगिट पेड़ पर बैठ कर काला सफेद और लाल रंग धारण करे और वायु उत्तर-पश्चिम से चले तो घड़ी दो घड़ी में मेह आयगा।

१५११ बिरड़िये को मारक कोनी।
कोई मारने वाला बिरड़िये (एक छोटा बिच्छू के बराबर जहरीला जन्तु) का इलाज नहीं कर सकता।

१५१२ बिलाई को मन मलाई में।
बिलाई का मन मलाई में रहता है।

१५१३ बिल्ली में क्यों मंगल पाली देख्या ना।
बिल्ली तो चूहों को मारती ही रहती है।
बुरे से कभी भला नहीं होता।

१५१४ बिल्ली बजारिया तो घणा ही करै पण गांव का कुत्ता करण दे जद ना।
बिल्ली बाजार में सैर करने की इच्छा तो बहुत रखती है किन्तु कुत्ते ऐसा नहीं करने देते।
कमजोर की प्रबल के आगे नहीं चलती।

१५१५ बीगड़्योड़ा टींगर कोनी सुधरै।
बिगड़े हुए बच्चे नहीं सुधर पाते।

१५१६ बीसें-बीसें भूत अर-बिसवें-बिसवें सांप।
बीसे बीसे की दूरी पर भूत रहते हैं और बिस्वे बिस्वे की दूरी पर सांप रहते हैं। राजस्थान के सम्बन्ध में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१५१७ बीजळी को मारयोड़ो चमका सैं डरै।
बिजली से आहत हुआ मनुष्य बिजली की चमक मात्र से ही डर जाता है।
मि० दूध का जला छाछ को फूंक-फूंक कर पीता है।

१५१८ बीत्या दिन नह बावड़ै मुवा न जीवै कोय।
बीते हुए दिन वापिस नहीं आते और मर जाने पर फिर कोई जीवित नहीं होता।

१५१९ बीन के मूंडे ही लाळ पड़ै जद जानी के करै ?

घर में ही यदि दम न हो तो बराती क्या करें ?
मुखिया को ही हिम्मत न हो तो दूसरे क्या करें ?

१५२० बींद तो आयो ई कोनी' र फेरां की त्यारी ।
वर तो आया ही नहीं और भांवर की तैयारी ।
प्रमुख व्यक्ति के आये बिना कार्य विशेष सिद्ध नहीं हो सकता ।

१५२१ बींद तो बडो बणूं । के और ना बडो होतो जाय है अब ही जल्दी करो ।
कहा जाता है कि एक बड़ी उम्र का दूल्हा विवाह करने के लिए गया । जब वह भांवर लेने बैठा तो कन्या की माता अपनी लड़की को लाने में कुछ आनाकानी करने लगी । देर होते देख कर वर-पक्ष वालों ने पूछा, "मामला क्या है ? विलम्ब क्यों हो रहा है ?" इस पर कन्या-पक्ष वालों ने उत्तर दिया "वर अधिक उम्र का है उससे कैसे विवाह करें ?" तुरन्त ही वर-पक्ष वालों में से किसी ने कहा "ज्यों-ज्यों देर कर रहे हो त्यों-त्यों वर और भी बड़ा होता जा रहा है ।" अब तो जल्दी करो ।

१५२२ बीन बजण सै रह गई, टूट गया सब तार ।
बीन बिचारी के करै, गया बजावणहार ॥
वीणा बजने से रह गई उसके सब तार टूट गये । जब बजाने वाला ही चला गया तो बेचारी वीणा क्या करे ?

१५२३ बीन बीनणी छोटा-मोटा, घर में कोनी थाली-लोटा ।
यद्यपि वर मिथुन है तथापि छोटे-बड़े सब दीनहीन हैं ।

१५२४ बीन बीनणी साजबाज , घर में कोनी नाज पाज ।
आडम्बर बहुत है किन्तु घर में उसके अनुरूप कुछ भी नहीं ।

१५२५ बींद मरो भावै बीनणी बामण की टक्को त्यार ।
वर-वधू चाहे जीवित रहें या न रहें ब्राह्मण को तो अपने नेग के पैसे मिल ही जाते हैं ।
क० बामण को टक्को मरै न जाय ।

१५२६ बुध वावणी, सुक्कर लावणी ।
बुधवार के दिन हल जोतना चाहिए और शुक्रवार के दिन फसल काटनी चाहिए ।

१५२७ बुढ़ापे की जाई आपकां नै घणी प्यारी लागै ।
बुढ़ापे की सन्तान माता-पिता को अत्यधिक प्यारी लगती है ।

१५२८ बुध दिन सिधा वाणही ।

आदमी पढ़ तो ले किन्तु यदि गांठ की अक्ल उसके पास न हो तो उसकी विद्या निकम्मी है। विद्या से तात्पर्य यहाँ केवल पुस्तकी विद्या से है।

१५०९ बुरी बुरी बामण के सिर।

बुरी-बुरी का उत्तरदायित्व ब्राह्मणों पर लगाया जाता है।

१५१० बूची बाकरी खोड़ियो गुवाल।

बिना कानों की बकरी और लंगड़ा ग्वाल दोनों का अच्छा मेल मिला।

१५११ बूढ़ां बरकत होय है।

बूढ़ों की सहायता से ही मनुष्य कार्य में सफलता प्राप्त करता है तथा सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

१५१२ बूढ़ा दिख्या न बालका तड़को दिख्यो न सांझ।
जण जण को मन राखतां, वेश्या रहगी बांझ॥

न वृद्ध देखा न बालक न यही देखा कि प्रातःकाल है या सायंकाल जन-जन का मन रखती हुई वेश्या बांझ रह गई।

१५१३ बूढ़ो बडेरो मर ज्याय जद ही सामर पूरी हो ज्याय।

वृद्ध की मृत्यु होने पर उसके स्थान की पूर्ति होनी ही है।

१५१४ बूढ़ली के घर में नाहर आ बड़्यो। (बूढ़ली के घर में चोर बड़्यो)

किसी सीधे-सादे मनुष्य के यहाँ अगर किसी दुष्ट का प्रवेश हो जाय तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

१५१५ बूढ़ली नै पापड़ बेलतां घोला दिन होग्या।

बुढ़िया को पापड़ बनाते हुए बहुत दिन हो गए।

किसी अनुभवी के सम्बन्ध में इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

१५१६ बूढ़ै बाप नै अर बूढ़ै बैल नै बाहतो बणो ही चोखो।

बूढ़े बाप और बूढ़े बैल से जितना काम ले लिया जाय उतना ही अच्छा।

१५१७ बूढ़ो हो चाहे ज्वान हत्या स्यूं काम।

एक राजा ने शर्त रखी "जो पहाड़ पर से कूद कर अपने प्राण दे देगा उसे एक हजार रुपये पुरस्कार मिलेगा।" एक मनुष्य ने प्रण स्वीकार कर ली। वह किसी वृद्ध को लेकर पहाड़ पर आया। राजा ने कहा "तुमने तो शर्त तो युवक हुई थी। इस वृद्ध को क्यों लाये? उत्तर में उसने कहा तुम्हें तो हत्या से काम है। जो पहाड़ से कूदेगा उसकी मृत्यु अवश्य होगी वह चाहे वृद्ध हो या जवान हो।"

१५३८ बूर का लाडू खाय सो भी पिस्तावै न खाय सो भी पिस्तावै ।
गेहूँ के चून में सिर्फ बूरा या चीनी मिला कर बिना घृत के जो लड्डू बनाये जाते हैं वे बूर के लड्डू कहलाते हैं । उनको खाने वाला भी पछताता है क्योंकि उनमें घृतादि के अभाव के कारण स्वाद नहीं होता । न खाने वाला इसलिए पछताता है कि न जाने वे कितने अधिक स्वादिष्ट हों । कहीं कहीं बुरादा भी इन लड्डुओं में मिला दिया जाता है ।

१५३९ बैई करसिया बैई साज काज करी सो करस्यो आज ।
वही सामान तैयार है कल की तरह काम में जुट जाओ ।

१५४० बेईमान का सीझ्या मैदान में चढै ।
(स्पष्ट है)

१५४१ बेटा जाया बाजन स्याणा, बेटा हुया स्याणा, ब्याहव हुया बिराणा ।
बहुत से पुत्र उत्पन्न होते हैं तो पहले तो घर में दरिद्रता आती है क्योंकि बच्चों के पालन-पोषण शिक्षा-दीक्षा आदि पर बहुत व्यय करना पड़ता है किन्तु जब लड़के सयाने होकर धनोपार्जन करने के योग्य हो जाते हैं तो दारिद्र्य उस घर से विदा हो जाता है ।

१५४२ बेटियां की मा राणी, भरै बुढापै पाणी ।
जब तक कन्याओं का विवाह नहीं होता तब तक घर का सब काम वे करती रहती हैं इसलिए माता रानी-सदृश हुकूमत चलाती रहती है । माता के वृद्धा होने पर जब लड़कियां तो ससुराल में रहती हैं, इसलिए माता को सब काम अपने हाथों करना पड़ता है ।

१५४३ बेटी अर बलद बूढी कोनी मैरयो ।
बेटी और बैल हमेशा बन्धन में रहते हैं ।

१५४४ बेटी जाम बसारी हारयो ।
बेटी पैदा करके जन्म व्यर्थ ही खोया ।

१५४५ बेटी रहै लाज सूं नहीं तो रहै न साखी बाप सूं ।
बेटी या तो स्वतः ही मर्यादा का पालन करती है, नहीं तो वह अपने पिता की बात भी नहीं मानती ।

१५४६ बेटी रूसै सासरै जावनै बेटो रूसै न्यारो होय नै ।
लड़की ससुराल जाने के लिए रूठती है और लड़का संयुक्त कुटुम्ब छोड़ कर अलग होने के लिए रूठता है ।

१५४७ बेड़ा किसिया ना तर्क, सीधा अंद बुलाय ।

भाग्य में लिखा हुआ नहीं टलता।

१५४८ बेमाता का वाल्योड़ा आंक टल कोन्या।

विधाता के लिखे हुए अंक नहीं टलते।

क० राई घटै न तिल बधै बेमाता का लेख (अंक)

१५४९ बै चिड़कली और देज भी गरड़ दे उड़ ज्याय।

यहाँ तुम्हारा वश नहीं चल सकता।

अन्तर्गत कथा कहा जाता है कि सांपों को नष्ट करने के लिए एक बार राजा जनमेजय ने यज्ञ किया। वासुकि सर्प अपनी रक्षा के लिए किसी शहर में चला गया और ब्राह्मण का रूप धारण करके रहने लगा। एक ब्राह्मणी से उसने विवाह भी कर लिया। ब्राह्मणी एक दिन पानी भर कर ला रही थी। जब वह अपने घर में प्रविष्ट हुई तो गरुड़ एक चिड़िया का रूप धारण करके उसके घड़े पर आ बैठा। घड़े पर बोझ पड़ने से ब्राह्मणी ने अपने पति को पुकारा और बोली "एक चिड़िया घड़े पर बैठी है जिससे मैं तो दबी जा रही हूँ। इसको किसी तरह उड़ाइये न। इस पर गरुड़ की शक्ति है वह चिड़िया और देवी जो इस प्रकार उड़ा देने स गरड़ शब्द करती हुई उड़ जायगी।"

१५५० बैठणियां में बैठणियूं, भाजतड़ां के आगे।

बैठने वालों में बैठने वाला और भगने वालों में सबसे आगे।

१५५१ बैठ्यो बाणियो अर उठती मालण सस्तो बेचै।

शुरू-शुरू में दुकान खोलने वाला बनिया और बेच कर घर जाने वाली मालिन सस्ता बेचती है।

बनिया पैठ जमाना चाहता है और मालिन बचे हुए सौदे को निपटाना चाहती है।

१५५२ बैठी सूती दूसणी घर में धाल्यो घोड़ो।

आराम से जीवन बिताता हुआ जब कोई मनुष्य अनावश्यक विपत्ति मोल ले लेता है तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

१५५३ बैद की किसी रांड को होय ना ?

वैद्य की क्या मृत्यु नहीं होती ? वैद्य की स्त्री क्या विधवा नहीं होती ?

१५५४ बैम की दारू कोनी।

वहम की कोई दवा नहीं।

क० रोग की तो दवा हो ज्या पण बैम की दवा कोनी।

१५५५ बैरागी रो काम कदे न आवै काम ।
बैरागी का पकड़ा कोई काम नहीं आता अर्थात् वह निकृष्ट होता है ।

१५५६ बैरी न्यूत बुलाइया अर भायां सूं रोस ।
आप कमाया कामड़ा, दई न दीजै दोस ॥
भाइयों से क्रोध करके शत्रुओं को निमंत्रित किया । करतूत तो सब अपनी ही हैं दैव को दोष देना व्यर्थ है ।
अब बैरी जो करेंगे वह सहनी ही पड़ेगी भाइयों का सहयोग नहीं मिलेगा ।

१५५७ बोई कुहाड़ी अर बोई बेंसो ।
जब कोई अपनी आदत नहीं छोड़ता तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१५५८ बोडी अर चूंगड़ा चावै ।
दन्तहीन स्त्री और चने चबाने के लिए लालायित ।

१५५९ बोड़ा घड़ा उघाड़ा पाणी नार सुलखणी कठै बखाणी ।
खाता चालै पीसती चालै पल्ला घीसती ।
हे पथिक ! जब इस स्त्री के घर में खंडित घड़ा है बिना ढका हुआ पानी है पीसती हुई जब यह दाने चबाती है और पल्ला घसीटते हुए चलती है तब तुमने इसे सुलक्षणी कैसे समझा ? ये सब लक्षण तो फूहड़ स्त्री के हैं ।

१५६० बोल कोई बाकड़ा बोलै ।
जो बकड़ा खोलने की सलाह देता है उसी को खोलने के लिए कहा जाता है ।

१५६१ बोळा रे बूझै बोळी में के रांध्यो है होळी नै ?
बधिर अपनी बधिरा स्त्री से पूछता है कि तुमने होली के दिन क्या पकाया है ? दोनों के बधिर होने के कारण यहाँ कौन किसकी सुनेगा ?

१५६२ बोल्या अर लाद्या ।
बोलते ही पता चल गया कि वह किस कोटि का है ।

१५६३ ब्या करणी काकै पीसहूं जो डांकै ओलहूं जो डांकै ओलहूं ।
जब एक दूसरे के पीछे अपने को छिपाने की चेष्टा करता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१५६४ ब्या बिगाड़ै दो जणा कै मूंजी कै मेह ।
बो पीसो खरचै नहीं, बो दड़ादड़ देह ॥

बिगाड़ दो से ही बिगड़ता है या तो कंजूस से या वर्षा से। कंजूस एक पैसा खर्च नहीं करता और वर्षा धड़ाधड़ प्रहार करके सब चौपट कर देती है।

१५६५ ब्याया नहीं तो जनेत तो गया हां।
हम विवाहित नहीं हैं तो क्या हुआ? बरात तो गए हैं।
हमने यह काम न किया तो क्या हुआ? दूसरों का करते तो देखा है।
मि० परण्या न थी पण जाने तो गया हूंला।

म

१५६६ मंगल अर मोल्यो खाय ई कोन्या।
है तो मलिन और किसी का छुआ हुआ खाते हो नहीं!

१५६७ भंडार हाळ कुत्ते कोन्सी हुई।
एक कुत्ता साधु के भंडार में घुस गया। बाबाजी का वहां धरा ही क्या था? शिष्य ने कहा बाबाजी भंडार में कुत्ता घुस गया। बाबाजी ने उत्तर दिया "कुत्ते को भंडार में ही बन्द कर दो। कुत्ता आया था खाने के लोभ में बन्द अलग हो गया।
जहां कोई कुछ प्राप्ति की आशा से जाय और उसे उलटा अनिष्ट सहना पड़े वहां इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

•१५६८ भगत जगत नैं ठगत।
नामधारी भगत संसार को ठगते हैं।

१५६९ भगतणरो जायो कै नै बाप कैवै ?
वेश्या का पुत्र किसे अपना पिता कहे ?
मि० गुवाड़ को जायो कै नै बाप कैवै ?

१५७० भगवान तो भावना का भूखा है।
भगवान तो भावना के भूखे हैं व्यर्थ के आडम्बर से क्या ?

१५७१ भगवान दे जणां छप्पर फाड़'र ई दे दे।
परमात्मा देना चाहे तो छप्पर फाड़ कर ही दे देता है। देने के लिए उसके भी भाग हैं।

१५७२ भगवानियूं इसो भोळो कोन्या जो भूखो मायां में जावैगो।
भगवानिया ऐसा बेवकूफ नहीं है जो भूखा ही मरने चला जायगा।
रू० भगवानियूं इसो भोळो कोन्या जो भूखो ही मौसी में जावसी।

१५७३ भटियारी घमोवण कठे सैं लगाव ?
भटियारिन कुत्तों में अपने घर का पालापन कहाँ से लगाय ? इसके

बेसते समय जो सुगन्ध चून साथ में लगाया जाता है, उसको पलोथन कहते हैं। जो रोटी बेचने का व्यापार करता है वह पलोथन क्यों लगाये जिससे स्वाद की अधिकता के कारण रोटी दुगुनी खाई जाय।

१५७४ भड़भूज्यां की छोरी अर केसर का तिलक।
चने भुनने वालों की लड़की के केसर के तिलक शोभा नहीं देते।

१५७५ भदरा बां घर लाक्सी बां घर रिध की सिद्ध।
भद्रा उनके घर जावेगी जहाँ ऋद्धि-सिद्धि का निवास है अर्थात् मुहूर्त और शकुन देखना धनवान के लिए है, गरीब के लिए नहीं।
रू० भदरा जाँडै लाक्सी जाँडै रिध र सिध।

१५७६ भला जाया ए बापड़ी के भाट अर के कापड़ी।
तुमने या तो भाटों को जन्म दिया या भेरी बजाने वालों को।

१५७७ भला भली प्रिथमी छे।
पृथ्वी पर एक से बढ़ कर एक महापुरुष है।

१५७८ भलै को बखत ई कोन्या।
भलाई का समय ही नहीं रह गया।

१५७९ भलो आदमी आपकी भलाई सूं डरै गाभो जाणै मेर सूं डरै।
भला आदमी अपनी भलाई से डरता है और गधा समझता है कि वह मुझ से डरता है।
मि० सरलो भरलो घर लै बड़ै गाभो जाणै मेरे सूं डरै।

१५८० भलो करतां बुरो हुवै है।
भलाई करते बुरा होता है क्योंकि जमाना ही ऐसा है।

१५८१ भलो कर भलो होयलो, लोटो कर नफो होयलो।
भला कर भला होगा सौदा कर, नफा होगा।

१५८२ भवानी का लेख को टलै ना।
भाग्य में लिखा होकर रहता है।

१५८३ भांखड़ी को कांटो को आगई तांई चोर।
भाखड़ी (एक छोटा गोखुरू पौधा) का काँटा अपने उद्गम स्थान तक ही शरीर के अन्दर घुस सकता है अर्थात् वह बहुत छोटा होता है। परिमित साधन वाला मनुष्य किसी का बड़ा अहित नहीं कर सकता।

१५८४ भाग भजन है सहज पण कहरी मुसकल होय।

मांग खाना तो सहज है किन्तु मरे की तरंगों को झेलना मुश्किल है।

१५८५ भीख मांगै भूखड़ा भुक्खो मांगै घी।
हाक मांगै कूतिया भूखी ही तो घी।

(स्पष्ट है)

१५८६ भाई के मन भाई आवी बिना बुलायै आवै भावी।
यदि भाई भाई को मन से चाहता है यदि परस्पर हार्दिक प्रेम है तो बिना बुलाये ही भाई भाई के पास चला जाता है।

१५८७ भाई को भाई बैरी है।
भाई का भाई बैरी होता है। उदाहरणार्थ रावण-विभीषण कौरव और पांडव।

१५८८ भाई नै भाई कोनी सुहावै।
भाई को भाई अच्छा नहीं लगता।

१५८९ भाई बड़ो न भय्यो, सबसे बड़ो रुपय्यो।
न भाई बड़ा है न भैया सबसे बड़ा रुपया है।

१५९० भाई बेटी तो ब्यावै ना पर कसर छोड़ै ना।
भाई अपने भाई की लड़की के साथ विवाह तो नहीं करता किन्तु शत्रु से भी बढ़कर अनिष्ट कर डालता है।
यह सामान्य भाइयों के सम्बन्ध में उक्ति है।

१५९१ भाई भूरा लेखा पूरा।
जब निमन्त्रण में भोज्य-द्रव्य ठीक पर्याप्त ही प्रस्तुत हो और भोजन कर लेने के बाद अवशिष्ट भी कुछ न बचा हो तथा निमन्त्रितों को असली स्थिति का पता भी न चले तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

१५९२ भाई री भीड़ भुजा सूं को जावै।
भाई की कमी भुजा से पूरी नहीं होती।

१५९३ भाग फाटी ओल टाटी, राम बैठो द्वार, बाटी।
घी फट गई झोंपड़ी का दरवाजा खास तौर भगवान बालकराम पाने को देख।

१५९४ भागां रा बलिया, रांधी खीर, होगर दलिया।
भाग्य की बलिहारी है पकाई थी खीर और हो गया दलिया।

१५९५ भाग्यां पाछै बागई की भी बरर दे है।
युद्ध में पीठ दिखाकर भागना कायर पुरुष का लक्षण है किन्तु एक

बार युद्ध से पीठ दिखाकर भी जो फिर युद्ध के लिए उन्मुख हो जाता है, वह भी शूर ही कहलाता है।

१५९६ भाठे सें भाठो भिड़ यां बीजळी चिमकै।
पत्थर से जब पत्थर भिड़ता है तब परस्पर संघर्ष के कारण बिजली-सी चमकती है।
या दुर्जनों की लड़ाई में नाश ही होता है।

१५९७ भाड़ै की मची घर-घर नची।
किराये की मची घर-घर नचती है।

१५९८ भाण के घर भाई, सासरै जंवाई।
बहिन के घर रहने वाले भाई और ससुराल में रहने वाले जामाता की प्रतिष्ठा नहीं होती। (स्पष्ट)

१५९९ भाण के भाई नेडक सासरै जुंवाई चंडक।

१६०० भाण आऊं आऊं करै ही बीरो लेण न ही आयगी।
बहिन 'आऊं आऊं' कर रही थी भाई लेने के लिए ही आ गया।
मि... अंधे सीं' र दिखाई आवणी।

१६०१ भाण राख अबूंची, करार नहीं कर सूंगी।
हे बहिन! उचित अथवा करूंगी अनुचित नहीं।

१६०२ भादवै की धन बली भली घटा बरसन्त।
भाद्र मास की ऋतु अच्छी है बरसती हुई घटा भली है।

१६०३ भादरवे जम रेलसी जब अनुराधा होय।
डंक कहै है भड़ली करो न चिंता कोय॥
भाद्र में जब जमह वर्षा होती है। यदि भादों बदी ६ को अनुराधा नक्षत्र हो तब डंक भड़ली से कहता है कि सोच मत करो।

१६०४ भादू की छा मूती मैं कातिक की छा पूती मैं।
भाद्र के महीने की छाछ मूतों को दो अर्थात् वह हानिकारक है और कार्तिक की छाछ पूतों को दो क्योंकि वह हितकर है।
व० स्यार्ळ की छा पूती मैं। चौमासे की मूती मैं (कहते हैं)

१६०५ भाव को भाई के करै?
भाव में भाई क्या करे? व्यवहार तो व्यवहार ही रहेगा।

१६०६ भाव राखै सो भाई।
जो मातृ-भाव रखे वही भाई है।

१५०७ भींत जैसा मांडणा अर पोत जैसा रंग।
जैसी दीवार होती है उसके अनुरूप ही चित्रकारी होती है कपड़े का जैसा पोत होता है उसके अनुसार ही उस पर रंग चढ़ता है।

१५०८ भींत जैसा मांडणा आप ही आप आ ज्यावै।
जैसी दीवार होती है उसके अनुरूप मंडन अपने आप हो जाता है।

१५०९ भींतड़ा नाम कि गीतड़ा नाम।
नाम या तो भवन-निर्माण से होता है या काव्य-निर्माण से।

१५१० भींत नै खोवै आळा घर नै खोवै साळो।
आला दीवार को नुकसान पहुँचाने वाला है साला यदि घर में रहने लग जाय तो घर को बरबाद कर देता है क्योंकि उसकी बहिन उसको लूट देती रहती है।

१५११ भीख स भंडार कोनी भरै।
भिक्षा से भंडार नहीं भरता।

१५१२ भीज्या काग हुआ असनान।
हम काग तक जल से भीगे और हमारा स्नान हुआ।

१५१३ भुवां मिस लिये अर भतीजी मिस दिये।
बुआ के बहाने से लेना चाहिए और यह मेरी भतीजी है यह समझ कर देना चाहिए।
मनुष्य को लेने के साथ-साथ देना भी चाहिए, केवल लेना-ही-लेना ठीक नहीं

१५१४ भू आई सासू हरखी, पगां लागी अर परखी।
बहू घर में आई सास प्रसन्न हुई। बहू ने ज्योंही सास के चरण छुए, त्योंही उसकी परीक्षा हो गई।

१५१५ भूख नै लगावण कोनी नींद नै बिछावण कोनी।
भूख में रूखी-सूखी रोटी भी अच्छी लगती है जब नींद आ रही हो तो बिस्तरों की आवश्यकता नहीं होती।
मि० जिन आंखिन में नींद घनेरी तकिया और बिछौना क्या रे।
(कबीर)

१५१६ भूख न देखै झूठची बात।
भूख यह नहीं देखती कि यह बात झूठी है। भूखा आदमी सामने जो कुछ आ जाता है उसे ही बिना विचारे खा लेता है।

१५१७ भूखा की आवड्याई चख भूखा की को आवड़ै ना।

निर्धन फिर भी उन्नत हो सकता है किन्तु झूठा नहीं ।

१९१८ भूखा के जात कोन्या ।
जब अत्यन्त भूख लग रही हो तो जाति का विचार नहीं किया जाता ।
मि० भूख न देखै जात-कुजात ।

१९१९ भूखै के तो थाली में पड़्यां ही इमान आवै ।
भूखे का केवल बातों से क्या हो ? उसे तो खाने को मिल जाय तभी उसकी तृप्ति हो ।

१९२० भूखै घर की छोरी अर फलकै बिना दोरी ।
गरीब घर की लड़की है जिसे बाजरे की रोटी भी नसीब नहीं होती । उसी को अब फुलका नहीं मिल रहा है तो बुरा मान रही है ।

१९२१ भूखो ठाकर आक खावै ।
(स्पष्ट है)

१९२२ भूखो तो धायो पतीजै ।
भूखे को तो तृप्त होने पर ही विश्वास होता है ।

१९२३ भूखो पूछै ज्योतसी, धायो पूछै वैद । *
भूखा ज्योतिषी से पूछता है कि उसके भाग्य में धन लिखा है या नहीं ? धनी सम्पन्न है वह आवश्यक-अनावश्यक डाक्टर-वैद्यों की दवा लेता रहता है ।

१९२४ भूखो बामण सोवै अर भूखो जाट रोवै ।
भूखो बाण्यो हंसै 'र भूखो रांघड़ कमर कसै ॥
भूखा ब्राह्मण निमन्त्रण की प्रतीक्षा में सोता रहता है भूखा जाट रोता है, भूखा बनिया जिसकी दृष्टि एकमात्र लाभ की ओर रहती है हँसता है और भूखा राजपूत शिकार के लिए कमर कसता है ।

१९२५ भू घर तेरै सूंपै पण राखियै ढक्यो-ढूम्यो ।
हे बहू ! घर तुम्हें सौंपा जाता है किन्तु इसे रखना बन्द ।।

१९२६ भू घरियाणै की, अर गाय ग्याणै की ।
बहू कुलीन घर की लानी चाहिए और गाय ग्याणे की (बंधन-रज्जु) होनी चाहिए ।

१९२७ भूखां कै लाडुआं में इलायची को के सुवाद ?
भूखे के लिए लड्डू बनायें तो स्वाद के लिए इलायची कौन डालता है ।

* द० भूखो पूछै ज्योतसी धायो पूछै वैद ।

११२८ मू बरोस्या जावैगा बिन मारे मर ज्यावैगा ।
जो श्वसुर पुत्रवधू के हाथ से भोजन करेगा वह बिना मारे मर जायगा क्योंकि बहू अपने पति को जितना घृतादि खिलाती है उतना श्वसुर को कभी नहीं खिलायेगी । इसलिए रूखे भोजन से वह निर्बल होता जायगा ।

११२९ मू बछेरां बीकरां, भीतड़ियां परवाण ।
बहू घोड़ों के बच्चे और बच्चों के सभी गुण का प्रमाण वयस्क होने पर ही मिलता है ।

११३० मूल को ब्याजी मूल में गयो ।
मूल का पैसा मूल में ही चला गया ।

११३१ मूंख्यो बामण भेड़ खाई, आगे खाय तो राम-दुहाई ।
एक बार भूल हो गई अब आगे कभी न करूँगा इस भाव को प्रकट करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है ।

११३२ भेड़ की खाल पगां लर्ठ-लर्ठ ।
भेड़ की खाल पैरों के नीचे तक जाती है ।

११३३ भेड़ कटीक नै सौंपे ।
भेड़ कटीक पर विश्वास करती है ।

११३४ भेड़ पर ऊन कुण छोड़ै ?
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?
गरीब का धन लोग जबरन अपहरण कर लेते हैं ।

११३५ भेड़ भगतणी पूंछड़ै में माळा ।
भेड़ भक्त बन गई और पूंछ में राम की माला ।

११३६ भेमल राणी चोरटी रात्यूं सिट्टा तोड़ती ।
भेमल रानी (एक पंखों वाला छोटा कीट जो आश्विन के महीने में फसल को हानि पहुँचाता है) चोरी करने वाली है वह रात भर सिट्टों को नुकसान पहुँचाती रहती है ।

११३७ भेळां भांडा खड़कै ही ।
इकट्ठे रहने पर बर्तन खड़कते ही हैं अर्थात् संयुक्त परिवार में जहाँ सब एक साथ रहते हैं झगड़ा हो ही जाता है ।

*११३८ भैंस आगे बांसरी बजाई तो गोबर को इनाम ।
जहाँ गुणग्राहक न हो वहाँ सम्मान की आशा रखना व्यर्थ है ।

निर्धन फिर भी उन्नत हो सकता है किन्तु भूखा नहीं।

२९१८ भूखा नै जात कीस्या।

जब अत्यन्त भूख लग रही हो तो जाति का विचार नहीं किया जाता।

मि० भूख न देखै जात-कुजात।

२९१९ भूखै नै तो बातां में पकवां ही इम्रत लागै।

भूखे को केवल बातों से क्या हो? उसे तो खाने को मिल जाय तभी उसकी तृप्ति हो।

२९२० भूखै घर की छोरी घर कालै बिना छोरी।

गरीब घर की लड़की है जिसे बाजरे की रोटी भी नसीब नहीं होती। उसी को अब फुलका नहीं मिल रहा है तो बुरा मान रही है।

२९२१ भूखो ठाकर लाक खावै।

(स्पष्ट है)

२९२२ भूखो तो खायां पतीजै।

भूखे को तो तृप्त होने पर ही विश्वास होता है।

२९२३ भूखो पूछै ज्योतसी, धायो पूछै वैद। *

भूखा ज्योतिषी से पूछता है कि उसके भाग्य में धन लिखा है या नहीं? जो सम्पन्न है वह आवश्यक-अनावश्यक डाक्टर-वैद्यों की दवा लेता रहता है।

२९२४ भूखो बामण सोवै अर भूखो जाट रोवै।

भूखो बाण्यो [illegible] 'र भूखो रजपूत कमर कसै॥

भूखा ब्राह्मण निमन्त्रण की प्रतीक्षा में सोता रहता है भूखा जाट रोता है, भूखा बनिया जिसकी दृष्टि एकमात्र लाभ की ओर रहती है, हँसता है और भूखा राजपूत शिकार के लिए कमर कसता है।

२९२५ भू घर सेर्इ थारै पण राखियै हथ्यो-कुथ्यो।

हे बहू! घर तुम्हें सौंपा जाता है किन्तु इसे रखना सम्भल!!

२९२६ भू परियांगै की अर गाय ग्यांवै की।

बहू कुलीन घर की लानी चाहिए और गाय ग्यांवे की (बंधन-रज्जु) लानी चाहिए।

२९२७ भूतां कै लाडुवां में इलायची को के सुवाद?

भूतों के लिए लड्डू बनायें तो स्वाद के लिए इलायची कौन डालता है?

* पा० भूखो बूझै ज्योतसी धायो बूझै वैद।

१६२८ बहू परोस्यां खायेगा बिन मारे मर ज्यायगा ।
जो श्वसुर पुत्रवधू के हाथ से भोजन करेगा वह बिना मारे मर जायगा क्योंकि बहू अपने पति को जितना घृतादि खिलाती है, उतना श्वसुर को कभी नहीं खिलायेगी । इसलिए उसके भोजन से वह निर्बल होता जायगा ।

१६२९ बहू बछेरा बीछरा, नीपजियां परवाण ।
बहू, घोड़ों के बच्चे और बच्चों के भले बुरे का प्रमाण वयस्क होने पर ही मिलता है ।

१६३० भूल को टक्को भूल में गयो ।
भूल का पैसा भूल में ही चला गया ।

१६३१ भूल्यो बामण भेड़ खाई, आगे खाय तो राम-दुहाई ।
एक बार भूल हो गई, अब आगे कभी न करूँगा इस भाव को प्रकट करने के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है ।

१६३२ भेड़ की लात पगां तळै-तळै ।
भेड़ की लात पैरों के नीचे रह जाती है ।

१६३३ भेड़ लटोक नै धीजै ।
भेड़ लटोक पर विश्वास करती है ।

१६३४ भेड़ पर ऊन कुण छोड़ै ?
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?
गरीब का धन लोग जबरन अपहरण कर लेते हैं ।

१६३५ भेड़ भगतणी पूंछड़ै में माळा ।
भेड़ भक्त बन गई और पूँछ में डाल ली माला ।

१६३६ भेमल राणी चोरटी, रात्यूं सिट्टा तोड़ती ।
भमल रानी (एक पंखों वाला छोटा कीट जो आश्विन के महीने में फसल को हानि पहुँचाता है) चोरी करने वाली है वह रात भर सिट्टों को नुकसान पहुँचाती रहती है ।

१६३७ भेळा भांडा खुड़कै ही ।
इकट्ठे होने पर बर्तन खुड़कते ही हैं अर्थात् संयुक्त परिवार में जहाँ सब एक साथ रहते हैं झगड़ा हो ही जाता है ।

*१६३८ भैंस आगे बांसरी बजाई तो गोबर को इनाम ।
जहाँ गुणग्राहक न हो वहाँ सम्मान की आशा रखना व्यर्थ है ।

२५३९ भैंस आपको रंग को देखै ना, छाते नै देख कर बिदकै।
भैंस अपना रंग तो नहीं देखती छाते को देख कर चौंकती है।
दुर्जन अपने दुर्गुण नहीं देखता दूसरे को अपने से भी बदतर तथा भयंकर समझता है।
२५४० भैंस की पोटी सूखती सो सूकै।
धनवान यदि निर्धन भी हो जाय तो भी गरीब की अपेक्षा तो वह अधिक समृद्ध ही रहता है।
२५४१ भैंस बक से यारी करै तो कै खाय ?
भैंस यदि बगुले से दोस्ती करे तो क्या खाय ?
धनवान यदि रोगियों से दोस्ती करके उनसे कुछ फीस न ले तो क्या खाय ?
२५४२ भैंस मरणी सो मरगी चोर की सवड़को तो भार ही लियो।
(स्पष्ट है)
२५४३ भैंसो भींडो बाकरो चौथी विधवा नार।
ये च्यारूं भाड़ा भला मोटा करैं बिगाड़।।
भैंसा भेड़ा बकरा और विधवा स्त्री ये चारों दुबले-पतले ही अच्छे हृष्ट पुष्ट होने पर ये बिगाड़ करते हैं।
२५४४ भोळां वाळां का राम रखवाळा।*
जो सीधे-सादे हैं उनकी भगवान् रखवाली करते हैं।
२५४५ भोळो गजब को भोळो है।
यह सीधा-सादा नहीं गजब ढाने वाला है।
२५४६ भोळो मित्र दुसमन की गरज सारै।
नादान दोस्त शत्रु का काम करता है।
रू० भोळो सैण दुसमण की गरज सारै।

म

२५४७ मछली अर भीटणी खाय ई कोन्या।
ता शिकारणी और किसी के हाथ का छुआ हुआ खाती ही नहीं।
सिर के अगाड़ी खाणा कै पिछाड़ी।
सिर के आगे और खाने के पीछे रहना चाहिए।
डाबो खाये खिलावो बिड़ावो खायें खिलावो।
मूर्ख मित्र रहस्योद्घाटन के कारण कभी-कभी दुश्मन का-सा काम कर डालता है।

मंडावा और चिड़ावा दोनों कस्बों के नाम हैं। किसी ने इन दोनों नामों को लेकर शब्द क्रीड़ा की है कि "मंडावो" कहो चाहे "छिड़ावो" कहो एक ही बात है। इसी प्रकार 'चिड़ावा' कहो चाहे "खिजावो" (नाराज करो) कहो एक ही बात है।

१५५० मंढी एक 'र मोडा घणा।
मठ एक है और साधु बहुत हैं।

१५५१ मंहगो रोवै एक बार सैंगो रोवै बार-बार।
जो महंगे दामों पर चीजें खरीदता है वह एक बार कष्ट उठाता है किन्तु सस्ती चीजें खरीदने वाले को सदा हैरान होना पड़ता है।

१५५२ मकोड़ो कहै, मा! मैं गुड़ की भेली उठा ल्याऊं? कहै कड़तू कानी देख।
मकोड़े ने अपनी माँ से पूछा "क्या मैं गुड़ की भेली उठा लाऊं?"
माँ ने उत्तर दिया "तुम अपनी कमर की ओर तो देखो।"
क० 'कड़तू कानी देख' के स्थान में 'डोळ तो इसो ई है!'

१५५३ मजूरी में के हजूरी?
जो परिश्रम करके पैसा कमाता है वह किसी की हाजिरी क्यों दे?

१५५४ मत मरज्यो बालक की मावड़ी 'र मत मरज्यो बूढ़े की जोय।
छोटे बच्चे की माँ न मरे। बूढ़े की स्त्री न मरे। बड़ी मार्मिक उक्ति है।

१५५५ मतलब की मनुहार जगत जिमावै चूरमा।*
अपने स्वार्थ के लिए लोग दूसरों की खुशामद करते हैं।

१५५६ मथरा में रहसी जको राधा गिंदगा (राधा गोविन्द) कहसी।
जो मथुरा में रहेगा वह राधाकृष्ण या राधा गोविन्द कहेगा।

१५५७ मरकमाऊ कमाव तो कोनी पण घरां तो आवै।
कम कमानेवाला बहुत कम कमावे तब भी घर पर तो आवे। उसकी कमाई भी-भी ऊँग अच्छी नहीं लगती।

१५५८ मन कै पाज कोनी।
मन के मर्यादा नहीं होती।

१५५९ मन में भावै मूंड हिलावै।

---

*राजिये का पूरा सोरठा इस प्रकार है—
मतलब की मनुहार जगत जिमावै चूरमूं।
बिन मतलब मनुहार, राब न पावै राजिया॥

भोजन के समय और लेने की इच्छा तो है किन्तु ऊपर से इन्कार कर देता है जब कोई परोस देता है तो खा लेता है।

१६६० मन बिना मेल नहीं, बाड़ बिना बेल नहीं।
मन मिलने पर ही मेल बढ़ता है बाड़ के सहारे ही बेल बढ़ती है।

१६६१ मन राजा को, करम कमेड़ी को सो।
मन तो राजा का सा है किन्तु भाग्य पडुकी जैसा है।

१६६२ मन होय तो बेटो दे दे, नहीं बेटी ही कोनी दे।
मन हो तब तो बेटा देदे अन्यथा बेटी भी नहीं दे।

१६६३ मन होय तो मालवे जावावै।
यदि काम करने की इच्छा हो तब तो मनुष्य बहुत दूर तक जा सकता है इच्छा न हो तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता।

१६६४ मर ज्यावूं कबूल पण जो की दलियो नहीं खावूं।
मर जाना स्वीकार है पर जौ का दलिया खाना स्वीकार नहीं।

१६६५ मरत में भरमो पण मन हथले वै में ही रयो।
कहानी यों है कि एक ठाकुर था जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विवाह नहीं हो सका और वह क्वारा ही मर गया। भाई लोग गया जी पिंड-दान के लिये गए। किंवदन्ती है कि पुराने जमाने में पिंड-दान देने वाला आदमी गंगाजी में खड़ा होकर अपने बड़के (पुरखे) को उसके नाम से पुकारता था तब पानी में से हाथ निकल कर पिंड ग्रहण कर लिया करता था। ठाकुर के भाई ने जब पुकारा कि 'ठाकरां पिंड लेवो' तो पानी में से आवाज आई 'हथले वो'। तात्पर्य यह है कि मरने वाले ठाकुर के मन में मृत्यु के समय हथलेव की विवाह की प्रबल इच्छा थी इसलिए जब 'पिंड लेवो' कहा तो 'लेवो' को लेकर उसे हथलेवो सुना और उसने पानी में से उसी तरह पुकारा। तब पिंड देने वाले ने कहा "ठाकरां किसो हथले वो पिंड लेवो पिंड!"

१६६६ मरणूं ब्याव से ना बापूं है।
मरना कोई साधारण बात नहीं है दुनिया से न चला जाना है।

१६६७ मरतां किसा पाका मुहूर्त है?
मृत्यु के समय वाहन नहीं जोते जाते सवारी की तैयारियाँ नहीं की जाती अर्थात् मृत्यु अकस्मात् आ जाती है।

१५६८ मरद को जोबन साठ बरस जे घर में हुवै समाई।
नार को जोबन तीस बरस हर दल को जोबिन नाहीं॥
यदि घर में खान-पीने की पर्याप्त सामग्री हो तो मनुष्य साठ वर्ष तक जवान रह सकता है। स्त्री तीस बरस तक युवती रहती है और हिरन बकरा बरसों तक।

१५६९ मरद तो अमाल बंको, कूवा बंकी गोरियां।
दूझल तो हुकार बंकी, छैल बंकी घाड़िया।
मर्द तो वही जो अकाल का धनी हो, नारी तो वही जो पीर-प्रमविनी हो, गाय तो वही जो दूध देने वाली हो, और घोड़ी तो वही जो तेज चलने वाली हो।

१५७० मरद तो मूछाल बंको, नैण बंकी गोरियां।
दूझल तो सींघाल बंकी, पोड़ बंकी घोड़िया॥
मर्द तो वही श्रेष्ठ है जो मूछों वाला हो, कामिनी तो वही है जिसके नयन बांके हों, गाय तो वही है जिसके सींग सुन्दर हों, घोड़ी तो वही है जिसके पैर सुन्दर हों।

१५७१ मरतां मरणों हुवत है, मगर पचीसों मांय।
मर जवानी में पच्चीस साल की उम्र में युद्ध में प्राणोत्सर्ग कर देना राजपूत मर्द के लिए शोभन है।

१५७२ मरणो तो हूंणा रो' र धन लट्टा रो।
लट्ठे का धन जितनी आसानी से मिलता है उतना और कोई धन नहीं। इसी प्रकार हूंण से मृत्यु होने में भी विलम्ब नहीं लगता।

१५७३ मरी क्यां ? सांस कोनी आयो।
मृत्यु कैसे हुई ? उत्तर, "सांस नहीं आया।"

१५७४ मरी रांड, हुयो बैरागी।*
स्त्री के मरने पर बैरागी हो गया।

१५७५ मर्द मरै तो बोली सूं ही मर ज्यावै, मर्द तो गोली सूं ई कोनी मरै।
प्रतिष्ठित मनुष्य के लिए तो अनादर ही मृत्यु के समान है।
मि० सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते (गीता)।

१५७६ मर्द पूत की आंख कचोरै-सी।

*मि० नारि मुई घर सम्पति नासी। मूंड़ मुंडाय भये संन्यासी।
(तुलसीदास)

पुत्र के जीवित रहते तो नजर के भय से माता-पिता उसके सौन्दर्य की प्रशंसा नहीं करते किन्तु उसके मरने पर उसके सौन्दर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करते हैं।

१५७७ मरे है पण मलार गावै है।
मरते समय भी राग-रंग सूझता है।

१५७८ मरो मा जीवो मोवसो धी जाव्यो न न गोला जाममी।
इस उक्ति का प्रयोग भैंसी की प्रशंसा करने में किया जाता है।

१५७९ मरो हांस्णी नार मरो कठणारू टट्टू।
पंसवनी स्त्री तथा काटने वाला टट्टू मरे।

१५८० मर्‌या नै भूल ज्याय आया नै कोनी भूलै।
मरे हुए व्यक्ति को भुला दिया जाता है किन्तु मृत्यु पर दुःख प्रकट करने के लिए आने वाले को नहीं भुलाया जाता।

१५८१ महलां बैठ्यो छेड़ै जको करड़ी बैठे सै कुहाय।
महलों में बैठा हुआ जो दूसरे को छेड़ता है वह घर पर बैठे हुए ही बुरा-भला सुनता है। जो दूसरे को अपशब्द कहता है उसे बदले में बुरा भला सुनना पड़ता है चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो।

१५८२ महाबतां सै यारी अर दरवाजा सांकड़ा।
कोई धनी जनों से सम्पर्क स्थापित करे और उनके स्वागत-सत्कार के लिए जिसके पास पूरे से उपकरण भी न हों उसके लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

१५८३ मांय टर छाय ल्यावै सूरज नै छांटो दे।
माय कर छाछ लावे और सूर्य को अर्घ्य दे।
तु० मीस-तोय कर छा ल्यावै 'र सूरजी नै छांटो!

१५८४ मांग्यां नी मोत ई कोनी मिलै।
मांगी हुई तो मौत भी नहीं मिलती।

१५८५ मांग्यो मात मास जाकै काई कमी रै खास?
जिसको मुंहमांगा धन यों ही मिल जाता है उसको किस बात की कमी है?

१५८६ मांज्या थाल! उतर्‌या बार।
दुपहर को बर्तन मांज लेने पर फिर वह वार उतर जाता है दूसरा वार मान लिया जाता है।

१९८७ मोती का डाबिया अंधेरी किवाड़ ।

जब दो वस्तुओं में अनुरूपता न हो, तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१९८८ माटी की भींत डिगती बार कोनी लगावै ।

मिट्टी की दीवार को गिरते देर नहीं लगती ।

१९८९ मा का पेट से कोई सीख कर कोनी आवै ।

माँ के पेट से ही कोई सीख कर नहीं आता अर्थात् बाद में शिक्षा तथा सांसारिक अनुभव से ही मनुष्य बुद्धिमान् होता है ।

१९९० मा के सरायां पूत कोन्यां सरायो जाय, पराया के सरायां सराज्यो जाय ।

किसी भी माता के लिए अपने पुत्र की प्रशंसा करना स्वाभाविक है, यदि दूसरे उसकी प्रशंसा करें तभी उसे प्रशंसनीय समझना चाहिए ।

१९९१ मा जिसी डीकरी, घड़ा जिसी ठीकरी ।

लड़की माँ के अनुरूप होती है और घड़े का ठीकरा घड़े के अनुरूप ।

१९९२ मा जी ई मासी, पण हूं तो पूछो ई तेरा बरस की ।

नाम का तो माताजी ही मासाजी है पर अवस्था तो तीन तरह बरस की ही है न !

१९९३ माता के तो सारा बेटा-बेटी इकसार होय है ।

माता के लिए तो सभी पुत्र-पुत्रियां एकसार हैं ।

१९९४ माथो मूंड्यां जती नहीं ।

कोई मूंड मुंडाने से ही संन्यासी नहीं हो जाता ।

१९९५ मान का तो मुट्ठी मूंगड़ा ही घणा ।

सम्मान के तो मुट्ठी भर चने ही बहुत हैं ।

१९९६ मान बड़ा ' क दान ?

सम्मान बड़ा है ।

१९९७ मा न मा को जायो, बैरी को पतायो ।

नववधू जब पहले पहल ससुराल आती है तब कहती है "यहाँ न तो माँ है न माँ का बेटा है, मैं तो पराये देश आ गई ।"

साधारणत: प्रवास में, बीमारी में, विपत्ति में या संकट के समय भाई बन्धु याद आते हैं ।

१९९८ मामा मामा सासरै, ममाइज साथ कुण ?

मामा ससुराल चले, उनका समाने वाला कौन ?

१६९९ भावें तो देव नहीं भींत को लेव ।
मूर्ति में देवत्व के आरोप का मूल कारण भावना ही है ।
मि० न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न च मृण्मये ।
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम् ॥

१७०० मा पर पूत पिता पर घोड़ो घणो नहीं तो थोड़म थोड़ो ।
आकृति-प्रकृति में पुत्र मा का अनुसरण करता है घोड़ा पिता का । यदि बहुत नहीं तो थोड़ी बहुत अनुरूपता तो देखी ही जाती है ।

१७०१ मा बाप मरया जो है घर की करणा ।
जब तक माता पिता जीवित रहते हैं तब तक विवाहित लड़की को ससुराल से वर्ष में एक-दो बार अपने यहाँ लड़की को बुला लेते हैं । उनकी मृत्यु के बाद जब उसे बुलाने वाला कोई नहीं रह जाता तब उसे ससुराल में ही रहना पड़ता है ।

१७०२ मा मठियारी पूत फतेखां ।
जब कोई बढ़-चढ़ कर बात करता है तब उसके प्रति यह व्यंग्योक्ति है ।

१७०३ मा मरी आधी रात बाप मर्‌यो परभात ।
विपत्ति पर विपत्ति आती है ।
मि० छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति ।

१७०४ मामा को ब्याव अर मा परोसवारी ।
मामा के विवाह में मां परोसने वाली हो तो सोने में सुगन्ध है ।

१७०५ मा ! मामा किसाक ? बेटा मेरा ई भाई ।
हे माँ ! मेरे मामा कैसे हैं ? उत्तर, हे पुत्र ! वह तो मेरा ही भाई है । इसलिए जैसी मैं वैसे ही तुम्हारे मामा ।

१७०६ मा मैं बडो हुयां बामणां ही बामणां नै मारस्यूं, कह बेटा बडो ही क्यूं होसी ?
हे मा ! मैं बड़ा होने पर ब्राह्मणों ही ब्राह्मणों को मारूँगा । उत्तर, हे पुत्र ! तब तुम बड़े ही क्यों होगे ? अर्थात् ऐसा अन्यायी मनुष्य ईश्वरीय कोप से जीवित ही नहीं रह सकता ।

१७०७ मामा अंट को विद्या कंठ की ।
अपने पास का पैसा ही काम आता है विद्या भी जो कण्ठस्थ हो वही मौके पर काम देती है ।
मि० पुस्तकस्था च या विद्या परहस्तगतं धनम् इत्यादि ।

१००८ माया तेरा तीन नाम परस्या परसी परसराम ।

ज्यों-ज्यों मनुष्य के पास पैसा बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उसकी कदर भी बढ़ती जाती है। किसी गरीब आदमी को लोग "परस्या" जैसे छोटे नाम से पुकारते हैं। उसकी आर्थिक अवस्था में कुछ सुधार होने से वह 'परसी' हो जाता है और धनवान होने पर तो लोग उसे "परसराम" कहने लगते हैं। यह सब पैसे का ही प्रताप है।

१००९ माया मिलगी सूम नै ना खरचै ना खाय ।

सूम को धन मिल गया न वह दान देता है न स्वयं उसका उपभोग करता है।

१०१० माया स छाया भली ।

धन की अपेक्षा इमारत श्रेष्ठ है।

१०११ मार कर भाग ज्यावूं खाकर सो ज्यावूं ।

मार कर भग जाना चाहिए और खा-पीकर सो जाना चाहिए।

१०१२ मार कुमार ठाणा की मार ।

कुठै की मार से न तो खून निकल सकता है और न वह शरीर के अन्दर जम ही सकता है।

१०१३ मार के आगे भूत भागे ।

प्रहार के आगे भूत भी भग जाता है।

१०१४ मारण हालै का तो हाथ पकड़यो जाय बोलण हालै की जीभ कोनी पकड़ी जाय ।

मारने वाले का हाथ तो पकड़ा जा सकता है बोलने वाले की जीभ नहीं पकड़ी जा सकती।

१०१५ मारणूं ऊंदरो खोदणूं डूंगर ।

चूहे को मारने के लिए पहाड़ खोदना व्यर्थ है।

जरा से काम के लिए बहुत बड़ा कष्ट उठाना बेकार है।

मि० खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

१०१६ मारणिये सैं जिवाणियूं बाडो (बडो) ह ।

मारने वाले से जिलाने वाला प्रबल है।

मि० जिया होगा राम का दम यूं ही टीटै।

मरसी कोई मोड़ पै अमरली मोड़।

मि० जिवादिने का हाथ ऊंचा हो है।

१०१७ मारसे सो मीर।

जो पहले मारता है, वही श्रेष्ठ है।

१०१८ मारवाड़ की मूकता मिटसी दोरी मित्र।

हे मित्र ! मारवाड़ की मूकता मुश्किल से दूर होगी।

१०१९ मारवाड़ मनसूबे डूबी, पूरब डूबी गाना में।

कामदेस लुगाँ में डूबी दखिण डूबी दाणा में।

(स्पष्ट है)

१०२० मारै बाप जगावै ताप।

किसी की मृत्यु का असली कारण तो परमात्मा ही होता है। ज्वर आदि रोगों का बहाना बना कर वह मनुष्य को संसार से उठा लेता है।

१०२१ मारै नहीं जको बलो उठावै।

जिसे काम नहीं करना हो वह केवल बड़-बड़ कर बातें बनाता है। 'बलो' एक दीर्घकाय स्थूल काष्ठ का स्तम्भ होता है वह बहुत मुश्किल से ही उठाया जा सकता है। जिसको मारना न हो वह केवल बलो उठा कर मारने की धमकी देता है।

१०२२ मार्‍यां-कूट्यां एक नांव जीम्यो-जूठ्यो (खायो-पीयो) एक नांव।

किसी को कम पीटो या अधिक पीटने का नाम हो ही जाता है। किसी के यहाँ भोजनार्थ जाकर थोड़ा भोजन करो या अधिक जीमने का नाम हो ही जाता है।

१०२३ माल जैसा जगात।

जैसा माल हो वैसी ही जगात लगती है।

१०२४ माल सैं चाल आवै।

धन से ही चाल आती है।

१०२५ मालिक को मालिक कुण?

मालिक का मालिक कोई नहीं।

१०२६ माली अर मूला दूरा ही भला।

माली और मूल (जैसे मूली आदि) दूर-दूर ही अच्छे।

माली आपस में लड़ते हैं, इसलिए उनके घर दूर-दूर हों तो ही अच्छा।

१०२७ माथो धोयो औंधूकार, फागण मास उछाव धार।

जैठा मासा बीज स्लूकोर्ड भर बैठाणो केतू चीज।

जेठ मास लगती तो कृष्ण रोर्ड सावण आवता जल बरसोतो।

माघ और पौष में कोहरा दिखलाई पड़े, फाल्गुन में धूम उड़े। चैत में बिजली न दिखाई दे तो असाढ़ में वर्षा हो। ज्येष्ठ में सूर्य तपता रहे तो किसी की शक्ति नहीं है जो श्रावण-भाद्र की वर्षा को रोक सके?

१७२८ मिनख को के मोटो पीसो मोटो है।

मनुष्य का क्या बड़ा? पैसा बड़ा है।

१७२९ मिनख मानसियो हो होय है।

जिसमें दया सत्य आदि गुण हैं वह मानुष कहलाता है और जिसमें इन गुणों का अभाव है वह मानुषिया लघु या हीन मनुष्य कहा जाता है।

१७३० मिनख सूत को बई रोटी खाय है।

मनुष्य सकल को या हुई रोटी खाता है। भाग्य में सुख लिखा होने पर ही मनुष्य को धन-धान्यादि की प्राप्ति होती है अन्यथा वह इधर उधर भटक कर खाली हाथ लौट आता है। धरम की प्रशंसा में यह उक्ति कही गई है।

१७३१ मिनख हजार बरस की नींव खोदे भरोसो पलक को ई को नहीं।

मनुष्य हजार वर्ष की नींव खोदता है किन्तु एक पल का भी भरोसा नहीं।

१७३२ मियां की दौड़ महजीत ताई।

मियां की दौड़ मसजिद तक।

परिमित शक्ति वाले व्यक्ति के सम्बन्ध में इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

१७३३ मियां न सलाम को आदर क्यूं करावो?

मियां का सलाम के लिए क्या कष्ट किया जाय?

१७३४ मियां रोवो क्यूं? क बांका की सकल ही इसी है।

किसी ने पूछा "मियांजी तुम क्यों रोते हो?" उत्तर मिला "मेरी शक्ल ही ऐसी है, मैं रोता नहीं हूँ! शक्ल ही ऐसी लगती है मानो मैं रो रहा हूँ!"

१७३५ मियां बीबी री बणी क्यूं खावै वो काजी?

जब घर में अधिक खाने वाले नहीं होंगे तब तक दो प्राणी ही हों तब न भी धन की राशि क्या लाय?

१७३६ मिटू मरसी जद जाणियो जद जाणीजो होय।

जब तक किसी काम में थोड़ा बहुत भी सन्देह बना रहे और उसका निराकरण न हो जाय तब तक उसे पूरा नहीं समझना चाहिए।

१७३७ मिल बिछड़ो मत कोय ।
मिल कर किसी का वियोग न हो ।

१७३८ मिलै मुफतरो माल सांड रवै सोरा ।
जब मुफ्त का माल मिलता है तो जीवन-यापन करने मे बड़ी सुविधा
रहती है ।

१७३९ मिल्या मिळ्या र हुंसेर पूरी हुई ।
मिलना हो गया आपस में भेंट हो गई मिलने की हविस पूरी हो गई ।

१७४० मींडका नै तिरणू कुण सिखावै ?
मेंढक को तैरना कौन सिखलाता है अर्थात् कोई नहीं । यह उसका सहज
गुण है ।

१७४१ मीठो छुरी जहर सेर की भरी ।
कपटी मनुष्य मीठा बोलता है किन्तु उसके मीठे में जहर भरा होता है
मि॰ विषकुम्भं पयोमुखम् ।

१७४२ मीठै के लालच जूठो खाय ।
मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की खुशामद करता है ।

१७४३ मुंह मैल खाय ।
जिसमें जितनी शक्ति हो वह उतना ही प्रहार सहन कर सकता है ।

१७४४ मुंह टोपसी-सो नांव सरूपली ।
मुंह तो टोपसी (नारियल का अग्र और मुख-रहित टुकड़ा) के सम
है और नाम रख रखा है सरूपली ।

१७४५ मुंह सुई सो पेट कोठी-सो ।
किसी पेटू के सम्बन्ध में कही गई उक्ति ।

१७४६ मुंह स निकळ ज्याय सो भाग धणी का ।
योगी अथवा धनी के मुख से किसी के लिए कुछ प्रिय बात निकल
तो यह बड़े सौभाग्य की बात है ।
मनमौजी बोलने वाले के मन से चाहे जो निकल जाता है ।

१७४७ मुकदमा में दो चाये कोडा" र योदा ।
मुकदमें में दो चीजों की आवश्यकता होती है एक तो धन और
पैर ।

१७४८ मुख में राम बगल में छुरी ।

मुख से तो राम राम करता है और बगल में छुरी है।

तु० हाथ सुमरणी बगल कतरणी।

१७४९ मर्दां के तो लागू कोई काम।

निर्बल थोड़े ही प्रहार को सहन कर सकता है।

१७५० मुतलब को संसार सनेही।

सारा संसार स्वार्थवश स्नेह रखता है।

१७५१ मुतलब बणतो जोय हंस तो हंसता रो।

स्वार्थ सिद्ध होता हो और यदि आप हंसते हों तो उन्हें हंसने दो।

१७५२ मुरदां के साथ कोंथिया कान्या जाय।*

जो घर का कंधों पर वहन करके ले जाते हैं वे मर्दे के साथ नहीं जलते।

विष खाने वाला ही मरता है उसके साथ रहने वाला नहीं।

१७५३ मरदै पर काहू एक कसलो गरो काई मो कसती घेरो।

मरे हुए को मारना व्यर्थ है।

१७५४ मूं आगे आप पीठ पीछ पराई।

किसी पुरुश्ली के सम्बन्ध में उक्ति है जो पति की उपस्थिति में पत्नी की तरह आचरण करती है उसकी अनुपस्थिति में पराई हो जाती है।

१७५५ मूंग मोठ में कुण तो बडो अर कुण सो छोटो। (मूंग मोठ में कुण छोटो-बडो—?)

मूंग-मोठ में कौन बड़ा कौन छोटा? दोनों बराबर हैं।

१७५६ मूंछां उखाड़्यां सूं मुरदा हलका थोड़ा ही हो।

मूँछें उखाड़ लेने से मुर्दे हल्के नहीं होते।

१७५७ मूंड मुंडायां सूं ज्याय जिणरो क्यूं कुमावै?

मूड मुडाने से जिसका काम बन जाये वह आजीविकोपार्जन के लिए परिश्रम क्यों करे?

१७५८ मूं लागी चाय कान्यां छूटै।

मुँह लगी हुई चाय नहीं छूटती।

१७५९ मूर्खां का माल मसखरा खाय।

मूर्खों का माल मसखरे खा जाते हैं।

१७६० मूरख बह छूटै बन्दर बह छूटै।

*मुरदां की मणमें बरूं पण कोंथिया तो कदेई कान्या नहीं देख्या।

मूर्ख की मन में आता है अनाप-शनाप कह डालता है और बैल हल जोतता ही है।

१७५१ मूरख के माथै सींग कोनी होय।
मूर्ख के सींग नहीं होते वैसे वह पशु ही है।

१७५२ मूरख नै टक्को दे देणूं पण अक्कल नहीं देणी।
मूर्ख को पैसा दे देना अच्छा किन्तु अक्ल सिखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
तु० मारू_न टक्का दे देणूं अक्कल नहीं देणी।

१७५३ मूरख से काम पड़ै जद के करणूं? चुप रहणूं चाहणूं
मूर्ख से काम पड़े तब क्या करना चाहिए? उत्तर चुप रहना चाहिए।

१७५४ मूल से ब्याज प्यारो।
मूल भले ही डूब जाय ब्याज नहीं छोड़ा जाता।
पोता छोटा रहने के कारण बेटे से अधिक प्यारा होता है।

१७५५ मेवा तो बरसत भला हुणी हो सो होय।*
जो भी हो वर्षा तो सदा ही अच्छी है।

१७५६ मूसल के मनी ना गरीब क चमी ना।
मूसल के मनी नहीं होती और गरीब का कोई चमी-चोरी नहीं होता।

१७५७ मूसै को जायो बिल ही खोदैगो।
चूहे की सन्तान बिल ही खोदती है। कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता।
मि० जातिस्वभावो न मुच्यते।

१७५८ मे बाबो बाबो सिट्टा-बाली ल्यावो।
अत्यन्त हर्षित होकर खेलते हुए बच्चे इस उक्ति का प्रयोग करते रहते हैं। वर्षा से ही सिट्टे तथा फलियाँ होती हैं।

१७५९ मेर मला के कूंन कब मार? चोखी छीयी अर मनिवार।
जब कोई खराब सोहबत में रहने लगता है तो उसके प्रति यह लोकोक्ति कही जाती है।

---

*पूरा दोहा इस प्रकार है—
सौ बोड़ा भी करहला पूत निपूती होय।
मेवा तो बरसत भला'र भई होणी हाय सो होय॥

१७७० मेरे छोटकयां में म्यूत चाहे बरीड़ा म म्यूत स काई संद्या ह ।
मेरे छोटे लड़के का निमन्त्रण था चाहे बच्चे को सब अड़ाई मेरे लाने काम है ।

१७७१ मेरो ई मूड मेरो ई बोगरो ।
मेरी ही वस्तु मेरी ही हानि अथवा मेरे ही ऊपर और उन्हीं म मेरा शासन ।

१७७२ मेरो कुत्तो बर्जियो काई मेर को लावसी क्या जवाब पच क्या जवाब न पड़ता की ?
मेरा लड़का अड़ाई मेरे स्वामी क्या जाय पर क्या जाय जहां न

१७७३ मेरो पियूं घर नहीं मुझ किसो का डर नहीं ।
मेरा स्वामी घर नहीं है इसलिये मुझ किसी का डर नहीं है ।
तु० (क) मेरा पिया घर नहीं मुझे किसी का डर नहीं ।
(ख) मेरो साजन घर कानो मनें कोई का डर कानो ।

१७७४ मेरी को माया बिरखा का छाया ।
माया तो सब मेरी की ही है और छाया वृक्षों की ही है ।

१७७५ मेहा तो मिल बरस सो जित रामो होसी राम ।
वर्षा तो वहां होगी जहां भगवान की कृपा होगी ।

१७७६ मैं क मल छूटी ।
अहंकार के गये छूटी ।

१७७७ मैं मता कहावै ।
अहंकारी का मान हुए बिना नहीं रहता ।

१७७८ म बो राखी नूं बो राखी कूंव घर पड़े को पाणी ?
जब अपने हाथ से कोई काम नहीं करना चाहता तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१७७९ म मरूं मेरो भाई तूं क्यूं मरै पराई जाई ?
मेरा घर तो आ पड़ी है इसलिए म इस विपत्ति को सह रहा हूं किन्तु तू दूसरे की लड़की हो कर ऐसा क्या कर रही है ?

१७८ म कैऊं थो तमे तू के कहो मम ।
न तो तुम पर दोष लगाय देगा था तू मुझ ही न देगा !
टि० यह पहेली है ।

१७८१ मोटा करै मलार, पराये घरां पर ।
माथ दूसरा के धन म आनन्द मना रहे ह ।

१७८२ मोडां की राड़ में तूंबा ई उछळ ।
जहाँ साधु लड़ते हैं वहाँ तूंबे ही उछलते हैं ।

१७८३ मोडा घणा बैकुण्ठ सांकड़ी ।
साधुओं की संख्या बहुत अधिक है बैकुण्ठ में उनके लिए जगह की तंगी है ।

१७८४ मोडी गाय सदा बैरखी कुहावे ।
बिना सींगों वाली गाय सदा तरुण कहलाती है ।

१७८५ मोडो मूओ जद बैकुण्ठ में जाय ।
साधु मृत्यु के बाद बैकुण्ठ में जाता है ।

१७८६ मोडयो खोदे राख में दो पोवे दो काख में ।
साधु राख में कुरेदता है अपने लिए दो रोटी बना कर खा लेता है दो सायंकाल के लिए रख लेता है ।
अथवा दो को उसने बगल में दबा रखी है तो उसके लिए खाना बना रही है । व्यभिचारी महन्त के सम्बन्ध में उक्ति ।

१७८७ मौत मांदगी मामलो मन्दी मोलमहार ।
पांचू मम्मा एकसा घर राखै करतार ।
मृत्यु, रोग, मुकद्दमा, गरीबी और कर्जदार ये पांचों वस्तुएं बहुत बुरी हैं । भगवान् ही इनसे बचावे ।

१७८८ मौत हरावे भूख निवावे ।
मौत के आगे सबको हार माननी पड़ती है और भूख के आगे सबको झुकना पड़ता है ।

१७८९ मोर नाचे ई नाचे पग आपका पगां कानी देख कर रोवे ।
मोर नाचता ही नाचता है किन्तु अपने पैरों की ओर देख कर रोता है ।
यदि कोई मनुष्य सब तरह से सुखी हो किन्तु एक ही दुख ऐसा हो जो सब सुखों को नीरस कर दे तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१७९० मोरिया तो मेहू मेहू करैं पण बरसाणूं तो इन्दर कै हाथ है ।
मयूर तो वर्षा की रट लगाये हुए हैं किन्तु मेह बरसाना तो इन्द्र के हाथ है ।

१७९१ म्हां सूं भी मोटी बैठी पीलिया की रीप ।
मुझसे अधिक गौरव वाली और कोई नहीं है ।

१७९२ म्हानै इमरत लागे राबड़ी भी में दांत हाले न जाबड़ी ।

किसी बूढ़े की उक्ति है हमें तो राबड़ी अमृत के तुल्य लगती है जिसमें न दाँत का प्रयोग करना पड़ता है न जबड़े का।

१७९३ म्हारी ई बिल्ली म्हानै ही म्याऊं।
हमारे ही घर की बिल्ली और हमें ही डरावे!
जो हमारे ही आश्रित रहे वह हमें ही धमकी दे

१७९४ म्हारै स आग ल्याई नांव धर्‌यो बैसुन्दर।
हमारे यहाँ से आग माँग कर लाई और नाम रखा वैश्वानर!
दूसरे के यहाँ से माँग कर लाई हुई वस्तु पर जब कोई मद करता है तो इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१७९५ म्हे मामा-सा थे भीता-सा म्हे करी मसकरी थे रो दिया।
हम नगण्य हैं आप प्रबल हैं हमने तो हँसी की थी आप रो दिए।
क हम मामा-सा तुम भाना-सा हम ख्याल किया तुम रो दिया।
(यह मनुष्य के प्रति मर्द की उक्ति है।)

१७९६ म्हे ही खोस्या म्हे ही ढाया।
हमने काम प्रारम्भ किया हमने ही उसको नष्ट कर दिया।

१७९७ म्याऊं को मूंडो कुण पकड़ै?
म्याऊं का मुँह कौन पकड़े?

य

१८९८ या बांप उघाड़ तो या लाजां मरै या उघाड़ै तो या।
दोनों में से कौन सी बात कहूँ दोनों में से कोई भी कहूँ तो मेरी ही इज्जत जाती है।

१८९९ यो दोरड़ो तो दोरो ई पार होसी।
यह उपद्रव-किशोर तो मुश्किल से ही पार होगा।

१८०० या देवी घोला भगत तारया है।
इस देवी ने बहुत से भक्तों का उद्धार कर दिया है।
किसी अनुभवी या किसी चुलबुल के सम्बन्ध में प्रयुक्त उक्ति।

१८०१ या बटी अर यो डायजो।
जब देने के लिए परिमित धन हो तब कहते हैं मेरे पास तो यह लड़की है और यह दहेज है देने के लिए। बस!

१८०२ यार में आपको यारी स ही काम।
यार को तो अपनी यारी से ही काम है।

१८१९ राग रसोई पागड़ी कदे कद बण ज्याय ।
राग रसोई और पगड़ी ये कभी-कभी ही ठीक बन पाती हैं ।

१८२० राजा भलो न पिरायो ।
न राजा भला है न पिराया अर्थात् दोनों इकसार हैं ।
मि० राई भलो न काली चोपू रोड कपली ।

१८२१ राजा करै सो न्याव पासो पड़ै सो दाव ।
(स्पष्ट है)

१८२२ राजा क घर मोतियां की के कमी है ?
राजा के घर में मोतियों की क्या कमी है ?

१८२३ राजा कै सोनै का पागड़ा ? म्हूं आज कै दिन तो चाहीं गुड़ का करास्यो ।
किसी ने कहा राजा के यहाँ सोने के पावड़े हैं । किसी भोली-भाली स्त्री ने कहा आज तो यदि वह चाहे तो सोने के ही क्या गुड़ के पावड़े करवा सकता है ।
उक्त स्त्री की दृष्टि में गुड़ जैसी बहुमूल्य वस्तु संसार में अन्य कोई नहीं ।

१८२४ राजा गढ़ां में जोगी मठां में ।
राजा किलों में और जोगी मठों में शोभित होते हैं ।

१८२५ राजा जोगी अगन जल इन की उलटी रीत ।
डरता रहियो परसराम ये थोड़ी पालै प्रीत ।
(स्पष्ट)
मि० नदीना च नखीना च शृंगिणां शस्त्रपाणिनां
विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ।

१८२६ राजा बांधै दल बैद बांधै मल ।
राजा दल को बांधता है और वैद्य मल को ।

१८२७ राजा मान्या सो मानवी मेहां मानी धरती ।
राजा जिनको मानते हैं जिनका सम्मान करते हैं वे ही मान्य हैं । वर्षा की जिस पर कृपा है वही वस्तुतः धरती है ।

१८२८ राजा राज पिरजा चैन ।
अर्थ० राजा के राज्य में प्रजा चैन की बंसी बजाती है ।

१८२९ राजा रूसै तो आपको गांव राखै ।
राजा रुष्ट हो जाय तो अपना गाँव रखे ।
किसी आत्माभिमानी की उक्ति है ।

१८३० राज सल्ला को पीसो पल्ला को।

राज्य सलाह से और पैसा परस्पर सहयोग से होता है।

१८३१ राड करै सो बोल माडो।

जो लड़ाई मोल लेना चाहता है वह ऊटपटांग बोलने लगता है।

१८३२ राड को घर हांसो रोग को घर खांसो।

हँसी-हँसी में लड़ाई-झगड़ा हो जाता है। खांसी सब रोगों की जड़ है।

१८३३ राड सैं बाड़ भली।

लड़ाई की अपेक्षा अलग-अलग हो जाना अच्छा है।

१८३४ राणी नै काणी मत कही।

रानी को कानी मत कहो।

१८३५ रात अंधेरी मा बटोलवारो।

अंधेरी रात में कोई देखने वाला नहीं इसलिए माँ अपने लड़के को बेगटके खूब खिलाती है।

जहाँ छीने में सुगमता हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

१८३६ रात आगै ऊँबार कानो।

रात के आगे घर नहीं है।

१८३७ रात की नींद गई दिन की भूख गई।

चिन्ता के कारण रात को नींद नहीं आती दिन को भूख नहीं लगती।

मि० निसि न नींद नहिं बासर भूखा (तुलसीदास)

१८३८ रात च्यानणी बात आंख्यां देखी मानणी।

रात तो चांदनी रात ही है आँखों-देखी बात पर ही विश्वास करना चाहिए।

१८३९ रात मैं रातूंधो दिन में सूझै ई कोन्या।

रात को रतौंधी और दिन में दिखलाई ही नहीं पड़ता।

१८४० रात की कोई जमात को सो।

कोई जमात के माल को चोरी करके रात को ले जा रहा था। संयोग से वह पकड़ लिया गया जिस पर यह उक्ति है।

१८४१ राबड़ी को नांव गुलसप्पा।

जब एक शब्द के पर्याय के रूप में दूसरे कठिन शब्द का प्रयोग करते हैं, तब इस प्रकार की उक्ति का प्रयोग होता है।

१८४२ राबड़ी की कढ़ी भली पानी न राबो।

जब छोटा मनुष्य भी नखरे दिखलाता है, तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

१८८३ राबड़ी में गुण होता तो ब्याह में ना रांधता।
राबड़ी में यदि गुण होते तो विवाह में ही उसको न रांधते ! सच तो यह है कि राबड़ी गरीबों का पेय पदार्थ है।

१८८४ राबड़ी में राख रांधै चून चाटै पीसती।
देखो रै या फूड़ रांड, चालै पल्ला घींसती।
फूहड़ स्त्री राबड़ी के साथ-साथ राख रांध देती है, आटा पीसते समय चून चाटती रहती है और चलते समय पल्ला घसीटते हुए चलती है।

१८८५ राम कह कर रहीम के कहूं ?
जब राम कह दिया तो फिर रहीम क्या कहना ?
राम और रहीम तो एक ही है।

१८८६ राम को नाम पर बेड़ो है।
समुद्र में तूफान के समय जहाजी बेड़े का पार लगना भगवान की दया पर निर्भर है।

१८८७ राम रै घर को राम नै ही बेरो।
भगवान् के घर का किसी को पता नहीं।

१८८८ राम को अर राज को सिर ऊपर रो पैलो है।
परमात्मा और राजा सर्वशक्तिमान हैं।

१८८९ रामजी ऊपर बैठ्यो देखै है।
भगवान् ऊपर से सभी के भले-बुरे कर्मों को देख रहे हैं। इसलिए मनुष्य को यह समझ कर कि कोई हमें नहीं देखता कुकर्म नहीं करना चाहिए।

१८९० रामजी को नाम लेवा मिसरी अर काजू अर मूंग गिरी।
भगवान का नाम लेने से मेवे-मिसरी मिलते रहते हैं अर्थात् मनुष्य हमेशा आनन्द मनाता रहता है।

१८९१ राम झरोखै बैठ कर, सबका मुजरा लेय।
जैसी देखै चाकरी तैसा ही भर देय।*
झरोखे में बैठ कर राम सबका अभिवादन स्वीकार करते हैं, वे जैसी चाकरी देखते हैं उसके अनुसार ही सबको देते हैं।

*राम झरोखे बैठ कर सबको मुजरो लेत।
जैसी जाकी चाकरी तैसो ही भर देत॥

२८५२ राम देवे तो बाड़ में ही देवे ।

भगवान् जब देना चाहता है तब वह चाहे जिस मार्ग से दे सकता है ।
जब किसी को एक स्थान में धन मिल जाता है जहां मिलने की स्वप्न में भी आशा नहीं थी तब इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं ।

२८५३ रामदेवजी नै मिल्या सका ढेढ ही ढेढ ।

रामदेवजी को सबके सब चमार ही मिले । रामदेवजी के पुजारी भी चमार ही होते हैं ।

रू० रामदेवजी नै मिल्या सका कामड़िया ही कामड़िया ।

२८५४ राम धणी के गांव धणी ।

अनाथ का रक्षक या तो भगवान् है या गांव है जिसमें वह रहता है ।

२८५५ राम नै लंका लूट्यां ही जुग बीतग्या ।

राम को लंका लूटे ही युग बीत गये ।

२८५६ राम राम चौधरी सलाम मियांजी ।

पगे लागूं पंडिया डंडौत बाबाजी ।

चौधरी का राम राम किया जाता है मियां से सलाम करते हैं पंडित को "पा लागूं" (पैर पड़ता हूँ) कहते हैं और बाबाजी से दण्डवत् की जाती है ।

२८५७ राम रूसणो बुरो ।

भगवान् का रुष्ट होना बुरा है ।

२८५८ रामू कह्यो भावैं उजाड़ कह्यो ।

रामू उजाड़ का मूर्त रूप है रामू कहो या उजाड़ कहो एक ही बात है ।

२८५९ राजरी घोड़ी बावला हसवार ।

राज्य की या राज चलने वाली घोड़ी है और सवार है पागल । यह बेड़ा कैसे पार हो ?

२८६० राजरो तेल पल्लै में ही चोखो ।

राज्य का तेल तो पल्ले में भी अच्छा । यद्यपि तेल से पल्ला चिकना होता है किन्तु तो भी राज्य में आना-जाना होने से भविष्य में अधिक लाभ की ही सम्भावना रहती है ।

२८६१ राम पुराणी बाजरो मीठक बाल सेवार ।

इण्डक दुरण्ड मोठिया, कीड़ी बाल मेवार ।

बाजरा बोते समय उतना ही अन्तर रहना चाहिए जितना 'रास' और 'पुराणी' में रहता है। बैलों के बंधी हुई उस रस्सी को जिसे हल चलाने वाला थामे रहता है 'रास' कहते हैं तथा हाथ-डेढ़-हाथ की बैल हांकने की लकड़ी को 'पुराणी' कहते हैं। एक मण्डूक-प्लुति और दूसरी में जितनी दूरी होती है उतनी दूरी पर ज्वार बोना चाहिए। मोठ एक-एक, दो-दो करके बोना चाहिए और ज्वार की बीज्यों की पद्धति पर बिलकुल पास-पास बोना चाहिए।

१८९२ रिपिया तेरो रात हुवो नर जलम्यो नहीं।
जे जलम्या दो च्यार, तो जुग में जीया नहीं॥
हे रुपये! जिस रात तुम पैदा हुए, उस रात कोई भी पैदा नहीं हुआ क्योंकि तुम जैसा इस संसार में कहीं कोई दिखलाई ही नहीं पड़ता। यदि कदाचित् दो-चार पैदा हुए हों तो वे जीवित नहीं रहे क्योंकि यदि वे जीवित रहते तो देखने में तो आते?
रूपान्तर — जाया तेरो रात हुवो नर जलम्यो नहीं।
जे जलम्या दो च्यार, तो जुग में जीया नहीं॥

१८९३ रिपियो हाथ को मैल है।
रुपया हाथ का मैल है। उसे अच्छे कामों में अवश्य व्यय करना चाहिए।

१८९४ रूखां चूखां नर मूंवां, जाड़ो कोनी लागै।
जिन पशुओं की पीठ पर बाल होते हैं उनको जाड़ा नहीं सताता। अग्नि के पास जाड़ा नहीं लगता। मृतक को जाड़े से कोई भय नहीं लगता।

१८९५ रूप का रूड़ा रोहीड़ै का फूल।
रोहीड़े के फूल देखने में ही सुन्दर होते हैं।
तु० दिखऊआ ई सोवणा रोहीड़ै का फूल।

१८९६ रूप की पणिहारी पाणी भरवा जाय।
रूपवती स्त्री पानी भरने जाती है और कुरूप स्त्री अपने भाग्य के बल पर मौज करती है।

१८९७ रूप की रोवै करम का खाय।
रूपवती स्त्री भी दुखी रहती है किन्तु कुरूप स्त्री भी यदि भाग्यशालिनी हो तो उसे भोजन की कमी नहीं रहती।

१८९८ रेवड़ में कुण मरी? बाली! कह बाकी भेड्यां सूं भी बुरी।

किसी ने पूछा "रेवड़ में कौन गया ?" उत्तर मिला "बाबा !" तब पूछने वाले ने कहा कि बाबा तो भेड़िये से भी बुरा है।
बाबा के मांसाहारी होने से ऐसा कहा गया है।
मि० रेवड़ में बाबो हुं तो भिमायरा से भी बुरो।

२८६९ रोगी नै रात अर भोगी नै दिन करड़ो नीसरै।
रोगी को रात और भोगी को दिन बड़ी मुश्किल से कटता है।
रात के समय रोग का प्रकोप बढ़ जाता है।

२८७० रोह में रोवण चोखो न खोह में पावण जीमो न।
यह सर्वथा निकम्मा है।

२८७१ रोटी खाई रोटी के पतली के मोटी।
किसी ने दूसरी स्त्री को कुछ रोटियाँ उधार दीं। जब वह लौटाने लगी तो रोटी उधार देने वाली ने कहा "मेरी रोटियाँ बड़ी-बड़ी थीं।" उत्तर में कहा गया "रोटियों में क्या पतली और क्या मोटी ?"

२८७२ रोतो जाय अर मारतो जाय।
दूसरे को मारता भी जाता है और स्वयं रोता भी जाता है।
मि० मारै बराबर, रोवै अगाऊ।

२८७३ रोयां बिना मा ही बोबो कोनी दे।
बिना रोये बच्चे को मा भी स्तनों का दूध नहीं पिलाती।

२८७४ रोयां राबड़ी कुण घालै ?
केवल रोने से कुछ नहीं होता। परिश्रम करने से ही कुछ मिलता है।

२८७५ रोवतो जाय मुवै की खबर ल्यावै।
जो रोता हुआ जाता है वह मरे हुए की खबर लाता है।
कार्य करने से पहले ही जो आना-कानी करे उससे काम पूरे होने की आशा नहीं।

ल

२८७६ लंका में किसा बावना कोनी बसै ?
लंका में क्या बौने नहीं रहते ?

२८७७ लंका में सै बावन हाथ का।
जहाँ पर सभी चतुर हों वहाँ दम शक्ति का प्रभाव होता है।

२८७८ संपत न मावसी चोखो।
भगवान से तो रुपयो ही अच्छो।

१८७९ सवाय लखेसरी का करम भिखारी का।
स्वांग तो है लखपति के-से और कर्म हैं भिखारी के-से।

१८८० लजवन्ती घर में बड़ी फूहड़ जाणै मेरे सें डरी।
कोई फूहड़ स्त्री किसी लज्जावती स्त्री को बुरा-भला कहने लगी। फूहड़ की बातों का जवाब न देकर वह चुपचाप अपने घर में घुस गई। तब फूहड़ ने समझा कि मुझसे डर कर उसने ऐसा किया। वास्तव में अपनी मान मर्यादा की रक्षा के लिए ही वह घर में प्रविष्ट हुई।

१८८१ लड़णिया ई लड़ा मरै है।
जो लड़ने वाले होते हैं वे ही मारे जाते हैं।

१८८२ लफोड़ा ही खर्चे।
जो खर्च कर चुके वही खर्च करना जानते हैं।

१८८३ लरड़ी पर ऊन कुण छोडै है?
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है?

१८८४ लांबी बां दूर ताई पसरै।
लम्बी भुजा दूर तक फैलती है।

१८८५ ला कोई बीरल ऐसा नर, पीर बबरची भिस्ती खर।
बाह्मण के सम्बन्ध में उक्ति है जो बड़ी लोक-प्रचलित और प्रसिद्ध है।

१८८६ लाखां पर लेखो क्रोड़ां पर कलम।
यह बड़ा धनी घराना है। यहाँ लाखों का हिसाब-किताब होता है। करोड़ों पर कलम चलती है।

१८८७ लाग लागै पीड़।
आत्मीय के आहत होने पर आत्मीय को ही दुख होता है।

१८८८ लागै जकै लागै।
जिसके चोट लगती है वही चोट की पीड़ा सहता है।

१८८९ लागो तो तीर नहीं तुक्को ही सही।
यदि लग गया तो तीर, नहीं तुक्का ही सही।

१८९० लागतां'ई भाग्यो।
कायर के सम्बन्ध में उक्ति। मार पड़ते ही भग गया।

१९९१ लाज तो आंख्यां की होय है।
लज्जा तो आँखों की ही होती है।

१८९२ लाठी टूटै न भांडो फूटै।

इस तरह कार्य किया जाय कि न तो लाठी टूटे और न बरतन ही फूटे।

१८९३ लाडू की कोर चाहे जठे ही मीठी।
प्रकृति के मधुर पुरुष सब तरह मधुर होते हैं।

१८९४ लाडू फूटै जठै तो भोरा किरै ही।
जहाँ लड्डू फूटते हैं वहाँ लड्डू के छोटे-छोटे टुकड़े बिखरते ही हैं। धनवानों में जहाँ सबर्च होता है वहाँ दूसरों का कुछ लाभ होता ही है।

१८९५ लातां का देव बातां सै कोनी मानै।
लातों का देव बातों से नहीं मानता अर्थात् जो समझाने-बुझाने से किसी की बात नहीं मानता, पिटने से ही उसकी अक्ल ठिकाने आती है।

१८९६ लालचा को ओड़ कोनी।
लालच का अन्त नहीं।

१८९७ लाम को बैर काम को बैर है।
जल्दी करने से काम बिगड़ जाता है।

१८९८ लाय लाग्यां किमो कूवो खुदै ?
आग लगने पर कहीं कुआँ खुदता है ?

*१८९९ लालाजी करी ग्यारस अर आ बारस की पारी।
लालाजी ने एक एकादशी की तो बारस की भी हारने की अर्थात् वे जितना बारस के दिन भोजन करते हैं उससे अधिक उन्होंने फलाहार आदि में एकादशी के दिन सफाट उड़ाया।

१९०० लिख्यो है ललाट लेख टळै नैं नहीं मीन-मेख।
जो ललाट की रेखाओं में लिखा हुआ है उसमें तनिक भी कमी नहीं हो सकती।

१९०१ लिछमी आई कठै हो गई।
लक्ष्मी जैसे आई वैसे ही चली गई।

१९०२ लिछमी कठै आकर राजी हुई।
लक्ष्मी ने भी कहीं कृपा की है ? लक्ष्मी ने भी कहीं आकर आश्रय दिया है ?
लक्ष्मी के कंजूस के यहाँ जाने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है।

१९०३ लीर भी सात सौ हाथों की लाव लिखो पैर सी मर ज्याव।
आश्रय भी लेना हो तो बड़े का ले, खुशामद भी करे तो किसी बड़े की करे जिससे सब तरह इच्छाओं की पूर्ति हो।

१९०४ लीप्यो पोत्यो आंगणूं पहरी-ओढ़ी नार।
लिपा-पुता आंगन और पहनी-ओढ़ी स्त्री सुन्दर लगती है।

१९०५ लुगाई के पेट में टाबर बारा म्हाय पण बात कोनी खटावे।
स्त्री के पेट में बच्चा समाया रहता है किन्तु बात नहीं ठहर पाती।

१९०६ लुगाई को न्हाणू, मरद को खाणूं।
स्त्री को स्नान और पुरुष को भोजन अच्छी करना चाहिए।

१९०७ लुगाई की कमाई मोट्यार खाय तो डाढ़ि को तिल उतर ज्याय।
स्त्री की कमाई पर यदि पुरुष अपना जीवन बसर करे तो चाहे शेर के समान भी उसका उग्र स्वभाव हो उसकी उग्रता जाती रहती है।

१९०८ लूंगा लड़पी बोल, उतरे चोथे मास।
एक लोमड़ी किसी जलाशय पर पानी पीने गई। गीदड़ को वहाँ बैठे देख कर बोली " शृगाल मामा मुझे पानी पीने की इजाजत दो।" शृगाल ने कहा " पहले मुझे एक साखी सुनाओ फिर निर्भय होकर पानी पी सकती हो।" लोमड़ी ने शृगाल की प्रशंसा में कहा " रूपै की तेरी चूंतरी सोनै जाली है। काना में तेरे गोखरू जाणे राजा बैठ्यो है।" अर्थात् तुम्हारा चबूतरा चाँदी का बना हुआ है जिस पर सोना जड़ दिया गया है। तुम्हारे कानों में गोखरू है जिनसे तुम ऐसे जान पड़ते हो मानो कोई राजा बैठा हुआ हो। इस साखी को सुन कर गीदड़ बहुत प्रसन्न हुआ। जब भरपेट पानी पीकर लोमड़ी चलने लगी तब गीदड़ ने उसे दूसरी साखी सुनाने के लिए कहा। लोमड़ी को शरारत सूझी और बोल उठी " माटी की तेरी चूंतरी गोबर डाली है काना में तेरे खूंसड़ा जाणै ढेड बैठ्यो है।" अर्थात् मिट्टी का तेरा चबूतरा है जिस पर गोबर बिखरा हुआ है। कानों में फटे-पुराने जूते हैं। तुम चमार-से लगते हो।

गीदड़ बड़ा रुष्ट हुआ। लोमड़ी भगी और गीदड़ उसके पीछे-पीछे चला। लोमड़ी एक बांस के पेड़ पर चढ़ गई। उस समय की उक्ति है। तब गीदड़ ने कहा "चालड़ मारी पातली में बढ़ क्यों झाकसी।" चालाक लोमड़ी ने गीदड़ को चकमा देने की युक्ति सोची। उसने कहा "ओ मामा! काली कामल कड़ा बणा ऐ कुण आवै च्यार जणा।" अर्थात् देखो मामा! ये कौन चार चले आ रहे हैं काली कम्बल ओढ़े हैं साथ में बहुत से शिकारी कुत्ते हैं। गीदड़ लोमड़ी की धमकी में आ गया और डर कर भग गया। इस प्रकार लोमड़ी की युक्ति सफल हो गई।

२१०९ लूण फूट-फूट कर निकळै ।
जो नमकहराम होता है उसे बुरा फल मिलता है ।

२११० लूण बिना रसोई फूस ।
नमक के बिना भोजन का आनन्द फीका रह जाता है ।

२१११ लूला कर लार्यो । दो कणां पकड़्यो कहु आ के बात ? कहु आ चोखो नौर्य ।
एक लंगड़ी सिपाई का काम कर रही थी । दो उसे पकड़ हुए थे । लोगों ने कहा "यह क्या बात ?" उत्तर मिला "यह सिपाई का काम बहुत अच्छा करता है ।

२११२ ले पाड़ोसण झूंपड़ो नित उठ करती राड़ ।
आधो अमड़ बुहारतो थारो हो बुहार ॥
हे पड़ोसिन ! तुम सदा मुझसे झगड़ा किया करती थी अब रखो अपनी झोंपड़ी को । पहले जब मैं यहाँ थी तुम्हें आधा ही आँगन बुहारना पड़ता था अब मेरी अनुपस्थिति में सारा आँगन तुम्हें ही बुहारना होगा ।

२११३ ले ले करतां तो हाकम भी कोन्या लै ।
"ले ले" करने में तो हाकिम भी कुछ नहीं लेता ।

२११४ लोढा सिर सिल पूजै ।
यहाँ न्याय-अन्याय का कोई विचार नहीं है ।

२११५ लोहो लक्कड़ बामणो पहली किसा बखाण ।
बहू बछेरा छोकरा मोवड़ियां परवाण ॥
लोहा लकड़ी ब्राह्मण इनका पहले कुछ पता नहीं चलता । बहू घोड़े का बच्चा और लड़के इन सबका वयस्क होने पर ही पता चलता है ।

२११६ ल्याऊं लूण उधारो कोई गुड़ दे तो ।
गट-गट कर जाऊं-कोई बना दे तो ।
किसी फूहड़ की उक्ति है यदि कोई गुड़ दे दे तो आटा या नहीं ले उधार ही ले आऊं । यदि कोई बना दे तो खाऊं !!

२११७ ल्हसण भी खायो रोग भी को गयो ना ।
लहसुन भी खाया और रोग भी नहीं मिटा ।
मि० भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः ।

व

२११८ वह पौड़ी पर जौर का आसी बाकूं धाम ।
यह धर घोड़ो आसकी धर गोविन्द को नाम ॥

[illegible] जहाँ तुम्हें खाना-पान खाने के लिए मिला
[illegible] है वहीं भगवान् की आस कर।
[illegible] बालों का असमान।
[illegible] धरती और आसमान भी स्थिर नहीं रहने वाले हैं।
[illegible] जैसी कोठी नाज।
[illegible] मुसलमानी है जिसके नाज का भंडार भरा रहा है।
१९२१ दिया बलिता नेह गुण ये नहिं काम मिचन्त।
जो ही इनसे प्रेम कर साधू वै जिनवन्त।
(स्पष्ट है)
१९२२ वेश्या बरस घटावे कर जोगी बधावे। *
वेश्या से अगर उसकी अवस्था पूछी जाय तो वह अपने-आपको कम अवस्था वाली बतलाती है और योगी अपनी अवस्था अधिक बतलाता है।
१९२३ बैसुन्दर देवता सभी है जोकरो पण घर में लाग्यां बैरो घई।
अग्निदेव वैसे तो बहुत अच्छे हैं किन्तु घर में आग लग जाय तो पता चल जाय।

स

१९२४ संख भर खीर मदूली।
संख और खीर से भरा हुआ! फिर और क्या चाहिए!
१९२५ संजोग चौवती के बार लागे।
यदि दैववशात् कोई काम होता है तो उसके होने में देर नहीं लगती।
१९२६ संदेसां बिणज अर पर हाथां खेती।
समाचार सुनकर व्यापार किया जाय और दूसरों के भरोसे खेती छोड़ दी जाय तो कभी सफलता नहीं मिलती।
१९२७ संधारतां वार लागे, बिग' तो जावे।

१९१० सगलो गाँव लपूटै, कोई घाले कोई नटै।

सारे गाँव से भिक्षा की सामग्री जुटायी जाती है कहीं से भिक्षा मिलती है कहीं से नहीं मिलती है।

१९११ सगी कीजे जाण कर पाणी पीजे छाण कर।

सम्बन्ध सोच-समझ कर करना चाहिए, पानी छान कर पीना चाहिए।

१९१२ सगो समरथ कीजिये वख-तख आवै काज।

विवाहादि द्वारा समर्थ को अपना सम्बन्धी बनाना चाहिए, वह समय समय पर बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है।

१९१३ सत मत छोडो सूरमा सत छोड्याँ पत जाय।

सत की बाँधी लिछमी फेर मिलैगी आय॥

हे शूरमा! सत् की रक्षा करो सत् के चले जाने से प्रतिष्ठा चली जाती है। सत् से बँधी हुई लक्ष्मी फिर आकर मिल जायगी।

१९१४ सदा दिवाली सन्त के आठौं पहर अनन्द।

सन्त के लिए हमेशा दिवाली रहती है वह आठों पहर आनन्द के लोक में विचरण करता है।

१९१५ सदा न जुग में जीवणा, सदा न काला केस।

हमेशा संसार में जीना नहीं होता और यौवन भी सदा स्थिर नहीं रहता। सत्कर्म की ओर प्रेरित करने वाली उक्ति।

१९१६ सदा न बरसै बादळी, सदा न सावण होय।

सदा ही वर्षा नहीं होती सदा ही सावन नहीं होता अर्थात् अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

१९१७ सदा भवानी दाहनी सन्मुख होय गणेश।

पाँच देव रिच्छा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥

(स्पष्ट है)

१९१८ सदा ही इकसार दिन कोनी रैवै।

सदा ही एकसार दिन नहीं रहते।

इस कहावत का आशय यह है 'सदा न रहै' जिस पर निम्नलिखित कहानी कही जाती है—

एक सेठ था जिसके पास बहुत धन था। उसका यह नियम था कि जो भी वस्तु उस शहर में बिकने को आती थी वह अगर बिक जाती तब तो

हे जोड़ी! यह घर और—या यहाँ तुम्हें खाना-खास खाने के लिए मिला करता था यह मेरा घर है यहाँ भगवान् की आस कर।

१९१९ डगै डागी धरतड़ी डगै ला असमान।
निश्चय ही धरती और आसमान भी स्थिर नहीं रहने वाले हैं।

१९२० वा ही नार सुलखणी जैंकी कोठी धान।
वह स्त्री सुलक्षणी है जिसके अन्न का भंडार भरा रहता है।

१९२१ विद्या वनिता बेल नृप ये नहिं जात गिनन्त।
जो ही इनसे प्रेम करै तासू कै लिपटन्त।

(स्पष्ट है)

१९२२ वेस्या बरस घटावै जर जोगी बधावै।*
वेश्या से अगर उसकी अवस्था पूछी जाय तो वह अपने-आपकी कम अवस्था वाली बतलाती है और योगी अपनी अवस्था अधिक बतलाता है।

१९२३ वैसुन्दर देवता घणो ई चोखो पण घर में लाग्यां चेटो पड़ै।
अग्निदेव वैसे तो बहुत अच्छे हैं किन्तु घर में आग लग जाय तो पता चल जाय।

स

१९२४ संख भर खीर भर्‌यो।
शंख और खीर से भरा हुआ! फिर और क्या चाहिए!

१९२५ संजोग मीलतां के बार लाग।
यदि दैववशात् कोई काम होता है तो उसके होने में देर नहीं लगती।

१९२६ सविस्तां विणज अर पर हाथां खेती।
समाचार भुगता कर व्यापार किया जाय और दूसरों के भरोसे खेती छोड़ दी जाय तो कभी सफलता नहीं मिलती।

१९२७ संवारतां बार लागै बिगाड़तां कोनी लागै।
किसी वस्तु को सुधारते देर लगती है बिगाड़ते देर नहीं लगती।

१९२८ सक्करखोरा नै सक्करखोरो तो कोस की ऊंचाई का कर, भी मिल ज्याय।
मि हसै में कितो मिल ही ज्याय।
जैसे को तैसा मिल ही जाता है।

१९२९ सबजै गुण की पूछ है।
सभी जगह गुणों का आदर होता है।

---

*वेश्या उमर घटात है जोगी उमर बढ़ात।

१९१० सगलो गांव कहूवै कोई घालै कोई मटटै।
सारे गांव में भिक्षा की सामग्री घुमायी जाती है कहीं से भिक्षा मिलती है कहीं से नहीं मिलती है।

१९११ सगी कीजे जाण कर पाणी पीजे छाण कर।
सम्बन्ध सोच-समझ कर करना चाहिए, पानी छान कर पीना चाहिए।

१९१२ सगो सुमरथ कीजिये बखत पड़ै आवै काम।
विवाहादि द्वारा समर्थ को अपना सम्बन्धी बनाना चाहिए, वह समय समय पर बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है।

१९१३ सत मत छोड़ो सूरमा सत छोड्यां पत जाय।
सत की बांधी लिछमी फेर मिलैगी आय।।
हे सूरमा! सत् की रक्षा करो सत् के नष्ट होने से प्रतिष्ठा चली जाती है। सत् से बँधी हुई लक्ष्मी फिर आकर मिल जायगी।

१९१४ सदा दिवाली सन्त के आठों पहर आनन्द।
सन्त के लिए हमेशा दिवाली रहती है वह आठों पहर आनन्द के साथ में विचरण करता है।

१९१५ सदा न जुग में जीवणा सदा न काला केस।
हमेशा संसार में जीना नहीं होता और यौवन भी सदा स्थिर नहीं रहता। सत्कर्म की ओर प्रेरित करने वाली उक्ति।

१९१६ सदा न बरसै बादली, सदा न सावण होय।
सदा ही वर्षा नहीं होती सदा ही सावन नहीं होता अर्थात् अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

१९१७ सदा भवानी दाहिणी सम्मुख होय गणेश।
पांच देव रिच्छा करें ब्रह्मा विष्णु महेश।।
(स्पष्ट है)

१९१८ सदा ही इकसार दिन कोनी रवै।
सदा ही इकसार दिन नहीं रहते।
इस कहावत का आशय है सदा न रहैं जिस पर निम्नलिखित कहानी कही जाती है—
एक सेठ था जिसके पास बहुत धन था। उसका यह नियम था कि जो भी वस्तु उस शहर में बिकने को आती थी वह अगर बिक जाती तब तो

ठीक नहीं तो उसे वह खरीद लेता था। एक दिन एक आदमी कागज का एक छोटा-सा टुकड़ा लेकर आया और उसकी कीमत के एक लाख रुपये चाहे। कौन लेता ? शाम हो गई। किन्तु जब वह लौटने लगा तो किसी ने उसे सेठ का नाम और उसका नियम बता दिया। वह आदमी सेठ के पास गया और सेठ ने एक लाख रुपये देकर वह कागज खरीद लिया और अपनी पगड़ी के पल्ले बाँध लिया। संयोग की बात कि समुद्र में भारी तूफान आया जिससे सेठ का सारा बेड़ा डूब गया और कुछ ही दिनों में वह दिवालिया हो गया। राज्य का कर का रुपया भी उसमें बाकी रह गया था इसलिए उसको जेल जाना पड़ा। एक दिन जेल में बैठा हुआ वह अपनी पगड़ी का बल निकाल कर उसे सीधी कर रहा था तभी कागज बँधी हुई गाँठ उसके हाथ में आ गई। गाँठ खोल कर क्या देखता है कि उस कागज के टुकड़े पर लिखा हुआ है 'सदा न रहे'। यह पढ़ कर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसके मन में बड़ी हिम्मत आ गई। सारी निराशा दूर हो गई और उसे यह सोच कर जोरों की हँसी आ गई कि अगर वे दिन नहीं रहे तो ये दिन भी सदा नहीं रहेंगे।* जेल के पहरेदारों ने जाकर राजा को खबर दी कि अमुक सेठ जो सदा उदास रहा करता था आज बहुत खुश नजर आ रहा है और खूब हँस रहा है। राजा ने सेठ को बुला कर पूछा तो उसने आद्योपान्त सारी कथा कह सुनायी और साथ ही यह भी कहा कि न मेरे वे दिन रहे और न ये दिन रहने वाले हैं और न तुम्हारा राज्य ही सदा रहने वाला है। राजा को ज्ञान प्राप्त हो गया और उसने सेठ को गुरु-भाव से स्वीकार कर लिया। सेठ के दिन फिरे। फिर वह धनवान हो गया और साथ ही उसे ज्ञान की उपलब्धि भी हो गई।

१९३९ सपूत की कमाई में से की सीर।
सपूत की कमाई में बहुत दूर के सम्बन्धियों का भी हिस्सा रहता है क्योंकि सपूत बाँट कर खाता है।
तु० सपूत की सौ पीढ़ी सीर।

१९४० सपूत तो पाड़ोसी को भी चोखो।
सपूत तो पड़ोसी का भी अच्छा है।

१९४१ सब कोई सुखडी खावण का सीरी है।

*If winter comes, can spring be far behind ? (shelly)

सब भुकते पलड़े के साथी हैं अर्थात् सब धनवान् के साथी हैं।

१९४२ सब आप आपरै भाग को खाय है।
सब अपने-अपने भाग्य की खाते हैं।

१९४३ सब आप आपको काढ्यो पाणी पीवै है।
सब अपने हाथ से निकाला हुआ पानी पीते हैं अर्थात् सब अपने-अपने परिश्रम की कमाई खाते हैं।

१९४४ सबकी सग्गा सांझ।
सांझ सबकी माता है।

१९४५ सबसूं हिलमिल चालिये नदी नाव संजोग।*
सबसे हिल-मिल कर चलना चाहिए। नदी-नाव के संयोग की तरह लोगों का संसार में मिलना होता है।

१९४६ समझणहार सुजाण नर औसर चूकै नहीं।
औसर को अहसाण, रहै घणा दिन राजिया।।
समझदार मौका नहीं चूकता। मौके पर किया हुआ एहसान बहुत दिनों तक याद रहता है।

१९४७ समदर को के सूकै ?
समुद्र का क्या सूखे ?
मि० समदर सूकै तो भी गोडां तांई पाणी रैवै।
समुद्र यदि सूख भी जाता है तो भी घुटनों तक तो पानी रहता ही है। धनवान् यदि गरीब हो जाता है तो भी सामान्य निर्धन की अपेक्षा बहुत अधिक धनी होता है।

१९४८ सब सियाळी, पोकर न्हाण।
सियाली और पुष्कर का स्नान समय पर ही आते हैं।

१९४९ सरीर के रोगी को दवा है मन के रोगी की कोनी।
शरीर के रोगी की दवा की जा सकती है किन्तु मन के रोगी की नहीं।

---

*पूरा दोहा इस प्रकार है—
तुलसी या संसार में भांत भांत का लोग।
सबसूं हिलमिल चालिये नदी नाव संजोग।।
अथवा
तुलसी या संसार में सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस वेश में नारायण मिल जाय।।

२९५० सलाम ताईं मियां नै क्यूं सतायो ।
सलाम के लिए मियां को क्यों कष्ट किया ?

२९५१ साईं हाथ कतरणी, राखैगो धनमाल ।
परमात्मा सभी को कर्मानुसार देता है ।

२९५२ सांकड़ी गली अर मारणा बलद ।
एक तो गली ही तंग है फिर बैल भी ऐसे मिल गए जो मारने वाले हैं— *अर्थात् ऐसी विपत्ति जिससे बचने का रास्ता मुश्किल हो ।*

२९५३ सांगर फोग थळी को मेवो ।
रेगिस्तान वालों के लिए तो सांगर और फोग जैसी वस्तुएं ही मेवे का काम देती है ।

२९५४ सांच कहूं तो मावड़ी झूठ कहूं तो लोग ।
खारी लागी मावड़ी, मीठा लाग्या लोग ।।
माता का कहना सत्य निकला अन्य लोग झूठ बोल रहे थे किन्तु उस समय कानों के शब्द मधुर जान पड़े और माता के शब्द कटु प्रतीत हुए ।

२९५५ सांच नै आंच कोन्या ।
(स्पष्ट)
मि० सांच नै तराप कोनी ।

२९५६ सांची कह्यां लाय उठै ।
सत्य बात कह देने से सुनने वाला झल्ला उठता है ।

२९५७ सांप की रोग झाड़ूलो काडै ।
मान्त्री ही सर्प के विष को दूर करता है ।

२९५८ सांप कै बीलतै को के बडो अर के छोटो ?
सांप के बच्चे का क्या बड़ा और क्या छोटा ? अर्थात् दुष्ट का क्या छोटा, क्या बड़ा । वह हानि पहुंचाने वाला होता है ।

२९५९ सांप कै मावसियां को के साख ?
दुष्ट किसी का लिहाज नहीं करता ।

२९६० सांप को खायोड़ो बीछूड़ा से के डरै ?
जो बड़े कष्टों को सह चुका है वह छोटे कष्टों से क्या डरे !

२९६१ सांप-छछूंदर हाली हो रही है ।
सांप-छछूंदर की गति हो गई है ।

१९६२ सांप चालती मौत है।
साँप चलती हुई मृत्यु है।

१९६३ सांप भी मर ज्याव और लाठी भी न टूटै।
काम भी हो जाय और अपना नुकसान भी न हो।

१९६४ सांप सगळै टेढो मेढो चालै पण बिल में बड़ै जद सीधो हो ज्याय।*
साँप सभी जगह टेढ़ा-मेढ़ा चलता है किन्तु बिल में प्रवेश करते समय सीधा हो जाता है।
दुष्ट आदमी गाँव में कितना भी छल-छिद्र करे किन्तु घर में आकर तो सही बात बतानी ही चाहिए।

• १९६५ सांप सळीड्या सदा ई देख्या अजगर आयो अबकै।
छोटे-मोटे साँप तो सदा ही देखे किन्तु अजगर से साक्षात्कार तो इस बार ही हुआ।
साधारण दुष्ट तो पहले भी देखे हैं परन्तु ऐसे भयंकर दुष्ट से इस बार ही पाला पड़ा है।

१९६६ सांपां का ब्या में कीड्यां की लपालप।
साँपों के विवाह में चींटियों की ही लपालप होती है। जहाँ कुछ मिलने की उम्मीद न हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है।
मि० सांपां के ब्या में जीभड़ा लपकारा।

१९६७ सांपां कै किसा सगा ?
दुर्जन मनुष्य मित्रों का भी लिहाज नहीं करता।

१९६८ सांपां कै डर गूगो ध्यावै।
साँपों के डर से गूगे का ध्यान करता है।

१९६९ सांस जद तक आस।
जब तक साँस है तब तक जीने की आशा बनी रहती है।

१९७० सांसी कै क्यांको दिवालो ?
साँसी माँगने वाली जाति है उसके क्या दिवाला ?

१९७१ सांसी साह सरावगी श्रीमाल सुनार।
ये सस्सा पांचूं बुरा पहले करो बिचार॥
साँसी, साह, सरावगी, श्रीमाल और सुनार ये पाँच सकार बुरे हैं। इनसे सोच-समझ कर व्यवहार करना चाहिए।

---

*सांप बी बिल में तो सीधो होकर बड़ै।

१९७२ साची कही भाठा की दई ।

सच कहना ऐसा कथा मानों पत्थर को दे मारो हो अर्थात् सत्य कटु लगता है ।

१९७३ साजा बाजा केस गोड बंगाला वेस ।

बंगालियों के सजे-सजाये केश रहते हैं ।

१९७४ साठी बुध नाठी ।

जब मनुष्य साठ वर्ष की अवस्था में पहुंच जाता है, तो उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है ऐसा विश्वास लोग करते हैं ।

१९७५ सात वार नौ तिंवार ।

हिन्दुओं के यहां ७ वारों में नौ त्यौहार मनाये जाते हैं ।

१९७६ सात मामा को भाणजो भूखो रैग्यो ।

सात मामों का भानजा भूखा रह जाता है क्योंकि एक मामा सोचता है कि दूसरा मामा खिलायेगा और दूसरा मामा तीसरे का कर्तव्य समझ लेता है ।

१९७७ सातूं गैला मोकला थेरै जच्चै जठै जा ।

तुम्हारे लिए सातों रास्ते खुले पड़े हैं तुम जहां जाना चाहो, वहां जाओ ।

१९७८ साधवां के कसो सुवाद आवण दे मलाई सुणी है ।*

एक साधु था जो किसी घर से छाछ मांगने गया । बिलोने वाली स्त्री ने कहा कि छाछ अभी बिलोई नहीं है । तो साधु ने कहा कि मलाई युक्त बिना बिलोई ही छाछ दे दो हम साधुओं को स्वाद से क्या मतलब ?

भि माई अण बिलोयो ही नाखदे, साधवां के कसा सुवाद ?

१९७९ साधां की पातली ई चोखी ।

साधुओं की तो पतली ही अच्छी ।

१९८० साधु को धन सीर को ।

सज्जन का धन सभी के हिस्से में आता है क्योंकि वह बांट कर खाता है ।

१९८१ सापुरसां का जीवणा थोड़ा ही भला ।

अच्छे आदमियों का जीवन थोड़ा ही होता है ।

१९८२ सामर पड़ सो लूण ।

---

*भेद साधां कै किसा स्वाद अणबिलोयो ही सही ।

सांभर झील में जो पड़ा वही नमक हो गया। मरे हुए ऊँट भेड़ बकरी आदि उसमें गिर कर गल जाते हैं।

९८३ सारी दुनी ओगणी है नै आप आपरै पड़दै भीतर ढपाड़ी है।
सारा संसार अवगुण वाला है पर्दे के भीतर सभी ढके हैं।

९८४ सारी रामायण पढ़ ली सीता कुण की जू ?
सारी रामायण पढ़ गए और इस बात का पता न चला कि सीता किसकी स्त्री थी ?
मि० सारी रामायण सुण ली पण आ ठेरो कोनी पड्यो कै राक्षस राम हो क रावण।
सारी रामायण सुन ली पर इस बात का पता न चला कि राम राक्षस था या रावण ?

९८५ सालगजी का सालगजी गोफणियूं का गोफणियूं।
सालिग्रामजी का पत्थर दोनों काम आता है देवता का देवता है और गोफिया भी।

९८६ साली छोड़ सासुआं से ई मसखरी।
हँसी बराबर वालों से ही करनी चाहिए, बूढ़ों से नहीं।

९८७ सालै बिना कसो को सासरो ?
साले बिना कैसा ससुराल ?

९८८ सावण का आंधा नै हर्यो ई हर्यो दीसै।
सावन में जो अन्धा हो जाता है उसे प्रत्येक वस्तु हरी-ही-हरी दिखलाई पड़ती है।

९८९ सावण रा पंचक गाजै, नदी बहन्ता नीर।
यदि सावन के पंचकों में वर्षा हो जाय तो फिर आगे इतनी वर्षा होगी कि नदियों का जल मर्यादा छोड़ कर बहने लगेगा।

९९० सावण री छा कुत्तां नै कातिक की छा पूतां नै।
सावन की छाछ स्वास्थ्य के लिए खराब है इसलिए कुत्तों के लिए है और कातिक की छाछ अच्छी होती है इसलिए पुत्रों को देनी चाहिए।

९९१ सावण छाछ न घालती भर दीनाणी दूध।
पतड़ दिखाती गूजरी घर में मांदो पूत।।
वही ग्वालिन जो सावन की अत्यावश्यक छाछ तक के लिए भी न पूछती थी पुत्र के बीमार होने पर असाढ़ के महीने में सब गायों दूध बाँट देती

२००८ सिर भारी सरदार का, पग भारी मुरदार का।
सिर तो सरदार का भारी होता है और पैर दरिद्री के।

२००९ सिरी को टाबर तावड़ै बाळ पोड़ो ही चोखो।
साझेदार के लड़के को धूप में तपाना ही अच्छा है।

२०१० सिवारै न सिवारो कोली देख सकै।
धंधे की प्रतिस्पर्धा के कारण दर्जी को दर्जी नहीं देख सकता।
मि०—Two of a trade seldom go together

२०११ सिव सिव रटै संकट कटै।
जो "शिव शिव" रटता है उसका संकट दूर हो जाता है।

२०१२ सीर को बळद घास रे लाग्या, तूं भी चर, तेरा बरत्यां नै बुलाल्या।
मुफ्त की वस्तु का उपभोग करने में किसी का क्या लगता है?

२०१३ सीर को माल मसखरा खाय।
सेंतमेंत का माल मसखरे उड़ा जाते हैं।

२०१४ सीखकुस्यो घर ऊजड़ै सीखसुस्यो घर होय।
बुरी सीख से घर उजड़ जाता है अच्छी सीख से घर बस जाता है।

२०१५ सीतळा माता ! म्हनै घोड़ो दिये, कह, मैं ही गधे पर चढ़ूं हूं।
हे शीतला माता ! मुझे घोड़ा देना। उत्तर, मैं ही गधे की सवारी करती हूं।

२०१६ सीधी आंगळियां घी कोन्या नीकळै।
सीधी अंगुलियों से घी नहीं निकलता। सभी जगह नम्रता से काम नहीं चल सकता कड़ाई से ही कार्य सिद्ध होता है।

२०१७ सीधै घर दो बसै।
सीधे घर दो बसते हैं।

२०१८ सीर की होळी फूंकण की ही होय है।
साझेदारी का काम अच्छा नहीं होता।

२०१९ सीर सगाई चाकरी राजीपै को काम।
साझेदारी सगाई और नौकरी अपनी इच्छा का काम है जो चाहे तो करे, नहीं तो न करे।

२०२० सीळी हो सपूती हो, सात पूत की मा हो। कह रांडी, तेरी असीस नै भी तो बैठी ही हूं।
किसी नौ पुत्रों वाली माता को एक स्त्री ने आशीर्वाद दिया कि तुम सात

पुत्रों की माता बनो। उसने कहा कि अपने आशीर्वाद को रहने दे। मैं तो मैं पुत्रों की माता पहले से ही हूं।

मि० सीली हो, सपूती हो सात पूत की मा हो बूढ सुहागण हो बूढी न्हावो पूतां फलो।

यह बहू के लिए आशीर्वादात्मक उक्ति है शीलसम्पन्न और पुत्रवती हो सात पुत्रों की माँ हो वृद्धावस्था तक सौभाग्यशालिनी बनो दूध से नहाओ और पुत्रों से फलो-फूलो।

२०२१ सीसा सोना सुघड़ नर मधरा ही बोलन्त।
कांसी कस्ती कुमारग्या बिन छेड्या कूकन्त।।
सीसा सोना और सज्जन धीरे ही बोलते हैं। कांसी कसी और कुमार्गी बिना छेड़े ही कूकने लगते हैं।

२०२२ सुक्करवारी बादली, रहे सनीचर छाय।
सहदेव कहै हे भादली, बिन बरसी नहिं जाय।।
यदि शुक्रवार के दिन बादल छाकर शनिवार तक ज्यों के त्यों बने रहें तो वे अवश्य बरसेंगे।

२०२३ सुख की तो आधी भली दुख की भली न एक।
सुखपूर्वक मिले तो आधी भी अच्छी दुख की एक भी किस काम की?

२०२४ सुख सोवै कुम्हार की चोर न मटिया लेय। अथवा चोर न धणिया लेय।
कुम्हार की स्त्री सुख से सोती है क्योंकि चोर उसके मिट्टी के बर्तनों की चोरी नहीं करता।

२०२५ सुधर्यो काम बिगड़्यो नाहीं घी ढुल्यो मूंगां मांही।
घी बिखरा है तो मूंगों में ही इसलिए काम बिगड़ा नहीं बल्कि सुधरा है।

२०२६ सुरग को दरवाजो कुण देख्यो है?
स्वर्ग का द्वार किसने देखा है?

२०२७ सुलफो लड्डू संखियो, सुलफो और सराब।
सस्सा पांचू नेड़ है खोवै मूंड की आब।।
ऊपर की कहावत में कहे गये पांच सकार निकृष्ट बतलाये गये हैं।

२०२८ सुसरो बैद पूठोड़ लागी।
श्वसुर वैद्य है और बहू के नाजुक स्थान में चोट आई है।
अपना छिद्र छिपाना ही पड़ता है।

२०२ सुत्यां को तो पाडा ही जणै ।
दो भैसवालों की भैंसें एक साथ ब्याई। उनमें से एक भैंस वाला सोया हुआ
था और उसकी भैंस ने एक पाडी जनी। दूसरा मनुष्य जो जाग रहा था
और जिसकी भैंस ने पाडा जना था अपने पाडे को उसकी पाडी से चुपके
से बदल दिया और इस तरह पाडी का मालिक बन गया।
मि० १ सुत्यां के पाडा जनमे जागतां क पाडी ।
२ जो जागै सो पावै जो सोवै सो खोवै ।

२०१० सूदी छिनकली घणा चिनावर खाय ।
ऊपर से देखने में सीधा और अन्दर से कपटी अधिक नुकसान पहुँचाता
है ।

२ ११ सूना खेत सूनासना हिरणां चर चर जाय ।
सूने खेतों को हिरण चर जाते हैं ।

२ १२ सूने माथ बामण आछ्यो जोग्या ।
बिना सिर पर तिलक किये अगर ब्राह्मण मिल जाय तो अपशकुन समझा
जाता है ।

२०११ सूम के घर में धूम कयांकी ?
सूम के घर में कैसी धूम ?

२०१४ सूरज कुंड कर चांद जलेरी टूटा टीबा भरसी डेरी ।
यदि सूर्य के चारों ओर कुण्ड हो और वैसे ही चन्द्रमा के चारों ओर जलेरी
हो तो इतनी जोरों की वर्षा होती है कि टीले टूट-टूट कर पानी के साथ
बह जाते हैं और सरोवर जल से परिपूर्ण हो जाते हैं ।

२०१५ सूरदासजी क्यो मोठ कह और भर गा के ? सूरदासजी क्यो चांद भर
थी कह सुनावे है और आपां मे पलक तो को देखा ।
सूरदास को किसी ने कहा कि मोठ लो तो उसने अच्छी परन्तु न देख कर
कहा कि क्या दुनिया में और नहीं बने भाव है ? परन्तु जब भी और चांद
के लिए कहा गया तो कह दिया कि दूसरे लोगों को क्यों सताते हो चुप
चाप क्यों नहीं दे देते ?

०१६ सेर की हांडी में सवा सेर कोनी समावै ।
सेर की हांडी में सवा सेर नहीं समाता ।
ओछा जब बढ़ता है तो गर्व करने लगता है ।

२०३७ सेर नै सवा सेर मिल ज्याय ।
बलवान को अधिक बलवान मिल जाता है ।

२०३८ सेल घमोड़ा सो सहै जो जागीरी खाय ।
जो जागीरदारी के आनन्द उठाता है वही युद्ध के लिए भी जाता है ।

२०३९ सेहू कै ही मूंडै दांत होय तो दिन में ई ना चरै ।
किसी में हिम्मत हो तो वह छिप कर काम क्यों करे ?

२०४० सै भूखा उठे है, भूखा सोवै कोन्या ।
प्रातःकाल सब भूखे उठते हैं किन्तु रात को भूखे सोते नहीं ।
भगवान् सबको देता है ।

२०४१ सोक तो काचे चून की भी बुरी ।
सौत तो कच्चे चून की भी बुरी होती है ।

२०४२ सोक नै सोक कोनी सुहावै ।
सौत को सौत अच्छी नहीं लगती ।

२०४३ सो मरख्या अर एक लिख्या ।
सौ बार कहने की अपेक्षा लिखने का महत्व अधिक है ।

२०४४ सोड़ देख पग पसारो ।
मनुष्य को अपनी आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए ।

२०४५ सौ दिन चोर का एक दिन साहूकार को ।
चोर चोरी करता है किन्तु कभी ना कभी पकड़ा जाता है ।

२०४६ सौ पोनी अर एक पोना ।
एक समझदार मनुष्य सौ नासमझों के बराबर होता है ।
मि० राई सो साजी पेठो तो प्रांत ।

२०४७ सौ नकटां में एक नाक हाळो ही नकटो बाजै ।
सौ नकटों में एक नाकवाला ही नकटा कहलाता है ।

२०४८ सोनी की बेटी कुहणी लखण ।
बाणियां की बेटी सलूणी करण ।
सुनार की लड़की सुन्दर होते हुए भी सस्ती है बनिये की लड़की कुरूप होते हुए भी महँगी है ।

२०४९ सोनूं गयो धरम के साथ ।
सोना तो राजा धर्म के साथ ही चला गया अर्थात् अब वह ऐसा मान व पानी नहीं रहे ।

विशेष गुणी की मृत्यु होने पर उस गुण के अभाव के स्मरण में प्रयुक्त उक्ति ।

२०५० सोनै कै काट कोन्या लागै ।
सज्जन के कलंक नहीं लगता ।

२०५१ सोनै कै थाल में लोहै की मेख ।
जहाँ असुन्दरता अथवा औचित्य का अभाव हो वहाँ इसका प्रयोग होता है ।

२०५२ सोमां सुकरां सुरगुरां जे चन्दा ऊगन्त ।
डंक कहै है भड्डली जल थल एक करन्त ॥
सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार को यदि चन्द्रमा उदय हो तो बड़े जोर की वर्षा होती है ।

२०५३ सौ में सूर सहस में काणूं सबसैं खोटो ऐंचाताणूं ।
ऐंचाताणूं करी पुकार, कंजा स्यूं रहियो हुंसियार ॥
सूरदास १०० से बुरा होता है काना हजार से और ऐंचाताना तो सबसे बुरा होता है। किन्तु ऐंचाताना ने कहा "कंजे से होशियार रहना चाहिए।

२०५४ सोरठियो दूहो भलो भल मरवण री बात ।
जोबन छाई धण भली तारां छाई रात ।
सोरठिया दोहा अच्छा होता है मरवण की वार्ता अच्छी है युवती स्त्री और तारों छाई रात सुन्दर लगती है ।

२०५५ सीधै ऊंट पर सौ चढ़ै ।
सीधे ऊंट पर सौ चढ़ते हैं अर्थात् सीधे-सादे को सभी तंग करते हैं ।
मि० सीधै पर सौ लद ।

२०५६ सोला साल में भाणो न्हायो, खेली स्यूं सुळझायो ।
सोलह वर्षों से भाणा नहाया और बालों को खेली से सुलझाया । फूहड़ के सम्बन्ध में उक्ति ।

२०५७ सौ सुनार की एक लुहार की ।
सुनार की सौ चोट और लुहार की एक चोट बराबर है । निर्बल के सौ प्रहार और सबल का एक प्रहार बराबर है ।

२०५८ सौ हाथी सौ कपड़ला पूत निपूती होय ।
मेवा सौ बरसत भला होणी हो सो होय ॥

वास्तविक वर्षा में चाहे भी हाथी और ऊँट बह जायें पुत्रवती स्त्री पुत्र रहित हो जाय फिर भी वर्षा का होना सदा अच्छा है।

२०५९ स्याणा समझवान को तो सगळी बातां मौत है।
जो सयाना और समझदार है उसकी तो सभी तरह मौत है क्योंकि सब प्रकार की चिन्ताएँ उसे घेरे रहती हैं।

२०६० स्याम का मर्‌या नै दिन कद उगे ?
जिसकी सायंकाल मृत्यु हो जाती है उसके लिए सारी रात बिलखते बीतती है।

२०६१ स्वामीजी तिलक तो चोखा कर्‌या अब्बाजी लूण्यां ठीक पड़सी।
किसी ने कहा "स्वामीजी ! तिलक तो अच्छे किए" उत्तर मिला "सूख जाने पर पता चलेगा !"

२०६२ स्यालो तो भोगी को अर ऊँधाळो जोगी को।
भोगी तो जाड़े की ऋतु में आनन्द मनाता है और योगी गर्मी में मुग्ध रहता है।

ह

२०६३ हंस आवर्ड गर गया काग हुया परधान।
जावो विप्र घर आपणे सिंघ किसा जजमान ?
सिंह के जब हंस मंत्री था तब तो ब्राह्मण को कुछ मिलता रहता था किन्तु ज्योंही कौआ प्रधान हो गया उसने कहा "हे ब्राह्मण ! अपने घर जाओ सिंह भी कभी किसी का यजमान हुआ है ?" अर्थात् किसी राजा के यहाँ जब कोई अच्छा मंत्री होता है तब तो वह दान आदि द्वारा दूसरों की भलाई करता रहता है। बुरे मंत्री से किसी को कुछ प्राप्ति नहीं होती।

२०६४ हंसली तो घड़ास्यूं पर घर को धणी बस में कोन्या।
हंसली तो घड़ाऊँ किन्तु पति वश में नहीं है।

२०६५ हकीमजी ! म तो मर्‌यो, तो कह अठे कुण बोल्यो है।
किसी ने कहा—'हकीमजी ! मैं तो मरा।' उत्तर मिला—तो यहाँ यह बोल रहा है ?

२०६६ हस हस हंसे कुम्हार की मालण का सूर्द सूद।
तूं के हांसे बावळी, कठे बैठे ऊंट ?
एक ऊँट के बोरे में एक तरफ तो मिट्टी के बर्तन थे और दूसरी तरफ हरे भरे पौधे। ऊँट ने पौधों को खाना शुरू किया इस पर कुम्हार की लड़की हँसने लगी। इस पर मालिन की लड़की ने कहा "अभी क्या हँसती हो ? देखना यह है कि ऊँट किस करवट बैठता है ?" कहा जाता है कि

ऊँट जब बैठा तो धरती पर लौटने लगा जिससे कुम्हार की लड़की के बर्तन फूट गये। इसीलिए अंग्रेजी की एक कहावत में कहा गया है—
He laughs best who laughs last.

१०६७ हथेली में सिरस्यूं कोनी उगे।
हथेली में सरसों नहीं उगती।

१०६८ हल्के घोड़ी हाल घणो।
सामान कम आडम्बर बहुत।

१०६९ हर बड़ा क हिरण्या बड़ा सुगुणा बड़ा क स्याम।
अरजन रथ ने हांक दे, भली करै भगवान।
हरिण का बायां आना अपशकुन समझा जाता है। हरिणों को बाईं ओर देख कर रथ हांकने में अर्जुन को हिचकिचाहट होने लगी। इस पर किसी ने कहा — जब भगवान् अनुकूल हो तब शकुन का क्या देखना है? हरि बड़े या हरिण बड़े? शकुन बड़े या स्याम? अर्थात् हरि और स्याम ही बड़े हैं हरिण और शकुन नहीं।

१०७० हर हर गंगा गोदावरी किरीक सरधा अर किरीक जोरावरी।
कुछ तो श्रद्धा से भगवद्भजन करता है और कुछ भीति के कारण विवश होकर।

१०७१ हरी खेती ग्याभण गोधूं पार पड़ै जद जाणिये।
खेती वर्षा पर निर्भर रहती है। न जाने वर्षा हो या न हो। गाय भैंस आदि के गर्भिणी होने से ही लाभ के लिए दूध की आशा नहीं बांधी जा सकती। न जाने कब तू जाये।

१०७२ हर्यो देख कर चरै सूखो देख कर बिदकै।
अच्छा खाना चाहता है बुरे को देख कर ही बिदकता है।

१०७३ हंसा समद न छाड़िये जो जल खारो होय।
डाबर डाबर डोलतां, भलो न कहसी कोय॥
बुरे स्थान में रहने की अपेक्षा अच्छे स्थान में आत्मसम्मान पूर्वक रहना कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

१०७४ हलदे पर बल आवै।
गरीब को सभी दबाने लगते हैं।

१०७५ हलदी जरदी ना तजै खटरस तजै न आम।

सीलवन्त गुण ना तजै औगुण तजै न गलाम ॥

(स्पष्ट है)

२०७६ हलदी में रंग्योड़ी चादर, नांव पीताम्बर।

हल्दी में रंगी हुई चद्दर भर रही है और नाम है पीताम्बर।

२०७७ हवा हवा को मोल है।

समय-समय का मोल है।

२०७८ हांसी में खांसी हो ज्याय।

हँसी-हँसी में खांसी हो जाती है। हँसी-हँसी में लड़ाई हो जाया करती है।

२०७९ हाथ को दात मर बैकुण्ठ को वास।

जो दान देता है वह बैकुण्ठ में जाता है।

२०८० हाथ [illegible] पांव तेरे मिनख की-सी देह।

मैं तनै पूछूं बांदरा घर क्यूं ना कर लेह ?

हे बन्दर! तुम्हारे मनुष्य की सी देह और वैसे ही हाथ-पांव हैं। मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम घर क्यों नहीं कर लेते ?

२०८१ हाथ नै हाथ खाय।

भाई के लिए भाई घातक सिद्ध होता है।

२०८२ हाथ पोलो तो जगत गोलो।

दान से सब वश में हो जाते हैं।

२०८३ हाथ लियो कासो मांगण को के सांसो ?

हाथ में जब कासा का बरतन ले लिया तब मांगने में क्या कष्ट ?

२०८४ हाथां कमावै पगां गुमावै।

हाथों से काम कमाता है और पैरों से गुमाता है।

२०८५ हाथियां की कमाई खातो कीड़ियां की नव खाई।

जो ऊंचे पद पर काम करके जीविकोपार्जन करता है वह नीचे पद पर काम नहीं करता।

२०८६ हाथियां की मस्त चालां ही गंडकड़ा भुसबा करै है।

हाथियों के पीछे यही बहुत से कुत्ते भौंकते रहते हैं।

२०८७ हाथी भाड़ की डाली कोनी बंधै।

हाथी भाड़ की डाली नहीं बंधता अर्थात् बड़ा आदमी छोटे पद पर शोभा नहीं देता।

२०८८ हाथी का खाबा का दांत और होय है अर दिखावण का दांत और।

हाथी के खाने के दांत और होते हैं तथा दिखाने के और।

८९ हाथी रे खोज में सबका खोज समावै ।
हाथी के पद-चिन्ह में सबके पद-चिन्ह समा जाते हैं ।
मि० सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्ना ।

९० हाथी को गुर आंकस है ।
हाथी का गुरु अंकुश है ।

९१ हाथी नै हरका कुण कवै ?
समर्थ को दोष कौन दे ?

९२ हाथी मरै तो भी लाख को ।
हाथी मरता है तो भी बहुमूल्य होता है ।

९३ हाथी हजार को, म्हावत कौडी च्यार को ।
(स्पष्ट)

९४ हाथी हाथ ऊंट घोड़ा और से सिवाय थोड़ा ।
हाथी हाथ ऊंट घोड़ा आदि के सिवा खींचना न आवे तो और चित्र फालतू है ।

९५ हार्‌यो जुआरी दूणूं खेलै ।
हारा हुआ जुआरी दुगना खेलता है ।

९६ हार्‌योडो ऊंट धरमसाला कानी देखै ।
थका हुआ ऊंट धर्मशाला की ओर देखता है ।

९७ हाल तो चावल काचा ही है ।
अभी तो चावल कच्चे ही हैं अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा है ।

९८ हिन्दवां के छोटा नै ई मुसकल ।
हिन्दुओं के यहां जो छोटा होता है उसी को मुश्किल होती है क्योंकि छोटे-मोटे सब काम उसे ही करने पड़ते हैं ।

९९ हिन्दू पहली सरमावै पछै कोण्या सरमावै ।
किसी से काम लेने में हिन्दू पहले मजदूरी आदि के सम्बन्ध में तय नहीं करता बाद में झगड़ा करता है ।

०० हिम्मत कीमत होय बिन हिम्मत कीमत नहीं ।
(स्पष्ट है)

०१ हिये की आंधी गांठ की पूरी ।
हृदय का अन्धा गांठ का पूरा ।

२१०२ हिरणों के सींगां की पावड़ां नै कद सुहात ?
हिरणों के सींग गीदड़ों को कब अच्छे लगते हैं ?

२१०३ हींजड़ां की कमाई मूंछ मुंडाई में।
हिजड़ों की कमाई मूछ मुंडाने में जाती है।

२१०४ हींजड़ा भी कदे बजार लूटी है ?
क्या कभी नपुंसकों ने भी विजय पायी है अर्थात् नहीं।

२१०५ हीरां की परख जौहरी ही जाणै।
हीरों की परख जौहरी ही करता है।

२१०६ हुणी नै निमस्कार है।
भवितव्यता को नमस्कार है।

२१०७ हेत कपट विवहार, रह्ये न छानो राजिया।
प्रीति और कपट का व्यवहार छिपाये नहीं छिपता।

२१०८ होत की भाण अणहोत को भाई।
यदि किसी के पास धन होता है तब तो वह किसी को बहिन बनाता है
यदि स्त्री के पास कुछ नहीं होता तो वह दूसरे को अपना भाई बनाती है।

२१०९ होणी हो सो होय।
जो भवितव्यता है वह होकर रहती है।

परिशिष्ट—१

सिरोही की कहावतें

परिशिष्ट १

सिरोही की कहावतें

[मैंने कई साल से सोच रखा था कि आबू-सिरोही प्रदेश में और उसके
आस-पास जो लोक साहित्य रूपी धन बिखरा पड़ा है उस में संग्रह करूँ किन्तु
अन्य प्रवृत्तियों के कारण यह काम मैं नहीं कर पाया हूँ यत्किंचित् यत्किंचित्
कार्य करता रहता हूँ। मैंने अपने एक भाई श्री समसमाल पागरत्न से सिरोही
सिरोही में प्रचलित कहावतें एकत्रित करवाई थीं। उनमें से कुछ मैं चुन कर
यहाँ पेश करता हूँ। जहाँ-जहाँ प्रो॰ नरोत्तमदास स्वामी और पं॰ मुरलीधर
व्यास द्वारा संपादित 'राजस्थानी कहावतें' से सहायता ली गई है उसका उल्लेख
भी किया गया है। —श्री गोकुल भाई भट्ट]

(१) आवलियो पुटी जाई मी म अटालो पुटो में मी।
मूर्खान्न हा जाने के बाद डर नहीं और मन जाने के बाद भय नहीं।
(मूढ़ीरूपी चढ़ गई डर ?)

(२) एक तुलसी बैरें बांवा जोय।
एक हुंडी को लेने पैसा की आवश्यकता रहती है पान खाने में कई चीजें चाहिए।

(३) आबूरो सा (छा) आ में अबूरा मामा।
आबू की छाया में सीधा महत्व है।

(४) आज मारो बारो ना काले थारो आवो।
(आज हमारी तो कल तुम्हारी)

(५) आवा ऊपर अम्बो मो म रोह ऊपर बनी मी।
आराम पर कोई अच्छा नहीं और काया का कोई पति नहीं।

(६) अबूझ उपाड़ेन् भर न मूरख स्याणप भर।
मूढ़ भार का ढो कर मरता है और मूर्ख स्याणप करता है।

(७) अटमोळ वे लाई आवलीवेट मार्ग।
पुरुष का भोजन करना और स्त्री का स्नान करना समय रक्षा बातों में समान लगता है।

(८) अमलमाळ में उमा बीवा, बांड मोटो न मोठा बीयो।

कमाई करे नहीं परन्तु भोजन ताजा चाहिए, काम करे नहीं परन्तु स्वादिष्ट भोजन चाहिए।

(९) आंगळी सोंढेल बाहु पकडे ।
(आंगळी पकडतां पूंचो पकडे)

(१०) आदुं खावेनुं पूंठे पडीया हो।
अदरक खाकर पीछे पड़े हो।

(११) ईश्वर नी पाधरी तो वेरी पण वाळो।
ईश्वर की कृपा होवे तो शत्रु अच्छा बनता है।
(राजबहादुर भला भुज च्यार तो क्या बिगड़ सुधरी के बिगाड़े।)
(मि० जाके रखवाल गोपाल धनी ताको कवण अहित कर दे)

(१२) उपाय करतां अटकाव सारो।
Prevention is better than cure

(१३) उकरडा मांयथी रतन पाक्युं।
कचरे में से रत्न पैदा हुआ।

(१४) ऊजळुं एटलुं दूध नहीं ने पीळुं एटलुं सोनुं नहीं।
(धोळो धोळो सो दूध को हुवेनी,
पीळो पीळो सगळो सोनो ना हुवै जी)

(१५) ऊंट ऊंचा ने पूछ टूंका।
ऊंट ऊंचे और पूंछ छोटे।
(ऊंट लांबो ने पूंछ छोटी)

(१६) ऊंघ हुई ओसड नथी।
ऊंघ का उपाय नहीं नकार कर देने के बाद कुछ चलती नहीं।

(१७) ऊंडु खूंचो तो घणुं छे ने माथे खूंचो तो कांइए नथी।
तह में देखो तो बहुत है ऊपर से देखो तो कुछ नहीं।

(१८) ऊमरे डाकलीयो कुवो।
उम्र का रिश्ता कबूल है।

(१९) ऊंघ नी आवे उकरडो ने भूख नी आवे भुंडु।
कचरे के ढेर पर भी नींद आती है और भूख में कैसा भी खाने को मिले।
(भूख बीठी न जाणती ?)
भूख में वस्तु के स्वाद का ध्यान नहीं रहता।

(२०) कातक महीने कणको पण डाढ्या ।
कार्तिक माह में कणकी भी साप ।
(२१) काचर पोलरिया न मीनो सितरीया ।
(२२) काल जाई कहाणी र जाई ।
(२३) कम्या आखोल घर ।
(२४) कमीणाई मूल हांता नैं रोमर्द मूल जाती ।
(रोम री घर जाती लड़ाई री घर हाली)
(२५) कमाऊ पीहरो हुरलैं बालो लागे ।
(२६) ?? (अस्पष्ट)
(२७) कांमली भीजी भीजै भारी व्है ।
कामल भीजै ज्यू ज्यू भारी हुवै
ज्यू-ज्यू भीजे कामली त्यू-त्यू भारी होय ।
(२८) कालोया पामको बोलीयो जूते परण नी लीयें तो अकल तो लेई ।
(कालियो गोरियो कने बैठे रंग नहीं तो अकल तो आवे ही—
रंग नहीं आवे अकल तो आवे)
(२९) कोथा माइल कवल घणी आखा माइल बल घणी ।
(३०) काला का गोरो ।
(३१) काका मामा केवारा न धर न वड़ तो लावारा ।
(३२) कंकूल र्ड बान लाकरा हुरके ।
(३३) कतरसा पटैल् कीर भी टम्मी ।
(३४) खातर करावे खातर ।
ग्रार जहां हो वहां ठरक होती है यानें गोबर जरन जितनी कमाई होती है ।
(३५) खर्मीबान खीर भी ।
नहन करन खाने का नुकसान नहीं ।
(३६) लाखान् लाख भी न हुणवान् डांव भी ।
(३७) खाणी खासी में हाणोर् बाहला लोगी आवे ।
(३८) खुमा र्ड खाना कमराक खड़ा होगी ।
(३९) खाजो भी खाजो ।
(४०) खोतो कमीआं हेगी ।
(लेगी बातमा लेगी)

(४१) खारी खासे पण हाथो नो खासे ।

(४२) खोटा हथियारी करो (जिदु) पाछो आवे ।

(४३) खोटा मेरबान तो गधा पेलवान ।

(४४) खाली ठकराई न करातोम खानो आप कुंआरा में बेसी आवो ।

(४५) गरेइान् ध्यान भी न खातारखान ध्यान भी ।

(४६) गरज हुरो मारी तो पागड़ो सेर्ड पारी ।

(४७) घाल घालोईयो खतरे गलोवु बेई ।
(गुड़ घालतो जितो ही मीठो हुतो
जितो गुड़ घालतो जितो ही मीठो हुवो)

(४८) गोरखाक न घादू चलीयु जहे चलीयुं ।

(४९) घारास भाठो नाखोइयो तो खोडा तो झखी ।

(५०) घोल खाव खावो साव का खमी ।

(५१) घरकी गरेइान खाप कखी पड़े
(घरजातो मारता पवेन खाव जेवो)

(५२) घोलेली मर तो ढोलेली भी मारवो ।
ढोल से मतलब है मिट्टी के ढेले स। मारने है पत्थर प्रहार है।
(गुड़ दियां मर जके ने जहर मत देवो)

(५३) घरका जोगी जोगडा न आन गारका संत
(घर का जोगी जोगिया आन गांव का सिध
घर की मुरगी दाल बराबर ।)

(५४) घासीया घोड़ा न पेटीया चाकोर ।
जिन घोड़ों को सिर्फ घास मिले और जिन नौकरों को सिर्फ पेटिया मिले वे कैसे काम करते ?

(५५) घरमां तो घरडो सावो न मसीत आटा वाली ।
(घरना छोरा घंटी चाटे ओझाणी न आटो। चाहुली घर में चक्के मसीत में)

(५६) चोर चोरों ने धोखा दिया ।
जाफहर ही गया ।

(५७) चना मा ने धोखा दिया ।
बहुत गई, थोड़ी रही ।

(५८) घी चोल मे आवी, चीजी बात बाको ।

(५९) घर्दू पाणी बनेरा प्रामणां ।
(६०) घोमेरे पाणी पीपलो बसे ।
(घामड़ र पाल्सू पीपलो बसे । पुहिर क बोध से पीवार बन्ना है)
(६१) घरेरो घाट में घेडीभरो घाट ।
(६२) घरम घाव में गोलो हूली घाई ।
(६३) घी गोल एक बेई में भाव घड़िवुं रई ।
(६४) घरे आवे रलो करी बात घरो मेलो ।
(६५) घरता बलीता वन में था तो वन में लागी आग ।
(६६) चढे तूर लिका आई चढे मीह (मस) मर ।
(६७) चढो चीकोरो न तटो तीओरो ।
(६८) चाव चोरर तो चोर दिये मोचल ।
(६९) चामारा र एक न होजमाता र हो ।
चोरी करने जाने वाले का रास्ता तय होता है लेकिन गोठन वाले को भी रास्ते देखना पड़ता है ।
(७०) चमन हीपना बावन में बोल चाडु जोग ।
(७१) चर चमोन में जीव एकजोमारी ढोल ।
(चमी जोक चर राइरा घर)
(७२) चमार माडे बेइयों चमेरी मीन माइयों ।
(७३) चो चाव चरतार ता जाये चरतार ।
(७४) चीचनो कोई जामे मो म मर्मा घुटो घड़ाघड़ ।
(७५) चुरो चोर जमेरा जहां बाप्यो ।
(७६) जन में चला दम ।
(७७) ठाड आव चढ़ न आहन जाम चढ़ ।
(७८) ठप ढमोरा प्रावमा न बाद इस के बार बार हामते मीवार न तेर हामड़ की ।
(७९) डांडामीच डाईणो ।
(८०) डांगोरो चारोमो वांघो जहां भी बसो ।
(८१) ढमा माइमाली ढोलना ।
(८२) ढड़वाड़ पड़बड़ ढाइबोली मरा मो बीरा ।
(८३) ढडोरा देवन मांडारो पूजा ।
(८४) मता उरमो मेरी न हाम उरमो मेरी ।

(८५) तुहीमरी बड़ी भी ।
(बूंटी में बूंटी कोनी)
(८६) भेवड़ तीखो माई ।
(८७) चाली चरी पाणी ।
(८८) घोड़ला घोवूं न चीवला चोलूं ।
(८९) बीचे देवोलां मी नीरसां ।
(९०) दगो कमारोई हुयो भी ।
(दमा न किसका अगा)
(९१) देश छोड़यो पण वेस भी छोड़यो ।
(९२) देस जेसो भेस ।
(देस जिसो भेस)
(९३) धोरारो हाथ पांवसी ।
मठ पकाने में काम न दिया हो तो ज्यादा काम खेत में पानी
न आने का करना होगा ।
(९४) दूधेरो बलीयो लाई फूके न पीवई ।
(दूधरो बलोड़ो छाछ ने फूंक दे दे र पीवे)
हिन्दी-जैसे दाध्यो दूध के पीवत छाछहि फूंक ।
(९५) दूधे न दांहो ने चीक म जीमो ।
दूध में नहाओ और घी के साथ जीमो—आशीर्वादात्मक ।
(दूधां न्हावो पूतां फलो)
(९६) धरमीएर धरो धाड़ ने कसाईएरे घरी कुशल ।
(९७) धरमी भाइवुं धाड़ी धाड़ ।
(९८) धरम री गाइये रे दांत का गणना ?
धामोणी एरा कदे दांत गणना हि ?
(धरमरी गायरा दांत काइ कोई देखणा
धरमरी गायरा दांत न देखणा कम काढ)
(९९) पके नटार भी ने पुरे उलाल भी ।
किसी प्रकार की जिम्मेवारी नहीं ।
(१००) धाए मीनी कौन खावे ।
(१०१) धामतिरुणा में कुहाड़ा कुटाहि ।
(१०२) नमीया हुया दीवु—नराच हुवां ।

(१०३) कामियाँ पूर भी पीवें न अणकामियां भूतर ।
(काम करावा जीर न खावा झंग पातल काढण आया)

(१०४) नकरी बैठी मकोड़ काले ।
(खाली बैठा उत्पात सूझे) ।

(१०५) नकरो नाई पाटला मोंडे (मूंडे) ।
(निकम्मो नाई पाटला (पाडा मूंडे)

(१०६) नकटा गोमय मकटा बसी, पाडकी माथ्रुन कड़कड़ हुनी ।

(१०७) नाम बचरो नास ।

(१०८) नी डालवां में नव पुन ।
(नहि बोलबे में नव पुन)

(१०९) नाई नाई केस कतरा ? के थारा मुहा र आवें ।
(नाई नाई केस कितने ? कै जजमान आप आप है—मुंह आप)

(११०) नानी मोटी कन्ती कमारा दिया ।

(१११) नानो चोर मारियो जाय न मानो बेचारो कमावे जाय ।

(११२) नवी बात नौव बाड़ा में तार्णायो तांणी थी तेरे बारह ।
(नुई बात नव दिन नुई नव दिन पुरानी दस दिन
नुई बात नौ दिन कवी तानी दस दिन)

(११३) नवीन् करी प्रभु न नवीन ।

(११४) नागो नाव फा में नोमीबे फो ?
नागी (नागेडो) कांई धोवे कांई निचोवे
नागेरो नाव में कांई बले ?

(११५) नटे अबेरे नटे ।

(११६) नी नांनानी कानो नानो ।
(नहि नांनेस् कानो नानो बोलो)

(११७) नीनरा देवा नानी मोटा देवा ।

(११८) नकामो र नकांमा । करे काम ? करो किए, उचलुं पानी ने धर्म बांध्
निकम्मे को काम करेगा काम ? का एक अकाम देना है पार्ट भी ।
दोनों लोग् और बड़ी फिर करें पानी निकम्मा ही काम करें ।

(११९) पांचोवे देवा पान (पानी आदी नाम बांधे पानी आदी पान
पहली बांधे पानी पहली नाम बांधे)

(१२) पंति दाँडे प्रांमणा चीजे दाँडे प्रीत चीजो दांडो रई बको मरेरे सही
(पावणो प्यारो पण पूछ री-हित)

(१२१)

(१२२) पेटरो बलीये गांम बाले

(१२३) पण पालवी के जस पालवी ?

(१२४) (हाल तो पावली में पाव हुल्दी चीली-रमोनी, हाल तो सेर में रून ही को क्लीमोली सेर में पूणी ही को क्लोनी)।

(१२५) पेटेम् पडीयूं पुन करी

(१२६) पांणी पीयेम् वांर नी पुछाती ।
(पाणी पीर जात नहीं पुछणी)

(१२७) पुतर रा लखण पारणामांयली में बहुरे लखण बारणामांयली (पुतरा रा पालण में दिखाणीजे पुतरा लखण पालणे बहुरा लखण बारणे; बहुरा लखण बारणेम् ओलखीजे)

(१२८) पारके घरे पेला ने घरे हांफला

(१२९) पोयलो पडियो पुल सिन वही ।
(पोडो पड्यो बको रेत लैर उवती)

(१३०) बापलीयो रोयेम् ओबलोरी आशा नी राकणी ।

(१३१) बाप सेरारो हाथ ।

(१३२) बीता ओ बामसी पांणी गोंगाजीरो चीस ।

(१३३) बाबो बेठो जपे न आवे ब्रतर जपे ।

(१३४) बारोमाई बारे बाटे बाय ।

(१३५) बोल्‌ बांमणेती सौल्‌ ।

(१३६) बोली बनेरां बोर बेताय रेइ ।
(बोली वनीरा बोर बिके बोले बनीरा मुंगडा ही बिक ज्याय ।

(१३७) बुद्धि मावे बोल पांणी भरे ।
(इसके विपरीत—बल मावे बुद्धि पाणी)

(१३८) बोरेई बोर बीस हुवी ।

(१३९) बलोय दिखावे नी ने पारकी बेहु नी ।

(१४०) मी मावरवो घाव मरे तो कालेम् मरे ।

(१४१) भलामणियुं ने भीकामणियुं ।

(१४२) भरिये माडे हूपडाई कलक मार ।
(१४३) मात सोदनु प हूल नौ सोदयो ।
(मात छोड देणा साथ नहीं छोडणा)
(१४३) मता भाइरी प्रात मे गूदर भेमायो ।
(१४४) मांग मांग भमीयां न यांयो मार्ये पो । हाल मांवे भूनिया मे पीना
हो तो पी ॥
(१४५) मूढ नो मांमे मूढ मात मे उंग नी मांव उजरयुं ।
(देखो कहावत १९)
(१४६) मावनुं नुं न मरे कानुं रोमोंती न घोरीया मनीया ।
(मावनो र वैद कहयो)
(१४७) मीए मागन मापवत । (भैत मामे मायोन)
(१४८) मीते मा मीने ।
(१४९) मरोयो मोव ने टलियो रोग ।
(१५०) मांवता मय मां देवजो आंमी ।
(१५१) मनम् परवे मे मनम् रोवे ।
(मनरा मादू माते)
(१५२) मूमा मो मे मूल हुमा ।
(१५३) मरन मामवो कैमी है के ?
(१५४) मुमा वाडारी मांक कसोमा आनरी ।
(१५५) मनक खेड़ मांन न पार केवी हानी ।
(१५६) माईन् मानो माई न हुमालीपुरा होग करी ।
(१५७) मेलो लेतुं तो मावे कतुं ।
(१५८) मूं मारूं ईट मे मूं मांके मांगे । वरतमना परे मांई मरी पूने मूं एक ।
(१५९) मनहार मामो मी मे जरदार उसालो मी ।
(१६०) मोटी मुमा मे ममा हुमा; यती मुमा मे परा हुमा ।
(१६१) मतोयी मों मादो पाला मावी के ?
(मतोमो मयोडा महता मावे ही पाछा आया हा ? मनाव्ता मयोडा
कातरदर घरे ही पाछा आया हा ?)
(१६२) मरद मूलामो मे बमर मुलालो ।
(१६३) मावे मांमो मोमान मी वेनां ।
(१६४) रोमरे रामजी राखी ।

(१६५) राजा बाजा ने बांदरो तीमे जात कजात ।
(१६६) रिये तो आपती में बाप तो हुमा बापती ।
(रवै तो आपनूं नहीं तो बाप सभा बाप सूं)
(१६७) राहरा भाव राते बीता ।
(रामां रो भाव राते गया)
(१६८) लाकड़ूं पोलूं ने समज बोलूं ।
(१६९) लालारो कुमरो न बोरा रो हालु ।
(१७) लागुं तो तीर नी तो बोर्यू ।
(१७१) लाख जाया देवा पण हाक नी जाया देवो ।
(लाख जाय साख ना जाय)
(१७२) लावे जमें रे पीड़ ।
(लागे जकीरै दुखै)
(१७३) बमर बोलके बराब नी ।
(१७४) बेहीवां बोजाम् लियां खांच ।
(१७५) बेडीमा बाव करे बापतो कापडो बेई भरी परी उडी ।
(१७६) बीमा पाणी में जमे पाणी ।
(१७७) बताबाहबी बीसडी बसि बलबे ।
(घणी सराही खीचड़ी दांतां सूं चिप ज्याय)
(१७८) बेंबारी बादु पीबु ने बेबारी बोझमु पेरणु ।
(१७९) बसीन् मायरा लेन बाम ।
(१८०) बरेन बररी ना बकावे ।
(१८१) बाजतुं मामतुं लबरे माबी ।
(१८२) बासनारी रे बमाडे में कासनारी रे हूल्दे ।
(१८३) हाती हासी लका में कुतरो मातो तमो ।
(१८४) हारीबी देख पूबीरा उपका करे ।
(१८५) हारीमो मांडी पाहडी बोरे माठे हूलोपुरो ।
(१८६) बस्तारी बांमनी हुरको बोडीम हूी ?
(१८७) हामार बालीया बोपका ई हाथा ।
(१८८) हजारें मासे सजीर कैसी ?
(१८९) हुवे पूगो होसी ।
(हिंयेरी बात होठां आयां सरे; जीभेरी बात होठे आया रैवै; बीरे

सोई होउ)

(१९०) हात मेलां पोलो तो काम करे पोलो ।

(हाथ पोलो जगत पोलो)

(१९१) हिमत कर बसेरी बिमत बेह ।

— (हिम्मत किम्मत होय)

(१९२) साई सबदा हुदी थो, कोतरां हुदी ने होलर्क हांवे हुदी ।

(१९३) सोर हुडासीवे बोम ।

(१९४) सोकरो सावांन पो है ने ऊँट पाणीमे गा हि ।

(१९५) सुरमाली सनू मेई ।

(१९६) सीकरारो हाप ।

(१९७) सुनवं सूक सन्तोप ।

(१९८) सडनुं सारे न उतानुं राके ।

(१९९) हेडरारी हुमारोमेन् सोलिमो मसीओ ।

(२००) हाडकाररो हेई ने सोरेराम मोपा ।

(२०१) होला बरांटो हारे मा आप न कारे बरांरीमेन होक लिवे ।

(२०२) हाते (हाप) होर्रमे नी भोजतो ।

(२०३) हवाहमे हाकमेरा रांका तो कवीकन बुमेरा ।

(मो दिन सानूरा एक दिन बहुरो)

(२०४) हारे मावीसरे न काट लपट लाज नो आवतो ।

(२०५) हाप हेररान् जाता सोवी मई ।

(२०६) हाडोमी उडवारी बेंह ने बालकरो लागवारी बेंह ।

(२०७) हाप मर नी न लाकडो पाले नी ।

(सांप मरे न लाठो हूटे)

(२०८) हाडमेरी बुह जीवरी रांदे न पमो जावे करो पाववो मोरे ।

(२०९) हाराई पा हुलेवने मे पे रोपा करे पप ।

(२१०) हारारी हुमो हाई बम बोटरी बालको बराव ।

(२११) होटारा कारीवां पाणो जुवां नी वेतां ।

(२१२) अराप्य

(२१३) सोवारी सूटे पर रमका नी सूटे ।

(२१४) सीमेन सीवनूं कीयुं ।

(२१५) सांमेरा देवेन् वपारकांरी आंच ।

(वि०—लाकड़ा रै बेच ने खुमखेरी पूछा)

(२१६) फलतीन् मोल माँवे । (कोयली में गुड़ लागी)

(२१७) कीवरमोयेरो पीग मायो तोई का ने नी मायो तोई का ?

(२१८) कुम्हारे र घरे हांडलां रो खोट ।

(सांभर लाय माजूनो लाय; सांभर में लूगरो टोटो; कूँमार कूटी में रांधै; डूमर रै घरे कुड़ी हांड)

(२१९) करलु जासा ने मुंव हीना ।

(२१०) कुडाम् पोम ने कडाद काम् मानुं ।

(२२१) कांकार कालवे करतु पड़ी ।

(२२२) कैरी सोलवा कोतूस ने बस सोलवा उतार ।

(२२३) करतोल कोओ ने घर-घर होवीयो ।

(२२४) कांटालोई कांटा माथो ने कुमाल्कोमें हुवोहुवे तवी ।

(२२५) कोई सेरेती मार [illegible] मांगन गोवैली मारवी ।

परिशिष्ट २

"अधूरा पूरा" तथा कहावती पद्य

१ अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गया सबको दाता राम॥

२ अनबो मारै अनबा मूँडै अनबी कर पटरको।
आज अनबो घर में नाहीं कूण करैला पटरको॥

३ ममरो तो म मरता बेरयो साजन बेरयो पूरो।
गोबर ता म कुतरो देखो लाठ बहार छूड़ा।
मारो तो गोबर चूवै लातम भला कँदूरो॥

४ अबू आन को बाबरो ला गई सगला खेत।
खाक पड़ो लगमोर को ला गयो खाल जमीन॥

५ आंख कढ़ई आंई न बार मिलै के लाई।
आंख कढ़ई रहगो मात अबूका म्हणी॥

६ आज मरो काल मरो, मरया मरया फिरो।
पोल कपोल जद पियो भई बगड़ा होया फिरो॥

७ आमरू मोड़ किरतान मैं ल्योवै चोर मैं ल्योवै लाली।
टपको रिखियो भूल मैं ल्योवै रोड़ मैं ल्योवै हांमी॥

८ आव तो कूकू नहीं रवै तो मा ढोर।
हंसा नै सरवर घणा सरवर हंस निरोड़॥

९ उस्टो गत गोवाल की गई मिटल्यू मोय।
काजल में बैठा कड़्या ढीट बिरछ क जोय॥

१० ऊँचे ढोरै ढीलरो पड़-पड़ गया कम्हार।
रावण मिरगा बाल दिया लंका का सिरदार॥

११ एक हल हत्या दो हल काज।
तीन हल खेती, च्यार हल राज॥

१२ और धंधा सब कीजिये एक कीज कांगिया।
उरो बुलाई मोडो बोलै कर मन का कांगिया॥

१३ कपड़ा तो लपेट नहिं भूंड बैल नहिं न्याव।

लाइयो न मानै बोलरो म्हारो केता किम जाय ?
गुरुजी ढोलिया माहीं ।
१४ करिवर केरो कान, तरक पूंछ तरियां तणी ।
पीपल केरो पान, निवला रहै न नारणा ।
१५ कांसो कली कमारणा कर कामा कूंत ।
छोलो सीनो सापुरस, मधुर वाण बोलंत ॥
१६ काय कहाड़ो कढ़िल नर, काई ही काटै ।
सुई सुहायो सापुरस सांठै ही सांठै ॥
१७ कागा कुत्ता कुमाणसा तीन्यां एक मिजाज ।
ज्यां-ज्यां सैंग्या भीतरै त्यां-त्यां करै बिगाड़ ॥
१८ काम्ं कोड़ो बावरो एकातासू होय ।
इण नै जद ही छेड़िये, हाथ मढलो होय ॥
१९ काल कुसम्म ना मरै बामण बकरो ऊंट ।
को मांगै का फिर चरै, को सूका चावै ठूंट ॥
२० किम चंदा किम चांदणी, किम सरवर किम नीर ।
ज्यूं ज्यूं आ बिपदा पड़ी त्यूं त्यूं ल्हुरी सरीर ॥
२१ कूंबारी हुकहुक हुसै, मालण कीर्य कूंट ।
मजेठ पगड़ा पूर हूं (केठूं) किम कड बैसे ऊंट ॥
२२ केहो चालै डोकरा के का लावै बोल ।
काई थारो को गयो पूछै राजा भोज ॥
म्हारै तो थारै गई जंका काढूं खोज ।
थार ल को बामणी मत गरबावै भोज ॥
२३ कोइ मैं केलव बायका, कोइ मैं चंपक पञ्च ।
कोइ रै चढ़ै आकरो, कोइ रै चढ़ै मरच ॥
२४ करमन कली बायमो, कलूको मांडर ज्यूं ।
मजल गई करतार को, इता बणाया क्यूं ॥
२५ कड़मी न होती पारबी, मम्मी न दीसै बाज ।
मैं होय चूर्णू हो दिया, (ओ) किस बिध तज्या निवास ।
जल चोड़ा मेहा बणा तज्यो प्रीत रो बास ।
'तूं पी तूं पी', करत (ओ) निरतो तज्या निवास ॥
२६ जद घूघू पूरब नतो तवा सुखी प्रविराज ।

खरचा खरची चातुर नर, नित प्रत रहत उदास ॥
२७ खाणो पीणो खलणो सोणो लूंटी लाय ।
आछी दीसो झोंपड़ा भावरों के पास ॥
२८ खेता खेती मत करै उद्यम कर मेंह सीर ।
मोठ मूंग रा मया खारो लम्बा चीर ॥
२९ खेती पांती बीनती परमेसर का जाप ।
पर हाथां मत कीजिये करिये आपा आप ॥
३० गंगाजी को न्हावणूं विपरां को व्योहार ।
डूब जाय तो पार है पार जाय तो पार ॥
३१ गाडी पड़ी उजाड़ में कांटो लागो पांव ।
मोरी सूती सेज में कह बेटा किण दाव ?
मूरखो आड़ो नाहीं ।
३२ गैलो भलो न कोस को बेटी भली न एक ।
कहणो भलो न बाप को साहब राखै टेक ॥
३३ घंणा भाड़ू घर रहणा में नित औगुण होय ।
कपड़ा फाटै रिण बधै मांव न जाण कोय ॥
३४ घणा खाव कर रंगै म्हे खावण खावा ।
मांडी छाण पर फूल म्हे हैंगी न जावा ॥
३५ चन गुन बैमाख तल, जेठ चैत अषाढ़े बल
सावण मास भादवों यूंही क्वार करमा कामी मांही ।
मगसर पौष पूषै माघा माहे सिनरी फागण जिया ॥
३६ छाछ छोकनी छांवरा मर छपाल्नी मार ।
चारों छछूंडा रच लिये, अब सूंडे बनमार ॥
३७ छीकत जावै छीकत बीच छीकत रहिये जाय ।
छीकत पर घर जाय न जावै आता करै न हाय ॥
३८ छोटी ही सन माटी भई बारो काल बद नहिं रहीं ।
अब आया बैसण रो दाव मागी मर्या क छीटै पाव ?
३९ छोटा-छाजन बड़ उजाड़न परबसियां की नारी ।
एता खेता न करो गवारी राज न आवै कांई ॥
४० छोरया दीठा दीठी, लोग्या म्हारी बनाय ।
छोरीयरी उलटियो छोड़ परी की बात ॥

४१ जननी जणै तो भगत जण कै दाता कै सूर ।
नाँहि तो रहज बांझ रहु मती गंवावै नूर ॥
४२ आद कहूँ तुम बादली, ई गांव में रहणूं ।
ऊंच बिलाई ले गई हांजी हांजी कहणूं ॥
४३ जोबन दरब न बाहुड़ियो क्यों परदेसां जाय ।
मणिया सूं हो पीहड़ा मिनख जमारै जाय ॥
४४ ज्यांका ऊंचा बैठणा ज्यांका खेत निवाण ।
बांका वैरी के करै ज्यांका मीत दिवाण ॥
४५ ताता बहण तुरंग भांत-भांत भोजन भला ।
सुन्दर नार सुरंग नहीं पुण्य बिन पावणा ॥
४६ तोतां पाछे तोतड़ी होली पाछै धूंड ।
फेरां पाछे चूनड़ी मार खसम कै मूंड ॥
४७ तीतर पंखी बादली, विधवा काजल रेख ।
आ बरसै वा घर करै ई में मीन न मेख ॥
४८ तोन बुलाया तेरा आया भाई राम की वाणी ।
राजो चेतन सूं कहै भड़ जो ताल में पाणी ॥
४९ तेल देखि तेल की धार जिम देख्यो मति करे पुकार ।
जोब ऊठि चाकर को लूंटि देखी किम काहि बैठे ऊठि ॥
५० दांत बटांगो बायरो, भारी भीर दरबान ।
मे पांचू बड़ा बुरा मत राखै भगवान ॥
५१ घर आली धन पलटतां, मिनख पहुन्ती ताप ।
तीन दिवस दे मरण रा कूण एक कूण राप ॥
५२ घर रहती रहसी धरम जप बासी खुरसाण ।
अमर बिसम्भर ऊपरां राखो गहलो राण ॥
५३ धान पुराणा घी नवा घर कुलवन्ती नार ।
चौथी पीठ तुरंग री धरम तणा फल च्यार ॥ १
५४ नाई साथे हुवी कूंभार चरि घरि बोले नर्ह गुंहार ।
जाकै जोरै छूटूं तो (तो) गडियोड़ो घर छूटूंगो ॥
५५ पंथी और नवाहणी दोनूं उल्टी रीत ।
और दिखावै च्यानणो आप अंधेरै बीच ॥ ४
५६ धन पूगल धड़ कोसड़े बापु बायड़मेर ।

किरतो-फिरतो बीकपुर टाको जैसलमेर ॥
८७ एको मन मोरठा मन । दूजो मन हो दर में मल्ला ॥
तीजो मन पुर मविलासा । चोथा मन दखियाँ मन्दो ॥
पाँचवों मन राज में पान । छठा मन मम्हने कपड़ा ॥
सातवों मुख विद्या कमाना । पु सातों सुख सच्चा निमाण ॥
८८ नाम नई पाता बड़ पिता बाम्हन जाय ।
रोगी रूप बैन्नार न वह बचा पिय राव
पचको चढ़ता बारा ।
८९ पकड़ा राम दई नहि पोरा देर दिवाद तोरे करेत ।
पन गमावे'र पछे आवे पछतो हाँ पुत्त मन ॥
९० कुड़ दे घर हुई बंजाड़ी कुत्ता दिन बाल्या दबारे ।
माछ करे सोम्या मुख जरा नी ना पण हरमीं बन ?
९१ बीन बड़ा नटवा बड़े हूणो न मटिया बोल ।
म भट क मटना हुई नटे नो नटपा होय ॥
९२ बाई में बाई परमाई जर मिमगार लागर आई ।
दोनूं हूंता रहे डाम, अमलाताम अमर्पीतास ॥
९३ बाड़ें मामर, बाड़े म्याम बाड़ मर बामे अमराण ।
बाड़ पूठ मना वर्त (बी) बंरा को राज विलोमय कर ।
९४ बामां दीमें बानिवूं नीमां म रसूम ।
बामम दीमें लाडनो बामम दीमें बाम ॥
९५ मामम में बामम मिश्रा पुरखान बमम का मंतरार ।
देम मम न कछ चूढ़ी नमस्कार ही नमस्कार ॥
९६ बारा बोमां बीमी पर्वां बमवम पर्वे पावो ।
मी मत्तां तो लाडम बतई बमाय न पर्वे मावों ॥
९७ सामा डकर मेरिये हमनी पावे टोह ।
दामर न दिमयर पनी, ताप न मापे तोड़ ॥
९८ बापू बामर मयाल बिन मदम मंडर मोन ।
ये अकला हो रामना, यी उपदेस अमोल ॥
९९ मरा बियाई वो जमा के मूमी के मेह ।
वो बोसो बरवे मरी वो बढ़ावर देह ॥
१०० मांड लोमे भूं मनजो मानें पी ।

धाक मांये फूलिया फुली हो तो पी ॥

७१ आंवें आमी पड़सा मर आवें आमी सेर ।
बालमभी तो बीमरया जी में हेर न फेर ॥

७२ सैलें सींडो बाकरो, चीची बिचवा नार ।
ये ध्यावें माड़ा भला मोठा करें बिगाड़ ॥

७३ मोरान मनति न मीपजै ना कंधा ना काट ।
साप साप रे प्रापुना बीली रा लबलाट ॥

७४ मरद तो बख्यान बंको फूल बंकी गोरिया ।
सुरहल तो हुयार बंकी ठेक बंको घोड़िया ॥

७५ मरद तो मूंछयाल बंको नैन बंकी गोरिया ।
सुरहल तो सींगाल बंकी पीठ बंकी घोड़िया ॥

७६ मरदां मरणी हक्क है ऊबरसी पत्ताह ।
सापुरसां रा जीवणा थोड़ा ही भल्लाह ॥

७७ माण रखै तो पीव तज पीव रखै तज माण ।
दोय-दोय गयन्द न बंधही, हेकै खंबू ठाण ॥

७८ मिनख कहै मैं कम करूं, कर की करूं गुमान ।
साईं हाथ कतरणी सह राखैगी जगमाण ॥

७९ मोत मानवी मामलो मंदी बोगण हार ।
पांचू मम्मा एकता पत राखै करतार ॥

८० मोरां बिन डूंगर किसा मे बिन किसी मलार ।
तिरिया बिन तीजां किसी पिय बिन किसा त्युंहार ॥

८१ रास-पुराबी बावरी, मींडक थाल बैंबार ।
तोड़ै तोड़ै मोठिया कीड़ी माल भैंबार ॥

८२ रिमिया तेरी रात हूवी नर आयो नहीं ।
जो आयो परभात (तो) तेरी रंग पायो नहीं ॥

८३ सूना भोजन मग बहुण बड़का बोली नार ।
भंवर चुवै टपूकड़ी पाघ लगी फल भ्यार ॥

८४ सोवै लाग्यो कामिणू बूंदै लागी माय ।
थाबै तो थाबै नहीं थाल्यां ई थाय ॥

८५ साईं इण संसार में, भांत-भांत का लोग ।
सबनूं रकमिल चालिये नदी-नाव संजोग ॥

८६ सांसी साह सरावगी सिरीमाल सुनार ।
ये सरसा पांचूं सुरा पहले करो विचार ॥

८७ साच सती अर सूरमा त्यागी अर गजदंत ।
ये पाछा ना बावड़ै चै जुग जाय अनंत ॥

८८ सावण छाछ न घालसी, भर भैंसाल्यां दूध ।
मरज दिवाली पूजसी, घर में मोटा पूत ॥

८९ सावण में तो सूरयो चालै भादूड़ै परवाई ।
आसोजां में पिछवा चालै भर भर गाडा ल्याई ॥

९० सावण हरड़ै भादू चीत आसोजां गुड़ खावो मीत ।
काती मूला मंगसर तेल, पौह में करो दूध सूं मेल ।
माघ मास घिव खिचड़ी खाय फागण विनूवे उठ न्हाय ॥

९१ सासरो सुख वासरो
पण दिनां तीन को आसरो ।
रैस्यो मास छ मास
देस्या खुरपी, खुदास्यो घास ॥

९२ साहूकार को बेटो आयो करी कमाई लाख्यो ल्यायो ।
खोटो बेच खायगो बाजा अब गई रा बाजै बाजा ॥

९३ सिंह सत सत्पुरुष बच कोल फलै इक बार ।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥

९४ सुगना केरी प्रीतड़ी सापुरसां री बांह ।
चालो ठाकर सैंधिये ढलती सीजे छांह ॥

९५ हंसा सरवर ना तजै जो जल खारा होय ।
डाबर डाबर डोलतां भला न कहसी कोय ॥

९६ हरड़ै बहड़ै आंवला घी सक्कर में खाय ।
हाथी भीड़ै काख में साठ कोस ले जाय ॥

९७ हर बड़ा क हिरण्या बड़ा लखमण बड़ा क स्याम ।
अरजन रथ नै हांक दे भली करै भगवान ॥

९८ हर भजतां हांसी करै जिमतै देई पान ।
पेट बताया चालसी जंगल होसी मांय ॥

९९ हाट का बाजार जा भापूं करस्या चोरी ।
कमावै को सुरत नहीं ता क्यूं करयो थो गोरी ॥

१०० झूठ कमाया कामड़ा कोलै बीजै बोल ।
कोजे को रो पालड़ी कोजे सौमो काम ॥

१०१ हियड़ा संकुचि विरख ज्यूं मन पसरंत निवार ।
जेता देवै मोकळा, तेता पांव पसार ॥